॥ॐ॥

॥श्री परमात्मने नमः ॥

॥श्री गणेशाय नमः॥

॥ ऋग्वेद संहिता ॥

॥ ऋग्वेद ॥

॥अथ नवम मण्डलं॥

श्री हिंदू धर्म वैदिक एजुकेशन फाउंडेशन

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

विषय सूची

सूक्त १ 9

सूक्त २ 13

सूक्त ३ 17

सूक्त ४ 21

सूक्त ५ 25

सूक्त ६ 29

सूक्त ७ 32

सूक्त ८ 35

सूक्त ९ 38

सूक्त १० 41

सूक्त ११ 44

सूक्त १२ 47

सूक्त १३ 50

सूक्त १४ 53

सूक्त १५ 56

सूक्त १६ 59

सूक्त १७ 62

सूक्त १८ 65

सूक्त १९ 68

सूक्त २० 71
सूक्त २१ 74
सूक्त २२ 77
सूक्त २३ 80
सूक्त २४ 83
सूक्त २५ 86
सूक्त २६ 89
सूक्त २७ 91
सूक्त २८ 94
सूक्त २९ 96
सूक्त ३० 98
सूक्त ३१ 100
सूक्त ३२ 102
सूक्त ३३ 104
सूक्त ३४ 106
सूक्त ३५ 108
सूक्त ३६ 110
सूक्त ३७ 112
सूक्त ३८ 114
सूक्त ३९ 116

सूक्त ४० 118

सूक्त ४१ 120

सूक्त ४२ 122

सूक्त ४३ 124

सूक्त ४४ 126

सूक्त ४५ 128

सूक्त ४६ 130

सूक्त ४७ 132

सूक्त ४८ 134

सूक्त ४९ 136

सूक्त ५० 138

सूक्त ५१ 140

सूक्त ५२ 142

सूक्त ५३ 144

सूक्त ५३ 146

सूक्त ५५ 148

सूक्त ५६ 150

सूक्त ५७ 152

सूक्त ५८ 154

सूक्त ५९ 156

सूक्त ६० 158
सूक्त ६१.. 160
सूक्त ६२ 170
सूक्त ६३ 180
सूक्त ६४ 189
सूक्त ६५.. 198
सूक्त ६६.. 208
सूक्त ६७.. 217
सूक्त ६८ 227
सूक्त ६९ 231
सूक्त ७० 235
सूक्त ७१ 240
सूक्त ७२ 244
सूक्त ७३ 248
सूक्त ७४ 252
सूक्त ७५.. 256
सूक्त ७६.. 258
सूक्त ७७.. 261
सूक्त ७८ 264
सूक्त ७९ 267

सूक्त ८० 270
सूक्त ८१ 273
सूक्त ८२ 276
सूक्त ८३ 279
सूक्त ८४ 282
सूक्त ८५ 285
सूक्त ८६ 290
सूक्त ८७ 309
सूक्त ८८ 313
सूक्त ८९ 316
सूक्त ९० 319
सूक्त ९१ 322
सूक्त ९२ 325
सूक्त ९३ 328
सूक्त ९४ 330
सूक्त ९५ 333
सूक्त ९६ 335
सूक्त ९७ 344
सूक्त ९८ 366
सूक्त ९९ 370

सूक्त १०० 373
सूक्त १०१ 376
सूक्त १०२ 382
सूक्त १०३ 385
सूक्त १०४ 388
सूक्त १०५ 391
सूक्त १०६ 394
सूक्त १०७ 399
सूक्त १०८ 408
सूक्त १०९ 414
सूक्त ११० 420
सूक्त १११ 425
सूक्त ११२ 427
सूक्त ११३ 429
सूक्त ११४ 434

ऋग्वेद – नवम मंडल

सूक्त १

ऋषि: मधुच्छन्दा वैश्वामित्र: ।
देवता – पवमान: सोम: छंद – गायत्री

स्वादिष्ठया मदिष्ठया पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतः ॥१॥

हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए पान करने हेतु निकाले गये हैं, अत: अत्यन्त स्वादिष्ट, हर्ष प्रदायक धार के रूप में प्रवाहित हों॥१॥

रक्षोहा विश्वचर्षणिरभि योनिमयोहतम् ।
द्रुणा सधस्थमासदत् ॥२॥

दुष्टों का नाश करने वाले, मानवों के लिए हितकारी, सोमदेव शुद्ध होकर सुवर्ण पात्र (द्रोण कलश) में भरकर यज्ञ स्थल पर प्रतिष्ठित हो गये हैं॥२॥

वरिवोधातमो भव मंहिष्ठो वृत्रहन्तमः ।
पर्षि राधो मघोनाम् ॥३॥

हे सोमदेव ! आप महान् ऐश्वर्य प्रदाता तथा शत्रुओं (विकारों) को नष्ट करने वाले हों । वृत्रासुर का हनन करके, उसका महान् धन हमें प्रदान करें॥३॥

अभ्यर्ष महानां देवानां वीतिमन्धसा ।
अभि वाजमुत श्रवः ॥४॥

हे सोमदेव ! आप श्रेष्ठ देवगणों के यज्ञ में अन्न सहित पहुँचे तथा हमें अन्न और बल प्रदान करें॥४॥

त्वामच्छा चरामसि तदिदर्थं दिवेदिवे ।
इन्दो त्वे न आशसः ॥५॥

हे सोम ! हमारी इच्छायें सदैव आपको समर्पित रहती हैं, अतः हम उत्तम विधि से आपकी सेवा करते हैं॥५॥

पुनाति ते परिस्रुतं सोमं सूर्यस्य दुहिता ।
वारेण शश्वता तना ॥६॥

हे सोमदेव ! सूर्य पुत्री (उषा) आपके रस को सनातन (प्रकाशरूप) आवणं से पवित्र बनाती है॥६॥

तमीमण्वीः समर्य आ गृभ्णन्ति योषणो दश ।
स्वसारः पार्ये दिवि ॥७॥

सोम को पवित्र करते समय बहिनों के समान दस अँगुलियाँ (रस निकालने के लिए) उस सोमवल्ली को पकड़ती हैं॥७॥

तमीं हिन्वन्त्यग्रुवो धमन्ति बाकुरं दृतिम् ।
त्रिधातु वारणं मधु ॥८॥

तेजस्वी दिखाई पड़ने वाले इस सोमरस को अँगुलियाँ लातीं और दबाकर निकालती हैं। इस दुःख निवारक मधुर रस में तीन शक्तियाँ (शरीर, मन और बुद्धि को सामर्थ्य प्रदान करने वाली) विद्यमान हैं॥८॥

अभीममघ्न्या उत श्रीणन्ति धेनवः शिशुम् ।
सोममिन्द्राय पातवे ॥९॥

इस पुत्र स्वरूप सोम के साथ अवध्य गौवें इन्द्र को पीने के लिए इस सोमरस के साथ अपने दूध को मिलाती हैं ॥९॥

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा विश्वा वृत्राणि जिघ्नते ।
शूरो मघा च मंहते ॥१०॥

सोमपान करने से आनन्दित हुए इन्द्रदेव शत्रुओं का संहार करके याज्ञिकों को धन प्रदान करते हैं॥१०॥

सूक्त २

ऋषि: मेधातिथि काण्व ।
देवता – पवमान: सोम: छंद – गायत्री

पवस्व देववीरति पवित्रं सोम रंह्या ।
इन्द्रमिन्दो वृषा विश ॥१॥

हे सोमदेव ! देव शक्तियों का सान्निध्य पाने की इच्छा करने वाले आप तीव्र गति से शोधित हों । हे सोमदेव ! बलवर्द्धक आप इन्द्रदेव की तृप्ति के लिए प्रतिष्ठित हों॥१॥

आ वच्यस्व महि प्सरो वृषेन्दो द्युम्नवत्तमः ।
आ योनिं धर्णसिः सदः ॥२॥

हे सोमदेव ! शौर्यवान्, दीप्तिमान् और सर्वधारक गुणों से युक्त आप हमें प्रचुर मात्रा में अन्न और बल प्रदान करें तथा आप निर्धारित स्थल पर पधारें॥२॥

अधुक्षत प्रियं मधु धारा सुतस्य वेधसः ।
अपो वसिष्ट सुक्रतुः ॥३॥

शोधित सोमरस की धाराएँ प्रिय मधुर रस को पात्र में संगृहीत करती हैं। सत्कर्मों से युक्त याज्ञिक सोम को जल में मिश्रित करते हैं॥३॥

महान्तं त्वा महीरन्वापो अर्षन्ति सिन्धवः ।
यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥४॥

हे सोमदेव ! जिस समय आप गौ (किरणों अथवा गौ दुग्ध) में मिश्रित होते हैं, उस समय महान् जल (श्रेष्ठ रसादि) आकी ओर आकर्षित होता है॥४॥

समुद्रो अप्सु मामृजे विष्टम्भो धरुणो दिवः ।
सोमः पवित्रे अस्मयुः ॥५॥

जल से युक्त, देवलोक का धारक और आधारभूत हमारा इच्छित सोमरस जल में मिश्रित और शोधित होकर हमारे निकट आता है॥५॥

अचिक्रददद्वृषा हरिर्महान्मित्रो न दर्शतः ।

सं सूर्येण रोचते ॥६॥

मित्र के समान प्रिय, शक्तिमान् , हरिताभ सोमरस, निचोड़े जाते समय शब्द करता हुआ, उसी प्रकार प्रकाशित होता है, जिस प्रकार सूर्यदेव प्रकाशित होते हैं॥६॥

गिरस्त इन्द ओजसा मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
याभिर्मदाय शुम्भसे ॥७॥

हे सोमदेव ! आपकी शक्ति-सामर्थ्य से ही कर्म की प्रेरणा पाने वाले स्तोतागण वेदमन्त्रों का उच्चारण करते हैं। वे स्तुति मन्त्रों द्वारा आनन्द वृद्धि के लिए आपको सुशोभित करते हैं ॥७॥

तं त्वा मदाय घृष्वय उ लोककृत्नुमीमहे ।
तव प्रशस्तयो महीः ॥८॥

संसार के कल्याण की इच्छा से शत्रुओं का संहार करने वाले हे सोमदेव ! हम आनन्दवृद्धि के लिए महान् स्तोत्रों से आपकी स्तुति करते हैं॥८॥

अस्मभ्यमिन्दविन्द्रयुर्मध्वः पवस्व धारया ।
पर्जन्यो वृष्टिमाँ इव ॥९॥

हे सोमदेव ! प्राण-पर्जन्य की वर्षा के समान आप हमारी इन्द्रियों की शक्ति-सामर्थ्य को अपनी अमृत रूपी मधुर धारा से बढ़ायें॥९॥

गोषा इन्दो नृषा अस्यश्वसा वाजसा उत ।
आत्मा यज्ञस्य पूर्व्यः ॥१०॥

हे सोमदेव ! यज्ञ के मूल तथा प्रमुख आत्मा के रूप में आप हमें गौ, अश्व, अन्न और सुसन्तति प्रदान करने वाले हों॥१०॥

सूक्त ३

ऋषि: आजिगर्ति शुन:शेप, कृत्रिमो वैश्वामित्रो देवरात:।
देवता – पवमान: सोम: छंद – गायत्री

एष देवो अमर्त्यः पर्णवीरिव दीयति ।
अभि द्रोणान्यासदम् ॥१॥

अमरणधर्मा ये दिव्य सोम्देव गतिमान् पक्षी के सदृश, कलश में वेग से प्रविष्ट होते हैं॥१॥

एष देवो विपा कृतोऽति ह्वरांसि धावति ।
पवमानो अदाभ्यः ॥२॥

अँगुलियों द्वारा निचोड़कर शोधित किया गया सोम, स्वयं अदम्य रहकर शत्रुओं का दमन करता हैं॥२॥

एष देवो विपन्युभिः पवमान ऋतायुभिः ।
हरिर्वाजाय मृज्यते ॥३॥

इस शोधित किये गये सोमरस को उद्गातागण स्तुतियों द्वारा उसी तरह विभूषित करते हैं, जिस प्रकार युद्धोन्मुख अश्व को सब प्रकार से सुसज्जित किया जाता है, मंत्रशक्ति द्वारा शोधित सोम को अधिक प्रभावोत्पादक बनाया जाता है॥३॥

एष विश्वानि वार्या शूरो यन्निव सत्वभिः ।
पवमानः सिषासति ॥४॥

यह शोधित, बलयुक्त सोम अपनी सामर्थ्य से उत्तम ऐश्वर्य को प्राप्त करते हुए उसके समुचित वितरण की इच्छा करता है॥४॥

एष देवो रथर्यति पवमानो दशस्यति ।
आविष्कृणोति वग्वनुम् ॥५॥

ये शोधित दिव्य सोमदेव ध्वनि करते हुए यज्ञ स्थल में जाने हेतु उपयुक्त माध्यम की कामना करते हैं । वे याजकों को इष्ट-पदार्थ प्रदान करने की इच्छा रखते हैं॥५॥

एष विप्रैरभिष्टुतोऽपो देवो वि गाहते ।

दधद्रत्नानि दाशुषे ॥६॥

श्रेष्ठ पुरुषों से प्रशंसा पाने वाले ये दिव्य सोमदेव, हविदाता को धन-वैभव प्रदान करते हुए, जल में मिश्रित होते हैं॥६॥

एष दिवं वि धावति तिरो रजांसि धारया ।
पवमानः कनिक्रदत् ॥७॥

यह सोम रस निकाल कर शुद्ध करने पर अपनी धार से लोकों का तिरस्कार करता हुआ शब्द करता हुआ द्यूलोक की ओर दौड़ता है ॥७॥

एष दिवं व्यासरत्तिरो रजांस्यस्पृतः ।
पवमानः स्वध्वरः ॥८॥

उत्तम, यज्ञकारक, शोधित, दिव्य मदेव को पराजित करने में समर्थ हुए, वे इस यज्ञ-स्थल से दिव्यलोक को गमन करते हैं॥८॥

एष प्रत्नेन जन्मना देवो देवेभ्यः सुतः ।
हरिः पवित्रे अर्षति ॥९॥

सनातन रीति से संस्कारित कि दी यह हरिताभ देवों के लिए छानकर शोधित किया जाता हैं॥९॥

एष उ स्य पुरुव्रतो जज्ञानो जनयन्निषः ।
धारया पवते सुतः ॥१०॥

विशिष्ट कार्यक्षमता के जनक और पोषक आहार पत्र करने वाले ये सोमदेव अपने प्रवाह के क्रम में स्वाभाविक रूप से शुद्ध हो जाते हैं॥१०॥

सूक्त ४

ऋषि: हिरण्यस्तूप अंगिरस:।
देवता – पवमान: सोम: छंद – गायत्री

सना च सोम जेषि च पवमान महि श्रवः ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥१॥

अत्यधिक स्तुत्य, पवित्र हे सोमदेव ! आप देवशक्तियों को उपलब्ध हों तथा बैरियों पर विजय प्राप्ति के बाद हमें कीर्तिमान् बनायें॥१॥

सना ज्योतिः सना स्वर्विश्वा च सोम सौभगा ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥२॥

हे सोमदेव ! आप हमें तेजस्विता प्रदान करें। सभी स्वर्गापम सुख और सौभाग्य देते हुए आप हमारा कल्याण करें॥२॥

सना दक्षमुत क्रतुमप सोम मृधो जहि ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥३॥

हे सोमदेव ! आप हमें बल और यज्ञीय कर्तव्य पालन करने की शक्ति प्रदान करें तथा शत्रुपक्ष को पराजित करके हमारा कल्याण करें॥३॥

पवीतारः पुनीतन सोममिन्द्राय पातवे ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥४॥

सोमरस शोधित करने वाले बाजको ! आप इन्द्रदेव के पान हेतु सोमरस को पवित्र करें । (जिस पीकर) वे हमारा कल्याण करें॥४॥

त्वं सूर्ये न आ भज तव क्रत्वा तवोतिभिः ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥५॥

हे सोमदेव ! आप अपने सत्कर्मों और संरक्षण-युक्त साधनों से हमें सूर्यदेव की ओर प्रेरित करें, जिससे हमारा श्रेष्ठ हित हो॥५॥

तव क्रत्वा तवोतिभिर्ज्योक्पश्येम सूर्यम् ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥६॥

हे सोमदेव ! आपके द्वारा प्रदत्त सद्ज्ञान से एवं आपके संरक्षण से युक्त हम बहुत वर्षों तक सूर्यदर्शन (दीर्घायुष्य) से लाभान्वित हों, आप हमारा मंगल करें॥६॥

अभ्यर्ष स्वायुध सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥७॥

हे श्रेष्ठ शस्त्रधारी सोमदेव ! लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के धन से आप हमें सम्पन्न करें, जिससे हम सुख को प्राप्त करें॥७॥

अभ्यर्षानपच्युतो रयिं समत्सु सासहिः ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥८॥

हे शक्तिसम्पन्न सोमदेव ! युद्ध-भूमि में विजयी होने वाले और बैरियों को पराजित करने वाले आप कलश में स्थापित हों और हमें कल्याण से युक्त करें॥८॥

त्वां यज्ञैरवीवृधन्पवमान विधर्मणि ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥९॥

हे पवित्रता से युक्त सोमदेव ! अति फलदायक यज्ञ में यजमान उत्तम स्तोत्रों का गान करते हुए आपकी महिमा को बढ़ाते हैं, आप हमें कल्याण से युक्त करें॥९॥

रयिं नश्चित्रमश्विनमिन्दो विश्वायुमा भर ।
अथा नो वस्यसस्कृधि ॥१०॥

हे सोमदेव ! हमें विचित्र अश्वों से सम्पन्न और सर्वलोक हितकारी वैभव पर्याप्त मात्रा में प्रदान करें जिससे हम सुख को प्राप्त करें॥१०॥

सूक्त ५

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – आप्रीसूक्तं। छंद – गायत्री, ८-११ अनुष्टुप

समिद्धो विश्वतस्पतिः पवमानो वि राजति ।
प्रीणन्वृषा कनिक्रदत् ॥१॥

सबका स्वामी, तेजस्वी, बलशाली सोम शब्द करता हुआ पवित्र होता हैं और सबको सन्तुष्ट करता है॥१॥

तनूनपात्पवमानः शृङ्गे शिशानो अर्षति ।
अन्तरिक्षेण रारजत् ॥२॥

शरीर को क्षीण न करने वाला यह पवित्र सोमरस अन्तरिक्ष से चमकते हुए उच्च भाग से तेजस्वीरूप में सवित होता है॥२॥

ईळेन्यः पवमानो रयिर्वि राजति द्युमान् ।

मधोर्धाराभिरोजसा ॥३॥

प्रशंसा के योग्य यह पवित्र सोम तेजस्वी होकर अपनी मधुर रस धाराओं से सुशोभित होता हुआ (याज्ञिकों को) इच्छित धन प्रदान करता है॥३॥

बर्हिः प्राचीनमोजसा पवमानः स्तृणन्हरिः ।
देवेषु देव ईयते ॥४॥

हरिताभ दिव्य सौम शोधित होते समय देवगणों के सम्मुख फैलाये गये आसन की ओर अपनी शक्ति से बढ़ता हैं॥४॥

उदातैर्जिहते बृहद्द्वारो देवीर्हिरण्ययीः ।
पवमानेन सुष्टुताः ॥५॥

उत्तम विधि से पूजित स्वर्णिम किरणें दिव्य सोम के साथ अपने पराक्रम से सभी ओर दृष्टिगोचर होती हैं॥५॥

सुशिल्पे बृहती मही पवमानो वृषण्यति ।
नक्तोषासा न दर्शते ॥६॥

यह सोम महान् गुणों से युक्त, पूज्य, दर्शनीय तथा सुन्दर उषा (दिवारात्रि के आगमन) की इच्छा करता है॥६॥

उभा देवा नृचक्षसा होतारा दैव्या हुवे ।
पवमान इन्द्रो वृषा ॥७॥

मानव मात्र के द्रष्टा तथा दिव्य होता, इन दोनों (इन्द्र तथा सोम) देवताओं की हम प्रार्थना करते हैं॥७॥

भारती पवमानस्य सरस्वतीळा मही ।
इमं नो यज्ञमा गमन्तिस्रो देवीः सुपेशसः ॥८॥

हमारे इस पवित्र यज्ञ में भारती (भाषा की अधिष्ठात्री), सरस्वती (विद्या की अधिष्ठात्री) तथा इडा (वाक् कों अधिष्ठात्री) तीनों देवियाँ पधारें॥८॥

त्वष्टारमग्रजां गोपां पुरोयावानमा हुवे ।
इन्दुरिन्द्रो वृषा हरिः पवमानः प्रजापतिः ॥९॥

सनातन प्रजापालक, सृष्टिकर्ता, आगे ले जाने वाले त्वष्टा देव को हम आवाहन करते हैं। हरिताभ पवित्र सोम तथा इच्छाओं की पूर्ति करने

वाले प्रजापालक इन्द्रदेव का भी हम इस यज्ञ में आवाहन करते हैं॥९॥

वनस्पतिं पवमान मध्वा समङ्ग्धि धारया ।
सहस्रवल्शं हरितं भ्राजमानं हिरण्ययम् ॥१०॥

हे पवमान सोमदेव ! आप अपनी सहस्रों मधुर धाराओं के संयोग से वनस्पतियों को हरा (विकसित करने वाले तथा स्वर्णिम प्रकाशयुक्त हजारों धाराओं से (जीव-जगत् को) सिंचित करने वाले हैं॥१०॥

विश्वे देवाः स्वाहाकृतिं पवमानस्या गत ।
वायुर्बृहस्पतिः सूर्योऽग्निरिन्द्रः सजोषसः ॥११॥

हे वायु, बृहस्पति, सूर्य, अग्नि तथा इन्द्रदेव ! आप सभी इस यज्ञ में आएँ तथा उत्तम सम्मान प्राप्त करे॥११॥

सूक्त ६

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

मन्द्रया सोम धारया वृषा पवस्व देवयुः ।
अव्यो वारेष्वस्मयुः ॥१॥

बलवर्धक, देवताओं के अभीष्ट, हे सोमदेव ! आप हमें संरक्षण प्रदान करें और आनन्ददायक धारा के रूप में छलनी से शोधित हों॥१॥

अभि त्यं मद्यं मदमिन्दविन्द्र इति क्षर ।
अभि वाजिनो अर्वतः ॥२॥

हे सोमदेव ! आप परमात्मा हैं, अत: आनन्द प्रदान करने वाले सोमरस की वर्षा करें और हमें बलशाली घोड़े भी प्रदान करें॥२॥

अभि त्यं पूर्व्यं मदं सुवानो अर्ष पवित्र आ ।
अभि वाजमुत श्रवः ॥३॥

हे सोमदेव ! आप रस निकालते समय शाश्वत आनन्द की वृद्धि करने वाले बनकर श्रेष्ठ यज्ञ स्थल में पधारे तथा हमें अन्न और बल प्रदान करें॥३॥

अनु द्रप्सास इन्दव आपो न प्रवतासरन् ।
पुनाना इन्द्रमाशत ॥४॥

शीघ्रगामी, शोधित सोमरस उत्तम मार्ग से जलधाराओं के समान प्रवाहित होकर इन्द्रदेव को प्राप्त हो॥४॥

यमत्यमिव वाजिनं मृजन्ति योषणो दश ।
वने क्रीळन्तमत्यविम् ॥५॥

वन में उत्पन्न होने वाले, सूर्य से भी अधिक तेजस्वी, जिसको चपल घोड़े सदृश दस अंगुलियाँ निचोड़ती हैं॥५॥

तं गोभिर्वृषणं रसं मदाय देववीतये ।
सुतं भराय सं सृज ॥६॥

उस बलवर्धक, देवगणों के लिए आनन्ददायी सोमरस को गाय के दूध के साथ मिश्रित करते हैं॥६॥

देवो देवाय धारयेन्द्राय पवते सुतः ।
पयो यदस्य पीपयत् ॥७॥

यह दिव्य सौमरस इन्द्रदेव के लिए धार रूप से पात्र में गिरता है, जो इन्द्रदेव के लिए पुष्टिकारक है॥७॥

आत्मा यज्ञस्य रंह्या सुष्वाणः पवते सुतः ।
प्रत्नं नि पाति काव्यम् ॥८॥

यज्ञ की आत्मा के रूप में यह सोमरस यजमान की कामनाओं की पूर्ति के लिए पात्र में द्रुतगति से निःसृत होता है तथा सनातन स्तोत्रों की मर्यादा का पालन करता है (मन्त्र के भाव से प्रवाहित होती हैं)॥८॥

एवा पुनान इन्द्रयुर्मदं मदिष्ठ वीतये ।
गुहा चिद्दधिषे गिरः ॥९॥

हे आनन्दवर्धक सोमदेव ! स्तुतिरूपी वाणी को स्वीकार कर आप इन्द्रदेव के पान करने के उद्देश्य से आनन्ददायी बनकर यज्ञशाला में स्थापित हों॥९॥

सूक्त ७

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

असृग्रमिन्दवः पथा धर्मन्नृतस्य सुश्रियः ।
विदाना अस्य योजनम् ॥१॥

यज्ञमान एवं देवताओं के सम्बन्ध में भली-भाँति जानते हुए, यशस्वी सोमदेव धर्म कार्यों की तरह यज्ञ मार्ग में आरूढ़ होते हैं॥१॥

प्र धारा मध्वो अग्रियो महीरपो वि गाहते ।
हविर्हविष्षु वन्द्यः ॥२॥

हवियों में श्रेष्ठ प्रशंसित, हविरूप सोम जल में मिश्रित होता हुआ मधुर रसधार से पात्र में स्थिर हो रहा है॥२॥

प्र युजो वाचो अग्रियो वृषाव चक्रदद्वने ।
सद्माभि सत्यो अध्वरः ॥३॥

आहुतियों में अग्रिम, वाणी का उत्पादक, शक्तिशाली, सत्ययुक्त और अहिंसक यह सोमरस जल के साथ मिश्रित होकर यज्ञशाला में प्रविष्ट होता है॥३॥

परि यत्काव्या कविर्नृम्णा वसानो अर्षति ।
स्वर्वाजी सिषासति ॥४॥

प्रज्ञावान् सोमदेव अपनी शक्ति-सामर्थ्य से मनुष्यों में पवित्रता का संचार करते हैं। वे जब स्तुतियों को स्वीकार करते हैं, तब शक्तिशाली इन्द्रदेव स्वर्ग से यज्ञ स्थल पर आने के लिए उद्यत होते हैं॥४॥

पवमानो अभि स्पृधो विशो राजेव सीदति ।
यदीमृण्वन्ति वेधसः ॥५॥

याज्ञिकों की प्रेरणा से संस्कारित सोमदेव, राजा की भाँति प्रजा की रक्षा तथा शत्रुओं का संहार करने के लिए तैयार होते हैं॥५॥

अव्यो वारे परि प्रियो हरिर्वनेषु सीदति ।
रेभो वनुष्यते मती ॥६॥

जल मिश्रित हरिताभ सोम, शोधक (यन्त्र) द्वारा पवित्र होते समय, अत्विजों द्वारा की गई स्तुतियों को स्वीकार करते हुए, ध्वनि के साथ पात्र में स्थिर हो रहा है॥६॥

स वायुमिन्द्रमश्विना साकं मदेन गच्छति ।

रणा यो अस्य धर्मभिः ॥७॥

जो याजक इस सोम को निकालने एवं शुद्ध करने में संलग्न रहते हैं, वे आनन्दवर्धक सोम के साथ वायु इन्द्र और अश्विनीकुमारों का सान्निध्य लाभ प्राप्त करते हैं॥७॥

आ मित्रावरुणा भगं मध्वः पवन्त ऊर्मयः ।
विदाना अस्य शक्मभिः ॥८॥

जिन त्वजों द्वारा मधुर सोम की धाराएँ मित्र, वरुण और भग देवों के निमित्त प्रवाहित होती हैं, ऐसे सोम की महिमा से परिचित याजक आनन्द की प्राप्ति करते हैं॥८॥

अस्मभ्यं रोदसी रयिं मध्वो वाजस्य सातये ।
श्रवो वसूनि सं जितम् ॥९॥

हे पृथ्वी और द्युलोक के अधिष्ठाता देवता ! सोमरस रूप श्रेष्ठ पोषक आहार को प्राप्त करने के लिए आप हमें धन-धान्य के रूप में अपार वैभव प्रदान करें॥९॥

सूक्त ८

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

एते सोमा अभि प्रियमिन्द्रस्य काममक्षरन् ।
वर्धन्तो अस्य वीर्यम् ॥१॥

इन्द्रदेव की सामर्थ्य में वृद्धि करने वाला यह सोम इन्द्रदेव को प्रिय लगने वाले रसों की वर्षा करता है॥१॥

पुनानासश्चमूषदो गच्छन्तो वायुमश्विना ।
ते नो धान्तु सुवीर्यम् ॥२॥

हे शुद्ध सोमदेव ! आप वायु और अश्विनीकुमारों के साथ मिलकर हमें वीरोचित श्रेष्ठता प्रदान करें॥२॥

इन्द्रस्य सोम राधसे पुनानो हार्दि चोदय ।

ऋतस्य योनिमासदम् ॥३॥

हे पवित्र सोमदेव ! आप इन्द्रदेव की आराधना के लिए हमारे हृदय में प्रेरणा उत्पन्न करें । हम देवों के अनुकूल यज्ञ कर्म हेतु प्रस्तुत हुए हैं॥३॥

मृजन्ति त्वा दश क्षिपो हिन्वन्ति सप्त धीतयः ।
अनु विप्रा अमादिषुः ॥४॥

हे सोमदेव ! दस दिशाएँ आपका मार्जन करती हैं, सप्त धारण शक्तियाँ आपको संवर्द्धित करती हैं। विप्र-सत्पुरुष आपको (स्तुतियों या यज्ञीय कृत्यों द्वारा) सन्तुष्ट करते हैं॥४॥

देवेभ्यस्त्वा मदाय कं सृजानमति मेष्यः ।
सं गोभिर्वासयामसि ॥५॥

शोधित होने वाले सुखद हे सोम ! देवताओं को आनन्दित करने के लिए हम आपको गौदुग्ध में मिलाते हैं ।॥५॥

पुनानः कलशेष्वा वस्त्राण्यरुषो हरिः ।
परि गव्यान्यव्यत ॥६॥

शुद्ध होकर कलश में स्थापित होने वाले हरिताभ सोम को गौ दुग्ध धारण कर लेता है॥६॥

मघोन आ पवस्व नो जहि विश्वा अप द्विषः ।
इन्दो सखायमा विश ॥७॥

हे सोमदेव ! आप हमें धन-ऐश्वर्य से युक्त करने के लिए पवित्र हों, द्वेष करने वालों का नाश करें और मित्ररूप इन्द्रदेव के साथ एकाकार हो जाएँ॥७॥

वृष्टिं दिवः परि स्रव द्युम्नं पृथिव्या अधि ।
सहो नः सोम पृत्सु धाः ॥८॥

हे सोमदेव ! आप आकाश से पृथ्वी पर दिव्येवृष्टि करें, पृथ्वी पर पोषक रस उत्पन्न करें और हमें संघर्ष की शक्ति प्रदान करें॥८॥

नृचक्षसं त्वा वयमिन्द्रपीतं स्वर्विदम् ।
भक्षीमहि प्रजामिषम् ॥९॥

हे सोमदेव ! समस्त प्राणियों का निरीक्षण करने वाले सर्वज्ञ इन्द्रदेव के द्वारा पात्र किये जाने वाले आप हमें सन्तान, अन्न, बल और सद्ज्ञान आदि प्रदान करे॥९॥

सूक्त ९

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

परि प्रिया दिवः कविर्वयांसि नप्त्योर्हितः ।
सुवानो याति कविक्रतुः ॥१॥

बुद्धि को बढ़ाने वाला यह सोम, सोमरस निकालने के दो फलकों (दो पाटों द्युलोक एवं पृथ्वी) के बीच में स्थित होकर ब्रह्मनिष्ठों द्वारा सचेतन प्राणियों तक पहुँचाया जाता है । ॥१॥

प्रप्र क्षयाय पन्यसे जनाय जुष्टो अद्रुहे ।
वीत्यर्ष चनिष्ठया ॥२॥

हे सोमदेव ! आपके स्थायित्व के लिए प्रयत्नशील, द्रोहरहित, मित्रभाव से गुणगान करने वाले, मनुष्यों के लिए पोषक आहार के रूप में उपयोग किए गए आप स्तुति के योग्य हैं॥२॥

स सूनुर्मातरा शुचिर्जातो जाते अरोचयत् ।
महान्मही ऋतावृधा ॥३॥

संस्कारित होता हुआ वह सोमरूपी महान् पुत्र, यज्ञ को पोषण देने वाले प्रसिद्ध माता-पिता अन्तरिक्ष और पृथ्वी को सुशोभित करती है॥३॥

स सप्त धीतिभिर्हितो नद्यो अजिन्वदद्रुहः ।
या एकमक्षि वावृधुः ॥४॥

धारण शक्तियों से सुरक्षित, द्रोहरहित सोम (प्रकृति के) सप्त प्रवाहों अथवा नदियों को आनन्दित करता है, जो(वे सप्त-नदियाँ) इस क्षीण न होने वाले सोम को संवर्धित करती हैं॥४॥

ता अभि सन्तमस्तृतं महे युवानमा दधुः ।
इन्दुमिन्द्र तव व्रते ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! यज्ञ में देवताओं को अर्पित करने के लिए अहिंसित, बलवान्, तरुण सोम को वे (धारण क्षमताएँ) अपने अंदर समाहित कती हैं॥५॥

अभि वह्निरमर्त्यः सप्त पश्यति वावहिः ।
क्रिविर्देवीरतर्पयत् ॥६॥

हवनीय पदार्थों से देवताओं को तृप्त करने वाला, यज्ञ संचालक, न मारे जाने वाला सोम सातों प्रवाहों को देखता है । वह कूप के समान जल से पूर्ण होकर दिव्य प्रवाहों को तृप्ति प्रदान करता है॥६॥

अवा कल्पेषु नः पुमस्तमांसि सोम योध्या ।
तानि पुनान जङ्घनः ॥७॥

पवित्रता प्रदान करने वाले हे दिव्य सोमदेव ! आप युद्ध की इच्छा करने वाले राक्षसों का संहार कर प्रत्येक अवसरों पर हमारा संरक्षण करें॥७॥

नू नव्यसे नवीयसे सूक्ताय साधया पथः ।
प्रत्नवद्रोचया रुचः ॥८॥

स्तुति योग्य, हमारे प्रशंसनीय हे सोमदेव ! सूक्तों को सुनने के लिए आप सनातन रूप में अपना तेज़ प्रकट करते हुए उत्तम मार्ग से पधारें॥८॥

पवमान महि श्रवो गामश्वं रासि वीरवत् ।
सना मेधां सना स्वः ॥९॥

हे सोमदेव ! आप अन्न, गौ तथा अश्व सहित वीर सन्तति प्रदान करने वाले हैं। इन सम्पूर्ण ऐश्वर्यों से युक्त करते हुए आप हमें सद्बुद्धि प्रदान करें॥९॥

सूक्त १०

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र स्वानासो रथा इवार्वन्तो न श्रवस्यवः ।
सोमासो राये अक्रमुः ॥१॥

अश्वों एवं रथों की भाँति वेगपूर्वक तथा ध्वनि करते हुए सोमरस का शोधन हो रहा है । शोधित सोमदेव में अपार यश एवं वैभव प्रदान करते हैं॥१॥

हिन्वानासो रथा इव दधन्विरे गभस्त्योः ।
भरासः कारिणामिव ॥२॥

युद्ध में जा रहे रथों के समान यज्ञ की ओर जाने वाले सोमरस को, भारवाहक द्वारा दोनों हाथों से उठाये गये बोझ के समान याजकगण धारण करते हैं॥२॥

राजानो न प्रशस्तिभिः सोमासो गोभिरञ्जते ।
यज्ञो न सप्त धातृभिः ॥३॥

प्रशंसित राजा तथा सात याजकों द्वारा जिस प्रकार यज्ञदेव की प्रतिष्ठा होती हैं, उसी प्रकार गौ-घृतादि से ये सोमदेव संस्कारित होते हैं॥३॥

परि सुवानास इन्दवो मदाय बर्हणा गिरा ।
सुता अर्षन्ति धारया ॥४॥

अभिषुत होने (निचोड़ने) के बाद अमृत स्वरूप, ज्ञानवर्धक मधुर सोमरस साधकों के द्वारा स्तुतिगान करते हुए छाना जाता है॥४॥

आपानासो विवस्वतो जनन्त उषसो भगम् ।
सूरा अण्वं वि तन्वते ॥५॥

उषा काल का वह समय भाग्यशाली होता है, जब इन्द्रदेव के पान के लिए सोमरस शब्द करते हुए नीचे आता है॥५॥

अप द्वारा मतीनां प्रत्ना ऋण्वन्ति कारवः ।
वृष्णो हरस आयवः ॥६॥

शक्तिशाली सोमदेव की स्तुति करने वाले, स्तोता प्राचीन यज्ञ द्वारों को उद्घाटित करते हैं॥६॥

समीचीनास आसते होतारः सप्तजामयः ।
पदमेकस्य पिप्रतः ॥७॥

उत्कृष्ट सात बन्धुओं के समान सोम के स्थान को एक साथ पूर्ण करते हुए सात याज्ञिक यज्ञकर्मानुष्ठान के लिए उपस्थित होते हैं॥७॥

नाभा नाभिं न आ ददे चक्षुश्चित्सूर्ये सचा ।
कवेरपत्यमा दुहे ॥८॥

नेत्र सूर्य पर निर्भर है। अपने यज्ञ एवं नाभि (उदर) के लिए कवि (क्रान्तदर्शी दिव्य प्रवाह) के पुत्र रूप में हम सोम का दोहन करते हैं॥८॥

अभि प्रिया दिवस्पदमध्वर्युभिर्गुहा हितम् ।
सूरः पश्यति चक्षसा ॥९॥

बलवान् इन्द्रदेव अपने नेत्रों से दिव्य लोक में प्रिय और अध्वर्युओं द्वारा हृदयस्थ सोम को देखते हैं॥९॥

सूक्त ११

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

उपास्मै गायता नरः पवमानायेन्दवे ।
अभि देवाँ इयक्षते ॥१॥

हे याजको ! देवशक्तियों के निमित्त, यज्ञार्थ प्रयुक्त होने वाले, शुद्ध हुए इस सोम की स्तुति करो॥१॥

अभि ते मधुना पयोऽथर्वाणो अशिश्रयुः ।
देवं देवाय देवयु ॥२॥

यह दिव्यरस देवों ने देव पुरुषों के लिए प्रकट किया है । इसे अथर्वा ऋषियों (विज्ञान वेत्ताओं) ने तुम्हारे लिए मधुर गौ-दुग्ध के साथ दिलाया हैं॥२॥

स नः पवस्व शं गवे शं जनाय शमर्वते ।
शं राजन्नोषधीभ्यः ॥३॥

हे कल्याणकारी सोमदेव ! आप स्वयं शुद्ध होकर पशुधन, प्रज्ञाधन तथा अश्वादि सैन्यबल का कल्याण करें और ओषधियों को पवित्र बनायें॥३॥

बभ्रवे नु स्वतवसेऽरुणाय दिविस्पृशे ।
सोमाय गाथमर्चत ॥४॥

हे स्तोता ! आप लोग भूरे रंग के बलशाली, अरुणिमा युक्त, आकाश में रहने वाले सोम की स्तुति करो॥४॥

हस्तच्युतेभिरद्रिभिः सुतं सोमं पुनीतन ।
मधावा धावता मधु ॥५॥

हे ऋत्विजो ! पाषाणों से कूटकर निष्पन्न सोमरस को शोधित करो तथा मधुर सोमरस में मधुर गौ-दुग्ध मिश्रित करो॥५॥

नमसेदुप सीदत दध्नेदभि श्रीणीतन ।
इन्दुमिन्द्रे दधातन ॥६॥

हे ऋत्विजो ! इस सोमरस को नमस्कारपूर्वक दही में मिलाकर रखो। दीप्तिमान् सोमरस इन्द्रदेव के पीने के लिए अर्पित करो॥६॥

अमित्रहा विचर्षणिः पवस्व सोम शं गवे ।
देवेभ्यो अनुकामकृत् ॥७॥

हे दिव्य सोमदेव ! शत्रुनाशक, सर्वद्रष्टा, देवों की इच्छानुसार कार्य करने वाले आप हमारी गौओं को सुख दें (सुखपूर्वक रखें) ॥७॥

इन्द्राय सोम पातवे मदाय परि षिच्यसे ।
मनश्चिन्मनसस्पतिः ॥८॥

यह सोम मनों में रमणशील, मनों के अधिपति इन्द्रदेव के सेवनार्थ उनके आनन्दवर्द्धन के निमित्त संस्कारित होकर पात्र में एकत्रित होता है॥८॥

पवमान सुवीर्यं रयिं सोम रिरीहि नः ।
इन्दविन्द्रेण नो युजा ॥९॥

हे शोधित होने वाले पवित्र सोमदेव ! आप उत्तम तेजस्विता युक्त होकर अपने सहायक इन्द्रदेव के पास से हमें अभीष्ट धन दिलाएँ॥९॥

सूक्त १२

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

सोमा असृग्रमिन्दवः सुता ऋतस्य सादने ।
इन्द्राय मधुमत्तमाः ॥१॥

यज्ञ के लिए शोधकर तैयार किये गए मधुररस युक्त सोम को इन्द्रदेव के निमित्त प्रस्तुत करते हैं॥१॥

अभि विप्रा अनूषत गावो वत्सं न मातरः ।
इन्द्रं सोमस्य पीतये ॥२॥

हे विजो ! जिस प्रकार गौएँ अपने बछड़ों के लिए व्याकुल हो जाती हैं, उसी भाव से तुम सोम पीने के लिए इन्द्रदेव की स्तुति करो॥२॥

मदच्युत्क्षेति सादने सिन्धोरूर्मा विपश्चित् ।
सोमो गौरी अधि श्रितः ॥३॥

हर्ष बढ़ाने वाला सोम यज्ञ – स्थल पर प्रतिष्ठित होता है। नदी की तरंगों के समान यह वाणी को तरंगित करता है॥३॥

दिवो नाभा विचक्षणोऽव्यो वारे महीयते ।
सोमो यः सुक्रतुः कविः ॥४॥

यह सोम श्रेष्ठकर्मा तथा ज्ञानयुक्त है, जो अन्तरिक्ष की नाभि के समान छत्रे में शुद्ध होकर महत्त्व (प्रतिष्ठा) को प्राप्त होता है॥४॥

यः सोमः कलशेष्वाँ अन्तः पवित्र आहितः ।
तमिन्दुः परि षस्वजे ॥५॥

पवित्र होकर कलशों में अवस्थित सोमरस में चन्द्रमा के श्रेष्ठ गुणों का संचार होता हैं ।॥ ५॥

प्र वाचमिन्दुरिष्यति समुद्रस्याधि विष्टपि ।
जिन्वन्कोशं मधुश्चुतम् ॥६॥

मधुर सोमरस आकाश (घटाकाश) में प्रवेश कर शब्द करता हुआ कलश को पूरी तरह भर देता है॥६॥

नित्यस्तोत्रो वनस्पतिर्धीनामन्तः सबर्दुघः ।
हिन्वानो मानुषा युगा ॥७॥

नित्य स्तुत्य, वनों के स्वामी सोमदेव, श्रेष्ठ मनुष्यों को संगठित होने की प्रेरणा प्रदान करें और मधुर भाषी की हार्दिक स्तुतियों को स्वीकार करें॥७॥

अभि प्रिया दिवस्पदा सोमो हिन्वानो अर्षति ।
विप्रस्य धारया कविः ॥८॥

यह ज्ञानवर्धक सोम ज्ञानी जनों को अन्तरिक्ष से (सत्कर्म की) प्रेरणा देता हुआ धार रूप में यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठित होता है॥८॥

आ पवमान धारय रयिं सहस्रवर्चसम् ।
अस्मे इन्दो स्वाभुवम् ॥९॥

हे शुद्ध होने वाले सोमदेव ! आप हमें सहस्र गुणसम्पन्न अपने धाम और ऐश्वर्य का अधिकारी बनाएँ । ॥९॥

सूक्त १३

ऋषिः काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – गायत्री

सोमः पुनानो अर्षति सहस्रधारो अत्यविः ।
वायोरिन्द्रस्य निष्कृतम् ॥१॥

हजारों धाराओं के रूप में शोधक यंत्र से शोधित सोम, वायु और इन्द्रदेव के पान करने के लिए श्रेष्ठ पात्रों में स्थिर होता हैं॥१॥

पवमानमवस्यवो विप्रमभि प्र गायत ।
सुष्वाणं देववीतये ॥२॥

अपने संरक्षण की कामना करने वाले, हे याजको ! सबको पवित्र करने वाले, विशेष आनन्द प्रदान करने वाले, देवों के पान करने योग्य शोधित सोम के लिए सम्मानपूर्वक स्तुतियों का गान करो॥२॥

पवन्ते वाजसातये सोमाः सहस्रपाजसः ।

गृणाना देववीतये ॥३॥

अन्न (पोषण) प्रदान करने के कारण स्तुत्य, देवतुल्य, हजारों प्रकार से बलवर्द्धक यह सोमरस शोधित किया जा रहा है॥३॥

उत नो वाजसातये पवस्व बृहतीरिषः ।
दयुमदिन्दो सुवीर्यम् ॥४॥

हे सोमदेव ! आप जीवन-संग्राम की सफलता के लिए हमें श्रेष्ठ अन्न प्रदान करें तथा तेजस्वी और सामर्थ्यवान् बनाएँ॥४॥

ते नः सहस्रिणं रयिं पवन्तामा सुवीर्यम् ।
सुवाना देवास इन्दवः ॥५॥

वह स्रवित किया गया दिव्य सोमरस हमें असंख्य ऐश्वर्य और उत्तम सामर्थ्य प्रदान करे॥५॥

अत्या हियाना न हेतृभिरसृग्रं वाजसातये ।
वि वारमव्यमाशवः ॥६॥

युद्धस्थल पर जाते हुए अश्वों की भाँति प्रेरित सोम ऋत्विजों द्वारा तीव्र गति से शोधित किया जाता है॥६॥

वाश्रा अर्षन्तीन्दवोऽभि वत्सं न धेनवः ।
दधन्विरे गभस्त्योः ॥७॥

जैसे गौएँ बछड़ों की ओर सँभाती हुई जाती हैं, उसी प्रकार शब्द करता हुआ सोमरस कलश में प्रवेश करता है और ऋत्विजों द्वारा हाथों में धारण किया जाता है॥७॥

जुष्ट इन्द्राय मत्सरः पवमान कनिक्रदत् ।
विश्वा अप द्विषो जहि ॥८॥

इन्द्रदेव को तृप्त करने वाले हे सोमदेव ! आप पवित्र होकर शब्द करते हुए सभी शत्रुओं (विकारों) का विनाश करें॥८॥

अपघ्नन्तो अराव्णः पवमानाः स्वर्दृशः ।
योनावृतस्य सीदत ॥९॥

हे सोम ! दान न देने वाले स्वार्थियों का नाश करते हुए अपने तेजस्वी रूप में आप यज्ञस्थल पर स्थित हों॥९॥

सूक्त १४

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

परि प्रासिष्यदत्कविः सिन्धोरूर्मावधि श्रितः ।
कारं बिभ्रत्पुरुस्पृहम् ॥१॥

बुद्धिवर्द्धक, प्रशंसनीय, याजकों का पोषण करने वाला, नदी की लहरों (जल) में मिला हुआ यह सोमरस पात्र (सत्पात्रों) में स्थिर होता है॥१॥

गिरा यदी सबन्धवः पञ्च व्राता अपस्यवः ।
परिष्कृण्वन्ति धर्णसिम् ॥२॥

भ्रातृभाव से रहने वाले पाँचों वर्गों के लोग यज्ञीय कर्म की कामना करते हुए सबके पोषक सोमदेव को वाणी द्वारा (स्तुतियों से) सुशोभित करते हैं॥२॥

आदस्य शुष्मिणो रसे विश्वे देवा अमत्सत ।
यदी गोभिर्वसायते ॥३॥

सोमरस निकालने के बाद जब उसे गौ-दुग्ध में मिलाया जाता है, तब इस बलवर्द्धक सोम के पान से सभी देवगण आनन्दित होते हैं॥३॥

निरिणानो वि धावति जहच्छर्याणि तान्वा ।
अत्रा सं जिघ्नते युजा ॥४॥

छलनी से शोधित होता हुआ सोम छलनी को (अपने रस से) सराबोर करती हुआ, उसके छिद्रों से नीचे की ओर प्रवाहित होता है और सखा रूप में इन्द्रदेव से मिल जाता है॥४॥

नप्तीभिर्यो विवस्वतः शुभ्रो न मामृजे युवा ।
गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥५॥

याज्ञिक यजमान की अँगुलियों से शोधित होता हुआ सोमरस गौ के दूध में मिलाने पर सफेद, दीप्तिमान् , तरुण अश्व के समान तथा दूध जैसा ही दिखाई पड़ता है॥५॥

अति श्रिती तिरश्चता गव्या जिगात्यण्व्या ।

वग्नुमियर्ति यं विदे ॥६॥

(शोधित होते समय) सोमरस अँगुलियों से दबाने पर इधर-उधर से गौ के दूध में मिश्रित होने के लिए नीचे गिरता है । पात्र में गिरते हुए (यजमान की जानकारी के लिए शब्द करता है॥६॥

अभि क्षिपः समग्मत मर्जयन्तीरिषस्पतिम् ।
पृष्ठा गृभ्णत वाजिनः ॥७॥

सोमरस को शोधित करती हुई अँगुलियाँ आपस में मिलकर बलशाली सोम को पकड़ती हैं और उसे स्वच्छ (शुद्ध) करती हैं॥७॥

परि दिव्यानि मर्मृशद्विश्वानि सोम पार्थिवा ।
वसूनि याह्यस्मयुः ॥८॥

हे दिव्य सोमदेव ! सम्पूर्ण पृथिवीं का ऐश्वर्य लेकर आप हमारे पास पधारें॥८॥

सूक्त १५

ऋषिः काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – गायत्री

एष धिया यात्यण्व्या शूरो रथेभिराशुभिः ।
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥१॥

अंगुलियों से निचोड़ा गया शक्तिशाली यह सोम तीव्र गतिशील रथ से विवेकपूर्वक इन्द्रदेव के निकट पहुँच जाता है॥१॥

एष पुरू धियायते बृहते देवतातये ।
यत्रामृतास आसते ॥२॥

देवों से अधिष्ठित, श्रेष्ठ, यह सोम यज्ञ-स्थल में असंख्यों कर्म सम्पन्न करने की अभिलाषा रखता है॥२॥

एष हितो वि नीयतेऽन्तः शुभ्रावता पथा ।
यदी तुञ्जन्ति भूर्णयः ॥३॥

हविष्यान्न के रूप में प्रयुक्त यह सोम यज्ञस्थल पर ले जाया जाता है, जहाँ से अध्वर्युगण उसे शुद्ध करते हुए देवताओं को समर्पित करते हैं॥३॥

एष शृङ्गाणि दोधुवच्छिशीते यूथ्यो वृषा ।
नृम्णा दधान ओजसा ॥४॥

ऐश्वर्यवान् यह सोम अपनी सामर्थ्य को उसी प्रकार प्रकट करता है, जिस प्रकार बलशाली वृषभ पशुओं के मध्य अपनी शक्ति को प्रकट करता हैं॥४॥

एष रुक्मिभिरीयते वाजी शुभ्रेभिरंशुभिः ।
पतिः सिन्धूनां भवन् ॥५॥

श्वेत रश्मियों से युक्त, रसों का अधिपति, प्रवहमान, शक्तिशाली सोम वेग से प्रवाहित होकर उपासकों के पास पहुँचता है॥५॥

एष वसूनि पिब्दना परुषा ययिवाँ अति ।
अव शादेषु गच्छति ॥६॥

अपनी सामर्थ्य से निठल्ले दुष्टों को पीड़ित करता हुआ, यह सोम, उन्हें मर्यादित रखता है और हिंसकों का विनाश कर देता है॥६॥

एतं मृजन्ति मर्ज्यमुप द्रोणेष्वायवः ।
प्रचक्राणं महीरिषः ॥७॥

रसयुक्त (पोषक) अन्नों से उत्पत्तिकारक, शोधित होने योग्य सोम को त्विग्गण संस्कारित करके कलशों में एकत्रित करते हैं॥७॥

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सप्त धीतयः ।
स्वायुधं मदिन्तमम् ॥८॥

श्रेष्ठ, आनन्ददायी शक्ति को शरण करने वाला हरिताभ सोम, दसों अँगुलियों एवं सप्तऋत्विजों द्वारा निचोड़ा जाकर शोधित किया जाता है॥८॥

सूक्त १६

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र ते सोतार ओण्यो रसं मदाय घृष्वये ।
सर्गो न तक्त्येतशः ॥१॥

हे सोमदेव ! याज्ञिकज़न द्युलोक और पृथिवी लोक के मध्य में शत्रुओं के संहार के उद्देश्य से उत्साह बढ़ाने के लिए आपका रस निकालते हैं॥१॥

क्रत्वा दक्षस्य रथ्यमपो वसानमन्धसा ।
गोषामण्वेषु सश्चिम ॥२॥

अन्न की पोषक शक्ति से युक्त, बलवर्धक सोम को सत्कर्म की शक्ति प्राप्त करने हेतु जल एवं गौ के दुग्ध के साथ मिलाते हैं । उसे हमारी अँगुलियाँ धारण करती हैं॥२॥

अनप्तमप्सु दुष्टरं सोमं पवित्र आ सृज ।
पुनीहीन्द्राय पातवे ॥३॥

हे याजको ! शत्रुओं की पहुँच से बाहर, दुष्टों के आक्रमण की परिधि से दूर जल-मिश्रित सोमरस को इन्द्रदेव के पान करने हेतु छलनी से छानकर रखो॥३॥

प्र पुनानस्य चेतसा सोमः पवित्रे अर्षति ।
क्रत्वा सधस्थमासदत् ॥४॥

शोधित करने वाला याज्ञिक बुद्धिपूर्वक सोम को पवित्र करने के कार्य में लग जाता है । इस कृत्य से वह सोम (यज्ञस्थलों में) प्रतिष्ठित होता है॥४॥

प्र त्वा नमोभिरिन्दव इन्द्र सोमा असृक्षत ।
महे भराय कारिणः ॥५॥

हे इन्द्रदेव ! सोम आपको विनयपूर्वक प्राप्त होता है । यह सोम आपको संग्राम में शत्रुहनन के कार्य में समर्थ बनाता है॥५॥

पुनानो रूपे अव्यये विश्वा अर्षन्नभि श्रियः ।

शूरो न गोषु तिष्ठति ॥६॥

जिस प्रकार शूर पुरुष अश्व के साथ सुशोभित होते हैं, उसी प्रकार शोधित सोमरस (गौ-दुग्ध में) सुशोभित होता है॥६॥

दिवो न सानु पिप्युषी धारा सुतस्य वेधसः ।
वृथा पवित्रे अर्षति ॥७॥

जिस प्रकार आकाश की जलधारा पर्वत के शिखर पर पड़ती हैं, उसी प्रकार पवित्र-सोम की धारा शोधित होते समय अनायास ही पात्र में गिरती है॥७॥

त्वं सोम विपश्चितं तना पुनान आयुषु ।
अव्यो वारं वि धावसि ॥८॥

हे सोमदेव ! समस्त मनुष्यों में जो आपकी स्तुति करते हैं, उनका आप संरक्षण करते हैं । आप स्वयं शोधन के लिए अनश्वर छलनी में वेगपूर्वक जाते हैं॥८॥

सूक्त १७

ऋषिः काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – गायत्री

प्र निम्नेनेव सिन्धवो घ्नन्तो वृत्राणि भूर्णयः ।
सोमा असृग्रमाशवः ॥१॥

जैसे नदियों का प्रवाह नीचे की ओर होता है, उसी प्रकार दुष्टों का संहारक, शीघ्रगामी सोमरस वेगपूर्वक छलनी से नीचे की ओर प्रवाहित होता है॥१॥

अभि सुवानास इन्दवो वृष्टयः पृथिवीमिव ।
इन्द्रं सोमासो अक्षरन् ॥२॥

पृथ्वी पर होने वाली वर्षा की भाँति शोधित सोमरस इन्द्रदेव के पास जाता है॥२॥

अत्यूर्मिर्मत्सरो मदः सोमः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नन्रक्षांसि देवयुः ॥३॥

उत्साहवर्द्धक, आनन्ददायी, स्फूर्तिदायक सोमरस राक्षसों (विकारों) का संहार करते हुए देवगणों के पास जाने के उद्देश्य से छलनी में जाता है॥३॥

आ कलशेषु धावति पवित्रे परि षिच्यते ।
उक्थैर्यज्ञेषु वर्धते ॥४॥

यह सोमरस छलनी में छाने जाते समय कलशों में एकत्रित होता है और यज्ञ के स्तोत्रों से वृद्धि को प्राप्त करता है॥४॥

अति त्री सोम रोचना रोहन्न भ्राजसे दिवम् ।
इष्णन्त्सूर्यं न चोदयः ॥५॥

हे सोमदेव ! आप तीनों लोकों में सबसे ऊपर रहकर द्युलोक को प्रकाशित करते हैं तथा अपनी इच्छानुसार सूर्यदेव को भी प्रेरित करते हैं॥५॥

अभि विप्रा अनूषत मूर्धन्यज्ञस्य कारवः ।
दधानाश्चक्षसि प्रियम् ॥६॥

सोमरस के प्रति प्रीतियुक्त भाव रखने वाले कर्मनिष्ठ याज्ञिक विद्वज्जन यज्ञस्थल के मुख्य भाग में बैठकर यज्ञ करते हैं॥६॥

तमु त्वा वाजिनं नरो धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।
मृजन्ति देवतातये ॥७॥

अपने संरक्षण की कामना वाले ज्ञानी जन बुद्धियुक्त कर्मों से अन्नयुक्त सोम को यज्ञार्थ शोधित करते हैं॥७॥

मधोर्धारामनु क्षर तीव्रः सधस्थमासदः ।
चारुर्ऋताय पीतये ॥८॥

हे सोमदेव ! आप शोधन स्थल पर मधुर रस की धार के रूप में वेगपूर्वक पात्र में एकत्रित हों । आप देवगणों के पान करने के लिए तथा यज्ञ हेतु प्रवाहित हों॥८॥

सूक्त १८

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

परि सुवानो गिरिष्ठाः पवित्रे सोमो अक्षाः ।
मदेषु सर्वधा असि ॥१॥

यह सोमरस पवित्र कलश में निकाला गया है । हे सोमदेव ! आप पर्वत पर उत्पन्न होने वाले हैं, रस निकाले जाने पर आनन्द देने वालों में आप सबसे श्रेष्ठ॥१॥

त्वं विप्रस्त्वं कविर्मधु प्र जातमन्धसः ।
मदेषु सर्वधा असि ॥२॥

हे सोमदेव ! आप ज्ञानवान् हैं, दूरदर्शी हैं तथा अन्न से उत्पन्न हुए पोषक तत्वों को देने वाले हैं । आनन्दप्रद रसों में आपका स्थान सर्वोत्तम है॥२॥

तव विश्वे सजोषसो देवासः पीतिमाशत ।
मदेषु सर्वधा असि ॥३॥

हे सोमदेव ! संगठन शक्ति से क्रियाशील सभी देवता आपके रस का सेवन करने की कामना करते हैं। आनन्द प्रदाताओं में आप ही सर्वोत्कृष्ट हैं॥३॥

आ यो विश्वानि वार्या वसूनि हस्तयोर्दधे ।
मदेषु सर्वधा असि ॥४॥

हर प्रकार का ऐश्वर्य हस्तगत करने वाले जो सोमदेव हैं, वे पदार्थों में सभी प्रकार के आनन्द स्थापित करने वाले हैं॥४॥

य इमे रोदसी मही सं मातरेव दोहते ।
मदेषु सर्वधा असि ॥५॥

जो सोम माता के समान द्युतथा पृथ्वी दोनों लोकों को पुत्रवत् सुख प्रदान करता हैं । वह सोम आनन्द देने वालों में भी विशेष आनन्द प्रदायक है॥५॥

परि यो रोदसी उभे सद्यो वाजेभिरर्षति ।

मदेषु सर्वधा असि ॥६॥

जो सोम द्‌यु तथा पृथिवी दोनों लोकों को सदैव अन्न से परिपूर्ण रखता है, वह श्रेष्ठ आनन्ददायी है॥६॥

स शुष्मी कलशेष्वा पुनानो अचिक्रदत् ।
मदेषु सर्वधा असि ॥७॥

जो सोमबल बढ़ाने वाला है तथा शोधित होते समय कलश में शब्दनाद करता हुआ प्रवाहित होता है, वह आनन्द प्रदान करने वाले पदार्थों में सर्वाधिक आनन्दप्रद है॥७॥

सूक्त १९

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

यत्सोम चित्रमुक्थ्यं दिव्यं पार्थिवं वसु ।
तन्नः पुनान आ भर ॥१॥

पवित्रता को प्राप्त होने वाले हे दिव्य सोमदेव ! इस पृथ्वी पर जो भी अद्‌भुत प्रशंसनीय दिव्य वैभव है, वह सब आप हमें प्रदान करें॥१॥

युवं हि स्थः स्वर्पती इन्द्रश्च सोम गोपती ।
ईशाना पिप्यतं धियः ॥२॥

गौओं के स्वामी ऐश्वर्यशाली हे सोम और इन्द्रदेव ! आप दोनों निश्चित रूप से इस जगत् के रक्षक है। हम सबकी बुद्धि को श्रेष्ठ मार्ग पर नियोजित करें॥२॥

वृषा पुनान आयुषु स्तनयन्नधि बर्हिषि ।
हरिः सन्योनिमासदत् ॥३॥

याजकों के जीवन को पवित्र करने वाले हे हरिताभ सोमदेव ! शब्दायमान होते हुए आप अपने आसन पर स्थिर हों॥३॥

अवावशन्त धीतयो वृषभस्याधि रेतसि ।
सूनोर्वत्सस्य मातरः ॥४॥

पुत्र की इच्छा करने वाली माताओं की भाँति धारण करने वाली (भूमि-वनस्पतियाँ-काया आदि), बलशाली सोम के उत्पादक तेजस् की इच्छा करती हैं॥४॥

कुविद्वृषण्यन्तीभ्यः पुनानो गर्भमादधत् ।
याः शुक्रं दुहते पयः ॥५॥

जो पवित्र-तेजस्वी पय (जल या सारतत्त्व) का दोहन करती हैं (ऐसी भूमि, वनस्पतियाँ आदि) अन्तरिक्षीय वृष्टि की कामना करने वाली (प्रकृति) में, पवित्र होता हुआ यह सोम गर्भ (उर्वरता या तेज) की स्थापना करता है॥५॥

उप शिक्षापतस्थुषो भियसमा धेहि शत्रुषु ।
पवमान विदा रयिम् ॥६॥

हे सोमदेव ! हमसे दूर रहने वाले मित्रों को आप हमारे पास लाएँ । हमारे शत्रुओं को भयभीत करें तथा हमें धन प्रदान करें॥६॥

नि शत्रोः सोम वृष्ण्यं नि शुष्मं नि वयस्तिर ।
दूरे वा सतो अन्ति वा ॥७॥

हे सोम ! आप हमारे समीप तथा दूर के सभी शत्रुओं की सामर्थ्य, उनका तेज तथा उनके अन्न को नष्ट करें॥७॥

सूक्त २०

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र कविर्देववीतयेऽव्यो वारेभिरर्षति ।
साह्वान्विश्वा अभि स्पृधः ॥१॥

देवताओं को प्रदान करने के लिए यह ज्ञानवर्धक सम उत्तम रीति से संस्कारित किया जाता है । विकारनाशक यह सभी शत्रुओं को परास्त करता है॥१॥

स हि ष्मा जरितृभ्य आ वाजं गोमन्तमिन्वति ।
पवमानः सहस्रिणम् ॥२॥

परिशुद्ध यह दिव्य सोम, स्तुति करने वाले याजकों को धन-धान्य प्रदान करके सन्तुष्ट करता है॥२॥

परि विश्वानि चेतसा मृशसे पवसे मती ।
स नः सोम श्रवो विदः ॥३॥

हे संस्कारित हुए वन्दनीय सोमदेव ! आप में विचारपूर्वक अन्न के भण्डार प्रदान करें॥३॥

अभ्यर्ष बृहद्यशो मघवद्भ्यो ध्रुवं रयिम् ।
इषं स्तोतृभ्य आ भर ॥४॥

हे दिव्य सोमदेव ! स्तुति करने वाले धनवान् साधकों के लिए भी आप महान् यश, स्थायी निधि एवं अन्न के भण्डार प्रदान करें॥४॥

त्वं राजेव सुव्रतो गिरः सोमा विवेशिथ ।
पुनानो वह्ने अद्भुत ॥५॥

सत्कर्म में निरत, सद्भावनासम्पन्न, पवित्र हृदय वाले स्वामी के समान हे दिव्य सोमदेव ! आप याजकों द्वारा प्रस्तुतं श्रेष्ठ वचनों (स्तुतियों) को स्वीकार करें॥५॥

स वह्निरप्सु दुष्टरो मृज्यमानो गभस्त्योः ।
सोमश्चमूषु सीदति ॥६॥

यज्ञ सम्पन्न कराने वाला, हथेलियों की सहायता से शुद्ध किया जाता हुआ, जल-मिश्रित सोम पात्र में स्थिर होता है॥६॥

क्रीळुर्मखो न मंहयुः पवित्रं सोम गच्छसि ।
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥७॥

यज्ञ की भाँति निरन्तर परमार्थ में निरत होकर क्रीड़ा करने वाले हे सोमदेव ! आप स्तोताओं को शौर्य-पराक्रम प्रदान करते हुए शुद्धता को प्राप्त होते हैं॥७॥

सूक्त २१

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

एते धावन्तीन्दवः सोमा इन्द्राय घृष्वयः ।
मत्सरासः स्वर्विदः ॥१॥

यह तेजस्वी सोम इन्द्रदेव के पास आनन्द बढ़ाने, ज्ञान देने तथा युद्ध की प्रेरणा देने के लिए गमन करता है॥१॥

प्रवृण्वन्तो अभियुजः सुष्वये वरिवोविदः ।
स्वयं स्तोत्रे वयस्कृतः ॥२॥

यह सोमरस स्तोताओं को धन-धान्य से पूर्ण करने वाला तथा शोधित करने वालों की विशेष प्रकार से उपयोगी सहायता करने वाला है॥२॥

वृथा क्रीळन्त इन्दवः सधस्थमभ्येकमित् ।
सिन्धोरूर्मा व्यक्षरन् ॥३॥

यह सोमरस सहज रूप से पात्र में रखे हुए, नदी के जल में क्रीड़ा करने जैसा गिरकर एकत्रित होता है॥३॥

एते विश्वानि वार्या पवमानास आशत ।
हिता न सप्तयो रथे ॥४॥

रथ में जुड़े घोड़े के समान यह शोधित सोमरस स्वीकार करने योग्य समस्त (अभीष्ट) धन प्रदान करता है॥४॥

आस्मिन्पिशङ्गमिन्दवो दधाता वेनमादिशे ।
यो अस्मभ्यमरावा ॥५॥

हे सोमदेव ! जो याज्ञिक अपने धन को दान (सत्कार्यों के लिए नियोजन) करता है, उसे हर प्रकार का धन इस उद्देश्य के लिए प्रदान करें॥५॥

ऋभुर्न रथ्यं नवं दधाता केतमादिशे ।
शुक्राः पवध्वमर्णसा ॥६॥

हे सोमदेव ! ऋभुगण जिस प्रकार रथ चलाने के लिए नवीन उत्तम सारथी को नियुक्त करते हैं, उसी प्रकार आप हमें यज्ञ कार्य के लिए नियुक्त करें । शोधित सोमरस (यज्ञ में उपयोग के लिए) जल के साथ पवित्र हो॥६॥

एत उ त्ये अवीवशन्काष्ठां वाजिनो अक्रत ।
सतः प्रासाविषुर्मतिम् ॥७॥

यज्ञ की कामना करने वाला यह बलवान् सोम यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठित होता है । वह याज्ञिक की बुद्धि को यज्ञ करने की प्रेरणा देता है॥७॥

सूक्त २२

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

एते सोमास आशवो रथा इव प्र वाजिनः ।
सर्गाः सृष्टा अहेषत ॥१॥

यह सोम शोधित होते समय छलनी द्वारा, रथ की भाँति अथवा अश्वों की भाँति शब्दनाद करता हुआ द्रुतगति से नीचे की ओर (अन्तरिक्ष से भूमि की ओर) गमन करता है॥१॥

एते वाता इवोरवः पर्जन्यस्येव वृष्टयः ।
अग्नेरिव भ्रमा वृथा ॥२॥

यह सोम पर्जन्य की वर्षा के समान तथा अग्नि की ज्वालाओं के समान वायु वेग से गमन करता है॥२॥

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
विपा व्यानशुर्धियः ॥३॥

इस शोधित सोमरस को ज्ञानवर्धक दही के साथ मिलाया गया है, जो विशेष रूप से ज्ञान प्रदायक होकर बुद्धिमत्ता पूर्ण किए जा रहे यज्ञकर्म में पहुँचता है॥३॥

एते मृष्टा अमर्त्याः ससृवांसो न शश्रमुः ।
इयक्षन्तः पथो रजः ॥४॥

यह पवित्र तथा अमृत के समान शोधित सोमरस, शोधन के समय शोधक यंत्र से नीचे (कलश या भूमण्डल) की ओर सतत प्रवाहित होता है, (फिर भी) थकता नहीं है॥४॥

एते पृष्ठानि रोदसोर्विप्रयन्तो व्यानशुः ।
उतेदमुत्तमं रजः ॥५॥

यह सोमरस स्वर्गलोक तथा पृथिवीलोक के पृष्ठ भाग (गुह्य या अंतिम भागों) तक विविध प्रकार से गमन करता है और विस्तार पाता है । यह उत्तम सोमरस द्युलोक में भी प्राप्त होता है॥५॥

तन्तुं तन्वानमुत्तममनु प्रवत आशत ।

उतेदमुत्तमाय्यम् ॥६॥

यज्ञ का विस्तार करने वाले उत्कृष्ट सोम को नदियों के जल में मिश्रित किया जाता है । वही सोम श्रेष्ठ यज्ञ को पूर्णता तक पहुँचाता है॥६॥

त्वं सोम पणिभ्य आ वसु गव्यानि धारयः ।
ततं तन्तुमचिक्रदः ॥७॥

हे सोमदेव ! आप पणिजनों (गौओं को रखने वालों तथा व्यापार करने वालों) से दूध, दही तथा घृत आदि पदार्थ प्राप्त कर यज्ञस्थल में प्रतिष्ठित करते हैं। आप यज्ञ को पूर्ण कर इसकी कीर्ति का विस्तार करें॥७॥

सूक्त २३

ऋषि: काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

सोमा असृग्रमाशवो मधोर्मदस्य धारया ।
अभि विश्वानि काव्या ॥१॥

स्तोताओं द्वारा अनेक प्रकार के स्तोत्रों से स्तुति करते हुए मधुर रस की धारा के रूप में द्रुतगति से सोमरस निकाला जाता है॥१॥

अनु प्रत्नास आयवः पदं नवीयो अक्रमुः ।
रुचे जनन्त सूर्यम् ॥२॥

अति पुरातन (शाश्वत) सतत आवागमनशील (सोमदेव) नये-नये पद (चरण-स्वरूप प्राप्त करते हैं। प्रकाश के लिए सूर्य को उत्पन्न करते हैं॥२॥

आ पवमान नो भरार्यो अदाशुषो गयम् ।
कृधि प्रजावतीरिषः ॥३॥

हे सोमदेव ! आप शत्रुओं के समान अनुदार लोगों का धन तथा प्रजायुक्त अन्न हमें प्रदान करें॥३॥

अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥४॥

शोधित होने वाला सोमरस आनन्दवर्धक है । इस मधुर रस को पात्र में एकत्रित करते हैं॥४॥

सोमो अर्षति धर्णसिर्दधान इन्द्रियं रसम् ।
सुवीरो अभिशस्तिपाः ॥५॥

सर्वोत्तम बलशाली, हर प्रकार के दुःखों से बचाने वाला, इन्द्रियों की शक्ति को बढ़ाने वाला, धारणा शक्ति से युक्त यह सोमरस पात्र में एकत्रित होता हैं॥५॥

इन्द्राय सोम पवसे देवेभ्यः सधमाद्यः ।
इन्दो वाजं सिषाससि ॥६॥

हे सोमदेव ! आप यज्ञ के उपयुक्त हैं। इन्द्रदेव तथा अन्य सभी देवगणों के निमित्त ही आपके रस को निकाला जाता है । आप हमारे लिए अन्न देने वाले हैं॥६॥

अस्य पीत्वा मदानामिन्द्रो वृत्राण्यप्रति ।
जघान जघनच्च नु ॥७॥

आनन्ददायी, उत्साहवर्द्धक इस सोमरस का पान करके अजेय इन्द्रदेव ने चारों ओर से घेरने वाले शत्रुओं को नष्ट किया तथा (वे इन्द्रदेव) आगे भी नष्ट करते रहें॥७॥

सूक्त २४

ऋषिः काश्यपोऽसितो देवलो ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – गायत्री

प्र सोमासो अधन्विषुः पवमानास इन्दवः ।
श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥१॥

दुग्ध आदि पोषक तत्वों से युक्त शीतल सोमरस पवित्र होते समय जल के साथ नीचे रखे हुए पात्र में एकत्रित हो रहा है॥१॥

अभि गावो अधन्विषुरापो न प्रवता यतीः ।
पुनाना इन्द्रमाशत ॥२॥

शुद्धता को प्राप्त होने वाला सोमरस अधः पात्र (नीचे के बर्तन) में पहुँचकर स्थिर हो रहा है । देवराज इन्द्र इस पवित्र रस का पान करते हैं॥२॥

प्र पवमान धन्वसि सोमेन्द्राय पातवे ।
नृभिर्यतो वि नीयसे ॥३॥

इन्द्रदेव का उत्साहवर्द्धन करने वाले है पवित्र सोमदेव ! शुद्धिकरण की प्रक्रिया के बाद आप अत्विजों (याजकों) द्वारा यज्ञवेदी पर पहुँचाए जाते हैं॥३॥

त्वं सोम नृमादनः पवस्व चर्षणीसहे ।
सस्निर्यो अनुमाद्यः ॥४॥

प्रशंसा के योग्य हे संस्कारित सोमदेव ! मानवमात्र के आनन्द को बढ़ाने वाले, याजकों के द्वारा धारण किए गये, आप पवित्रता को प्राप्त करें॥४॥

इन्दो यदद्रिभिः सुतः पवित्रं परिधावसि ।
अरमिन्द्रस्य धाम्ने ॥५॥

हे सोमदेव ! पत्थरों से कुचलकर निकालने के बाद आपको छन्ने द्वारा शुद्ध किया जाता है, तब आप इन्द्रदेव के पीने योग्य होते हैं॥५॥

पवस्व वृत्रहन्तमोक्थेभिरनुमाद्यः ।
शुचिः पावको अद्भुतः ॥६॥

आश्चर्यजनक रीति से शत्रुओं का विनाश करने वाले, श्रेष्ठ वचनों द्वारा वन्दना करने योग्य हे सोमदेव ! आप शुद्धता और पवित्रता को प्राप्त करें॥६॥

शुचिः पावक उच्यते सोमः सुतस्य मध्वः ।
देवावीरघशंसहा ॥७॥

विधिपूर्वक तैयार किया गया शुद्ध, संस्कारित और पवित्र सोमरस देवताओं को तृप्ति देने वाला एवं दुष्टों का विनाश करने वाला (विकारों का शमन करने वाला) कहा गया है॥७॥

सूक्त २५

ऋषि: हल्हच्युत आगस्त्य: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

पवस्व दक्षसाधनो देवेभ्यः पीतये हरे ।
मरुद्भ्यो वायवे मदः ॥१॥

हे हरिताभ सोमदेव ! आप हर्ष और शक्ति के साधनभूत हैं। देवों और मरुतों के पीने के निमित्त कलश में स्थित हों ॥१॥

पवमान धिया हितोऽभि योनिं कनिक्रदत् ।
धर्मणा वायुमा विश ॥२॥

भली-भाँति विचारपूर्वक स्थापित किए गए, हे संस्कारित सोमदेव ! आप अपने स्वाभाविक गुणों से वायु के साथ संयुक्त होकर कलश में प्रतिष्ठित हों॥२॥

सं देवैः शोभते वृषा कविर्योनावधि प्रियः ।
वृत्रहा देववीतमः ॥३॥

ज्ञान और बल से सम्पन्न शुद्ध, संस्कारित होने के कारण सभी को परम प्रिय, किसी के बन्धन में न रहने वाले सोमदेव, देवताओं के मध्य सुशोभित हो रहे हैं॥३॥

विश्वा रूपाण्याविशन्पुनानो याति हर्यतः ।
यत्रामृतास आसते ॥४॥

यह पवित्र सोम सभी रूपों में प्रविष्ट होकर जहाँ देवगण रहते हैं, उनके पास सुशोभित होकर जाता हैं॥४॥

अरुषो जनयन्गिरः सोमः पवत आयुषक् ।
इन्द्रं गच्छन्कविक्रतुः ॥५॥

यह मेधावी सोमरस प्रीतिपूर्वक इन्द्रदेव के पास जाता है । यह तेजस्वी सोम शोधित होते समय शब्दनाद करता है । ॥५॥

आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे ।
अर्कस्य योनिमासदम् ॥६॥

आनन्द प्रदान करने वाले कान्तिमान् हे सोमदेव ! पूजा के योग्य इन्द्रदेव के आश्रय को प्राप्त करने के लिए आप धारा रूप से शोधित होकर पवित्र बनें॥६॥

सूक्त २८

ऋषि: इष्मवाहो दाढच्युत।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

तममृक्षन्त वाजिनमुपस्थे अदितेरधि ।
विप्रासो अण्व्या धिया ॥१॥

विद्वज्जन अपनी सूक्ष्म बुद्धि से उस बलशाली सोम को अदिति की गोद में (अखण्ड प्रकृति या यज्ञ क्षेत्र में) उत्तम विधि से पवित्र बनाते हैं॥१॥

तं गावो अभ्यनूषत सहस्रधारमक्षितम् ।
इन्दुं धर्तारमा दिवः ॥२॥

सूर्यादि लोकों को धारण करने वाले, कभी भी क्षीण न होने वाले, हजारों धाराओं से स्रवित होने वाले सोमदेव की, हम उत्तम स्तोत्रों द्वारा स्तुति करते हैं॥२॥

तं वेधां मेधयाह्यन्पवमानमधि द्यवि ।
धर्णसिं भूरिधायसम् ॥३॥

सबके आधार, सभी के धारणकर्ता तथा सभी के आश्रयदाता उन सोमदेव को (याज्ञिक जन) अपनी मेधाशक्ति से द्युलोक के पास अर्थात् उच्च स्थान पर प्रतिष्ठित करते हैं॥३॥

तमह्यन्भुरिजोर्धिया संवसानं विवस्वतः ।
पतिं वाचो अदाभ्यम् ॥४॥

वाणी के अधिष्ठाता, अविनाशी सोम को याज्ञिक जन अपने हाथों में धारण करके यज्ञस्थल तक ले जाते हैं॥४॥

तं सानावधि जामयो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
हर्यतं भूरिचक्षसम् ॥५॥

याजकगण उच्चस्थान पर स्थित हरिताभ सोम को पत्थरों से कूटकर दसों अँगुलियों से रस निकालते हैं॥५॥

तं त्वा हिन्वन्ति वेधसः पवमान गिरावृधम् ।
इन्दविन्द्राय मत्सरम् ॥६॥

हे सोमदेव ! स्तोत्रों द्वारा स्तुति किये जाने पर प्रशंसित होने वाले इन्द्रदेव को आनन्द प्रदान करने हेतु ज्ञानीजन आपको प्रेरित करते हैं॥६॥

सूक्त २७

ऋषिः नृमेध् अंगिरसः ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – गायत्री

एष कविरभिष्टुतः पवित्रे अधि तोशते ।
पुनानो घ्नन्नप स्रिधः ॥१॥

ज्ञानियों और कवियों के द्वारा स्तुत्य, शोधित, विकारनाशक यह सोम तृप्ति प्रदान करने वाला है॥१॥

एष इन्द्राय वायवे स्वर्जित्परि षिच्यते ।
पवित्रे दक्षसाधनः ॥२॥

शक्तिवर्धक एवं स्वर्गीय सुख को अपने अधिकार में रखने वाला दिव्य सोम अन्तरिक्ष से छनकर इन्द्रदेव (मेघों) और वायु के निमित्त नीचे आता है॥२॥

एष नृभिर्वि नीयते दिवो मूर्धा वृषा सुतः ।
सोमो वनेषु विश्ववित् ॥३॥

यह द्युलोक के उच्च भाग से वर्षणशील-बलवान् सोम वनों में सभी (वनस्पति आदि) का ज्ञाता है, अभिषुत होकर यह अग्रणी मनुष्यों द्वारा (यज्ञादि में) लाया जाता है॥३॥

एष गव्युरचिक्रदत्पवमानो हिरण्ययुः ।
इन्दुः सत्राजिदस्तृतः ॥४॥

द्युलोक में प्रतिष्ठित, शक्तिवर्द्धक, रसरूप, विश्वज्ञाता यह सोम वनों (वृक्ष-वनस्पतियों) के माध्यम से मनुष्यों द्वारा प्रयुक्त किया जाता है॥४॥

एष सूर्येण हासते पवमानो अधि द्यवि ।
पवित्रे मत्सरो मदः ॥५॥

यह पवित्र सोम आनन्द प्रदान करने वाला तथा प्रसन्नतादायी हैं । सूर्यदेव के द्वारा इसे द्युलोक की शोधक छलनी (अंतरिक्षीय शोधन प्रणाली) में स्थापित किया जाता है॥५॥

एष शुष्म्यसिष्यदन्तरिक्षे वृषा हरिः ।
पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥६॥

यह अन्तरिक्ष से वर्षणशील-बलवर्द्धक हरि (हरे रंग का या विकारनाशक) सोम नीचे आता हुआ, पवित्र होता हुआ इन्द्रदेव को प्रदान किया जाता है॥६॥

सूक्त २८

ऋषि: प्रियमेध् अंगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

एष वाजी हितो नृभिर्विश्वविन्मनसस्पतिः ।
अव्यो वारं वि धावति ॥१॥

सर्वज्ञाता, मन का अधिपति, बलशाली सोम यज्ञकर्ताओं द्वारा शुद्ध होकर कलश में प्रतिष्ठित होता है॥१॥

एष पवित्रे अक्षरत्सोमो देवेभ्यः सुतः ।
विश्वा धामान्याविशन् ॥२॥

देवों के निमित्त निष्पन्न हुआ यह सोम शुद्ध होकर देवों के शरीरों में संव्याप्त हो जाता है॥२॥

एष देवः शुभायतेऽधि योनावमर्त्यः ।
वृत्रहा देववीतमः ॥३॥

देवों को अतिप्रिय, देवत्व को बढ़ाने वाला, अविनाशी, शत्रुसंहारक सोम, कलश में शोभायमान होता है॥३॥

एष वृषा कनिक्रदद्दशभिर्जामिभिर्यतः ।
अभि द्रोणानि धावति ॥४॥

दसों अंगुलियों द्वारा निचोड़ा गया बलवर्द्धक यह सोम, शब्द करता हुआ कलश में पहुँचता है॥४॥

एष सूर्यमरोचयत्पवमानो विचर्षणिः ।
विश्वा धामानि विश्ववित् ॥५॥

सबका द्रष्टा यह सोमरस समस्त विश्व का ज्ञाता है । यह सोम समस्त यज्ञ स्थानों (श्रेष्ठ कर्मो) तथा सूर्यदेव को भी प्रकाशित करता हैं॥५॥

एष शुष्म्यदाभ्यः सोमः पुनानो अर्षति ।
देवावीरघशंसहा ॥६॥

देवताओं के रक्षक, पापियों के संहारक, नष्ट न होने वाले , शोधित हुए, बलयुक्त सोमदेव, कलश में पहुँचते हैं॥६॥

सूक्त २९

ऋषि: नृमेध् अंगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्रास्य धारा अक्षरन्वृष्णः सुतस्यौजसा ।
देवाँ अनु प्रभूषतः ॥१॥

सोमरस की बल बढ़ाने वाली तथा देवों पर अपना अनुकूल प्रभाव डालने वाली, प्रभावकारी धाराएँ वेगपूर्वक (कलश) पात्र में एकत्रित होने लग गईं हैं॥१॥

सप्तिं मृजन्ति वेधसो गृणन्तः कारवो गिरा ।
ज्योतिर्जज्ञानमुक्थ्यम् ॥२॥

देदीप्यमान, स्तुत्य, अश्व के समान वेगवान् सोम को मेधावी अध्वर्युगण अपनी वाणी रूप स्तुतियों द्वारा शुद्ध कर रहे हैं॥२॥

सुषहा सोम तानि ते पुनानाय प्रभूवसो ।
वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ॥३॥

हे सम्पत्तिशाली और स्तुत्य सोमदेव ! पवित्र होने वाले आप, अपने प्रचण्ड पराक्रम से रक्षा करने वाले हैं । समुद्र के समान (आप अपने दिव्य रसों से) इस पात्र को पूर्ण कर दें॥३॥

विश्वा वसूनि संजयन्पवस्व सोम धारया ।
इनु द्वेषांसि सध्र्यक् ॥४॥

हे सोमदेव ! समस्त धन को जीतते हुए आप शुद्ध हों तथा हमारे सभी शत्रुओं को हमसे दूर भगाएँ ।॥ ४॥

रक्षा सु नो अररुषः स्वनात्समस्य कस्य चित् ।
निदो यत्र मुमुच्महे ॥५॥

हे सोमदेव ! अनुदार लोगों एवं उनके ही समान अन्य शत्रुओं तथा निन्दा करने वालों से, भली प्रकार से हमारी रक्षा करें, ताकि हम शत्रुओं से मुक्त हो जाएँ॥५॥

एन्दो पार्थिवं रयिं दिव्यं पवस्व धारया ।
दयुमन्तं शुष्ममा भर ॥६॥

हे सोमदेव ! पृथिवीं पर अपनी धारा से रस प्रवाहित करते हुए आप हर प्रकार का दिव्य धन प्रदान करें तथा तेजोयुक्त बल भी हमें दें॥६॥

सूक्त ३०

ऋषि: बिंदुरांगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र धारा अस्य शुष्मिणो वृथा पवित्रे अक्षरन् ।
पुनानो वाचमिष्यति ॥१॥

स्तुति सुनने की कामना से बलशाली सोम की धाराएँ छलनी से पवित्र होने के लिए प्रवाहित होती हैं॥१॥

इन्दुर्हियानः सोतृभिर्मृज्यमानः कनिक्रदत् ।
इयर्ति वग्नुमिन्द्रियम् ॥२॥

शोधित करने वाले याज्ञिकों द्वारा प्रेरित किया गया यह सोमरस शोधित होते समय शब्दनाद करता है और (याज्ञिकों की) इन्द्रियों को यज्ञ कार्य (सत्कर्म करने के लिए प्रेरित करता है॥२॥

आ नः शुष्मं नृषाह्यं वीरवन्तं पुरुस्पृहम् ।
पवस्व सोम धारया ॥३॥

हे सोमदेव ! पवित्र धाराओं से प्रवाहित होते हुए आप शत्रुओं का विनाश करने वाला, शौर्यवर्द्धक तथा सभी के द्वारा पूज्य बल हमें प्रदान करें॥३॥

प्र सोमो अति धारया पवमानो असिष्यदत् ।
अभि द्रोणान्यासदम् ॥४॥

यह पवित्र सोमरस पात्र में स्थापित होने के लिए धारा रूप में प्रवाहित होता है॥४॥

अप्सु त्वा मधुमत्तमं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दविन्द्राय पीतये ॥५॥

हरिताभ, अत्यन्त मधुर, जल में मिश्रित, सोमरस को पत्थरों से कूटकर तैयार करते हैं । उसे इन्द्रदेव को पान करने के लिए प्रदान करते हैं॥५॥

सुनोता मधुमत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
चारुं शर्धाय मत्सरम् ॥६॥

हे याज्ञिको ! वज्रधारी इन्द्रदेव के बलवर्द्धन हेतु, आनन्दद्दायी तथा अत्यन्त मधुर सोमरस निकालो॥६॥

सूक्त ३१

ऋषि: गोतमो राहूगण: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र सोमासः स्वाध्यः पवमानासो अक्रमुः ।
रयिं कृण्वन्ति चेतनम् ॥१॥

शोधित सोमरस ज्ञानवर्द्धक तथा स्फूर्ति प्रदान करने वाला है । वह उत्तम धन प्रदायक भी है॥१॥

दिवस्पृथिव्या अधि भवेन्दो द्युम्नवर्धनः ।
भवा वाजानां पतिः ॥२॥

हे सोमदेव ! आप द्युलोक तथा पृथिवीलोक में अन्न की वृद्धि करने वाले हैं, आप बलों के संरक्षक हों॥२॥

तुभ्यं वाता अभिप्रियस्तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ।
सोम वर्धन्ति ते महः ॥३॥

हे सोमदेव ! वायु आपको तृप्त करते हुए तथा नदियाँ आपका अनुगमन करती हुई आपकी महत्ता का विस्तार कर रही हैं॥३॥

आ प्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोम वृष्ण्यम् ।
भवा वाजस्य संगथे ॥४॥

हे सोमदेव ! आपको प्रत्येक स्थान पर बल की प्राप्ति हो । आप विस्तृत होते हुए संग्राम के समय हमारे लिए अन्न प्रदान करने वाले हों॥४॥

तुभ्यं गावो घृतं पयो बभ्रो दुदुह्रे अक्षितम् ।
वर्षिष्ठे अधि सानवि ॥५॥

आपका स्थान सर्वोच्च है । हे प्रज्ञापालक सोमदेव ! गौएँ आपको कभी भी न घटने वाला दूध तथा घृत प्रदान करती हैं॥५॥

स्वायुधस्य ते सतो भुवनस्य पते वयम् ।
इन्दो सखित्वमुश्मसि ॥६॥

भुवनों के स्वामी हे सोमदेव ! हम सभी श्रेष्ठ आयुधों से युक्त होकर आपसे मित्रता की कामना करते हैं॥६॥

सूक्त ३२

ऋषि: श्यावाश्व आत्रेय:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र सोमासो मदच्युतः श्रवसे नो मघोनः ।
सुता विदथे अक्रमुः ॥१॥

आनन्ददायक सौम अभिषुत होकर हमारे यज्ञ में अन्न और यश प्रदाता बनकर स्थित होता है॥१॥

आदीं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥२॥

इस शुद्ध हरितवर्ण के सोमरस को साधक अपनी अँगुलियों से निचोड़कर इन्द्रदेव के पीने योग्य बनाते हैं॥२॥

आदीं हंसो यथा गणं विश्वस्यावीवशन्मतिम् ।
अत्यो न गोभिरज्यते ॥३॥

हंस जिस प्रकार (सहज भाव से) अपने समूह में (गतिपूर्वक) जाता है, उसी गति के साथ यह सोमरस विवेकवानों की बुद्धि को प्रभावित करता है॥३॥

उभे सोमावचाकशन्मृगो न तक्तो अर्षसि ।
सीदन्नृतस्य योनिमा ॥४॥

हे सोमदेव ! आप द्युलोक तथा पृथिवी लोक दोनों को देखते हुए हरिण के समान तेजस्वी होकर यज्ञ स्थल पर प्रतिष्ठित होते हैं॥४॥

अभि गावो अनूषत योषा जारमिव प्रियम् ।
अगन्नाजिं यथा हितम् ॥५॥

जिस प्रकार युद्ध में जाते हुए वीर योद्धा की स्तुति होती है तथा जिस प्रकार स्त्री अपने प्रियतम की स्तुति करती है, उसी प्रकार हे सोमदेव ! हम मंत्रों द्वारा आपकी स्तुति करते हैं॥५॥

अस्मे धेहि द्युमद्यशो मघवद्भ्यश्च मह्यं च ।
सनिं मेधामुत श्रवः ॥६॥

हे सोमदेव ! आप हमें तेजस्वी बनाने वाला अन्न तथा याज्ञिकों को धन, बुद्धि तथा यश प्रदान करें॥६॥

सूक्त ३३

ऋषि: त्रित आप्तय:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र सोमासो विपश्चितोऽपां न यन्त्यूर्मयः ।
वनानि महिषा इव ॥१॥

बुद्धिवर्द्धक यह सोमरस पानी की लहरों के समान तथा स्वाभाविक रूप से पशुओं के वन में जाने के समान प्रवाहित होता हैं॥१॥

अभि द्रोणानि बभ्रवः शुक्रा ऋतस्य धारया ।
वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥२॥

गौ दुग्ध रूपी अन्न के साथ भूरे रंग का यह सोमरस जल की धारा के साथ बर्तन में मिलाया जाता है॥२॥

सुता इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
सोमा अर्षन्ति विष्णवे ॥३॥

अभिषुत सोमरस इन्द्र, वायु, वरुण, मरुत् तथा विष्णु आदि देवगणों को प्राप्त हो॥३॥

तिस्रो वाच उदीरते गावो मिमन्ति धेनवः ।
हरिरेति कनिक्रदत् ॥४॥

जब तीन प्रकार के (तीन वेदों के) मंत्र बोले जाते हैं। धारक वाणियाँ (गौएँ) स्वर प्रकट करती हैं, तब यह मनोहारी हरिताभ सोम भी शब्द करता हुआ अवतरित होता है॥४॥

अभि ब्रह्मीरनूषत यह्वीर्ऋतस्य मातरः ।
मर्मृज्यन्ते दिवः शिशुम् ॥५॥

द्युलोक से उत्पन्न हुए सोम को शोधित करते समय महान् विद्वज्जनों द्वारा परमार्थ परायण बनने की प्रेरणा देने वाली ऋचाएँ बोली जाती हैं॥५॥

रायः समुद्राँश्चतुरोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्रिणः ॥६॥

हे सोमदेव ! आप सभी माध्यमों से ऐश्वर्य के चारों समुद्र हमारे लिए उपलब्ध कराने हेतु हजारों प्रकार से प्रवाहित हों॥६॥

सूक्त ३४

ऋषि: त्रित आप्तय:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र सुवानो धारया तनेन्दुर्हिन्वानो अर्षति ।
रुजदृळ्हा व्योजसा ॥१॥

अभिषुत सोमरस व्यापक बलों से युक्त होकर धारारूप से पात्र में एकत्रित होता है । वह अपनी शक्ति से शत्रु के सुदृढ़ किलों को भी ध्वस्त कर देता है॥१॥

सुत इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
सोमो अर्षति विष्णवे ॥२॥

इन्द्र, वरुण, वायु, मरुत् तथा विष्णु आदि देवों के लिए अभिषुत सोम पात्र में एकत्र होता है॥२॥

वृषाणं वृषभिर्यतं सुन्वन्ति सोममद्रिभिः ।
दुहन्ति शक्मना पयः ॥३॥

शक्ति से (दबाव देकर) दूध दुहने की भाँति बल बढ़ाने की शक्ति से युक्त सोमरस को सुदृढ़ पत्थरों से कूटकर अभिषुत किया जाता है॥३॥

भुवत्त्रितस्य मर्ज्यो भुवदिन्द्राय मत्सरः ।
सं रूपैरज्यते हरिः ॥४॥

त्रित ऋषि द्वारा शोधित हरिताभ सोमरस गौ दुग्ध के साथ मिश्रित करके इन्द्रदेव को प्रदान किया जाता है॥४॥

अभीमृतस्य विष्टपं दुहते पृश्निमातरः ।
चारु प्रियतमं हविः ॥५॥

मरुद्गण इस अत्यन्त प्रिय सुन्दर हवन के योग्य सोम का यज्ञस्थल पर रस निकालते हैं॥५॥

समेनमह्रुता इमा गिरो अर्षन्ति सस्रुतः ।
धेनूर्वाश्रो अवीवशत् ॥६॥

जिस प्रकार गौ अपने बछड़े के पास आने की कामना करती है उसी प्रकार हमारी स्तुतियाँ सोमदेव के पास जाने की कामना करती हैं॥६॥

सूक्त ३५

ऋषि: प्रभूवसुरांगिरस:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

आ नः पवस्व धारया पवमान रयिं पृथुम् ।
यया ज्योतिर्विदासि नः ॥१॥

हे सोमदेव ! आप जिस धारा से हमें तेज प्रदान करते हैं, उसी धारा से हमें अपने रस के साथ पर्याप्त धन भी प्रदान करें॥१॥

इन्दो समुद्रमीङ्खय पवस्व विश्वमेजय ।
रायो धर्ता न ओजसा ॥२॥

हे सोमदेव ! आप अपने रस में जल को मिश्रित होने के लिए प्रेरित करें। सभी शत्रुओं को भयभीत करने वाले हे सोमदेव ! आप अपनी शक्ति से हमें धनवान् बनाने वाला रस प्रदान करें॥२॥

त्वया वीरेण वीरवोऽभि ष्याम पृतन्यतः ।
क्षरा णो अभि वार्यम् ॥३॥

हे शौर्यवान् सोमदेव ! आप जैसे वीर सहयोगी के साथ रहकर हम शत्रुसेना का मुकाबला करेंगे । हमें आप वीरता प्रदान करने वाला धन प्रदान करें॥३॥

प्र वाजमिन्दुरिष्यति सिषासन्वाजसा ऋषिः ।
व्रता विदान आयुधा ॥४॥

यह अन्नयुक्त सोम द्रष्टा है तथा हमें अन्न प्रदान करता है । यह सोम आयुधों को अपने पास रखता है तथा सभी नियमों को जानता है॥४॥

तं गीर्भिर्वाचमीङ्खयं पुनानं वासयामसि ।
सोमं जनस्य गोपतिम् ॥५॥

पवित्र बनाने वाले, स्तुतियों के लिए प्रेरणा देने वाले, प्रजापालक तथा गौओं की रक्षा करने वाले सोम को हम सुरक्षित रखते हैं तथा उस सोम की हम स्तोत्रों से स्तुति करते हैं॥५॥

विश्वो यस्य व्रते जनो दाधार धर्मणस्पतेः ।
पुनानस्य प्रभूवसोः ॥६॥

सोमयज्ञ में सभी याज्ञिकों का मन लगा रहता है । शोधित किया हुआ यह सोम धर्म पालक तथा पर्याप्त धन से युक्त होता है॥६॥

सूक्त ३६

ऋषि: प्रभूवसुरांगिरस:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

असर्जि रथ्यो यथा पवित्रे चम्वोः सुतः ।
कार्ष्मन्वाजी न्यक्रमीत् ॥१॥

नियंत्रित रथ के अश्वों की तरह, निचोड़ा गया सोमरस सावधानी पूर्वक पात्र में भरा जाता है । वह बलवान् । सोम देवताओं की तरह अपनी ओर आकर्षित करने में समर्थ हैं॥१॥

स वह्निः सोम जागृविः पवस्व देववीरति ।
अभि कोशं मधुश्चुतम् ॥२॥

हे सोमदेव ! आप सामर्थ्यवान् जाग्रत् सूर्य के समान कान्तिमान् हैं, अतः मधुरता से युक्त होकर आप पात्र में शोधित हों॥२॥

स नो ज्योतींषि पूर्व्य पवमान वि रोचय ।
क्रत्वे दक्षाय नो हिनु ॥३॥

हे सनातन सोमदेव ! आप हमारे तेज का विस्तार करें तथा यज्ञ कार्य के लिए बल प्राप्ति की प्रेरणा दें॥३॥

शुम्भमान ऋतायुभिर्मृज्यमानो गभस्त्योः ।
पवते वारे अव्यये ॥४॥

याज्ञिकों से शोधित सोम भेड़ के बालों की (अविनाशी) छलनी से छाने जाने पर सुशोभित होता है॥४॥

स विश्वा दाशुषे वसु सोमो दिव्यानि पार्थिवा ।
पवतामान्तरिक्ष्या ॥५॥

वह सोम द्युलोक, पृथ्वी लोक तथा अन्तरिक्ष लोक का सम्पूर्ण वैभव याज्ञिकों को प्रदान करे॥५॥

आ दिवस्पृष्ठमश्वयुर्गव्ययुः सोम रोहसि ।
वीरयुः शवसस्पते ॥६॥

हे अन्नदाता सोम ! आप अश्वों, गौओं तथा वीरपुत्रों की इच्छा करते हुए द्युलोक के ऊपर स्थित होते हैं॥६॥

सूक्त ३७

ऋषि: रहूगण अंगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

स सुतः पीतये वृषा सोमः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नत्रक्षांसि देवयुः ॥१॥

दिव्य गुणों से युक्त, इन्द्रादि देवों के लिए तैयार किया हुआ अभीष्ट प्रदायक सोम, विकारों को नष्ट करता हुआ शोधन यंत्र से टपकता हैं॥१॥

स पवित्रे विचक्षणो हरिरर्षति धर्णसिः ।
अभि योनिं कनिक्रदत् ॥२॥

सबका संरक्षक, सभी का धारक, दुष्टों का संहारक, वह हरिताभ सोम छन्ने से पवित्र होकर शब्द करता हुआ कलश में पहुँचता है॥२॥

स वाजी रोचना दिवः पवमानो वि धावति ।
रक्षोहा वारमव्ययम् ॥३॥

द्युलोक में प्रकाशवान् . सामर्थ्यवान् , दुष्टों का संहारक शोधित होता हुआ दिव्य सोम, अविरल रूप से प्रवाहित होता है॥३॥

स त्रितस्याधि सानवि पवमानो अरोचयत् ।
जामिभिः सूर्यं सह ॥४॥

वह सोम त्रित (अन्तरिक्ष, प्रकृति और जीवों के मध्य आदान-प्रदान करने वाले) यज्ञ में संस्कारित होकर अपने महान् तेज से सूर्यदेव को प्रकाशित करता हैं॥४॥

स वृत्रहा वृषा सुतो वरिवोविददाभ्यः ।
सोमो वाजमिवासरत् ॥५॥

शत्रुओं का नाश करने वाला बलवर्द्धक, निचोड़कर निकाला गया, धन देने वाला सोम अश्व के वेग के समान कलश में प्रविष्ट होता हैं॥५॥

स देवः कविनेषितोऽभि द्रोणानि धावति ।
इन्दुरिन्द्राय मंहना ॥६॥

द्युलोक में प्रकाशवान् वह सोम याजकों के द्वारा प्रभावित होकर इन्द्रादि देवों की महत्ता बढ़ाने के लिए वेगपूर्वक कलश (विश्व घट) में प्रविष्ट होता है॥६॥

सूक्त ३८

ऋषि: रहूगण अंगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

एष उ स्य वृषा रथोऽव्यो वारेभिरर्षति ।
गच्छन्वाजं सहस्रिणम् ॥१॥

रथ के सदृश वेगवान्, अभीष्ट अन्नप्रदायक, यह सोम कलश में छलनी के द्वारा छाना जाता है॥१॥

एतं त्रितस्य योषणो हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥२॥

इन्द्रदेव द्वारा प्रयुक्त किये जाने के लिए यह हरिताभ सोम (त्रित) तीन प्रकार से (अन्तरिक्ष में, भौतिक यंत्रों में तथा शरीरस्थ तन्त्र में) निचोड़ा जा रहा है॥२॥

एतं त्यं हरितो दश मर्मृज्यन्ते अपस्युवः ।
याभिर्मदाय शुम्भते ॥३॥

इन्द्रदेव को प्रसन्न करने के लिए यज्ञार्थ दस अँगुलियाँ उस सोम को शोधित करती हैं॥३॥

एष स्य मानुषीष्वा श्येनो न विक्षु सीदति ।
गच्छञ्जारो न योषितम् ॥४॥

जिस प्रकार बाज़ पक्षी अपने शिकार के प्रति तथा प्रेमी अपनी प्रियतमा के प्रति वेगपूर्वक जाता है, उसी प्रकार यह सोम, मानवों के बीच शीघ्रतापूर्वक पहुँचकर प्रतिष्ठित होता है॥४॥

एष स्य मद्यो रसोऽव चष्टे दिवः शिशुः ।
य इन्दुर्वारमाविशत् ॥५॥

द्युलोक में उत्पन्न हुआ यह आनन्दवर्धक सोम, सबको देखता हुआ (प्राकृतिक) छलनी से शुद्ध होता है॥५॥

एष स्य पीतये सुतो हरिरर्षति धर्णसिः ।
क्रन्दन्योनिमभि प्रियम् ॥६॥

सबको धारण करने वाला यह अविनाशी सोम, देवों के पीने के लिए तैयार किया गया है, जो ध्वनि करता हुआ अपने प्रिय निवास स्थान कलश में प्रवेश करता है॥६॥

सूक्त ३९

ऋषि: बृहन्मतिरांगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

आशुरर्ष बृहन्मते परि प्रियेण धाम्ना ।
यत्र देवा इति ब्रवन् ॥१॥

हे मूर्तिमान् सोमदेव ! "जहाँ देवों का निवास (देवलोक या यज्ञीय क्षेत्र) है वहाँ जाता हूँ" ऐसा कहते हुए आप प्रिय रसधारा सहित शीघ्र उपस्थित हों॥१॥

परिष्कृण्वन्ननिष्कृतं जनाय यातयन्निषः ।
वृष्टिं दिवः परि स्रव ॥२॥

हे सोमदेव ! संस्काररहित क्षेत्र को संस्कारवान् बनाते हुए, मानवमात्र के निमित्त अन्न आदि उत्पन्न करने के लिए आकाश से वर्षा करें (प्राण-पर्जन्य के रूप में आपको अनुग्रह जल के साथ प्राप्त हो)॥२॥

सुत एति पवित्र आ त्विषिं दधान ओजसा ।
विचक्षाणो विरोचयन् ॥३॥

सबका निरीक्षक, सबका प्रकाशक, दिव्य सोम अन्तरिक्ष से, प्राकृतिक छत्रे द्वारा छाता हुआ तीव्रगति से अवतरित होता है॥३॥

अयं स यो दिवस्परि रघुयामा पवित्र आ ।
सिन्धोरूर्मा व्यक्षरत् ॥४॥

आकाश में तीव्र गति से विचरण करने वाला, पवित्र किया जाता हुआ, सोमरस सागर (नदी-जलाशय आदि) की लहरों को प्राप्त होता है॥४॥

आविवासन्परावतो अथो अर्वावतः सुतः ।
इन्द्राय सिच्यते मधु ॥५॥

तैयार किया हुआ सोमरस दूर एवं समीप (समुचित रीति) से संस्कारित (पवित्र) करके इन्द्रदेव को समर्पित किया जाता है॥५॥

समीचीना अनूषत हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
योनावृतस्य सीदत ॥६॥

यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठित, शिलाओं के द्वारा पीसकर निकाले गये, ताजे हरे रंग वाले सोमरस को शोधित करते समय एक स्थान पर एकत्रित साधक स्तुति करते हैं॥६॥

सूक्त ४०

ऋषि: बृहन्मतिरांगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

पुनानो अक्रमीदभि विश्वा मृधो विचर्षणिः ।
शुम्भन्ति विप्रं धीतिभिः ॥१॥

पवित्र होने के बाद बुद्धिवर्द्धक एवं ज्ञानवर्द्धक यह सोमरस सभी शत्रुओं (विकारों) का शमन करता है। ज्ञानी जन इस सोम की दिव्य स्तोत्रों से स्तुति करते हैं॥१॥

आ योनिमरुणो रुहद्गमदिन्द्रं वृषा सुतः ।
ध्रुवे सदसि सीदति ॥२॥

विधिवत् तैयार किया गया अरुणाभ सोम, कलश में स्थिर होता है, श्रेष्ठ स्थान पर प्रतिष्ठित होता है और इन्द्रदेव के निकट जाता है॥२॥

नू नो रयिं महामिन्दोऽस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्रिणम् ॥३॥

हे तृप्तिदायक सोमदेव ! आप हमें शीघ्र ही हजारों प्रकार का महान् वैभव सभी ओर से प्रदान करे॥३॥

विश्वा सोम पवमान द्युम्नानीन्दवा भर ।
विदाः सहस्रिणीरिषः ॥४॥

हे शोधित तेजस्वी सोमदेव ! आप हमें हर प्रकार के धन से भरपूर करें तथा हजारों प्रकार का अन्न हमें प्रदान करें॥४॥

स नः पुनान आ भर रयिं स्तोत्रे सुवीर्यम् ।
जरितुर्वर्धया गिरः ॥५॥

हे सोमदेव ! आप शोधित होते हुए, पराक्रमी बनाने वाला श्रेष्ठ धन हम सभी स्तोताओं को प्रदान करें तथा स्तोताओं की स्तुतियों का विस्तार करें॥५॥

पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
वृषन्निन्दो न उक्थ्यम् ॥६॥

हे तेजस्वी सोमदेव ! आप शोधित होते हुए द्युलोक तथा पृथ्वी लोक का धन हमें प्रदान करे । हे धन प्रदाता सोमदेव ! हमें प्रशंसनीय (श्रेष्ठ) धन प्रदान करें॥६॥

सूक्त ४१

ऋषि: मेध्यतिथि: काण्व: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र ये गावो न भूर्णयस्त्वेषा अयासो अक्रमुः ।
घ्नन्तः कृष्णामप त्वचम् ॥१॥

गौ-किरणों की तरह यह (सोम) शीघ्रता से काली त्वचा (काला आवरण-अँधेरा अथवा विकारों का निवारण करते हुए तीव्र गति से आगे बढ़ता हैं॥१॥

सुवितस्य मनामहेऽति सेतुं दुराव्यम् ।
साह्वांसो दस्युमव्रतम् ॥२॥

हे सुख प्रदान करने वाले सोमदेव ! असह्य बन्धनों को दूर करने वाले, सत्कर्म से विरत-दुष्कर्म में निरत शत्रुओं का शमन करने के लिए हम आपकी वन्दना करते हैं॥२॥

शृण्वे वृष्टेरिव स्वनः पवमानस्य शुष्मिणः ।
चरन्ति विद्युतो दिवि ॥३॥

पवित्र किये जाते सोम की ध्वनि, वर्षा के समय होने वाली जल की ध्वनि के समान मधुर है। उस तेजस्वी सोम की किरणें आकाश में सर्वत्र फैलती हैं॥३॥

आ पवस्व महीमिषं गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
अश्वावद्वाजवत्सुतः ॥४॥

सुपात्र में स्थित हे सोमदेव ! आप हमें अन्न के भण्डार एवं पुत्र-पौत्र, गौएँ, अश्व एवं स्वर्णादि अपार वैभव प्रदान करें॥४॥

स पवस्व विचर्षण आ मही रोदसी पृण ।
उषाः सूर्यो न रश्मिभिः ॥५॥

उषाकाल के बाद अपनी स्वर्णिम रश्मियों से जगत् को आलोकित करने वाले सूर्यदेव की भाँति हे विश्व द्रष्टा सोमदेव ! आप अपने तृप्तिदायक पवित्र हुए रस से धरतीं और आकाश को भर दें॥५॥

परि णः शर्मयन्त्या धारया सोम विश्वतः ।
सरा रसेव विष्टपम् ॥६॥

हे सोमदेव ! जल से घिरी हुई पृथ्वी की भाँति आप अपनी सुखद रसधार से हमें चारों ओर से घेर लें॥६॥

सूक्त ४२

ऋषि: मेध्यतिथि: काण्व: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

जनयन्रोचना दिवो जनयन्नप्सु सूर्यम् ।
वसानो गा अपो हरिः ॥१॥

यह हरिताभ सोम द्युलोक में नक्षत्रों को तथा अन्तरिक्ष में सूर्यदेव का निर्माण करके गौ (किरणों या पृथ्वी) तथा जल को आच्छादित (प्रभावित करता है॥१॥

एष प्रत्नेन मन्मना देवो देवेभ्यस्परि ।
धारया पवते सुतः ॥२॥

सनातन स्तुतियों की सहायता से यह देदीप्यमान सोमरस देवगणों के लिए धार रूप में प्रवाहित होता है॥२॥

वावृधानाय तूर्वये पवन्ते वाजसातये ।
सोमाः सहस्रपाजसः ॥३॥

सोमरस हजारों प्रकार के बल की वृद्धि के लिए तथा अन्नादि लाभ के उद्देश्य से निकाला जाता है॥३॥

दुहानः प्रत्नमित्पयः पवित्रे परि षिच्यते ।
क्रन्दन्देवाँ अजीजनत् ॥४॥

बर्तन में निचोड़ा गया यह सोमरस छलनी से छाना जाता है । शब्द करता हुआ यह सोम देवगणों को यज्ञ में आवाहित करता हुआ प्रतीत होता है॥४॥

अभि विश्वानि वार्याभि देवाँ ऋतावृधः ।
सोमः पुनानो अर्षति ॥५॥

यह शोधित सोमरस सत्यव्रतधारी देवगणों को समीप लाते हुए सभी प्रकार का धन विविध प्रकार से प्रदान करता है॥५॥

गोमन्नः सोम वीरवदश्वावद्वाजवत्सुतः ।
पवस्व बृहतीरिषः ॥६॥

हे सोमदेव ! आप गौओं, वीर पुत्रों, अश्वों तथा बलों से युक्त अन्न हमें प्रदान करें॥६॥

सूक्त ४३

ऋषि: मेध्यतिथि: काण्व: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

यो अत्य इव मृज्यते गोभिर्मदाय हर्यतः ।
तं गीर्भिर्वासयामसि ॥१॥

अश्व की भाँति गतिशील सोम को गौदुग्ध में मिश्रित कर शोधित किया जाता है, जो आनन्ददायी होने के कारण प्रिय हैं, उस सोम की स्तुतियों द्वारा यज्ञस्थल में स्थापना करते हैं॥१॥

तं नो विश्वा अवस्युवो गिरः शुम्भन्ति पूर्वथा ।
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥२॥

सनातन स्तुतियों की भाँति हर प्रकार से रक्षण करने वाली स्तुतियाँ, उस सोम को सुशोभित करते हुए इन्द्रदेव के लिए तैयार करती हैं॥२॥

पुनानो याति हर्यतः सोमो गीर्भिः परिष्कृतः ।
विप्रस्य मेध्यातिथेः ॥३॥

स्तुतियों से संस्कारित, शोधित, सोमरस ज्ञानवान् मेधातिथि के यज्ञ में पहुँचता है॥३॥

पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम सुश्रियम् ।
इन्दो सहस्रवर्चसम् ॥४॥

हे पवित्र तेजस्वी सोमदेव ! आप सहस्रों प्रकार का उत्तम धन हमें प्रदान करें॥४॥

इन्दुरत्यो न वाजसृत्कनिक्रन्ति पवित्र आ ।
यदक्षारति देवयुः ॥५॥

युद्ध में जाते हुए अश्वों के समान यह सोम देवगणों के पास जाने की कामना से छलनी में शब्द करते हुए जाता है॥५॥

पवस्व वाजसातये विप्रस्य गृणतो वृधे ।
सोम रास्व सुवीर्यम् ॥६॥

हे सोमदेव ! स्तोता, विप्र की वृद्धि के लिए तथा उत्तम बल से युक्त अन्न के लिए आप प्रवाहित हों॥६॥

सूक्त ४४

ऋषि: अयास्य अंगिरस ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र ण इन्दो महे तन ऊर्मिं न बिभ्रदर्षसि ।
अभि देवाँ अयास्यः ॥१॥

हे सोमदेव ! प्रचुर सम्पदा प्राप्ति के लिए आप कलश में छाने जाते हैं। आपके तेज़ को धारण करने वाले अयास्य ऋषि, देवों की ओर (देवत्व की ओर अथवा देवपूजन के लिए) बढ़ते हैं॥१॥

मती जुष्टो धिया हितः सोमो हिन्वे परावति ।
विप्रस्य धारया कविः ॥२॥

ज्ञानवानों की उत्तम बुद्धि से सेवित यह ज्ञानी सोमरस सत्कर्म रूपी यज्ञ में दूर-दूर तक के स्थानों में गमन करता है॥२॥

अयं देवेषु जागृविः सुत एति पवित्र आ ।
सोमो याति विचर्षणिः ॥३॥

जागरण शील, दिव्य द्रष्टा यह सोमरस छलनी में छाने जाने पर देवगणों की ओर गमन करता है॥३॥

स नः पवस्व वाजयुश्चक्राणश्चारुमध्वरम् ।
बर्हिष्माँ आ विवासति ॥४॥

हे सोमदेव ! इस हिंसारहित यज्ञ को उत्तम विधि से पूर्ण करते हुए आप याज्ञिकों तथा हम सभी के लिए अन्न प्रदान करने वाला रस प्रदान करें॥४॥

स नो भगाय वायवे विप्रवीरः सदावृधः ।
सोमो देवेष्वा यमत् ॥५॥

ज्ञानी जनों द्वारा प्रेरित वह सोमरस सदा संवर्धित होकर वायुवत् (सर्व हितकारी) देवत्व प्रदान करने वाला ऐश्वर्य हमें प्रदान करे॥५॥

स नो अद्य वसुत्तये क्रतुविद्गातुवित्तमः ।
वाजं जेषि श्रवो बृहत् ॥६॥

हे सोमदेव ! आप पुण्य कर्मों के मार्गदर्शक तथा सत्कर्म करने वाले हैं, अतः (अपनी सामर्थ्य से) आप धन तथा उत्तम अन्न पर विजय प्राप्त करते हैं॥६॥

सूक्त ४५

ऋषि: अयास्य अंगिरस ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

स पवस्व मदाय कं नृचक्षा देववीतये ।
इन्दविन्द्राय पीतये ॥१॥

हे सोमदेव ! आप मनुष्यों के द्रष्टा हैं। देवों के निमित्त तथा इन्द्रदेव के आनन्दवर्द्धन के लिये उनके पान करने हेतु सुखपूर्वक अपना रस निष्पादित करें॥१॥

स नो अर्षाभि दूत्यं त्वमिन्द्राय तोशसे ।
देवान्त्सखिभ्य आ वरम् ॥२॥

हे सोमदेव ! आप ज्ञान के संदेशवाहक बनकर इन्द्रदेव की तुष्टि के लिए देवगणों के निमित्त तथा मित्रों के लाभ हेतु रस प्रदान करें॥२॥

उत त्वामरुणं वयं गोभिरञ्ज्मो मदाय कम् ।
वि नो राये दुरो वृधि ॥३॥

उस अरुणाभ सोम को आनन्द वृद्धि तथा सुख प्राप्ति के लिए, गौ दुग्ध के साथ मिलाते हैं। हे सोमदेव ! आप हमारे धन प्राप्ति के मार्ग को प्रशस्त करें॥३॥

अत्यू पवित्रमक्रमीद्वाजी धुरं न यामनि ।
इन्दुर्देवेषु पत्यते ॥४॥

जिस प्रकार अश्व धुरे को मार्ग पर गतिशील करता है, उसी प्रकार शोधन यंत्र को पार करके सोम देवों तक पहुँचता है॥४॥

समी सखायो अस्वरन्वने क्रीळन्तमत्यविम् ।
इन्दुं नावा अनूषत ॥५॥

छलनी में क्रीड़ा करते हुए शोधित सोमरस की, सखाभाव वाले याजक, यज्ञस्थल में स्तुति करते हैं॥५॥

तया पवस्व धारया यया पीतो विचक्षसे ।
इन्दो स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥६॥

हे सोमदेव ! आप जिस धारा से पान करने पर स्तोताओं को उत्तमबल प्रदान करते हैं, उसी धारा से पात्र में क्षरित हों-पवित्र हों॥६॥

सूक्त ४६

ऋषि: अयास्य अंगिरस ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

असृग्रन्देववीतयेऽत्यासः कृत्व्या इव ।
क्षरन्तः पर्वतावृधः ॥१॥

पर्वत में उत्पन्न हुआ तथा क्षरित होता हुआ सोमरस देवगणों के पास जाने के लिए, वेगवान् अश्वों के समान पात्र में गमन करता है॥१॥

परिष्कृतास इन्दवो योषेव पित्र्यावती ।
वायुं सोमा असृक्षत ॥२॥

जिस प्रकार पुत्री, पिता द्वारा अलंकारों से विभूषित होकर पति के पास जाती हैं, उसी प्रकार तेजस्वी सोम वायुदेव के पास जाता है॥२॥

एते सोमास इन्दवः प्रयस्वन्तश्चमू सुताः ।
इन्द्रं वर्धन्ति कर्मभिः ॥३॥

पात्र में निकालकर रखा गया, यह तेजस्वी सोमरस अन्न के साथ मिलकर अपने यज्ञीय कार्यों से इन्द्रदेव के बल को बढ़ाता है॥३॥

आ धावता सुहस्त्यः शुक्रा गृभ्णीत मन्थिना ।
गोभिः श्रीणीत मत्सरम् ॥४॥

हे सिद्धहस्त याज्ञिको ! हमारे पास आओ तथा मथानी से मथकर इस बलशाली सोमरस को गाय के दूध के साथ मिलाओ॥४॥

स पवस्व धनंजय प्रयन्ता राधसो महः ।
अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥५॥

हे शत्रुओं का धन जीतने वाले सोम ! आप हमें उत्तम धन प्रदान करने वाला श्रेष्ठ मार्गदर्शन प्रदान करें॥५॥

एतं मृजन्ति मर्ज्यं पवमानं दश क्षिपः ।
इन्द्राय मत्सरं मदम् ॥६॥

स्तुत्य, पवित्र, सुखद सोम इन्द्र को देने तथा उनको उल्लसित करने के लिए दसों अँगुलियाँ शुद्ध करती हैं॥६॥

सूक्त ४७

ऋषि: कविर्भार्गव।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

अया सोमः सुकृत्यया महश्चिदभ्यवर्धत ।
मन्दान उद्वृषायते ॥१॥

हे सोम ! आप श्रेष्ठ कार्यों से सम्मानित होकर महान् बनते हैं और आनन्द प्रदान करके शक्ति बढ़ाते हैं॥१॥

कृतानीदस्य कर्त्वा चेतन्ते दस्युतर्हणा ।
ऋणा च धृष्णुश्चयते ॥२॥

यह सोम शत्रुओं का नाश करता है तथा धैर्यपूर्वक (याज्ञिकों के) ऋण को भी दूर करता है॥२॥

आत्सोम इन्द्रियो रसो वज्रः सहस्रसा भुवत् ।
उक्थं यदस्य जायते ॥३॥

इन्द्रदेव के स्तोत्र बोलते समय उनका प्रिय सोमरस हजारों प्रकार का पौष्टिक अन्न प्रदान करता है॥३॥

स्वयं कविर्विधर्तरि विप्राय रत्नमिच्छति ।
यदी मर्मृज्यते धियः ॥४॥

अँगुलियों से शोधित होते समय कवि सदृश यह सोम ज्ञानीजनों को धन प्रदान करने की कामना करता है॥४॥

सिषासतू रयीणां वाजेष्वर्वतामिव ।
भरेषु जिग्युषामसि ॥५॥

हे सोमदेव ! जैसे संग्राम में जाते समय अश्वों को घास देते हैं, उसी प्रकार युद्धभूमि में विजय की कामना करने वालों को आप धन प्रदान करते हैं॥५॥

सूक्त ४८

ऋषि: कविर्भार्गव।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

तं त्वा नृम्णानि बिभ्रतं सधस्थेषु महो दिवः ।
चारुं सुकृत्ययेमहे ॥१॥

देवलोक में व्याप्त, नाना प्रकार के ऐश्वर्यों से युक्त, सुन्दर, हे सोमदेव ! उत्तम कर्मों (यज्ञों) के द्वारा आपको प्राप्त करने की हमारी कामना है॥१॥

संवृक्तधृष्णुमुक्थ्यं महामहिव्रतं मदम् ।
शतं पुरो रुरुक्षणिम् ॥२॥

हे असुरजयी सोमदेव ! आप उत्तम कर्म करने वाले आनन्ददायी तथा शत्रुओं के सैकड़ों नगरों को ध्वस्त करने वाले हैं। आपसे हम ऐश्वर्य की याचना करते हैं॥२॥

अतस्त्वा रयिमभि राजानं सुक्रतो दिवः ।
सुपर्णो अव्यथिर्भरत् ॥३॥

उत्तम कर्मों के अधिष्ठाता, ऐश्वर्यवान् , तेजस्वी हे सोमदेव ! कष्ट एवं पीड़ा को महत्त्व न देने वाले गरुड़ आपको द्युलोक से पृथ्वी पर लायें॥३॥

विश्वस्मा इत्स्वर्दृशे साधारणं रजस्तुरम् ।
गोपामृतस्य विर्भरत् ॥४॥

यज्ञरक्षक, जल का प्रेरक, स्वयं प्रकाशित, देवशक्तियों को सहजता से प्राप्त होने वाला दिव्य सोम आकाश को संव्याप्त कर लेता है॥४॥

अधा हिन्वान इन्द्रियं ज्यायो महित्वमानशे ।
अभिष्टिकृद्विचर्षणिः ॥५॥

इसके बाद (पृथ्वी पर आकर) ज्ञान सम्पन्न एवं इष्ट फलदायी सोम, शोधित होकर, अपनी क्षमताओं को और अधिक बढ़ाकर अतिशय श्रेष्ठ बन जाता है॥५॥

सूक्त ४९

ऋषि: कविर्भार्गव।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

पवस्व वृष्टिमा सु नोऽपामूर्मिं दिवस्परि ।
अयक्ष्मा बृहतीरिषः ॥१॥

हे दिव्य सोमदेव ! आप (हमारे लिए) द्युलोक द्वारा उत्तम रीति से वृष्टि करें, जल को तरंगित करें तथा उनके साथ रोगनाशक अन्न हमें प्रदान करें॥१॥

तया पवस्व धारया यया गाव इहागमन् ।
जन्यास उप नो गृहम् ॥२॥

हे सोमदेव ! आप उन धाराओं को प्रकट करें, जिनसे अन्य (जो हमें प्राप्त हैं, उनके अतिरिक्त) गौएँ (वाणियाँ, पोषक प्रवाह) हमें प्राप्त हों॥३॥

घृतं पवस्व धारया यज्ञेषु देववीतमः ।
अस्मभ्यं वृष्टिमा पव ॥३॥

हे सोमदेव ! यज्ञ में देवों द्वारा अभिलषित हुए आप धार-रूप जल की वृष्टि करें॥३॥

स न ऊर्जे व्यव्ययं पवित्रं धाव धारया ।
देवासः श्रृणवन्हि कम् ॥४॥

हे सोमदेव ! हमें अन्न प्रदान करने के लिए आप छन्ने से धार-रूप में छनकर कलश में प्रविष्ट हों । देवगण आपके (मधुर) शब्द सुनकर उल्लसित हों॥४॥

पवमानो असिष्यदद्रक्षांस्यपजङ्घ्नत् ।
प्रत्नवद्रोचयन्रुचः ॥५॥

शत्रुओं का संहार करने वाला, तेज से देदीप्यमान, पवित्र होने वाला सोमरस कलश में स्रवित होता है । ॥५॥

सूक्त ५०

ऋषि: उचथ्य अंगिरस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

उत्ते शुष्मास ईरते सिन्धोरूर्मेरिव स्वनः ।
वाणस्य चोदया पविम् ॥१॥

हे सोमदेव ! आपके प्रवाहित होने से समुद्र की तरंगों जैसी ध्वनियाँ होती हैं। आप वाणी से उत्पन्न शब्दों की भाँति ध्वनि को प्रेरित करें॥१॥

प्रसवे त उदीरते तिस्रो वाचो मखस्युवः ।
यदव्य एषि सानवि ॥२॥

हे सोमदेव ! आपके प्रादुर्भाव के बाद याजकवृन्द ऋक्, यजु, साम के मंत्रों का गान करते हैं, तब आप उच्च आसन पर विराजमान होकर संस्कारित होने के लिए तत्पर हो जाते हैं॥२॥

अव्यो वारे परि प्रियं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
पवमानं मधुश्चुतम् ॥३॥

ऋत्विग्गण पाषाणों से कूटे गये हरिताभ, सुन्दर, मधुर सोमरस को छन्ने से छानते हैं॥३॥

आ पवस्व मदिन्तम पवित्रं धारया कवे ।
अर्कस्य योनिमासदम् ॥४॥

है परम आनन्ददायी सोमदेव ! इन्द्रदेव को तृप्ति प्रदान करने के लिए आप शोधन यंत्र में से निर्मज्ञ धारा के रूप में प्रवाहित हों॥४॥

स पवस्व मदिन्तम गोभिरञ्जानो अक्तुभिः ।
इन्दविन्द्राय पीतये ॥५॥

हे आनन्ददाता सोम ! आप गौ के पुष्टिकारक दुग्धादि के मिश्रण में छनकर इन्द्र के पान करने योग्य बनें॥५॥

सूक्त ५१

ऋषि: उचथ्य अंगिरस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

अध्वर्यो अद्रिभिः सुतं सोमं पवित्र आ सृज ।
पुनीहीन्द्राय पातवे ॥१॥

हे अध्वर्वो ! इन्द्र के पीने योग्य बनाने हेतु पत्थर से निचोड़े गये सोम को पवित्र करके पात्र के पास लाओ॥१॥

दिवः पीयूषमुत्तमं सोममिन्द्राय वज्रिणे ।
सुनोता मधुमत्तमम् ॥२॥

हे याज्ञिको ! द्युलोक के अमृत के समान अत्यन्त मधुर सोमरस को वज्रधारी इन्द्रदेव को प्रदान करने के लिये अभिषिक्त करो॥२॥

तव त्य इन्दो अन्धसो देवा मधोर्व्यश्नते ।

पवमानस्य मरुतः ॥३॥

हे सोमदेव ! आपके आनन्दवर्द्धक मधुर अन्नरूप रस का देवगण तथा मरुद्गण सेवन करते हैं॥३॥

त्वं हि सोम वर्धयन्त्सुतो मदाय भूर्णये ।
वृषन्त्स्तोतारमूतये ॥४॥

हे अभिषुत सोमदेव ! आप देवगणों को आनन्दित करने, उनकी कामनाओं की पूर्ण करने तथा संरक्षण प्रदान करने में सहायक होते हैं॥४॥

अभ्यर्ष विचक्षण पवित्रं धारया सुतः ।
अभि वाजमुत श्रवः ॥५॥

हे सर्वद्रष्टा सोमदेव ! छलनी में धारारूप में निचोड़े गये, आपका रस हमें अन्न तथा कीर्ति प्रदान करे॥५॥

सूक्त ५२

ऋषि: उचथ्य अंगिरस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

परि द्युक्षः सनद्रयिर्भरद्वाजं नो अन्धसा ।
सुवानो अर्ष पवित्र आ ॥१॥

धन प्रदान करने वाला तेजस्वी सोम हमें बल एवं अन्न से परिपूर्ण करे । हे सोमदेव ! आप शोधक यंत्र से शोधित होते हुए आएँ॥१॥

तव प्रत्नेभिरध्वभिरव्यो वारे परि प्रियः ।
सहस्रधारो यात्तना ॥२॥

हे सोम ! हजारों धाराओं से गमनशील आपका प्रिय रस अनश्वर छलनी से नीचे की ओर प्रवाहित होता है॥२॥

चरुर्न यस्तमीङ्खयेन्दो न दानमीङ्खय ।

वधैर्वधस्नवीङ्खय ॥३॥

हे सोमदेव ! पत्थरों से कूटते समय आप रस को बाहर निकलने के लिए प्रेरित करें । हे सोमदेव ! आप चरु के समान जो खाद्य है, उसे हमें प्रदान करें॥३॥

नि शुष्ममिन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् ।
यो अस्माँ आदिदेशति ॥४॥

हे स्तुतियों के योग्य सोमदेव ! आपकी बल बढ़ाने की प्रेरणा हमारे लिए हितकारी है॥४॥

शतं न इन्द ऊतिभिः सहस्रं वा शुचीनाम् ।
पवस्व मंहयद्रयिः ॥५॥

हे सोमदेव ! हजारों प्रकार से शुद्ध होकर आप संरक्षण से युक्त धन प्रदान करने वाला रस निकालें॥५॥

सूक्त ५३

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

उत्ते शुष्मासो अस्थू रक्षो भिन्दन्तो अद्रिवः ।
नुदस्व याः परिस्पृधः ॥१॥

पाषाणों से कूटे गये हे शुद्ध सोमदेव ! आपकी उठती तरंगों (बल) से राक्षसों (विकारों) का विनाश होता है । आप हमसे संघर्ष करने वाले शत्रुओं को दूर करें॥१॥

अया निजघ्निरोजसा रथसंगे धने हिते ।
स्तवा अबिभ्युषा हृदा ॥२॥

हे सोमदेव ! आप अपनी सामर्थ्य से शत्रुओं का विनाश करने में समर्थ हैं । युद्ध में हम निर्भय अन्त: करण से रथों में स्थित धन प्राप्ति के लिए आपकी स्तुति करते हैं॥२॥

अस्य व्रतानि नाधृषे पवमानस्य दूढ्या ।
रुज यस्त्वा पृतन्यति ॥३॥

इस संस्कारित सोम के कर्मों से दुष्ट राक्षसों की प्रगति नहीं हो सकतीं । हे सोमदेव ! अपने प्रति आक्रामक शत्रुओं का आप विनाश करें॥३॥

तं हिन्वन्ति मदच्युतं हरिं नदीषु वाजिनम् ।
इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥४॥

आनन्द रस बहाने वाले, बल और उत्साह बढ़ाने वाले इस हरिताभ सोम को (ऋत्विग्गण) नदियों (जल) के माध्यम से इन्द्रदेव के लिए प्रेरित करते हैं॥४॥

सूक्त ५३

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

अस्य प्रत्नामनु द्युतं शुक्रं दुदुह्रे अह्रयः ।
पयः सहस्रसामृषिम् ॥१॥

याजक गण सनातन स्वरूप वाले शुद्ध सोम को निकालते हैं, वह द्रष्टा सोमरस (याजकों को) हजारों प्रकार का धन प्रदान करता है॥१॥

अयं सूर्य इवोपदृगयं सरांसि धावति ।
सप्त प्रवत आ दिवम् ॥२॥

देवलोक तक सप्तधाराओं (सप्तकिरणों) के रूप में प्रवाहित सूर्यदेव के समान सभी लोकों का द्रष्टा सोमरस जल पात्रों में शोधित किया जाता है॥२॥

अयं विश्वानि तिष्ठति पुनानो भुवनोपरि ।
सोमो देवो न सूर्यः ॥३॥

पवित्र होने वाला यह सोमरस सूर्यदेव के समान सभी लोकों में प्रकाशित होता है॥३॥

परि णो देववीतये वाजाँ अर्षसि गोमतः ।
पुनान इन्दविन्द्रयुः ॥४॥

इन्द्रदेव के पास जाने की कामना वाले हे शोधित सोमदेव ! आप देवगणों के निमित्त गौ (गौएँ या पौषण) तथा हर प्रकार का अन्न प्रदान करते हैं॥४॥

सूक्त ५५

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

यवंयवं नो अन्धसा पुष्टम्पुष्टं परि स्रव ।
सोम विश्वा च सौभगा ॥१॥

हे सोमदेव ! अपने दिव्य पोषक रस को अन्न एवं वनस्पतियों के साथ आप हमें उपलब्ध कराते रहें तथा हमें सम्पूर्ण वैभव प्रदान करें॥१॥

इन्दो यथा तव स्तवो यथा ते जातमन्धसः ।
नि बर्हिषि प्रिये सदः ॥२॥

देवताओं के प्रिय आहार हे सोमदेव ! याजकों द्वारा जिस भावना से आपकी स्तुति की जाती है, उसी स्नेह के साथ आप यज्ञशाला में श्रेष्ठ आसन ग्रहण करें॥२॥

उत नो गोविदश्ववित्पवस्व सोमान्धसा ।
मक्षूतमेभिरहभिः ॥३॥

हे सोमदेव ! आप हमें गौ, अश्व, अन्न आदि के रूप में अपार वैभव प्रदान करें॥३॥

यो जिनाति न जीयते हन्ति शत्रुमभीत्य ।
स पवस्व सहस्त्रजित् ॥४॥

शत्रुओं पर विजय प्राप्त करने वाले हे सामदेव ! असुरों का विनाश करने वाले, उनसे कभी पराजित न होने वाले आप पवित्रता को प्राप्त हों॥४॥

सूक्त ५६

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

परि सोम ऋतं बृहदाशुः पवित्रे अर्षति ।
विघ्नत्रक्षांसि देवयुः ॥१॥

द्रुतगति से कार्य करने वाला, देवगणों के पास जाने वाला सोमरस शोधक प्रक्रिया के अन्तर्गत शत्रुओं (विकारों) का संहार करता है तथा हमें उत्तम धन (लाभादि) प्रदान करता है॥१॥

यत्सोमो वाजमर्षति शतं धारा अपस्युवः ।
इन्द्रस्य सख्यमाविशन् ॥२॥

यज्ञ की कामना वाली सैकड़ों सोमरस की धाराएँ जब इन्द्रदेव से मित्रभाव स्थापित करती हैं, तभी सोमरस से हमें अन्न प्राप्त होता है॥२॥

अभि त्वा योषणो दश जारं न कन्यानूषत ।
मृज्यसे सोम सातये ॥३॥

जिस तरह स्त्री अपने प्रियतम को बुलाती है, उसी प्रकार दसों अँगुलियाँ सोमरस को पकड़तीं और शुद्ध करती हैं॥३॥

त्वमिन्द्राय विष्णवे स्वादुरिन्दो परि स्रव ।
नृन्त्स्तोतृन्पाह्यंहसः ॥४॥

हे सोमदेव ! विष्णु तथा इन्द्रदेव के निमित्त आप मधुर रस निकालें और स्तुति करने वाले याजकों को पापकर्मों से बचाएँ॥४॥

सूक्त ५७

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

प्र ते धारा असश्चतो दिवो न यन्ति वृष्टयः ।
अच्छा वाजं सहस्रिणम् ॥१॥

हे सोमदेव ! आपकी अविरल धाराएँ प्रचुर अन्नादि देने वाली हैं, जैसे आकाश से वृष्टि होती है, वैसे ही आपकी धाराएँ पृथ्वी पर अन्न (पोषक तत्त्व) की वृष्टि करती हैं॥१॥

अभि प्रियाणि काव्या विश्वा चक्षाणो अर्षति ।
हरिस्तुञ्जान आयुधा ॥२॥

सभी प्रिय कर्मों पर दृष्टि रखने वाला हरिताभ सोम शत्रुओं पर आयुधों का प्रहार करता हुआ (उन्हें पराभूत करके) आगे बढ़ता जाता है॥२॥

स मर्मृजान आयुभिरिभो राजेव सुव्रतः ।
श्येनो न वंसु षीदति ॥३॥

वह नित्य उत्तम कर्मों को सम्पन्न करने वाली सोम, ऋत्विजों द्वारा संस्कारित होता हुआ राजा के समान निर्भीक और तेजस्वी दिखाई देता है । वह बाज़ पक्षी के समान वेगपूर्वक जल में मिलाया जाता है॥३॥

स नो विश्वा दिवो वसूतो पृथिव्या अधि ।
पुनान इन्दवा भर ॥४॥

हे सोमदेव ! पवित्र होने वाले आप द्युलोक और पृथिवीलोक में संव्याप्त रहते हुए हमें सभी प्रकार की सम्पदाएँ प्रदान करें॥४॥

सूक्त ५८

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

तरत्स मन्दी धावति धारा सुतस्यान्धसः ।
तरत्स मन्दी धावति ॥१॥

निकाली गई सोमरस की पुष्टिकारक धारा आनन्द प्रदान करने वाली हैं । वह निकृष्ट संस्कारों से रहित और उपासकों को ऊर्ध्वगति प्रदान करने वाली है॥१॥

उस्रा वेद वसूनां मर्तस्य देव्यवसः ।
तरत्स मन्दी धावति ॥२॥

सभी प्रकार के वैभवों से युक्त देदीप्यमान धाराएँ याजक का हर प्रकार से संरक्षण करना जानती हैं, ऐसी आनन्द प्रदायक धाराएँ तेजगति से प्रवाहित होती हैं॥२॥

ध्वस्रयोः पुरुषन्त्योरा सहस्राणि दद्महे ।
तरत्स मन्दी धावति ॥३॥

ध्वस्र (विकारों को ध्वस्त करने वाले) और पुरुषन्ति (ऐश्वर्य प्रदायक-राजाओं या इन गुणों वाले सोम) से हम अपार वैभव प्राप्त करें । आनन्दप्रद ऐसा (सोम) अतिवेग से प्रवाहित होता है। ॥३॥

आ ययोस्त्रिंशतं तना सहस्राणि च दद्महे ।
तरत्स मन्दी धावति ॥४॥

जिससे हम तीस सहस्र विस्तृत (वस्त्र या आच्छादन) प्राप्त करते हैं, वह आनन्ददायक (सोम) तीव्र गति से संचरित होता हैं॥४॥

सूक्त ५९

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

पवस्व गोजिदश्वजिद्विश्वजित्सोम रण्यजित् ।
प्रजावद्रत्नमा भर ॥१॥

हे सोमदेव ! आप गौओं (गौएँ, किरणों, इन्द्रियों) को जीतने वाले, अश्वों (घोड़ों-शक्ति प्रवाहों) के विजेता हैं । आप प्रवाहित हों तथा हमें प्रजासहित धन – सम्पन्न बनाएँ॥१॥

पवस्वाद्भ्यो अदाभ्य: पवस्वौषधीभ्य: ।
पवस्व धिषणाभ्य: ॥२॥

हे सोमदेव ! जल में मिश्रित होने के लिए आप, अपना रस प्रदान करें। न दबाए जाने वाले आप उत्तम ओषधियों के विस्तार के लिए तथा हमारी बुद्धि को पवित्र बनाने के लिए अपना रस प्रदान करें॥२॥

त्वं सोम पवमानो विश्वानि दुरिता तर ।
कविः सीद नि बर्हिषि ॥३॥

हे शोधित सोमदेव ! सभी राक्षसों को दूर करते हुए आप ज्ञानवान् होकर उत्तम आसन पर विराजें॥३॥

पवमान स्वर्विदो जायमानोऽभवो महान् ।
इन्दो विश्वाँ अभीदसि ॥४॥

हे सर्वज्ञाता सोमदेव ! आप यजमान को उत्तम फल प्रदान करें । उत्पन्न होते ही वृद्धि को प्राप्त होने वाले आप, सभी शत्रुओं को दूर करें॥४॥

सूक्त ६०

ऋषि: अवत्सार: काश्यप
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री, ३ पुर उष्णिक्

प्र गायत्रेण गायत पवमानं विचर्षणिम् ।
इन्दुं सहस्रचक्षसम् ॥१॥

हे याजको ! सर्वद्रष्टा, हजारों प्रकार से देखने वाले, सोमरस को शोधित करते समय (स्तोतागण) गायत्री छन्दसे उसकी स्तुति करते रहो॥१॥

तं त्वा सहस्रचक्षसमथो सहस्रभर्णसम् ।
अति वारमपाविषुः ॥२॥

हे सोमदेव ! आप हजारों चक्षुओं वाले तथा हजारों के पालक हैं । आप अवरोधों (शोधकतंत्र) को पार करके प्रवाहित हों॥२॥

अति वारान्पवमानो असिष्यदत्कलशाँ अभि धावति ।
इन्द्रस्य हार्द्याविशन् ॥३॥

पवित्र सोमरस दिव्य छलनी से शुद्ध होकर, इन्द्रदेव के हृदय में प्रवेश करते हुए कलश (विश्वघट) में द्रुतगति से स्थापित होता है॥३॥

इन्द्रस्य सोम राधसे शं पवस्व विचर्षणे ।
प्रजावद्रेत आ भर ॥४॥

हे विश्व के द्रष्टा सोमदेव ! इन्द्रदेव की तुष्टि के लिए आप शान्तिदायक रस प्रदान करें तथा हमें बलशाली सन्तति देने की कृपा करें॥४॥

सूक्त ६१

ऋषि: अमही पुरांगिररस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

अया वीती परि स्रव यस्त इन्दो मदेष्वा ।
अवाहन्नवतीर्नव ॥१॥

हे सोमदेव ! इन्द्रदेव के सेवनार्थ आप कलश में स्थित हों । आपका यह रस युद्ध में शत्रुओं के सभी नगरों को नष्ट करने के लिए इन्द्रदेव को सामर्थ्य प्रदान करता हैं॥१॥

पुरः सद्य इत्थाधिये दिवोदासाय शम्बरम् ।
अध त्यं तुर्वशं यदुम् ॥२॥

सोम पीकर इन्द्रदेव ने यज्ञ करने वाले दिवोदास (दिव्यगुणों के लिए समर्पित व्यक्ति) के लिए शबरासुर (अकल्याण करने वाले) को, तुर्वस (क्रोध) को और यदु (नियंत्रण विहीन) को मारा॥२॥

परि णो अश्वमश्वविद्गोमदिन्दो हिरण्यवत् ।
क्षरा सहस्रिणीरिषः ॥३॥

हे सोमदेव ! आप हमें गौ, अश्व, सुवर्ण आदि ऐश्वर्य और अभीष्ट पोषक अन्न प्रदान करें॥३॥

पवमानस्य ते वयं पवित्रमभ्युन्दतः ।
सखित्वमा वृणीमहे ॥४॥

हे सोम !परिष्कृत और शोधित होने वाले आपसे, हम मित्र के रूप में सहयोग पाने की कामना करते हैं॥४॥

ये ते पवित्रमूर्मयोऽभिक्षरन्ति धारया ।
तेभिर्नः सोम मृळय ॥५॥

हे सोम !आपकी लहरों में से जो धारा शोधित हो रही है, उसके द्वारा हमें उल्लसित करने का अनुग्रह करें॥५॥

स नः पुनान आ भर रयिं वीरवतीमिषम् ।
ईशानः सोम विश्वतः ॥६॥

हे सोम ! आप जगत् नियन्ता हैं । शोधित होने के बाद आप हमें धन-धान्य के साथ सुसन्तति प्रदान करें॥६॥

एतमु त्यं दश क्षिपो मृजन्ति सिन्धुमातरम् ।
समादित्येभिरख्यत ॥७॥

सिन्धु (अन्तरिक्ष अथवा नदियाँ) जिनकी माता हैं, ऐसे सोमदेव को शुद्ध करने में दसों (अँगुलियाँ या दिशाएँ) सहायक हैं। वे आदित्य (अदिति पुत्र देवों या सूर्य) के साथ संयुक्त प्रतीत होते हैं॥७॥

समिन्द्रेणोत वायुना सुत एति पवित्र आ ।
सं सूर्यस्य रश्मिभिः ॥८॥

सूर्य – रश्मियों से प्रकाशित हे सोमदेव ! आप सुपात्र में स्थिर हुए इन्द्र और वायुदेव को प्राप्त होते हैं॥८॥

स नो भगाय वायवे पूष्णे पवस्व मधुमान् ।
चारुर्मित्रे वरुणे च ॥९॥

हे मधुर और मनोहर सोमदेव ! हमारे यज्ञ में भग, वायु, पूषा, मित्र और वरुणदेव के लिए आप शुद्ध हों॥९॥

उच्चा ते जातमन्धसो दिवि षद्भूम्या ददे ।
उग्रं शर्म महि श्रवः ॥१०॥

हे सोमदेव ! आपके पोषक रस का जन्म द्युलोक में हुआ है । वहाँ प्राप्त होने वाला कल्याणकारी सुख और महान् अन्न (आपके माध्यम से) हम पृथ्वी पर प्राप्त करते हैं॥१०॥

एना विश्वान्यर्य आ द्युम्नानि मानुषाणाम् ।
सिषासन्तो वनामहे ॥११॥

इस (सोम) की सहायता से मनुष्यों के लिए आवश्यक सभी प्रकार के अन्नादि हमें प्राप्त हों । हम उनके श्रेष्ठ उपयोग की कामना करते हैं॥११॥

स न इन्द्राय यज्यवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
वरिवोवित्परि स्रव ॥१२॥

हमें ऐश्वर्यशाली बनाने वाले हे सोमदेव ! हम लोग जिनके लिए यज्ञ करते हैं, उन इन्द्र, मरुद्गण और वरुणदेव के निमित्त आप भली प्रकार से क्षरित हों॥१२॥

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भङ्गं परिष्कृतम् ।
इन्दुं देवा अयासिषुः ॥१३॥

शत्रु संहारक, भली प्रकार से तैयार, जल और गौ दुग्ध में मिला हुआ यह सोमरस देवगणों को तृप्ति देने वाला सिद्ध हो॥१३॥

तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव ।
य इन्द्रस्य हृदंसनिः ॥१४॥

हमारी वाणी इन्द्रदेव के हार्दिक प्रिय पात्र, श्रेष्ठ सोम की स्तुतियाँ करे । जिस प्रकार बालक को माता अपने दुग्ध से पुष्ट करती है, उसी प्रकार हमारी स्तुतियाँ सोम की यश वृद्धि करें॥१४॥

अर्षा णः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम् ।
वर्धा समुद्रमुक्थ्यम् ॥१५॥

स्तुति करने योग्य हे सोमदेव ! हमारी गौओं को सुख प्रदान करने वाले, इमारे घर को पौष्टिक अन्न से भरने वाले आप जल से मिश्रित होकर सुपात्र में स्थिर हों॥१५॥

पवमानो अजीजनद्दिवश्चित्रं न तन्यतुम् ।
ज्योतिर्वैश्वानरं बृहत् ॥१६॥

पवित्र होने के बाद इस सोमरस ने दिव्य लोक में विद्यमान, सभी को प्रकाशित करने में समर्थ, महान् वैश्वानर ज्योति को बिजली के समान प्रकट किया॥१६॥

पवमानस्य ते रसो मदो राजन्नदुच्छुनः ।
वि वारमव्यमर्षति ॥१७॥

हे सुशोभित होने वाले पवित्र सोमदेव ! दुष्टतारहित, आनन्दप्रद , आपका दिव्यरस अनश्वर छन्ने से होकर अवतरित होता है॥१७॥

पवमान रसस्तव दक्षो वि राजति द्युमान् ।
ज्योतिर्विश्वं स्वर्दृशे ॥१८॥

पवित्रता को प्राप्त होने वाले सोम का शक्तिवर्द्धक एवं तेजस्वी रस सुशोभित होता है। समस्त विश्व में उसकी प्रकाश-किरणें दिखाई देती हैं॥१८॥

यस्ते मदो वरेण्यस्तेना पवस्वान्धसा ।
देवावीरघशंसहा ॥१९॥

हे सोमदेव ! देवताओं को आकृष्ट करने वाला, दुष्टों का नाश करने वाला आपका दिव्यरस अत्यन्त हर्षप्रद हैं। उस पोषक रस सहित आप (कलश में) प्रतिष्ठित हों॥१९॥

जघ्निर्वृत्रममित्रियं सस्निर्वाजं दिवेदिवे ।
गोषा उ अश्वसा असि ॥२०॥

हे सोमदेव ! आप अमित्र (अहितकारी) वृत्र (अज्ञानरूपी वृत्ति) के नाशक हैं। आप सतत संघर्षशील रहते हैं । आप गोधन और अश्वों की भी वृद्धि करते हैं॥२०॥

सम्मिश्लो अरुषो भव सूपस्थाभिर्न धेनुभिः ।
सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥२१॥

हे सोमदेव ! जैसे बाज़ पक्षी अपने घोंसले पर शोभायमान होता है, वैसे ही धेनुओं (गौओं, इन्द्रियों, धारण करने वाली भूमि आदि) के साथ संयुक्त होकर आप तेजस्वी बनते हैं॥२१॥

स पवस्व य आविथेन्द्रं वृत्राय हन्तवे ।
वव्रिवांसं महीरपः ॥२२॥

हे सोमदेव ! आप जल प्रवाह को रोकने वाले वृत्र को मारने के लिए इन्द्रदेव को प्रोत्साहित करें तथा तीव्र धारा के साथ कलश में छनते जाएँ॥२२॥

सुवीरासो वयं धना जयेम सोम मीढ्वः ।
पुनानो वर्ध नो गिरः ॥२३॥

हे पवित्र सोम !आप हमारी स्तुतियों का विस्तार करें । हम शौर्यवान् होकर शत्रु के धन पर विजय प्राप्त करें॥२३॥

त्वोतासस्तवावसा स्याम वन्वन्त आमुरः ।
सोम व्रतेषु जागृहि ॥२४॥

हे सोमदेव ! आपका संरक्षण प्राप्त कर हम शत्रुओं का संहार करें । हम व्रतशील बनकर जाग्रत् रहें॥२४॥

अपघ्नन्पवते मृधोऽप सोमो अराव्णः ।
गच्छन्निन्द्रस्य निष्कृतम् ॥२५॥

यह सोम रिपुओं को तथा दान न देने वालों को मारता है । इन्द्रदेव के पास जाता हुआ क्षरित होता है॥२५॥

महो नो राय आ भर पवमान जही मृधः ।
रास्वेन्दो वीरवद्यशः ॥२६॥

हे पवित्रकर्मा सोम !आप हमें अनेकों साधन, पुत्रादि और यश प्राप्त कराएँ । हमारे शत्रुओं का हनन करें॥२६॥

न त्वा शतं चन ह्रुतो राधो दित्सन्तमा मिनन् ।
यत्पुनानो मखस्यसे ॥२७॥

हे पवित्र सोमदेव ! यज्ञ करने वाले को जब आप ऐश्वर्य देने की इच्छा करते हैं, उस समय आपको सैकड़ों शत्रु भी नहीं रोक सकते॥२७॥

पवस्वेन्दो वृषा सुतः कृधी नो यशसो जने ।
विश्वा अप द्विषो जहि ॥२८॥

हे अभिषुते सोमदेव ! आप श्रेष्ठ बल को बढ़ाने वाले हैं। लोगों में आप हमें यशस्वी बनाएँ तथा हमारे सभी शत्रुओं (विकारों) को नष्ट करें॥२८॥

अस्य ते सख्ये वयं तवेन्दो द्युम्न उत्तमे ।
सासह्याम पृतन्यतः ॥२९॥

हे सोमदेव ! मित्र भाव से आपने हमें तेजस्वी बनाया है, अतः आक्रमणकारी शत्रुओं पर हम विजय प्राप्त कर सकते हैं॥२९॥

या ते भीमान्यायुधा तिग्मानि सन्ति धूर्वणे ।
रक्षा समस्य नो निदः ॥३०॥

हे सोमदेव ! शत्रुओं का नाश करने वाले अपने तीक्ष्ण शस्त्रों के द्वारा आप हमें शत्रुओं की निन्दा द्वारा आहत होने से बचाएँ॥३०॥

सूक्त ६२

ऋषि: जमदग्निर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

एते असृग्रमिन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः ।
विश्वान्यभि सौभगा ॥१॥

छन्ने की ओर द्रुतगति से जाते हुए सोमरस को, सभी सौभाग्यों की प्राप्ति के लिए ऋत्विजों द्वारा शोधित किया जाता है॥१॥

विघ्नन्तो दुरिता पुरु सुगा तोकाय वाजिनः ।
तना कृण्वन्तो अर्वते ॥२॥

बलवर्द्धक , पापनाशक यह सोमरस हमारे एवं हमारी सन्तति के लिए पशु एवं धन प्रदान करने का मार्ग स्वयं बनाना है॥२॥

कृण्वन्तो वरिवो गवेऽभ्यर्षन्ति सुष्टुतिम् ।

इळामस्मभ्यं संयतम् ॥३॥

हमारे लिए एवं हमारी गौओं के लिए उत्तम धन तथा पौष्टिक अन्न के प्रदाता सोमदेव हमारी सुन्दर प्रार्थनाओं को स्वीकार करते हैं॥३॥

असाव्यंशुर्मदायाप्सु दक्षो गिरिष्ठाः ।
श्येनो न योनिमासदत् ॥४॥

पर्वतों (ऊर्ध्वलोकों) में उत्पन्न सोम आनन्द वृद्धि के लिए निचोड़ा गया एवं जल के संयोग से व्यापक बना । वह सोम श्येन पक्षी के समान अपने निश्चित स्थान पर स्थित है॥४॥

शुभ्रमन्धो देववातमप्सु धूतो नृभिः सुतः ।
स्वदन्ति गावः पयोभिः ॥५॥

योजकों द्वारा अभिषुत, देवों का श्रेष्ठ आहार, जल मिश्रित पवित्र सोमरस को गौएँ अपना दूध मिलाकर अधिक स्वादिष्ट बना रही हैं॥५॥

आदीमश्वं न हेतारोऽशूशुभन्नमृताय ।
मध्वो रसं सधमादे ॥६॥

अश्व सदृश स्फूर्तिवान् सोम को याजकगण अमरत्व प्राप्ति की कामना से यज्ञस्थल पर स्थापित करते हैं॥६॥

यास्ते धारा मधुश्चुतोऽसृग्रमिन्द ऊतये ।
ताभिः पवित्रमासदः ॥७॥

अपनी मधुर रस की धाराओं से सभी को संरक्षण देने वाले, हे सोमदेव ! आप उन धाराओं के साथ शुद्धता को धारण करें॥७॥

सो अर्षेन्द्राय पीतये तिरो रोमाण्यव्यया ।
सीदन्योना वनेष्वा ॥८॥

ऊन के छत्रे द्वारा शुद्ध होने वाले हे सोमदेव ! यज्ञ के मूल स्थान पर स्थापित होकर आप इन्द्रदेव की तृप्ति के लिए तैयार हों॥८॥

त्वमिन्दो परि स्रव स्वादिष्ठो अङ्गिरोभ्यः ।
वरिवोविद्घृतं पयः ॥९॥

धन-वैभव प्रदानकर्ता हे सोम ! अंगिरादि ऋषियों के लिए आप घृत, दुग्धयुक्त पौष्टिक आहार प्रदान करें॥९॥

अयं विचर्षणिर्हितः पवमानः स चेतति ।
हिन्वान आप्यं बृहत् ॥१०॥

विशिष्ट, बुद्धिवर्द्धक, पात्र में स्थित होकर शुद्ध किया हुआ यह सोमरस पानी में मिलकर प्रचुर अन्न (पोषण) प्रदान करता हुआ यशस्वी होता है॥१०॥

एष वृषा वृषव्रतः पवमानो अशस्तिहा ।
करद्वसूनि दाशुषे ॥११॥

यह शत्रुनाशक, कामनाओं की पूर्ति करने वाला बलशाली सोम, श्रेष्ठ कार्यों में नियोजन करने वालों को धन प्रदान करता है॥११॥

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
पुरुश्चन्द्रं पुरुस्पृहम् ॥१२॥

हे सोम ! गौओं तथा अश्वों से युक्त, अनेकों के द्वारा चाहा गया हजारों प्रकार का तेजस्वी धन हमें प्रदान करें॥१२॥

एष स्य परि षिच्यते मर्मृज्यमान आयुभिः ।
उरुगायः कविक्रतुः ॥१३॥

निकाला गया वह सोम, जो याजकों के द्वारा शोधित किया जाता है, बुद्धिपूर्वक कर्म करने वाला तथा अनेकों प्रकार से स्तुत्य होता है॥१३॥

सहस्रोतिः शतामघो विमानो रजसः कविः ।
इन्द्राय पवते मदः ॥१४॥

हजारों प्रकार से संरक्षण करने वाला, सैकड़ों प्रकार का धनदाता, विभिन्न लोकों का निर्माण करने वाला आनन्दवर्द्धक ज्ञानी सोम इन्द्रदेव के लिए शोधित किया जाता है॥१४॥

गिरा जात इह स्तुत इन्दुरिन्द्राय धीयते ।
विर्योना वसताविव ॥१५॥

जिस प्रकार पक्षी घोंसले की ओर आता है, उसी प्रकार हमारी वाणी द्वारा स्तुत होता हुआ परिष्कृत सोमरस इन्द्रदेव के पास जाता है॥१५॥

पवमानः सुतो नृभिः सोमो वाजमिवासरत् ।
चमूषु शक्मनासदम् ॥१६॥

जिस प्रकार योद्धा संग्राम में जाते हैं, उसी प्रकार याजकों द्वारा निकाला गया शोधित सोमरस अपनी सामर्थ्य से पात्र में जाता है॥१६॥

तं त्रिपृष्ठे त्रिवन्धुरे रथे युञ्जन्ति यातवे ।
ऋषीणां सप्त धीतिभिः ॥१७॥

याजकगण तीनों सवनों (प्रातः, मध्याह्न, सायं) में ऋषियों के यज्ञरूप रथ में सात छन्दों के द्वारा, तीन वेदों (ऋक्, यजु, साम) का गान करते हुए सोमरस को देवगणों के पास ले जाते हैं॥१७॥

तं सोतारो धनस्पृतमाशुं वाजाय यातवे ।
हरिं हिनोत वाजिनम् ॥१८॥

सोमरस को शोधित करने वाले हे याजको ! जिस प्रकार अश्वों को युद्ध में जाने के लिए सजाया जाता है, उसी प्रकार हरिताभ सोम को यज्ञ के निमित्त अलंकृत करो॥१८॥

आविशन्कलशं सुतो विश्वा अर्षन्नभि श्रियः ।
शूरो न गोषु तिष्ठति ॥१९॥

यह परिष्कृत सोमरस कलश में भरे जाते समय सुशोभित होता हैं, जिस प्रकार गौओं का संरक्षण वीर पुरुष करते हैं, उसी प्रकार यह सोम यज्ञ का संरक्षण करता है॥१९॥

आ त इन्दो मदाय कं पयो दुहन्त्यायवः ।
देवा देवेभ्यो मधु ॥२०॥

हे सोमदेव ! सभी देव तथा सभी याजक मिलकर देवगणों को कौन सा आनन्द प्रदान करने के लिए दूध मिला हुआ मधुर सोमरस निकालते हैं ?॥२०॥

आ नः सोमं पवित्र आ सृजता मधुमत्तमम् ।
देवेभ्यो देवश्रुत्तमम् ॥२१॥

हे याजको ! देवों का अतिप्रिय तथा मधुर सोमरस को (शोधित करने के लिए) शोधन यंत्र में रखो॥२१॥

एते सोमा असृक्षत गृणानाः श्रवसे महे ।
मदिन्तमस्य धारया ॥२२॥

परमानन्द युक्त यह सोमरस, स्तुतिगान के बाद हमें श्रेष्ठ शक्ति प्रदान करने के लिए धारा के साथ कलश पात्र में गिरता है॥२२॥

अभि गव्यानि वीतये नृम्णा पुनानो अर्षसि ।
सनद्वाजः परि स्रव ॥२३॥

मानवमात्र को सुख देने वाले हे सोमदेव ! आप देवताओं के सेवन हेतु गो दुग्धादि से मिश्रित होकर अन्न प्रदान करते हुए कलश में एकत्र हों॥२३॥

उत नो गोमतीरिषो विश्वा अर्ष परिष्टुभः ।
गृणानो जमदग्निना ॥२४॥

हे सोमदेव ! जमदग्नि ऋषि द्वारा की गई स्तुति से युक्त होकर आप हमें गौओं के साथ अन्य सभी प्रशंसनीय पोषक आहार प्रदान करें॥२४॥

पवस्व वाचो अग्रियः सोम चित्राभिरूतिभिः ।
अभि विश्वानि काव्या ॥२५॥

हे सोमदेव ! आप सर्वश्रेष्ठ हैं। अपने रक्षण-सामर्थ्य सहित आप हमारी वाणी में प्रविष्ट हों तथा सभी काव्यों-स्तुतियों में भी संचरित हों॥२५॥

त्वं समुद्रिया अपोऽग्रियो वाच ईरयन् ।

पवस्व विश्वमेजय ॥२६॥

हे सर्वहितकारी सोमदेव ! आप अग्रणी होकर, हमारी स्तुतियों को सुनकर प्रसन्न हुए देवलोक के जल का आवाहन करें॥२६॥

तुभ्येमा भुवना कवे महिम्ने सोम तस्थिरे ।
तुभ्यमर्षन्ति सिन्धवः ॥२७॥

हे दूरदर्शी सोमदेव ! आपकी महत्ता के प्रभाव से यह विश्व स्थित है। आपके लिए दूध उपलब्ध कराने हेतु देवगणों को तृप्त करने वाली गौएँ आपके पास आ रही हैं॥२७॥

प्र ते दिवो न वृष्टयो धारा यन्त्यसश्चतः ।
अभि शुक्रामुपस्तिरम् ॥२८॥

हे सोमदेव ! आपकी प्रवाहित होने वाली रस – धाराएँ द्युलोक से होने वाली वर्षा के समान छलनी से शोधित होते हुए गमन करती हैं॥२८॥

इन्द्रायेन्दुं पुनीतनोग्रं दक्षाय साधनम् ।
ईशानं वीतिराधसम् ॥२९॥

हे याजको ! वेगवान् , बल बढ़ाने के मुख्य साधन, धनपति, शक्ति के धनी सोम को इन्द्रदेव के निमित्त प्रस्तुत करो॥२९॥

पवमान ऋतः कविः सोमः पवित्रमासदत् ।
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥३०॥

यह तेजसू प्रदायक, पवमान, सत्यरूप, मेधावी सोम. स्तोत्रों को तेजस्विता प्रदान करता है॥३०॥

सूक्त ६३

ऋषि: निध्रुवि काश्यप:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

आ पवस्व सहस्रिणं रयिं सोम सुवीर्यम् ।
अस्मे श्रवांसि धारय ॥१॥

हे सोमदेव ! आप हजारों प्रकार के बल से युक्त श्रेष्ठ धन तथा अन्न हमें प्रदान करें॥१॥

इषमूर्जं च पिन्वस इन्द्राय मत्सरिन्तमः ।
चमूष्वा नि षीदसि ॥२॥

हे सोमदेव ! आप अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाले हैं, अतः इन्द्रदेव के लिए अन्न और बल का संवर्द्धन करते हुए यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठित हों॥२॥

सुत इन्द्राय विष्णवे सोमः कलशे अक्षरत् ।
मधुमाँ अस्तु वायवे ॥३॥

अभिषुत सोमरस इन्द्र, विष्णु और वायुदेव के लिए कलश में प्रतिष्ठित होता है । वह सोमरस मधुर हो॥३॥

एते असृग्रमाशवोऽति ह्वरांसि बभ्रवः ।
सोमा ऋतस्य धारया ॥४॥

भूरे रंग का द्रुतगामी यह सोमरस जल की धारा के साथ आगे बढ़ता है॥४॥

इन्द्रं वर्धन्तो अप्तुरः कृण्वन्तो विश्वमार्यम् ।
अपघ्नन्तो अराव्णः ॥५॥

यह सोम इन्द्रदेव के यश को बढ़ाने वाला, प्रजा को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करने वाला, सम्पूर्ण विश्व को आर्य (श्रेष्ठ) बनाने वाला तथा अदानशीलों को मारने वाला है। ॥५॥

सुता अनु स्वमा रजोऽभ्यर्षन्ति बभ्रवः ।
इन्द्रं गच्छन्त इन्दवः ॥६॥

निकाला गया भूरे रंग का सोमरस अपने स्थान को प्राप्त करने के लिए इन्द्रदेव की ओर गमन करता है॥६॥

अया पवस्व धारया यया सूर्यमरोचयः ।
हिन्वानो मानुषीरपः ॥७॥

हे सोमदेव ! जिसके द्वारा आप मनुष्यों के लिए (शरीरस्थ या प्रकृतिगत) जल रसों को बढ़ाते हैं, जिनसे सूर्यदेव को प्रकाशित करते हैं, उन्हीं श्रेष्ठ धाराओं के साथ आप प्रवाहित हों॥७॥

अयुक्त सूर एतशं पवमानो मनावधि ।
अन्तरिक्षेण यातवे ॥८॥

यह पवित्र सोम अभीष्ट ऊर्ध्व गति पाने के लिए संकल्पित याजकों को सूर्य के अश्वों (किरणों) जैसा वेग प्रदान करने में समर्थ है॥८॥

उत त्या हरितो दश सूरो अयुक्त यातवे ।
इन्दुरिन्द्र इति ब्रुवन् ॥९॥

सोम इन्द्रदेव के नाम का उच्चारण करते हुए हरित वर्ण वाले अश्वों को सूर्य के रथ की भाँति इशों दिशाओं में जाने के लिए नियोजित करता हैं॥९॥

परीतो वायवे सुतं गिर इन्द्राय मत्सरम् ।
अव्यो वारेषु सिञ्चत ॥१०॥

हे स्तोता याजको ! आनन्ददायी सोम को वायु तथा इन्द्रदेव के लिए अनश्वर छलनी से छानकर शोधित करो॥१०॥

पवमान विदा रयिमस्मभ्यं सोम दुष्टरम् ।
यो दूणाशो वनुष्यता ॥११॥

हे परिष्कृत होने वाले सोमदेव ! शत्रुओं के लिए जो दुर्लभ हो, जिसे दुष्ट भी नष्ट न कर सकें, ऐसा धन आप हमें प्रदान करें॥११॥

अभ्यर्ष सहस्रिणं रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
अभि वाजमुत श्रवः ॥१२॥

हे सोमदेव ! आप गौओं तथा अश्वों से युक्त हजारों प्रकार का धन, बल तथा अन्न हमें प्रदान करें॥१२॥

सोमो देवो न सूर्योऽद्रिभिः पवते सुतः ।
दधानः कलशे रसम् ॥१३॥

अद्रि । मेघों या पत्थरों) से निकाले गये देवतुल्य तेजस्वी सोम रस को कलश (विश्वघट) में स्थापित किया जाता है॥१३॥

एते धामान्यार्या शुक्रा ऋतस्य धारया ।
वाजं गोमन्तमक्षरन् ॥१४॥

यह परिष्कृत सोमरस याजकों के घरों में पशुधन तथा अन्न के रूप में प्रवाहित होता है॥१४॥

सुता इन्द्राय वज्रिणे सोमासो दध्याशिरः ।
पवित्रमत्यक्षरन् ॥१५॥

निष्पन्न (प्रकट हुआ) सोम दधि आश्रित (दही के साथ मिलकर अथवा धारण योग्य पर स्थापित होकर) वज्रधारी इन्द्रदेव को समर्पित किया जाता है॥१५॥

प्र सोम मधुमत्तमो राये अर्ष पवित्र आ ।
मदो यो देववीतमः ॥१६॥

हे सोमदेव ! देवगणों के निमित्त आपको जो आनन्ददायी रस है, वह छलनी से छानने पर परिष्कृत होकर ऐश्वर्य की वृद्धि करने वाला हो॥१६॥

तमी मृजन्त्यायवो हरिं नदीषु वाजिनम् ।
इन्दुमिन्द्राय मत्सरम् ॥१७॥

इन्द्रदेव को आनन्दित करने वाले हरिताभ सोम को याजकगण नदी के जल में मिलाकर शुद्ध करते और बलवर्द्धक बनाते हैं॥१७॥

आ पवस्व हिरण्यवदश्वावत्सोम वीरवत् ।
वाजं गोमन्तमा भर ॥१८॥

हे सोमदेव ! आप हमें सुवर्ण आदि धन से, अश्वों से तथा वीर सन्तति से युक्ते वैभव प्रदान करें। गों के दुग्ध से युक्त अन्न आप हमें भरपूर मात्रा में दें॥१८॥

परि वाजे न वाजयुमव्यो वारेषु सिञ्चत ।
इन्द्राय मधुमत्तमम् ॥१९॥

हे याजको ! संग्राम में युद्ध की कामना वाले योद्धा को भेजने की भाँति अत्यन्त मधुर सोमरस को इन्द्रदेव के निमित्त छलनी में शोधित करने के लिए डालो॥१९॥

कविं मृजन्ति मर्ज्यं धीभिर्विप्रा अवस्यवः ।
वृषा कनिक्रदर्षति ॥२०॥

संरक्षण की कामना वाले याजक ज्ञानवर्द्धक सोम को अपनी अँगुलियों से शोधित करते हैं। वह बलवर्द्धक सोम शब्दनाद करता हुआ पात्र में एकत्रित होता है॥२०॥

वृषणं धीभिरप्तुरं सोममृतस्य धारया ।
मती विप्राः समस्वरन् ॥२१॥

धारा के रूप में जल के साथ मिश्रित होने वाले बलवर्द्धक सोमरस की ज्ञानी जन अपनी बुद्धि के अनुसार स्तुति करते हैं॥२१॥

पवस्व देवायुषगिन्द्रं गच्छतु ते मदः ।
वायुमा रोह धर्मणा ॥२२॥

हे दिव्य गुण वाले सोमदेव ! आप छनने के लिए पात्र में जाएँ । आपका आनन्ददायी रंस इन्द्रदेव को प्राप्त हो। आप दिव्यरूप से वायु में मिल जाएँ॥२२॥

पवमान नि तोशसे रयिं सोम श्रवाय्यम् ।
प्रियः समुद्रमा विश ॥२३॥

हे पवित्र सोमदेव ! आप सराहनीय ऐश्वर्य के लिए दुष्टों को दण्डित करते हैं । हम यज्ञ कलश में आपका आवाहन करते हैं॥२३॥

अपघ्नन्पवसे मृधः क्रतुवित्सोम मत्सरः ।
नुदस्वादेवयुं जनम् ॥२४॥

हे सोमदेव ! आप आनन्द प्रदायक, ऋत (सत्य या यज्ञ) के ज्ञाता हैं । विकारों के विनाशक आप देवत्व के विरोधियों का निवारण करें॥२४॥

पवमाना असृक्षत सोमाः शुक्रास इन्दवः ।
अभि विश्वानि काव्या ॥२५॥

शुभ ज्योतिर्मय पवित्रता को प्राप्त होने वाला सोमरस वेदमंत्रों की स्तुतियों के साथ क्षरित होता है॥२५॥

पवमानास आशवः शुभ्रा असृग्रमिन्दवः ।
घ्नन्तो विश्वा अप द्विषः ॥२६॥

पवमान, उज्ज्वल सोम विकारों का शमन करते हुए तीव्रगति से सुपात्र में स्थिर हो रहा है॥२६॥

पवमाना दिवस्पर्यन्तरिक्षादसृक्षत ।
पृथिव्या अधि सानवि ॥२७॥

शोधित सोम पृथ्वी के ऊँचे भाग आकाश से किरणों तथा अन्तरिक्ष की वृष्टि के समान प्रकट होता है॥२७॥

पुनानः सोम धारयेन्दो विश्वा अप स्रिधः ।
जहि रक्षांसि सुक्रतो ॥२८॥

हे श्रेष्ठ कर्म करने वाले तेजस्वी सोमदेव ! हमारे सभी शत्रुओं को पराजित करते हुए आप उन्हें दूर कर दें। स्वयं धारा रूप से शोधित होकर पवित्र बनें॥२८॥

अपघ्नन्त्सोम रक्षसोऽभ्यर्ष कनिक्रदत् ।
द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥२९॥

हे सोमदेव ! असुरों को नष्ट करके शब्दनाद करते हुए आप हमें श्रेष्ठ-तेजस्वी बल प्रदान करें॥२९॥

अस्मे वसूनि धारय सोम दिव्यानि पार्थिवा ।
इन्दो विश्वानि वार्या ॥३०॥

हे सोमदेव ! आप हमें आकाश तथा पृथ्वी में उत्पन्न हुए, स्वीकार करने योग्य सम्पूर्ण धन प्रदान करें॥३०॥

सूक्त ६४

ऋषि: काश्यपो मारीच:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री
सूक्त-६४

वृषा सोम द्युमाँ असि वृषा देव वृषव्रतः ।
वृषा धर्माणि दधिषे ॥१॥

हे सोमदेव ! आप पराक्रमी और तेजस्वी हैं । बल बढ़ाने की क्षमता से युक्त आप सदैव अपने इस धर्म (गुण) को धारण किए रहते हैं॥१॥

वृष्णस्ते वृष्ण्यं शवो वृषा वनं वृषा मदः ।
सत्यं वृषन्वृषेदसि ॥२॥

हे वर्षणशील (सोम) ! आपका बल वर्षणशील है, तेजसमूह वर्षणशील है, आनन्द भी वर्षणशील या बलशाली है । हे बलशाली ! आप वास्तव में हीं वृषा (वर्षणशील या बलशाली) हैं॥२॥

अश्वो न चक्रदो वृषा सं गा इन्दो समर्वतः ।
वि नो राये दुरो वृधि ॥३॥

हे सोमदेव ! आप बलशाली हैं, पशुधन की वृद्धि करने वाले हैं। अत: आप हमें ऐश्वर्य दिलाएँ॥३॥

असृक्षत प्र वाजिनो गव्या सोमासो अश्वया ।
शुक्रासो वीरयाशवः ॥४॥

बल और स्फूर्ति बढ़ाने वाली यह सोमरस तेजस्वी है। गौ, अश्व तथा वीर पुत्रों की कामना करने वालों के द्वारा अभिषुत किया जाता है॥४॥

शुम्भमाना ऋतायुभिर्मृज्यमाना गभस्त्योः ।
पवन्ते वारे अव्यये ॥५॥

याजकों द्वारा अपने हाथों से तैयार किया गया, विशेष रूप से शोभायमान सोमरस शोधक यंत्र द्वारा संस्कारित किया जाता है॥५॥

ते विश्वा दाशुषे वसु सोमा दिव्यानि पार्थिवा ।
पवन्तामान्तरिक्ष्या ॥६॥

दिव्य सोमरस हविदाता को स्वर्गस्थ, अन्तरिक्ष और भौतिकी (सभी प्रकार की) विभूतियों से युक्त करे॥६॥

पवमानस्य विश्ववित्प्र ते सर्गा असृक्षत ।
सूर्यस्येव न रश्मयः ॥७॥

हे सर्वज्ञ सोम ! पवित्र होती हुई आपकी धाराएँ सूर्य की रश्मियों की भाँति तीव्र वेग से नीचे आ रहीं हैं॥७॥

केतुं कृण्वन्दिवस्परि विश्वा रूपाभ्यर्षसि ।
समुद्रः सोम पिन्वसे ॥८॥

हे विश्वव्यापी सोमदेव ! अन्तरिक्ष में ज्ञान चेतना (विचार तरंगों) के रूप में संव्याप्त होकर आप हमें (प्राण पर्जन्य वर्षा के रूप में) जल के माध्यम से विभिन्न प्रकार का वैभव प्रदान करते हैं॥८॥

हिन्वानो वाचमिष्यसि पवमान विधर्मणि ।
अक्रान्देवो न सूर्यः ॥९॥

सूर्य रश्मियों की भाँति प्रकाशित होने वाले हे सोमदेव ! स्तुतिगान के साथ पवित्र होते हुए आप ध्वनिपूर्वक पात्र में स्थिर हो रहे हैं॥९॥

इन्दुः पविष्ट चेतनः प्रियः कवीनां मती ।
सृजदश्वं रथीरिव ॥१०॥

रथी जिस प्रकार अश्वों को (लक्ष्य की ओर) प्रेरित करते हैं, उसी प्रकार यह चेतना सम्पन्न सोम सूक्ष्मदर्शयों की बुद्धि के द्वारा तरंगित होता है॥१६॥

ऊर्मिर्यस्ते पवित्र आ देवावीः पर्यक्षरत् ।
सीदन्नृतस्य योनिमा ॥११॥

हे सोमदेव ! आपकी जो धारा देवगणों को तृप्त करने वाली हैं, वह छलनी में प्रवाहित होते हुए यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठित होती है॥११॥

स नो अर्ष पवित्र आ मदो यो देववीतमः ।
इन्दविन्द्राय पीतये ॥१२॥

हे सोमदेव ! देवगणों का अतिप्रिय तथा आनन्ददायी जो सोमरस है, वह इन्द्रदेव के पान करने के लिए हमारी शोधन प्रणाली से प्रवाहित होता है॥१२॥

इषे पवस्व धारया मृज्यमानो मनीषिभिः ।

इन्दो रुचाभि गा इहि ॥१३॥

हे सोमदेव ! आप ज्ञानी ऋत्विजों के द्वारा परिष्कृत होते हुए पोषक रस के लिए धारा के रूप में शुद्ध हों और गौ-दुग्ध के साथ मिलकर प्रकाशित हों॥१३॥

पुनानो वरिवस्कृध्यूर्जं जनाय गिर्वणः ।
हरे सृजान आशिरम् ॥१४॥

हे हरिताभ स्तुत्य सोम ! दूध के साथ मिलाकर शोधित होने वाले आप याजकों को अन्नादि से परिपूर्ण करें॥१४॥

पुनानो देववीतय इन्द्रस्य याहि निष्कृतम् ।
द्युतानो वाजिभिर्यतः ॥१५॥

हे स्तुत्य, बलवान् सोम ! यज्ञ के निमित्त याजकों द्वारा शोधित किए गये आप, इन्द्रदेव के पास पहुँचें॥१५॥

प्र हिन्वानास इन्दवोऽच्छा समुद्रमाशवः ।
धिया जूता असृक्षत ॥१६॥

अन्तरिक्ष में स्थित वेगवान् सोम अँगुलियों द्वारा दबाने से रस प्रदान करता है॥१६॥

मर्मृजानास आयवो वृथा समुद्रमिन्दवः ।
अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥१७॥

शोधित होने वाला गतिमान् सोमरस सहज ही अन्तरिक्ष से यज्ञस्थल की ओर गमन करता है॥१७॥

परि णो याह्यस्मयुर्विश्वा वसून्योजसा ।
पाहि नः शर्म वीरवत् ॥१८॥

हे सोमदेव ! हमारे यज्ञ में पहुँचने की कामना वाले आप अपनी सामर्थ्य से सम्पूर्ण धन तथा हमारे सन्तति युक्त घर का संरक्षण करें॥१८॥

मिमाति वह्निरेतशः पदं युजान ऋक्वभिः ।
प्र यत्समुद्र आहितः ॥१९॥

यह सोम जब याजकों द्वारा यज्ञ में आवाहित किया जाता है, तब जल में मिश्रित होते समय शब्द करता है॥१९॥

आ यद्योनिं हिरण्ययमाशुर्ऋतस्य सीदति ।
जहात्यप्रचेतसः ॥२०॥

वेगवान् सोम जब सुवर्ण सदृश यज्ञस्थल पर प्रतिष्ठित होता है, तब याजकों के अज्ञान को दूर करता है॥२०॥

अभि वेना अनूषतेयक्षन्ति प्रचेतसः ।
मज्जन्त्यविचेतसः ॥२१॥

स्तोताजन (सोम की) स्तुति करते हैं । श्रेष्ठ ज्ञानीज़न (सोम के) यजन की कामना करते हैं तथा मिथ्या बुद्धि वाले डूब (नष्ट हो जाते हैं॥२१॥

इन्द्रायेन्दो मरुत्वते पवस्व मधुमत्तमः ।
ऋतस्य योनिमासदम् ॥२२॥

अत्यन्त मधुर हे सोमदेव ! जिनके सहायक मरुद्गण हैं, उन इन्द्रदेव के लिए आप यज्ञस्थल पर सुशोभित कलश में प्रतिष्ठित हों॥२२॥

तं त्वा विप्रा वचोविदः परि ष्कृण्वन्ति वेधसः ।
सं त्वा मृजन्त्यायवः ॥२३॥

अखिल विश्व को धारण करने वाले हे सोमदेव ! वाणी के विशेषज्ञ याजक स्तुतियों से आपकी शोभा बढ़ाते हुए आपको भली-भाँति पवित्र कर रहे हैं॥२३॥

रसं ते मित्रो अर्यमा पिबन्ति वरुणः कवे ।
पवमानस्य मरुतः ॥२४॥

हे नूतन तत्त्वदर्शी सोम ! पवित्रता युक्त आपके रस को मित्र, वरुण, अर्यमा और मरुद्गण सेवन करें॥२४॥

त्वं सोम विपश्चितं पुनानो वाचमिष्यसि ।
इन्दो सहस्रभर्णसम् ॥२५॥

हे तेजस्वी सोमदेव ! आप शोधित होते समय हजारों प्रकार के पवित्र स्तोत्रों को प्रेरित करते हैं॥२५॥

उतो सहस्रभर्णसं वाचं सोम मखस्युवम् ।
पुनान इन्दवा भर ॥२६॥

शोधित होने वाले हे सोमदेव ! आप हमें हजारों प्रकार के यज्ञों में स्तोत्रों का गायन करने की प्रेरणा दें॥२६॥

पुनान इन्दवेषां पुरुहूत जनानाम् ।
प्रियः समुद्रमा विश ॥२७॥

हे सोमदेव ! इन लोकों के प्रिय आप अनेक प्रकार की स्तुतियों से पवित्र होते हुए जल में मिश्रित हों॥२७॥

दविद्युतत्या रुचा परिष्टोभन्त्या कृपा ।
सोमाः शुक्रा गवाशिरः ॥२८॥

कान्तिमान्, तेजस्वी, शब्दयुक्त धारा से शुद्ध हुए सोम को गौ के दुग्ध में मिलाकर तैयार किया जाता है॥२८॥

हिन्वानो हेतृभिर्यत आ वाजं वाज्यक्रमीत् ।
सीदन्तो वनुषो यथा ॥२९॥

जैसे युद्ध भूमि में यशस्वी शूरवीर घूमते हैं, उसी प्रकार याजकों से प्रशंसित बलवर्द्धक, सबका हितकारी, संस्कारित सोम यज्ञभूमि में प्रतिष्ठा पाता है॥२९॥

ऋधक्सोम स्वस्तये संजग्मानो दिवः कविः ।
पवस्व सूर्यो दृशे ॥३०॥

हे ज्ञानयुक्त सोमदेव ! आप तेजस्वी सूर्यदेव के सदृश दिव्य आभायुक्त होकर सबके कल्याण के लिए संस्कारित हों॥३०॥

सूक्त ६५

ऋषि: भृगुवारुणि मदग्निर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – गायत्री

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः स्वसारो जामयस्पतिम् ।
महामिन्दुं महीयुवः ॥१॥

सर्वत्र गमनशील एक ही स्थान पर उत्पन्न बहिने (सूर्य किरणे अथवा हाथ की अँगुलियाँ) इस सामर्थ्यवान् , शूर, पालक, महान् सोम को (शोधन के लिए) प्रेरित करती हैं॥१॥

पवमान रुचारुचा देवो देवेभ्यस्परि ।
विश्वा वसून्या विश ॥२॥

शुद्ध किए गए हे तेजस्वी सोमदेव ! आप देवताओं को समर्पित करने के लिए तैयार किए गए हैं। आप सब प्रकार की (सांसारिक एवं दैवी) सम्पदाएँ हमें प्रदान करें॥२॥

आ पवमान सुष्टुतिं वृष्टिं देवेभ्यो दुवः ।
इषे पवस्व संयतम् ॥३॥

हे पवित्र सोमदेव ! जिस प्रकार देवताओं के आशीर्वाद मिलते हैं, उसी प्रकार आप स्तुति करने योग्य (रस) की वर्षा करें । वह वर्षा हमें अन्न प्रदान करने वाली हो॥३॥

वृषा ह्यसि भानुना द्युमन्तं त्वा हवामहे ।
पवमान स्वाध्यः ॥४॥

हे पवित्र होने वाले बलवर्द्धक सोमदेव ! आप सबको समान दृष्टि से देखने वाले तथा तेजस्वी हैं । इस यज्ञ में हम आपको बुलाते हैं॥४॥

आ पवस्व सुवीर्यं मन्दमानः स्वायुध ।
इहो ष्विन्दवा गहि ॥५॥

हे उत्तम आयुधों से युक्त सोमदेव ! आनन्ददायी बनकर आप हमें श्रेष्ठ पराक्रम की क्षमता से युक्त करें और हमारे यज्ञ में आकर सुशोभित हों॥५॥

यदद्भिः परिषिच्यसे मृज्यमानो गभस्त्योः ।

द्रुणा सधस्थमश्नुषे ॥६॥

ऋत्विजों द्वारा दोनों हाथों से शोधित हे सोमदेव ! जल में मिलाने के पश्चात् आपको कलश में स्थापित किया जाता है॥६॥

प्र सोमाय व्यश्ववत्पवमानाय गायत ।
महे सहस्रचक्षसे ॥७॥

हे याजको ! आप व्यश्व ऋषि की भाँति महान् , हजारों आँखों वाले सोम के गुणों का गायन करें॥७॥

यस्य वर्णं मधुश्चुतं हरिं हिन्वन्त्यद्रिभिः ।
इन्दुमिन्द्राय पीतये ॥८॥

हरिताभ सोम को पत्थरों से कूटकर रस निकाला जाता है। उस मधुर तथा शत्रु विनाशक सोमरस को इन्द्रदेव के निमित्त समर्पित किया जाता है॥८॥

तस्य ते वाजिनो वयं विश्वा धनानि जिग्युषः ।
सखित्वमा वृणीमहे ॥९॥

सभी प्रकार के धन पर विजय प्राप्त करने वाले हे सोमदेव ! हम आपसे मित्रभाव की कामना करते हैं॥९॥

वृषा पवस्व धारया मरुत्वते च मत्सरः ।
विश्वा दधान ओजसा ॥१०॥

हे सोमदेव ! आप उद्गाताओं के लिए वेगवती धारा से कलश में प्रवेश करें और मरुद्गणों से सेवित इन्द्रदेव के लिए सामर्थ्य एवं हर्ष बढ़ाने वाले सिद्ध हों॥१०॥

तं त्वा धर्तारमोण्योः पवमान स्वर्दृशम् ।
हिन्वे वाजेषु वाजिनम् ॥११॥

हे शोधित सोमदेव ! आत्मदर्शी, बलवान् आप द्युलोक से पृथिवीलोक तक सभी को संरक्षण प्रदान करने वाले हैं। आप बलवान् को हम वाजी (अन्न, बल, संग्राम) के लिए प्रेरित करते हैं॥११॥

अया चित्तो विपानया हरिः पवस्व धारया ।
युजं वाजेषु चोदय ॥१२॥

हे हरे रंग वाले सोमदेव ! ज्ञानयुक्त बुद्धि अथवा अँगुलियों से परिष्कृत किये गये आप स्रवित हों और अपने सखा इन्द्रदेव को संग्राम में जाने के लिए प्रेरित करें॥१२॥

आ न इन्दो महीमिषं पवस्व विश्वदर्शतः ।
अस्मभ्यं सोम गातुवित् ॥१३॥

हे सर्व द्रष्टा सोमदेव ! आप हमें भरपूर अन्न प्रदान करें। आप हम सबके पथ-प्रदर्शक हैं॥१३॥

आ कलशा अनूषतेन्दो धाराभिरोजसा ।
एन्द्रस्य पीतये विश ॥१४॥

हे सोमदेव ! आपके रस की धाराओं से युक्त कलशों की हम अपनी सामर्थ्य से स्तुति करते हैं। आप इन्द्रदेव के पान करने के निमित्त इन कलशों में प्रविष्ट हों॥१४॥

यस्य ते मद्यं रसं तीव्रं दुहन्त्यद्रिभिः ।
स पवस्वाभिमातिहा ॥१५॥

हे सोमदेव ! आपके अत्यन्त हर्षकारी वेगवान् रस को अद्रि (मेघों या पत्थरों) से दुहते (प्राप्त करते) हैं, वह (रस) शत्रुनाशक (विकारनाशक) होकर स्रवित हो॥१५॥

राजा मेधाभिरीयते पवमानो मनावधि ।
अन्तरिक्षेण यातवे ॥१६॥

मन की शक्तियों के अधीन अथवा यज्ञ के अन्तर्गत यह पवमान राजा (सोम) मेधाओं (गायनों अथवा मंत्रों) से गतिमान् होता हुआ अंतरिक्ष से (यज्ञ कलश या विश्वघट में) जाने के लिए समर्थ होता है॥१६॥

आ न इन्दो शतग्विनं गवां पोषं स्वश्व्यम् ।
वहा भगत्तिमूतये ॥१७॥

हे सोमदेव ! आप सैकड़ों गौओं एवं श्रेष्ठ अश्वों की प्राप्ति और उनका पोषण करने में समर्थ सौभाग्य हमें प्रदान करें॥१७॥

आ नः सोम सहो जुवो रूपं न वर्चसे भर ।
सुष्वाणो देववीतये ॥१८॥

दैवी शक्तियों के लिये शोधित हे सोमदेव ! आप बलवर्द्धक बनकर हमें ऐसी शक्ति प्रदान करें , जिससे हमारी तेजस्विता बढ़े॥१८॥

अर्षा सोम द्युमत्तमोऽभि द्रोणानि रोरुवत् ।
सीदञ्छ्येनो न योनिमा ॥१९॥

हे तेजस्वी सोमदेव ! आप शब्द करते हुए पात्र (यज्ञ या विश्वघट) में शुद्ध होकर स्थित हों । आप तपोवन में स्थित इस यज्ञ मण्ड़प में पधारें॥१९॥

अप्सा इन्द्राय वायवे वरुणाय मरुद्भ्यः ।
सोमो अर्षति विष्णवे ॥२०॥

जल मिश्रित सोमरस इन्द्र, वायु, वरुण, मरुत् एवं विष्णु आदि देवों की तृप्ति के लिए कलश में स्थिर हो॥२०॥

इषं तोकाय नो दधदस्मभ्यं सोम विश्वतः ।
आ पवस्व सहस्रिणम् ॥२१॥

हे दिव्य सोमदेव ! हमारी सन्तानों के लिए आप सहस्रों प्रकार का अन्न, धनादि वैभव सभी ओर से लाकर प्रदान करें॥२१॥

ये सोमासः परावति ये अर्वावति सुन्विरे ।
ये वादः शर्यणावति ॥२२॥

जो सोम दूरस्थ देशों में या समीपस्थ देशों में शर्यणावत सरोवर के निकट उत्पन्न होकर संस्कारित होता है, वह हमारे लिए इष्ट प्रदायक हो॥२२॥

य आर्जीकेषु कृत्वसु ये मध्ये पस्त्यानाम् ।
ये वा जनेषु पञ्चसु ॥२३॥

जो सोम आजक देश में, कर्म करने वालों के देशों में नदियों के किनारे या पंचजनों के बीच उत्पन्न होता तथा संस्कारित किया जाता है, वह हमारे लिये सुखदायक हो॥२३॥

ते नो वृष्टिं दिवस्परि पवन्तामा सुवीर्यम् ।
सुवाना देवास इन्दवः ॥२४॥

निष्पादित, दीप्तिमान् दिव्य सोम हमें द्युलोक से वृष्टि और उत्तम बल युक्त पोषक अन्न प्रदान करे॥२४॥

पवते हर्यतो हरिर्गृणानो जमदग्निना ।
हिन्वानो गोरधि त्वचि ॥२५॥

जमदग्नि (ऑष अथवा जाग्रत् अग्नि) के द्वारा व्यक्त-प्रस्तुत किया गया यह कान्तिमान् (या इच्छा युक्त) गतिशील सोम, गौ त्वचा (गाय के चमड़े अथवा पृथ्वी की ऊपरी सतह) पर धारण करके प्रेरित (प्रयुक्त किया जाता है॥२५॥

प्र शुक्रासो वयोजुवो हिन्वानासो न सप्तयः ।
श्रीणाना अप्सु मृञ्जत ॥२६॥

जल के साथ मिले हुए, अन्न प्रदान करने वाले कान्तिमान् सोमरस को गतिमान् अश्व की भाँति जल से पवित्र किया जाता है॥२६॥

तं त्वा सुतेष्वाभुवो हिन्विरे देवतातये ।
स पवस्वानया रुचा ॥२७॥

उस सोमरस को याजकगण यज्ञों में देवगणों को देने के लिए प्रेरित करते हैं। हे निष्पन्न सोमदेव ! आप इसके अनुरूप सुशोभित हों॥२७॥

आ ते दक्षं मयोभुवं वह्निमद्या वृणीमहे ।
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥२८॥

हे सोमदेव ! आपके हर्ष प्रदान करने वाले, सम्पत्ति देने वाले, रिपुओं से रक्षा करने वाले, अनेक लोगों द्वारा कामना किए जाने वाले बल को हम धारण करते हैं॥२८॥

आ मन्द्रमा वरेण्यमा विप्रमा मनीषिणम् ।
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥२९॥

आनन्दवर्द्धक, श्रेष्ठ, ज्ञानी, विलक्षण संरक्षक और सबके द्वारा प्रशंसनीय हे सोमदेव ! हम (याजकगण) आपकी उपासना करते हैं॥२९॥

आ रयिमा सुचेतुनमा सुक्रतो तनूष्वा ।
पान्तमा पुरुस्पृहम् ॥३०॥

उत्तम कर्मरत हे सोमदेव ! धन, उत्तम ज्ञान, पुत्र-पौत्र आदि श्रेष्ठ सन्तति, सबल संरक्षण और प्रशंसा के योग्य शक्ति-सामर्थ्य पाने के लिए हम आपकी वन्दना करते हैं॥३०॥

सूक्त ६६

ऋषि: शतं वैखानसा:
देवता – पवमान: सोम: १९-२१ अग्नि: । छंद – गायत्री, १८ अनुष्टुप

पवस्व विश्वचर्षणेऽभि विश्वानि काव्या ।
सखा सखिभ्य ईड्यः ॥१॥

हे सर्वद्रष्टा सोमदेव ! मित्र की भाँति हम आपकी सभी स्तोत्रों से स्तुति करते हैं, आप इन स्तुतियों से प्रसन्न होकर हमें उत्तम रस प्रदान करें॥१॥

ताभ्यां विश्वस्य राजसि ये पवमान धामनी ।
प्रतीची सोम तस्थतुः ॥२॥

उन दो धामों (लोकों) से यह पवमान सोम विश्व को प्रकाशित अथवा नियंत्रित करता हैं । (वहाँ से भू-मण्डलीय क्षेत्र में प्रविष्ट होने पर) सोम पश्चिम में स्थित होता है॥३॥

परि धामानि यानि ते त्वं सोमासि विश्वतः ।
पवमान ऋतुभिः कवे ॥३॥

हे पवित्र ज्ञानी सोमदेव ! सम्पूर्ण विश्व में आपका स्थान ऋतुओं के अनुसार निर्धारित है॥३॥

पवस्व जनयन्निषोऽभि विश्वानि वार्या ।
सखा सखिभ्य ऊतये ॥४॥

हे सोमदेव ! आप सबके मित्र हैं, अतः स्वीकार करने योग्य सम्पूर्ण धन तथा उत्तम अन्न अपने मित्रों के संरक्षण के लिए प्रदान करें॥४॥

तव शुक्रासो अर्चयो दिवस्पृष्ठे वि तन्वते ।
पवित्रं सोम धामभिः ॥५॥

हे सोम ! आपकी कान्तिमान् किरणें सूर्य और भूमि के पृष्ठ भाग पर अपने तेज से पवित्र प्रकाश फैलाती हैं॥५॥

तवेमे सप्त सिन्धवः प्रशिषं सोम सिस्रते ।
तुभ्यं धावन्ति धेनवः ॥६॥

हे सोमदेव ! सातों नदियाँ (प्रकृतिगत सप्त प्रवाह) आपकी आज्ञा से प्रवाहित हैं तथा गौएँ (धारक किरणें) दौड़कर आपके पास आती हैं॥६॥

प्र सोम याहि धारया सुत इन्द्राय मत्सरः ।
दधानो अक्षिति श्रवः ॥७॥

हे अक्षय अन्न के धारणकर्ता सोम ! इन्द्र को आनन्द प्रदान करने के लिए आप धारारूप से उनके पास पहुँचें॥७॥

समु त्वा धीभिरस्वरन्हिन्वतीः सप्त जामयः ।
विप्रमाजा विवस्वतः ॥८॥

हे सोमदेव ! सात याजक यज्ञ कार्य में स्तुतियों द्वारा आपकी महिमा बढ़ाने वाले गुणों का वर्णन करते हैं॥८॥

मृजन्ति त्वा समग्रुवोऽव्ये जीरावधि ष्वणि ।
रेभो यदज्यसे वने ॥९॥

हे सोमदेव ! ऊन की बनी छलनी से शब्दनाद करते हुए शोधित होते समय हम अँगुलियों से आपको पवित्र बनाते हैं । शोधित होते समय आप शब्द करते हुए जल में मिलाए जाते हैं॥९॥

पवमानस्य ते कवे वाजिन्त्सर्गा असृक्षत ।
अर्वन्तो न श्रवस्यवः ॥१०॥

हे बलवर्द्धक सोमदेव ! शुद्ध होते समय आपकी यशस्वी धारा अश्वशाला से निकलने वाले द्रुतगामी अश्वों के समान वेगवती होती है॥१०॥

अच्छा कोशं मधुश्चुतमसृग्रं वारे अव्यये ।
अवावशन्त धीतयः ॥११॥

मधुर रस युक्त कलश में हम सोमरस को छानते हैं, जिसे हमारी अँगुलियाँ बार-बार शुद्ध करती हैं॥११॥

अच्छा समुद्रमिन्दवोऽस्तं गावो न धेनवः ।
अग्मन्नृतस्य योनिमा ॥१२॥

जलयुक्त कलश में छाना गया सोमरस यज्ञस्थल में उसी प्रकार (स्वभावतः) जाता है, जैसे दुधारू गौएँ अपने स्थान (गोष्ठी में जाती हैं॥१२॥

प्र ण इन्दो महे रण आपो अर्षन्ति सिन्धवः ।

यद्गोभिर्वासयिष्यसे ॥१३॥

हे सोमदेव ! हमारे महान् यज्ञ में, आपके रस में मिलाने के लिए नदियों का जल लाया गया है । उस सोमरस को गौ के दूध के साथ मिलाया जाता हैं॥१३॥

अस्य ते सख्ये वयमियक्षन्तस्त्वोतयः ।
इन्दो सखित्वमुश्मसि ॥१४॥

हे सोमदेवे ! हम आपके मित्ररूप बनकर रहें । आपकी मित्रता से हम संरक्षण की कामना करते हैं॥१४॥

आ पवस्व गविष्टये महे सोम नृचक्षसे ।
एन्द्रस्य जठरे विश ॥१५॥

हे दिव्यद्रष्टा सोमदेव ! आप गौओं का रक्षण करने वाले हैं। अत: इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित होकर आप उनके उदर में प्रवेश करें॥१५॥

महाँ असि सोम ज्येष्ठ उग्राणामिन्द ओजिष्ठः ।
युध्वा सञ्छश्वज्जिगेथ ॥१६॥

हे सोमदेव ! आप महान् हैं, आप श्रेष्ठ हैं, शूरों में अधिक श्रेष्ठ वीर हैं । आप शत्रुओं पर हमेशा विजय प्राप्त करते हैं॥१६॥

य उग्रेभ्यश्चिदोजीयाञ्छूरेभ्यश्चिच्छूरतरः ।
भूरिदाभ्यश्चिन्मंहीयान् ॥१७॥

यह सोम पराक्रमियों में भी महापराक्रमी , शूरवीरों से भी कहीं अधिक शूरवीर तथा बहुत दान देने वालों से भी महादानी है॥१७॥

त्वं सोम सूर एषस्तोकस्य साता तनूनाम् ।
वृणीमहे सख्याय वृणीमहे युज्याय ॥१८॥

हे सोमदेव ! आप पौष्टिक अन्न हमें प्रदान करें। आप पुत्र तथा पौत्रों को देने वाले हैं, अतः मित्रता की कामना करते हुए सहयोग के लिए हम आपका वरण करते हैं॥१८॥

अग्न आयूंषि पवस आ सुवोर्जमिषं च नः ।
आरे बाधस्व दुच्छुनाम् ॥१९॥

हे अग्निदेव ! हमें लम्बी आयु प्रदान करें । हमें अन्न और बल से पूर्ण करें। श्वान वृत्ति वाले शत्रुओं को आप हमसे दूर करें॥१९॥

अग्निर्ऋषिः पवमानः पाञ्चजन्यः पुरोहितः ।
तमीमहे महागयम् ॥२०॥

पंचजनों (समाज के पाँचों वर्गों) का हित चाहने वाले और सब कुछ देखने वाले अग्निदेव, जिसे ऋत्विजों ने यज्ञ के लिए प्रथम स्थापित किया है, उन समर्थ अग्निदेव की हम स्तुति करते हैं॥२० ॥

अग्ने पवस्व स्वपा अस्मे वर्चः सुवीर्यम् ।
दधद्रयिं मयि पोषम् ॥२१॥

हे अग्ने ! आप उत्तम कर्म की प्रेरणा देने वाले हैं। हमें तेज तथा पराक्रम से युक्त शक्ति प्रदान करें । हमें ऐश्वर्य और पोषक तत्वों से सम्पन्न बनाएँ॥२१॥

पवमानो अति स्रिधोऽभ्यर्षति सुष्टुतिम् ।
सूरो न विश्वदर्शतः ॥२२॥

सोम शत्रुओं को पार करके दूर जाता है । यह सूर्यदेव के सदृश सर्वद्रष्टा सोम उत्तम स्तुतियों से सुशोभित होता है॥२२॥

स मर्मृजान आयुभिः प्रयस्वान्प्रयसे हितः ।
इन्दुरत्यो विचक्षणः ॥२३॥

शोधित हुआ वह तेजस्वी सोम देवगणों के पास जाने की कामना से यज्ञ में अर्पित किया जाता है॥२३॥

पवमान ऋतं बृहच्छुक्रं ज्योतिरजीजनत् ।

कृष्णा तमांसि जङ्घनत् ॥२४॥

यह पवित्रकर्ता सोम महान् , प्रखर, तेजस्वी प्रकाश प्रकट करता है, और काले (अज्ञानरूपी) अन्धकार को विनष्ट करता है॥२४॥

पवमानस्य जङ्घ्नतो हरेश्चन्द्रा असृक्षत ।
जीरा अजिरशोचिषः ॥२५॥

शत्रु विनाशक, सर्वत्र गमनशील, तेजोमय हरिताभ सोम की आह्लादकारी धारा प्रवाहित होती हैं॥२५॥

पवमानो रथीतमः शुभ्रेभिः शुभ्रशस्तमः ।
हरिश्चन्द्रो मरुद्गणः ॥२६॥

उच्च स्थान पर सुशोभित, शुभ्रतेज से कान्तिमान् हरिताभ (सोम) मरुद्गणों की सहायता से पुष्ट होता हुआ सबको आह्लाद युक्त करता है॥२६॥

पवमानो व्यश्नवद्रश्मिभिर्वाजसातमः ।
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥२७॥

हे सोम ! असंख्यों प्रकारके अन्न और सामर्थ्य प्रदाता आप स्तोताओं को श्रेष्ठ पुत्रैश्वर्य प्रदान करते हैं॥२७॥

प्र सुवान इन्दुरक्षाः पवित्रमत्यव्ययम् ।
पुनान इन्दुरिन्द्रमा ॥२८॥

अभिषुत सोम ऊन से बनी छलनी से शोधित होकर इन्द्रदेव की ओर गमन करता है॥२८॥

एष सोमो अधि त्वचि गवां क्रीळत्यद्रिभिः ।
इन्द्रं मदाय जोहुवत् ॥२९॥

यह सोम भूमि के पृष्ठ भाग पर पत्थरों से कूटे जाते समय क्रीड़ा करते हुए आनन्द प्राप्ति के लिए इन्द्रदेव को आमंत्रित करता है॥२९॥

यस्य ते द्युम्नवत्पयः पवमानाभृतं दिवः ।
तेन नो मृळ जीवसे ॥३०॥

हे सोमदेव ! दुग्ध के समान आपका तेजस्वी रस देवलोक में सर्वत्र व्याप्त है । उस रस से आप दीर्घजीवन प्रदान करते हुए हमें सुखी बनाएँ॥३०॥

सूक्त ६७

ऋषि: १-३ भारद्वाज बाहपस्त्य:, ४-६ कश्यपो मारीच:, ७-९ गौतमो राहूगण, १० -१२ अत्रिभौम, १३-१५ विश्वामित्रो गाथिन:, १६-१७ जमदग्निर्भार्गव:, १९-२१ वासिष्ठो मैत्रावारुणि: २२-३२ पवित्र अंगिरसों, वसिष्ठो, उभौ: । देवता – पवमान: सोम: १०-१२ पवमान पूषा, २३-२७ पवमानो ग्नि , २५ पवमान: सविता, २६ पवमानग्निसवितार:, २७ विश्वे देवा, ३१-३२ पावमान्यभ्येता । छंद – गायत्री, १६-१८ नित्यद्विपदा गायत्री, ३० पुरउष्णिक् २७, ३१, ३२ अनुष्टुप

त्वं सोमासि धारयुर्मन्द्र ओजिष्ठो अध्वरे ।
पवस्व मंहयद्रयिः ॥१॥

हे सोमदेव ! परम सुखप्रदायक, सामर्थ्यवान् आप उत्तम यज्ञ में अपनी धाराओं को ऐश्वर्ययुक्त बनाएँ । धन और बल प्रदायक हे सोमदेव ! आप कलश में शुद्ध हों॥१॥

त्वं सुतो नृमादनो दधन्वान्मत्सरिन्तमः ।
इन्द्राय सूरिरन्धसा ॥२॥

हे सोमदेव ! आपका रस याजकों का आनन्द बढ़ाता है। यजमानों को धन तथा आनन्द प्रदान करने वाले आप इन्द्रदेव को भी आनन्दयुक्त अन्न प्रदान करें॥२॥

त्वं सुष्वाणो अद्रिभिरभ्यर्ष कनिक्रदत् ।
द्युमन्तं शुष्ममुत्तमम् ॥३॥

हे सोम ! पत्थरों से कूटकर निकाला गया आपका रस घोषणापूर्वक हमें तेजोयुक्त पौष्टिक अन्न प्रदान करे॥३॥

इन्दुर्हिन्वानो अर्षति तिरो वाराण्यव्यया ।
हरिर्वाजमचिक्रदत् ॥४॥

अनश्वर शोधक यंत्र से नीचे की ओर गमन करता हुआ, वृद्धि को प्राप्त हरिताभ सोमरस शब्दनाद करता हुआ पात्र में एकत्रित होता है॥४॥

इन्दो व्यव्यमर्षसि वि श्रवांसि वि सौभगा ।
वि वाजान्त्सोम गोमतः ॥५॥

हे सोमदेव ! आप अनश्वर छलनी से शोधित किये जाते हैं। गौओं (किरणों या इन्द्रियों) से युक्त बल तथा हविष्यान्न ग्रहण करते हुए आप अनेक प्रकार का सौभाग्य प्राप्त करते हैं॥५॥

आ न इन्दो शतग्विनं रयिं गोमन्तमश्विनम् ।
भरा सोम सहस्रिणम् ॥६॥

हे तेजस्वी सोमदेव ! आप हमें सैकड़ों गौओं तथा अनेक अश्वों से युक्त हजारों प्रकार का धन प्रदान करें॥६॥

पवमानास इन्दवस्तिरः पवित्रमाशवः ।
इन्द्रं यामेभिराशत ॥७॥

छलनी में शोधित होने के लिए जाने वाला द्रुतगामी सोमरस अपने नियमों के अनुरूप इन्द्रदेव को प्राप्त करता हैं॥७॥

ककुहः सोम्यो रस इन्दुरिन्द्राय पूर्व्यः ।
आयुः पवत आयवे ॥८॥

सोम नामक वनस्पति से निकाला गया सोमरस श्रेष्ठ ऐश्वर्यवान् होकर, सर्वत्र गमनशील इन्द्रदेव के निमित्त गमन करता है॥८॥

हिन्वन्ति सूरमुस्रयः पवमानं मधुश्चुतम् ।
अभि गिरा समस्वरन् ॥९॥

उत्तम, बलशाली, मधुर रस प्रदान करने वाले सोम को अँगुलियाँ विस्तृत करती हैं । याजक उस समय स्तुतियों का गान करते हैं॥९॥

अविता नो अजाश्वः पूषा यामनियामनि ।
आ भक्षत्कन्यासु नः ॥१०॥

अज (अजन्मा-सनातन) जिनका वाहन है, ऐसे पूषा देवता प्रत्येक पवित्र स्थान पर हमारा संरक्षण करें। आप हमें इच्छित सुलक्षणी कन्यायें (शक्तियाँ, पुत्रियाँ या वधुएँ) प्रदान करें॥१०॥

अयं सोमः कपर्दिने घृतं न पवते मधु ।
आ भक्षत्कन्यासु नः ॥११॥

उत्तम मुकुटों से सज्जित पूषा देवता के लिए यह सोम मधुर घृत के समान रस प्रदान करता है। वह हमें श्रेष्ठ कन्याएँ प्रदान करता है॥११॥

अयं त आघृणे सुतो घृतं न पवते शुचि ।

आ भक्षत्कन्यासु नः ॥१२॥

हे तेजस्वी पूषादेव ! रस प्रदान करने वाला यह सोम शुद्ध घृत के समान रस आपके लिये देता है और हमें श्रेष्ठ कन्याएँ प्रदान करता है॥१२॥

वाचो जन्तुः कवीनां पवस्व सोम धारया ।
देवेषु रत्नधा असि ॥१३॥

हे सोमदेव ! आप स्तोताओं की स्तुतियों के प्रकाश हैं। आप देवों को रत्नादि से पूर्ण करने वाले हैं। आप हमें धारारूप में रस प्रदान करें । ॥१३॥

आ कलशेषु धावति श्येनो वर्म वि गाहते ।
अभि द्रोणा कनिक्रदत् ॥१४॥

जिस प्रकार श्येन पक्षी अपने निवास में जाता है, उसी प्रकार सोमरस शब्दनाद करता हुआ कलश पात्र में जाता है॥१४॥

परि प्र सोम ते रसोऽसर्जि कलशे सुतः ।
श्येनो न तक्तो अर्षति ॥१५॥

जिस प्रकार श्येन पक्षी अपने निवास में रहता है, उसी प्रकार कलश में स्थापित सोमरस चारों ओर से सुशोभित होता है॥१५॥

पवस्व सोम मन्दयन्निन्द्राय मधुमत्तमः ॥१६॥

हे सोमदेव ! इन्द्रदेव को आनन्द प्रदान करने के लिए आप मधुर रस प्रदान करें॥१६॥

असृग्रन्देववीतये वाजयन्तो रथा इव ॥१७॥

शत्रुओं को पराजित करने वाले रथ के समान देवगणों के पान हेतु सोमरस निकाला जाता हैं॥१७॥

ते सुतासो मदिन्तमाः शुक्रा वायुमसृक्षत ॥१८॥

हर्षकारक, तेजस्वी सोमरस अभिषुत होते हुए वायु के समान शब्दनाद करता है॥१८॥

ग्राव्णा तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रं सोम गच्छसि ।
दधत्स्तोत्रे सुवीर्यम् ॥१९॥

हे सोमदेव ! पत्थरों से कूटकर निकाला गया, आपको रस पवित्र होने के लिए प्रवाहित होता है । यह रस स्तोताओं को उत्तम बल प्रदान करता है॥१९॥

एष तुन्नो अभिष्टुतः पवित्रमति गाहते ।
रक्षोहा वारमव्ययम् ॥२०॥

यह स्तुत्य शोधित सोम सर्वोपरि पवित्रता प्रदान करता है । राक्षसों का नाश करने वाला यह सोमरस अविनाशी छलनी में छाना जाता है॥२०॥

यदन्ति यच्च दूरके भयं विन्दति मामिह ।
पवमान वि तज्जहि ॥२१॥

हे पवित्र सोम ! जो भय हमारे समीप है, जो दूर है तथा जो यहाँ व्याप्त है, आप उस भय को नष्ट करें॥२१॥

पवमानः सो अद्य नः पवित्रेण विचर्षणिः ।
यः पोता स पुनातु नः ॥२२॥

वह सर्वद्रष्टा सोम पवित्र करने वाला है, शोधित होते समय हमें भी वह पवित्र बनाये॥२२॥

यत्ते पवित्रमर्चिष्यग्ने विततमन्तरा ।
ब्रह्म तेन पुनीहि नः ॥२३॥

हे अग्निदेव ! आपके अन्दर जो पवित्र करने वाला तेज़ व्याप्त हैं, उससे हमारे ज्ञान को पवित्र बनाएँ॥२३॥

यत्ते पवित्रमर्चिवदग्ने तेन पुनीहि नः ।
ब्रह्मसवैः पुनीहि नः ॥२४॥

हे अग्निदेव ! आपका जो पवित्र करने वाला तेज है, उससे तथा ज्ञान के स्तोत्रों से हमें पवित्र बनाएँ॥२४॥

उभाभ्यां देव सवितः पवित्रेण सवेन च ।
मां पुनीहि विश्वतः ॥२५॥

हे सवितादेव ! आप पवित्र करने वाले ज्ञान तथा सोम इन दोनों से हमें पवित्र करें॥२५॥

त्रिभिष्ट्वं देव सवितर्वर्षिष्ठैः सोम धामभिः ।
अग्ने दक्षैः पुनीहि नः ॥२६॥

हे सवितादेव ! हे अग्निदेव ! हे सोमदेव ! सर्व समर्थ तीनों तेजों के द्वारा आप हमें पवित्र बनाएँ॥२६॥

पुनन्तु मां देवजनाः पुनन्तु वसवो धिया ।
विश्वे देवाः पुनीत मा जातवेदः पुनीहि मा ॥२७॥

अष्टवसु, जातवेद, दिव्यजन तथा सभी देवगण बुद्धि के द्वारा हमें पवित्र बनाएँ॥२७॥

प्र प्यायस्व प्र स्यन्दस्व सोम विश्वेभिरंशुभिः ।
देवेभ्य उत्तमं हविः ॥२८॥

हे सोम ! देवों को समर्पित करने योग्य सभी प्रकार के हविष्यान्न हमें प्रदान करते हुए हमारी वृद्धि करें॥२८॥

उप प्रियं पनिप्नतं युवानमाहुतीवृधम् ।
अगन्म बिभ्रतो नमः ॥२९॥

शब्दनाद करने वाले, उपासकों के प्रिय, आहुतियों से विस्तार पाने वाले तरुण अग्निदेव को हम नमन करते हुए उनके समीप जाते हैं॥२९॥

अलाय्यस्य परशुर्ननाश तमा पवस्व देव सोम ।
आखुं चिदेव देव सोम ॥३०॥

आक्रान्ता शत्रु के शस्त्र नष्ट हों । हे सोम ! अपना रस प्रदान करते हुए आप हमारे शत्रुओं का नाश करें॥३०॥

यः पावमानीरध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् ।
सर्वं स पूतमश्नाति स्वदितं मातरिश्वना ॥३१॥

'ऋषियों द्वारा संगृहीत जीवन सूत्रों में रस लेने वाले, पवित्र करने वाले सूक्तों का पाठ करने वाले (साधक) यज्ञ के प्रभाव से वायुदेव द्वारा सुखपूर्वक स्वीकार किया हुआ (यज्ञ से सूक्ष्मीकृत) सब प्रकार से पवित्र अन्न का सेवन करते हैं॥३१॥

पावमानीर्यो अध्येत्यृषिभिः सम्भृतं रसम् ।
तस्मै सरस्वती दुहे क्षीरं सर्पिर्मधूदकम् ॥३२॥

जो ऋषियों द्वारा प्रणीत हुए वेदों का-ऋचाओं का अध्ययन करता है, उसके लिए(उसके ज्ञान को पुष्ट करने के लिए) सरस्वती दुग्ध, घृत, शहद जैसे तत्त्व स्वयं उपलब्ध कराती है॥३२॥

सूक्त ६८

ऋषि: वत्सप्रियलंदन:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, १० त्रिष्टुप

प्र देवमच्छा मधुमन्त इन्दवोऽसिष्यदन्त गाव आ न धेनवः ।
बर्हिषदो वचनावन्त ऊधभिः परिस्रुतमुस्रिया निर्णिजं धिरे ॥१॥

मधुर सोमरस देवगणों के लिए प्रवाहित होकर पात्र में उसी प्रकार जाता है, जिस प्रकार दुधारू गौएँ अपने बछड़ों के लिए दुग्ध प्रवाहित करती हैं। यज्ञमण्डप में एकत्रित या व्यक्त गौएँ अथवा वाणियाँ शब्द करती हुई अपने सार तत्त्व प्रकट करने वाले भागों-अंगों में परिश्रुत (दुहा गया या श्रवण योग्य) सार तत्त्व (दुग्ध या ज्ञान) धारण करती हैं॥१॥

स रोरुवदभि पूर्वा अचिक्रददुपारुहः श्रथयन्स्वादते हरिः ।
तिरः पवित्रं परियन्नुरु ज्रयो नि शर्याणि दधते देव आ वरम् ॥२॥

वह हरिताभ सोम स्तोताओं की सर्वश्रेष्ठ स्तुतियों को सुनते हुए, समीप आने वालों को विशेष रूप से आनन्द प्रदान करता है। सर्वोत्तम पवित्र

बनकर अग्रगामी यह सोम वेगपूर्वक शत्रुओं का नाश करता हैं और शब्दनाद करते हुए दिव्यता को धारण करता है॥२॥

वि यो ममे यम्या संयती मदः साकंवृधा पयसा पिन्वदक्षिता ।
मही अपारे रजसी विवेविददभिव्रजन्नक्षितं पाज आ ददे ॥३॥

आनन्द बढ़ाने वाला यह सोम सुनियमों से बँधे तथा परस्पर साथ रहने वाले, क्षीण न होने वाले, महान् द्यावा-पृथिवी को जानता है और उन्हें पय (जल या दुग्ध) से सिंचित करता, आगे बढ़ता (प्रवाहित होता हुआ) , यह सोम अक्षयबल को धारण करता (कराता) है॥३॥

स मातरा विचरन्वाजयन्नपः प्र मेधिरः स्वधया पिन्वते पदम् ।
अंशुर्यवेन पिपिशे यतो नृभिः सं जामिभिर्नसते रक्षते शिरः ॥४॥

वह बुद्धिमान् सोम माता-पिता रूपी पृथिवीं लोक तथा द्युलोक के ऊपर विचरण करते हुए जल को प्रेरित करता है। अपनी शक्ति से अपने पद को समृद्ध करते हुए यह सोम जौ आदि अन्नों से पुष्ट होता है । यह सोम मनुष्यों की शक्तियों (अँगुलियों) से मिलकर रहता है तथा श्रेष्ठ (तत्त्वों-प्रवृत्तियों) की रक्षा करता है॥४॥

सं दक्षेण मनसा जायते कविर्ऋतस्य गर्भो निहितो यमा परः ।
यूना ह सन्ता प्रथमं वि जज्ञतुर्गुहा हितं जनिम नेममुद्यतम् ॥५॥

यह सोम शक्तिशाली मन से भली प्रकार प्रकट होता है। नियमानुसार यह उच्च स्थान पर रहता है । यह सोम यज्ञ का गर्भ हैं। ये दोनों (सूर्य और चन्द्र अथवा सोम के प्रकट एवं अप्रकट रूप) पहले जान लिए गए हैं। गुह्य स्थान पर रहने वाले इनका जन्म (प्राकट्य) नियमानुसार होता है॥५॥

मन्द्रस्य रूपं विविदुर्मनीषिणः श्येनो यदन्धो अभरत्परावतः ।
तं मर्जयन्त सुवृधं नदीष्वाँ उशन्तमंशुं परियन्तमृग्मियम् ॥६॥

श्येन पक्षी द्वारा दूर से लाये गये इस आनन्दवर्द्धक सोमरूपी अन्न के स्वरूप को ज्ञानीजन जानते हैं । स्तुति करने योग्य यह सोम नदियों के जल में मिलकर उत्तम रीति से परिष्कृत तथा विस्तृत होकर देवगणों के पास पहुँचने की कामना से उनके पास जाता है॥६॥

त्वां मृजन्ति दश योषणः सुतं सोम ऋषिभिर्मतिभिर्धीतिभिर्हितम् ।
अव्यो वारेभिरुत देवहूतिभिर्नृभिर्यतो वाजमा दर्षि सातये ॥७॥

हे सोमदेव ! ऋषियों ने यज्ञकर्मों के द्वारा आपके रस को बुद्धिपूर्वक यज्ञस्थल पर स्थापित किया है। हमारी दस अँगुलियों सोमरस को पवित्र बनाती हैं। इसे देवगणों की स्तुति करने वाले याजकों ने ऊन की छलनी से छानकर रखा हैं । यह सोम दान (श्रेष्ठ कार्य) के लिए अन्न प्रदान करता है॥७॥

परिप्रयन्तं वय्यं सुषंसदं सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभः ।
यो धारया मधुमाँ ऊर्मिणा दिव इयर्ति वाचं रयिषाळमर्त्यः ॥८॥

देवों के इच्छित सुप्रतिष्ठित यज्ञ पात्र में स्थापित होने वाले सोमरस की मन से स्तुतियाँ की जाती हैं। बलशाली यह सोम सर्वोपरि शक्ति के साथ धारारूप में द्युलोक से आता है । शत्रु के धन पर विजय प्राप्त करने वाले इस अविनाशी सोम की याजकगण स्तुति करते हैं॥८॥

अयं दिव इयर्ति विश्वमा रजः सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ।
अद्भिर्गोभिर्मृज्यते अद्रिभिः सुतः पुनान इन्दुर्वरिवो विदत्प्रियम् ॥९॥

यह सोम द्युलोक से पृथ्वी पर जल वृष्टि करता है । परिष्कृत सोमरस यज्ञस्थल पर कलशों में विराजमान होता हैं । पत्थरों से कूटकर तैयार किया गया यह सोमरस शोधित होने पर स्तोताओं को धन प्रदान करता हैं॥९॥

एवा नः सोम परिषिच्यमानो वयो दधच्चित्रतमं पवस्व ।
अद्वेषे द्यावापृथिवी हुवेम देवा धत्त रयिमस्मे सुवीरम् ॥१०॥

हे सोमदेव ! जल और गौ के दुग्ध से मिश्रित हुए आप विविध प्रकार का अन्न हमें प्रदान करें । द्वेष न करने वाले द्युलोक तथा पृथिवी लोक का हम आवाहन करते हैं। ये देवगण हमें शौर्यवान् संतति से युक्त धन प्रदान करें॥१०॥

सूक्त ६९

ऋषि: हिरण्स्तूप अंगिरस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, ९-१० त्रिष्टुप

इषुर्न धन्वन्प्रति धीयते मतिर्वत्सो न मातुरुप सर्ज्यूधनि ।
उरुधारेव दुहे अग्र आयत्यस्य व्रतेष्वपि सोम इष्यते ॥१॥

जिस प्रकार धनुष पर बाण लगाया जाता है, जिस प्रकार माता की गोद में पुत्र बैठता है, उसी प्रकार हम इन्द्रदेव की स्तुति करते हैं। जिस प्रकार दूध देने वाली गौ सबको स्नेहपूर्वक दूध देती है, उसी प्रकार हम इस श्रेष्ठ कर्म में (इन्द्रदेव के लिए श्रद्धासिक्त सोम अर्पित करते हैं॥१॥

उपो मतिः पृच्यते सिच्यते मधु मन्द्राजनी चोदते अन्तरासनि ।
पवमानः संतनिः प्रघ्नतामिव मधुमान्द्रप्सः परि वारमर्षति ॥२॥

मधुर एवं आनन्ददायक सोमरस स्तुत्य इन्द्रदेव को प्रदान किया जाता है । यजमानों द्वारा निकाला गया यह मधुर सोमरस शत्रु पर आघात करने वाले बाणों के समान बार-बार परिष्कृत किया जाता हैं॥२॥

अव्ये वधूयुः पवते परि त्वचि श्रथ्नीते नप्तीरदितेर्ऋतं यते ।
हरिरक्रान्यजतः संयतो मदो नृम्णा शिशानो महिषो न शोभते ॥३॥

वधू की कामना करने वाले की भाँति यह सोम अनश्वर त्वचा (अंतरिक्ष के अयनमण्डल के आवरण अथवा पृथ्वी की सतह) पर स्रवित होता है । अदिति की सन्तान रूप यह सोम यजमान को यज्ञ कार्य (प्रकृति या यज्ञस्थल के यज्ञ) को प्रेरित करता है । याज्ञिकों को आनन्दित करते हुए यह गतिशील सोम सबको पार करता हुआ अपनी शक्ति को तीक्ष्ण करके शूरवीरों के समान सुशोभित होता है॥३॥

उक्षा मिमाति प्रति यन्ति धेनवो देवस्य देवीरुप यन्ति निष्कृतम् ।
अत्यक्रमीदर्जुनं वारमव्ययमत्कं न निक्तं परि सोमो अव्यत ॥४॥

शब्द करते हुए प्रकाशमान सोम की दिव्य वाणी से स्तुति की जाती है । वह सोम शुद्ध होता हुआ दिव्य गुणों को धारण कर लेता है॥४॥

अमृक्तेन रुशता वाससा हरिरमर्त्यो निर्णिजानः परि व्यत ।
दिवस्पृष्ठं बर्हणा निर्णिजे कृतोपस्तरणं चम्वोर्नभस्मयम् ॥५॥

हरिताभ अविनाशी सोम, जल के साथ मिलाये जाने पर शोधित होता हैं । कान्तिमय, शुद्ध तथा तेजस्वी रूप में वह सोम सर्वत्र व्याप्त है । द्युलोक के पृष्ठभाग पर स्थित सूर्यदेव को तेजस्वी बनाते हुए आकाश तथा भूमि को प्रकाशित करता है॥५॥

सूर्यस्येव रश्मयो द्रावयित्नवो मत्सरासः प्रसुपः साकमीरते ।
तन्तुं ततं परि सर्गास आशवो नेन्द्राद्दते पवते धाम किं चन ॥६॥

सूर्य रश्मियों के सदृश प्रेरणादायी, आनन्दवर्द्धक सोमधाराएँ शोधक छत्रे से गिरती हुई फैलती हैं। वे इन्द्रदेव (संगठक, धारक शक्तियों) के अतिरिक्त किसी और को प्राप्त नहीं होतीं॥६॥

सिन्धोरिव प्रवणे निम्न आशवो वृषच्युता मदासो गातुमाशत ।
शं नो निवेशे द्विपदे चतुष्पदेऽस्मे वाजाः सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥७॥

याजकों द्वारा निकाला गया आनन्ददायी सोमरस नदी के प्रवाह की भाँति इन्द्रदेव के पास जाने की कामना करता है । हे सोमदेव ! हमें धन-धान्य तथा सन्तति प्रदान करते हुए आप हम मनुष्यों तथा हमारे पशुओं को संरक्षण प्रदान करें॥७॥

आ नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवदश्वावद्गोमद्यवमत्सुवीर्यम् ।
यूयं हि सोम पितरो मम स्थन दिवो मूर्धानः प्रस्थिता वयस्कृतः ॥८॥

हे सोमदेव ! द्युलोक के उच्च शिखर पर विराजमान आप हमारे पिता हैं, आप अन्नदाता हैं, अतः हमें अश्वों गौओं, उत्तम पराक्रम तथा सुवर्ण आदि से युक्त धन-धान्य प्रदान करें॥८॥

एते सोमाः पवमानास इन्द्रं रथा इव प्र ययुः सातिमच्छ ।
सुताः पवित्रमति यन्त्यव्यं हित्वी वव्रिं हरितो वृष्टिमच्छ ॥९॥

जिस तरह शत्रुओं को धन हरण करने के लिये रथ अच्छी तरह जाते हैं, उसी तरह शोधित सोमरस इन्द्रदेव के पास जाता है । यह सोमरस अविनाशी छलनी से प्रवाहित होते हुए वृद्धावस्था दूर करने की शक्ति के साथ सुखों की वृष्टि करता है॥९॥

इन्दविन्द्राय बृहते पवस्व सुमृळीको अनवद्यो रिशादाः ।
भरा चन्द्राणि गृणते वसूनि देवैर्द्यावापृथिवी प्रावतं नः ॥१०॥

हे सोम ! महान् इन्द्र के लिये आप रस प्रदान करें । आप उत्तम सुख प्रदायक अनिन्दनीय तथा शत्रुनाशक हैं। स्तोताओं को भरपूर अन्न प्रदान करें । हे पृथिवीं तथा धुलोक ! आप उत्तम ऐश्वर्य सहित हमारी रक्षा करें॥१०॥

सूक्त ७०

ऋषि: रेणुवैश्वामित्र:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, १० त्रिष्टुप

त्रिरस्मै सप्त धेनवो दुदुह्रे सत्यामाशिरं पूर्व्ये व्योमनि ।
चत्वार्यन्या भुवनानि निर्णिजे चारूणि चक्रे यदृतैरवर्धत ॥१॥

परम व्योम में सोम को२१ गौएँ (दिव्य धाराएँ) दुग्ध (पोषण) प्रदान करती हैं, तब यज्ञ से संबन्धित यह सोम चार अन्य सुन्दर भुवनों (लोकों अथवा रसों) का निर्माण करता है॥१॥

स भिक्षमाणो अमृतस्य चारुण उभे द्यावा काव्येना वि शश्रथे ।
तेजिष्ठा अपो मंहना परि व्यत यदी देवस्य श्रवसा सदो विदुः ॥२॥

श्रेष्ठ रस की इच्छा करने वालों की स्तुतियों से प्रभावित दिव्य सोम द्युलोक और पृथिवीलोक को जल से परिपूर्ण कर देता है । ऋत्विज् जब देवों के स्थान को यज्ञ की हवि से युक्त करते हैं, तो वह (सोम) जल को अपनी महिमा से मंडित कर देता है॥२॥

ते अस्य सन्तु केतवोऽमृत्यवोऽदाभ्यासो जनुषी उभे अनु ।
येभिर्नृम्णा च देव्या च पुनत आदिद्राजानं मनना अगृभ्णत ॥३॥

अदम्य और अमरत्व प्राप्त सोमरस की किरणें दोनों प्रकार के(द्विपद एवं चतुष्पद अथवा स्थावर एवं जंगम) प्राणियों की रक्षक हैं । अपनी सामर्थ्य से यह सोम अन्न को देवों की ओर प्रेरित करता है, तत्पश्चात् राजा सोम की स्तुतियाँ की जाती हैं॥३॥

स मृज्यमानो दशभिः सुकर्मभिः प्र मध्यमासु मातृषु प्रमे सचा ।
व्रतानि पानो अमृतस्य चारुण उभे नृचक्षा अनु पश्यते विशौ ॥४॥

श्रेष्ठ कर्म करने वाली दस (दिशाओं या अँगुलियों) से शोधित वह सोम सहयोगी रूप में सभी लोकों को जानता है। माता के समान वह यज्ञस्थल के मध्य में प्रतिष्ठित होता है । सर्वद्रष्टा वह सोम सुनियमों पर चलता हुआ उत्तम जल की वृष्टि करता है तथा दोनों प्रकार के मनुष्यों (उत्तम तथा अधम) का निरीक्षण करता है॥४॥

स मर्मृजान इन्द्रियाय धायस ओभे अन्ता रोदसी हर्षते हितः ।
वृषा शुष्मेण बाधते वि दुर्मतीरादेदिशानः शर्यहेव शुरुधः ॥५॥

सबके धारक इन्द्रदेव की सामर्थ्य को बढ़ाने के उद्देश्य से शोधित वह सोमरस द्युलोक तथा पृथिवीं लोक के मध्य स्थापित होकर हर्षित होता है। शत्रु सेनाओं को मारने के उद्देश्य से बार-बार शत्रुओं का आवाहन करते हुए अपने पराक्रम से उनका संहार करता है॥५॥

स मातरा न ददृशान उस्रियो नानददेति मरुतामिव स्वनः ।
जानन्नृतं प्रथमं यत्स्वर्णरं प्रशस्तये कमवृणीत सुक्रतुः ॥६॥

द्युलोक तथा पृथिवीं लोक रूपी दोनों माताओं को बार-बार देखकर, शब्दनाद करते हुए वह सोम सर्वत्र गमनशील है। गाय के बछड़े तथा मरुतों के समान शब्द करते हुए वह सोम द्यावा – पृथिवीं के पास जाता है। जल को मानवों का सर्वोत्तम हितकारी जानकर स्वयं को जल में मिलाते हुए, वह सोम स्तुति करने वाले याजकों को प्राप्त होता है॥६॥

रुवति भीमो वृषभस्तविष्यया शृङ्गे शिशानो हरिणी विचक्षणः ।
आ योनिं सोमः सुकृतं नि षीदति गव्ययी त्वग्भवति निर्णिगव्ययी
॥७॥

यह भंयकर हरणकर्ता की भाँति सूक्ष्म निरीक्षण करने वाला वृषभ (बलशाली-वर्षणशील सोम) अपने बल वर्द्धन की कामना से दोनों सींगों (दोनों प्रकार के सूक्ष्म एवं स्थूल प्रवाहों) को तीक्ष्ण करता हुआ

गर्जन करता है । यह श्रेष्ठ कर्मो (यज्ञादि) के उत्पत्ति केन्द्रों (यज्ञ वेदी या प्रकृति यज्ञ के केन्द्रों) में स्थापित होता है । (इसका माध्यम) निश्चित रूप से अविनाशी गौ की त्वचा (अंतरिक्षीय संरक्षण अयन आवरण अथवा पृथ्वी की सतह) होती हैं॥७॥

शुचिः पुनानस्तन्वमरेपसमव्ये हरिर्न्यधाविष्ट सानवि ।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे त्रिधातु मधु क्रियते सुकर्मभिः ॥८॥

शरीर को पवित्र बनाने वाला निष्पाप, शुद्ध, हरि (हरे रंग या गतिशील तेजस्वी) सोम ऊपर स्थित अविनाशी छन्नों में स्थित रहता है । वह सोमरस याज्ञिकों द्वारा मित्र, वरुण, वायु आदि देवगणों के लिए दिया जाता है॥८॥

पवस्व सोम देववीतये वृषेन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश ।
पुरा नो बाधाद्दुरिताति पारय क्षेत्रविद्धि दिश आहा विपृच्छते ॥९॥

हे बलशाली सोमदेव ! देवों के लिए आप अपना रस प्रदान करें, इन्द्रदेव के निमित्त उनके पात्र में स्थापित हों तथा कष्ट पहुँचाने वाले पापियों से हमारी रक्षा करें । मार्ग का ज्ञाता जिस प्रकार पथिक का मार्गदर्शन करता है, उसी प्रकार आप श्रेष्ठ कर्मों के लिए हमारा मार्गदर्शन करें॥९॥

हितो न सप्तिरभि वाजमर्षेन्द्रस्येन्दो जठरमा पवस्व ।
नावा न सिन्धुमति पर्षि विद्वाञ्छूरो न युध्यन्नव नो निदः स्पः ॥१०॥

हे सोमदेव ! आप कलश में स्थापित हों । युद्ध में जाने वाले प्रेरक घोड़ों की भाँति आप कलश में गमन करें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के उदर में जाकर उन्हें तृप्त करें । जिस प्रकार नाविक नौका द्वारा नदी को पार करता है, उसी प्रकार आप दुःखों से हमें पार करें, विद्वान् शूरवीर की तरह युद्ध करते हुए हमारे निन्दकों का नाश करें तथा हमारा संरक्षण करें॥१०॥

सूक्त ७१

ऋषि: ऋषभो विश्वामित्र:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, ९ त्रिष्टुप

आ दक्षिणा सृज्यते शुष्म्यासदं वेति द्रुहो रक्षसः पाति जागृविः ।
हरिरोपशं कृणुते नभस्पय उपस्तिरे चम्वोर्ब्रह्म निर्णिजे ॥१॥

बलवर्द्धक सोम यथास्थान स्थित हो रहा है। वह सोम जाग्रत् रहने वाले याजकों को , द्रोही राक्षसों से संरक्षण प्रदान करता है । द्युलोक और पृथिवी लोक के मध्य में वह सोम सूर्यदेव को प्रकाशित कर रहा है । आकाश से हो रहीं वृष्टि में वह हरिताभ सोम प्रवेश कर रहा हैं । (इस प्रकार प्रकृति द्वारा) सोमयज्ञ में दक्षिणा दी जा रही है॥१॥

प्र कृष्टिहेव शूष एति रोरुवदसुर्यं वर्णं नि रिणीते अस्य तम् ।
जहाति वव्रिं पितुरेति निष्कृतमुपप्रुतं कृणुते निर्णिजं तना ॥२॥

सोम विस्तारित (ऊन अथवा अंतरिक्षीय अयन मण्डल) से छुनकर, परिष्कृत होकर, पिता (पालनकर्ता या पोषक अन्न) के रूप में प्रकट

हो रहा है । (इस प्रक्रिया में) दुर्धर्ष शत्रु नाशक वीर की भाँति शब्द करते हुए, सोम अपने असुर (विकार) नाशक बल को प्रकट करता है तथा बुढ़ापे को दूर करता है॥२॥

अद्रिभिः सुतः पवते गभस्त्योर्वृषायते नभसा वेपते मती ।
स मोदते नसते साधते गिरा नेनिक्ते अप्सु यजते परीमणि ॥३॥

हाथों द्वारा पत्थरों से कूटकर निकाला गया सोमरस यज्ञपात्र में स्थापित होता है । बलवान् होकर स्तुतियों से आनन्दित होते हुए आकाश में सर्वत्र गमन करता है । जल में मिश्रित शोधित सोमरस पात्र में एकत्रित होकर स्तुति करने पर मनोकामनाओं की पूर्ति करते हुए यज्ञ में प्रतिष्ठित होता है॥३॥

परि द्युक्षं सहसः पर्वतावृधं मध्वः सिञ्चन्ति हर्म्यस्य सक्षणिम् ।
आ यस्मिन्गावः सुहुताद ऊधनि मूर्धञ्छ्रीणन्त्यग्रियं वरीमभिः ॥४॥

यह बलशाली मधुर सोमरस द्युलोक के उच्च शिखर में रहने वाले शत्रु के नगरों को ध्वंस करने वाले इन्द्रदेव को तृप्त करता हैं । हविष्यान्न का सेवन करने वाली गौएँ (गौ, प्रजाएँ, किरणें) अपने दूध को श्रेष्ठ गुणों के साथ (इन्द्रदेव के लिए) प्रदान करती हैं॥४॥

समी रथं न भुरिजोरहेषत दश स्वसारो अदितेरुपस्थ आ ।

जिगादुप ज्रयति गोरपीच्यं पदं यदस्य मतुथा अजीजनन् ॥५॥

जिस प्रकार रथ को अँगुलियाँ (इच्छित मार्ग में जाने के लिए प्रेरित करती हैं, उसी प्रकार दोनों भुजाओं की दसों अँगुलियाँ सोम को यज्ञस्थल की ओर (यज्ञीय कार्य के लिए प्रेरित करती हैं। स्तोताओं की स्तुतियों से प्रकट हुआ यह सोमरस गाय के दूध में मिश्रित होकर पात्र में एकत्रित होता है॥५॥

श्येनो न योनिं सदनं धिया कृतं हिरण्ययमासदं देव एषति ।
ए रिणन्ति बर्हिषि प्रियं गिराश्वो न देवाँ अप्येति यज्ञियः ॥६॥

यह तेजस्वी सोम स्तोताओं द्वारा स्तुति करने पर श्येन पक्षी के अपने निवास में जाने की भाँति सुवर्णमय आसन पर विराजमान होता है। जिस प्रकार अश्व देवगणों के पास जाता है, उसी तरह स्तोताओं की स्तुतियों से यह प्रिय सोम यज्ञस्थल पर जाता है॥६॥

परा व्यक्तो अरुषो दिवः कविर्वृषा त्रिपृष्ठो अनविष्ट गा अभि ।
सहस्रणीतिर्यतिः परायती रेभो न पूर्वीरुषसो वि राजति ॥७॥

यह तेजस्वी ज्ञानवान् सोम आकाश में सूर्यदेव के समान दूर-दूर तक स्पष्ट रूप में दिखाई देता है। तीनों लोकों में व्याप्त यह बलशाली सोम गो-दुग्ध अथवा वाणी से संयुक्त होता है । हजार नेत्रों वाला,

यज्ञपात्र में एकत्रित होने वाला, स्तोता के समान शब्दनाद करता हुआ, यह सोमरस विशेष रूप से उषा काल के पूर्व भी प्रकाशित होता है॥७॥

त्वेषं रूपं कृणुते वर्णो अस्य स यत्राशयत्समृता सेधति स्रिधः ।
अप्सा याति स्वधया दैव्यं जनं सं सुष्टुती नसते सं गोअग्रया ॥८॥

(सूर्यदेव की) किरणें इस सोम को तेजस्वी रूप प्रदान करती हैं। वह सोम किरणों के स्रोत में रहकर शत्रुओं का विनाश करता है। वह सोम जल के साथ मिलकर हविरूप में देवत्व धारियों को प्राप्त होता है । (ऐसे सोम की) उत्तम स्तुतियों की जाती हैं । यह सोम गौ, हव्यों (दुग्धादि) अथवा किरणों के अग्रभाग से संयुक्त होता है॥८॥

उक्षेव यूथा परियन्नरावीदधि त्विषीरधित सूर्यस्य ।
दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षत क्षां सोमः परि क्रतुना पश्यते जाः ॥९॥

जिस प्रकार अपने चारों ओर गौओं के झुण्ड को देखकर, प्रमत्त बैल शब्दनाद करता है, उसी प्रकार द्युलोक में उत्पन्न हुआ सोम पृथिवी को देखते हुए चारों ओर सूर्यदेव जैसा तेज फैलाता है । यह सोम यज्ञस्थल में याजकों का निरीक्षण करता है॥९॥

सूक्त ७२

ऋषि: हरिमंत अंगिरस
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

हरिं मृजन्त्यरुषो न युज्यते सं धेनुभिः कलशे सोमो अज्यते ।
उद्वाचमीरयति हिन्वते मती पुरुष्टुतस्य कति चित्परिप्रियः ॥१॥

हरिताभ सोम को शोधित किया जा रहा है। तेजस्वी सोम धेनुओं (धारक किरणों) अथवा गौ-दुग्ध से संयुक्त होकर जब कलश अथवा विश्वमण्डल में स्थापित होता है, तब वह शब्दनाद करता है, उस समय उसकी स्तुतियों की जाती हैं । स्तुत्य सोम याज्ञिकों को प्रिय लगने वाला कई प्रकार का धन प्रदान करता है॥१॥

साकं वदन्ति बहवो मनीषिण इन्द्रस्य सोमं जठरे यदादुहः ।
यदी मृजन्ति सुगभस्तयो नरः सनीळाभिर्दशभिः काम्यं मधु ॥२॥

इन्द्रदेव (संयोजक शक्ति) की तृप्ति के लिए पवित्र हाथ या पुरुषार्थ युक्त नेतृत्वकर्ता (व्यक्ति या चेतना) द्वारा दसों (अँगुलियों अथवा

दिशाओं) से सोम को निष्पादित किया जाता है, उस मधुर रस को शोधित किया जाता है, तब ऋषियों द्वारा एक साथ मंत्रों का उच्चारण किया जाता है॥२॥

अरममाणो अत्येति गा अभि सूर्यस्य प्रियं दुहितुस्तिरो रवम् ।
अन्वस्मै जोषमभरद्विनंगृसः सं द्वयीभिः स्वसृभिः क्षेति जामिभिः ॥३॥

वह सोम अन्यत्र रमण न करता हुआ गौ के दुग्ध में जाता है । उष:काल में यह सोम (स्तोत्रों के अलावा) अन्य शब्दों को दूर करता है । स्तोतागण इस सोम के लिए स्तोत्रों का उच्चारण करते हैं। दोनों हाथों की अँगुलियों से यह सोमं संगति करता है॥३॥

नृधूतो अद्रिषुतो बर्हिषि प्रियः पतिर्गवां प्रदिव इन्दुर्ऋत्वियः ।
पुरंधिवान्मनुषो यज्ञसाधनः शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! यज्ञीय कार्य में उपयोगी मनुष्य के यज्ञ का साधनरूप यह सोम आपके प्रिय यज्ञस्थल में आपके निमित्त शोधित होता है। पत्थरों से कूटकर निकाला गया, याजकों द्वारा शोधित, गाय के दूध के साथ मिश्रित यह सोमरस अनादिकाल से देवगणों के लिए प्रिय है॥४॥

नृबाहुभ्यां चोदितो धारया सुतोऽनुष्वधं पवते सोम इन्द्र ते ।

आप्राः क्रतून्त्समजैरध्वरे मतीर्वेर्न द्रुषच्चम्वोरासदद्धरिः ॥५॥

जिस प्रकार पक्षी वृक्ष पर रहता है, उसी तरह हरिताभ सोम कलशों अथवा अन्तरिक्ष में स्थित रहता है । हे। इन्द्रदेव ! धारा रूप में रस प्रदान करने वाला सोमरस आपका बल बढ़ाने के उद्देश्य से याजकों की भुजाओं से प्रेरित होकर यज्ञस्थल में शोधित होता है। हिंसा से रहित सोमयज्ञ में आप सोमरस का पान करके अभिमानी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करते हैं॥५॥

अंशुं दुहन्ति स्तनयन्तमक्षितं कविं कवयोऽपसो मनीषिणः ।
समी गावो मतयो यन्ति संयत ऋतस्य योना सदने पुनर्भुवः ॥६॥

बुद्धिमान्, दूरदर्शी, कर्मकुशल, याजकगण क्षीण न होने वाले, शब्दनाद करने वाले, ज्ञानवर्द्धक सोम का रस निकालते हैं। बार-बार प्रसूत होने वाली गौएँ अथवा वाणियाँ एवं उत्तम बुद्धियाँ संयुक्त होकर यज्ञ को प्रकट (सम्पन्न) करती हैं॥६॥

नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवोऽपामूर्मौ सिन्धुष्वन्तरुक्षितः ।
इन्द्रस्य वज्रो वृषभो विभूवसुः सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥७॥

महान् दयुलोक का धारणकर्ता, पृथ्वी के उच्च शिखर पर स्थित नदियों के जल में मिश्रित इन्द्रदेव के वज्र की भाँति बलशाली, ऐश्वर्य

से युक्त यह उत्तम आनन्ददायी सोम मन को हर्षित करने के लिए रस प्रदान करता है॥७॥

स तू पवस्व परि पार्थिवं रजः स्तोत्रे शिक्षन्नाधून्वते च सुक्रतो ।
मा नो निर्भाग्वसुनः सादनस्पृशो रयिं पिशङ्गं बहुलं वसीमहि ॥८॥

हे श्रेष्ठकर्मा सोमदेव ! आप पृथ्वी को देखते हुए (मनुष्य मात्र के लिए अपना रस प्रदान करें । स्तोताओं को धन-धान्य से पूर्ण करें। हमें पर्याप्त साधन प्रदान करें। हम विविध स्वर्णादि धन से सदैव युक्त रहें॥८॥

आ तू न इन्दो शतदात्वश्व्यं सहस्रदातु पशुमद्धिरण्यवत् ।
उप मास्व बृहती रेवतीरिषोऽधि स्तोत्रस्य पवमान नो गहि ॥९॥

हे सोमदेव ! आप हमें सैकड़ों प्रकार का सुख प्रदान करने वाला, अश्वों से युक्त, हजारों प्रकार के दान के योग्य ऐश्वर्य शीघ्र हीं प्रदान करें । हे सोमदेव ! आप हमारे स्तोत्रों को सुनने के लिए पधारें और हमें पशुओं से युक्त तथा सुवर्ण से युक्त महान् धन-धान्य प्रदान करें॥९॥

सूक्त ७३

ऋषि: पवित्र अंगिरस
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

स्रक्के द्रप्सस्य धमतः समस्वरन्नृतस्य योना समरन्त नाभयः ।
त्रीन्त्स मूर्ध्नो असुरश्चक्र आरभे सत्यस्य नावः सुकृतमपीपरन् ॥१॥

यह रस (सोम) धारक स्थल (यज्ञपात्र अथवा विश्वघट) में ऋतु (सनातन सत्य या यज्ञ) के उत्पत्ति स्थल से शब्द करते हुए प्रकट होता है । वे बलशाली, नाभि (यज्ञ कुण्ड अथवा पदार्थों के नाभिक न्यूक्लियस) से संयुक्त होकर उच्च स्तरीय तीनों लोकों अथवा मेखलाओं) से कार्य आरम्भ करते हैं । सत्य की नाव (साधकों अथवा पदार्थों को सत्य से युक्त करने वाले) सोमदेव सुकृत करने वालों की सहायता करते हैं॥१॥

सम्यक्सम्यञ्चो महिषा अहेषत सिन्धोरूर्मावधि वेना अवीविपन् ।
मधोर्धाराभिर्जनयन्तो अर्कमित्प्रियामिन्द्रस्य तन्वमवीवृधन् ॥२॥

महान् (याजक अथवा देवगण) संगठित होकर जल तंरगों में सोमरस को मिलाते हैं। वे स्तोत्रों अथवा प्रेरणाओं द्वारा इन्द्रदेव के प्रिय धाम (यज्ञ अथवा शरीर) को सोम की धाराओं से पुष्ट करते हैं॥२॥

पवित्रवन्तः परि वाचमासते पितैषां प्रत्नो अभि रक्षति व्रतम् ।
महः समुद्रं वरुणस्तिरो दधे धीरा इच्छेकुर्धरुणेष्वारभम् ॥३॥

सामर्थ्ययुक्त पवित्र सोम की स्तुति की जाती है। आदिपिता ये सोमदेव अपने व्रतों का निर्वाह करते हुए महान् अन्तरिक्ष को अपने तेज से आवृत कर देते हैं । ज्ञानी याजक उन्हें धारणशील जल में मिश्रित करते हैं॥३॥

सहस्रधारेऽव ते समस्वरन्दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतः ।
अस्य स्पशो न नि मिषन्ति भूर्णयः पदेपदे पाशिनः सन्ति सेतवः ॥४॥

अन्तरिक्ष से हजारों जल धाराओं से युक्त सोम की रश्मियों पृथ्वी पर आ रही हैं। ये मधुरता से युक्त सोम रश्मियाँ द्युलोक से ऊपर रहती हैं। ये सोम – रश्मियाँ प्रत्येक स्थान पर दुष्टों को कष्ट पहुँचाती हैं॥४॥

पितुर्मातुरध्या ये समस्वरन्नृचा शोचन्तः संदहन्तो अव्रतान् ।
इन्द्रद्विष्टामप धमन्ति मायया त्वचमसिक्नीं भूमनो दिवस्परि ॥५॥

द्युलोक तथा पृथिवी लोक में उत्पन्न होने वाली सोम की किरणें स्तोताओं की स्तुतियों से प्रकाशित होती हैं। ये कुकर्मियों को पूरी तरह से नष्ट करती हैं। जिनसे इन्द्रदेव द्वेष करते हैं, उन राक्षसों को ये किरणें पृथ्वी तथा आकाश से बहुत दूर कर देती हैं॥५॥

प्रत्नान्मानादध्या ये समस्वरञ्छलोकयन्त्रासो रभसस्य मन्तवः ।
अपानक्षासो बधिरा अहासत ऋतस्य पन्थां न तरन्ति दुष्कृतः ॥६॥

वेगगामी स्तुत्य सोम किरणें सर्वप्रथम अन्तरिक्ष से प्रवाहित होती हैं। इन किरणों को दृष्टिहीन तथा-वधिर (सुप्त तथा अज्ञानी) नहीं देख सकते । ऐसे व्यक्ति इन सोम किरणों को नहीं पा सकते॥६॥

सहस्रधारे वितते पवित्र आ वाचं पुनन्ति कवयो मनीषिणः ।
रुद्रास एषामिषिरासो अद्रुहः स्पशः स्वञ्चः सुदृशो नृचक्षसः ॥७॥

हजारों धाराओं से नीचे प्रवाहित होने वाले सोमरस को,शोधित करते समय ज्ञानी जन स्तोत्रों द्वारा स्तुति करके. पवित्र बनाते हैं। रुद्र के पुत्र मरुत् के समान यह सोम स्तुत्य, द्रोहरहित, सुन्दर दिखाई देने वाला, सर्वद्रष्टा सुकर्मा तथा शत्रुओं पर उत्तम प्रकार से आक्रमण करने वाला है॥७॥

ऋतस्य गोपा न दभाय सुक्रतुस्त्री ष पवित्रा हृद्यन्तरा दधे ।

विद्वान्त्स विश्वा भुवनाभि पश्यत्यवाजुष्टान्विध्यति कर्ते अव्रतान् ॥८॥

श्रेष्ठकर्मा यज्ञरक्षक यह सोम किसी भी ज्ञानीजन को पीड़ित नहीं करता है । वह सोम अग्नि, वायु और सूर्य के तेज को धारण करता है । सभी युवकों को सूक्ष्म दृष्टि से देखते हुए नियमों (मर्यादाओं) का पालन न करने वाले दुष्टों को (दण्ड व्यवस्था के अनुसार) प्रताड़ित करता है॥८॥

ऋतस्य तन्तुर्विततः पवित्र आ जिह्वाया अग्रे वरुणस्य मायया ।
धीराश्चित्तत्समिनक्षन्त आशतात्रा कर्तमव पदात्यप्रभुः ॥९॥

यह सोम यज्ञ तथा पवित्रता का विस्तार करने वाला है। वह अपनी शक्ति से वरुण के अग्रभाग (जल के ऊपर) में स्थित है । ज्ञानीजन उसे प्राप्त करते तथा उपयोग करते हैं। अकर्मण्य लोग (उसे प्राप्त न कर पाने के कारण) पतन के मार्ग पर जाते हैं॥९॥

सूक्त ७४

ऋषि: कक्षीवान् दैघ्रतमस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, ८ त्रिष्टुप

शिशुर्न जातोऽव चक्रदद्वने स्वर्यद्वाज्यरुषः सिषासति ।
दिवो रेतसा सचते पयोवृधा तमीमहे सुमती शर्म सप्रथः ॥१॥

सोम प्रवाह अन्तरिक्ष में जन्म लेने वाले शिशु के समान (नीचे को मुख-रुख करके) शब्द करता हैं । तेजस्वी सोम दिव्य ओज (ओषधियों आदि के माध्यम से) तथा दुग्ध या जल से संयुक्त होकर वर्द्धित होता है । अश्व की तरह (यज्ञीय माध्यम से) स्वर्ग की ओर जाने की कामना करता है । श्रेष्ठ बुद्धि वाले (याजकगण) सुन्दर स्तुतियों से शुभ आवास एवं ऐश्वर्य सहित सोम की कामना करते हैं॥१॥

दिवो यः स्कम्भो धरुणः स्वातत आपूर्णो अंशुः पर्येति विश्वतः ।
सेमे मही रोदसी यक्षदावृता समीचीने दाधार समिषः कविः ॥२॥

यह सोम द्युलोक को स्तम्भवत् थामने वाला, संसार को धारण करने वाला, सर्वत्र फैला हुआ तथा सब ओर से पूर्ण रहकर सम्पूर्ण विश्व में

व्याप्त है । वह सोम द्युलोक तथा पृथिवीलोक में अन्न, जल तथा शक्ति का विस्तार करता है । यह ज्ञानी सोम, द्युलोक तथा पृथिवी लोक को संयुक्त रूप से धारण करते हुए सभी प्रकार का अन्न धारण करता है॥२॥

महि प्सरः सुकृतं सोम्यं मधूर्वी गव्यूतिरदितेर्ऋतं यते ।
ईशे यो वृष्टेरित उस्रियो वृषापां नेता य इतऊतिर्ऋग्मियः ॥३॥

श्रेष्ठ यज्ञीय कार्य में प्रयुक्त सोमरस यज्ञ में जाने वाले इन्द्रदेव के पान करने के लिए उत्तम होता हैं । जो इन्द्रदेव यहाँ की वर्षा के स्वामी हैं, उनके लिए पृथिवी का मार्ग विस्तृत होता है । वे गौओं के हितकारी, जल के वृष्टिकर्ता तथा सबके नियन्ता हैं । वे इन्द्रदेव सोम यज्ञ में सम्मिलित होने वाले तथा प्रशंसनीय हैं॥३॥

आत्मन्वन्नभो दुह्यते घृतं पय ऋतस्य नाभिरमृतं वि जायते ।
समीचीनाः सुदानवः प्रीणन्ति तं नरो हितमव मेहन्ति पेरवः ॥४॥

आकाश से घृत एवं दुग्ध के समान साररूप (सोम) दुहा जाता है । ऋत की नाभि (यज्ञ कुण्ड़ अथवा सत्यलोक के केन्द्र) से अमृतरूप(सोम) उत्पन्न होता है । एक साथ मिलजुलकर श्रेष्ठ दानी (यज्ञकर्ता) उस(सोम) को (स्तुतियों अथवा यज्ञीय प्रक्रिया द्वारा) प्रसन्न करते हैं । वह रक्षक नेता हितकारी पदार्थों की वर्षा करता है॥४॥

अरावीदंशुः सचमान ऊर्मिणा देवाव्यं मनुषे पिन्वति त्वचम् ।

दधाति गर्भमदितेरुपस्थ आ येन तोकं च तनयं च धामहे ॥५॥

देवों की रक्षा तथा मानवों के हित के लिये यह सोम अपने आप को अर्पित करते हुए जल में मिलाये जाने पर शब्दनाद करता है । पृथ्वी के ऊपर यह सोम अपनी गर्भ (ओषधियों के रूप में) स्थापित करता है, जिससे हम संतति को नीरोग बनाकर रक्षण करने में समर्थ होते हैं॥५॥

सहस्रधारेऽव ता असश्चतस्तृतीये सन्तु रजसि प्रजावतीः ।
चतस्रो नाभो निहिता अवो दिवो हविर्भरन्त्यमृतं घृतश्चुतः ॥६॥

तृतीय लोक अर्थात् स्वर्ग में पृथक्-पृथक् रहने वाला वह सोमरस सहस्रों धाराओं के रूप में पृथिवी पर स्रवित होकर प्रजा का सहायक बनता है। सोम के चार प्रकार के प्रवाह द्युलोक से स्रवित होते हैं । यह घृत (ओजस्) प्रदान करने वाला सोमरस रक्षण- शक्ति से युक्त अमरत्व प्रदान करने वाला तथा हविष्यान्न रूप है॥६॥

श्वेतं रूपं कृणुते यत्सिषासति सोमो मीढ्वाँ असुरो वेद भूमनः ।
धिया शमी सचते सेमभि प्रवद्दिवस्कवन्धमव दर्षदुद्रिणम् ॥७॥

जब वह सोम स्वर्ग की कामना से यज्ञ में प्रतिष्ठित होता है, तब श्वेत दिखाई पड़ता है। ऐसा बलशाली सोम याजकों की कामनाओं को पूरा करते हुए अनेक प्रकार का धन प्रदान करता हैं । वह सोम

बुद्धिपूर्वक किए गए श्रेष्ठ कर्मों को पूरा करते हुए जल देने वाले बादलों को (बरसने के लिए) नीचे भेजता है॥७॥

अध श्वेतं कलशं गोभिरक्तं कार्ष्मन्ना वाज्यक्रमीत्ससवान् ।
आ हिन्विरे मनसा देवयन्तः कक्षीवते शतहिमाय गोनाम् ॥८॥

जिस प्रकार घोड़ा युद्ध में जाता है, उसी प्रकार वह सोमरस श्वेत वर्ण गौ के दूध में मिलकर कलश में यथा स्थान स्थापित होता है । जिस प्रकार कक्षीवान् ऋषि द्वारा सैकड़ों प्रकार की स्तुतियाँ करने पर गौएँ प्रदान की गईं, उसी प्रकार देवों को प्राप्त करने वाले याजकों के द्वारा उन सोमदेव की मन से, उत्तम विधियों से स्तुतियाँ की जाती हैं॥८॥

अद्भिः सोम पपृचानस्य ते रसोऽव्यो वारं वि पवमान धावति ।
स मृज्यमानः कविभिर्मदिन्तम स्वदस्वेन्द्राय पवमान पीतये ॥९॥

हे शोधित सोमदेव ! जल में मिलाया जाने वाला आपका रस ऊन की बनी छलनी में छाना जाता है । हे आनन्ददायी सोमदेव ! याजकों द्वारापरिष्कृत रस को इन्द्रदेव के पान के लिए प्रदान करें॥९॥

सूक्त ७५

ऋषि: कविर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

अभि प्रियाणि पवते चनोहितो नामानि यह्वो अधि येषु वर्धते ।
आ सूर्यस्य बृहतो बृहन्नधि रथं विष्वञ्चमरुहद्विचक्षणः ॥१॥

दिव्य सोम, सर्वत्रगामी सूर्यदेव के रथ पर आरूढ़ होकर संसार का द्रष्टा बन जाता है । वह प्रिय जल के साथ संयुक्त होकर, अन्नों के लिए हितकारी बनकर विस्तार पाता-प्रवाहित होता है॥१॥

ऋतस्य जिह्वा पवते मधु प्रियं वक्ता पतिर्धियो अस्या अदाभ्यः ।
दधाति पुत्रः पित्रोरपीच्यं नाम तृतीयमधि रोचने दिवः ॥२॥

ऋत की जिह्वा स्वरूप (यज्ञ की ज्वाला रूप) सोम मधुर एवं प्रिय (सूक्ष्मीकृत प्रवाह) प्रदान करता है। यह (उत्पन्न प्रवाह) बोलने वाला (स्वयं को व्यक्त करने वाला है, इसकी बुद्धि (धारणा) अदम्य है । यह पुत्र (उत्पन्न हुआ प्रवाह), पिता (उत्पन्नकर्ता) के लिए अज्ञात, तीसरा (निर्माता तथा निर्माण में प्रयुक्त पदार्थ से भिन्न) नाम धारण करके (प्राण-पर्जन्य रूप में) द्युलोक में प्रकाशित होता है॥२॥

अव द्युतानः कलशाँ अचिक्रदन्नृभिर्येमानः कोश आ हिरण्यये ।
अभीमृतस्य दोहना अनूषताधि त्रिपृष्ठ उषसो वि राजति ॥३॥

ऋत्विजों द्वारा स्वर्ण कलश में शोधित होते समय शब्द करने वाले तेजस्वी सोम की स्तुति की जाती है । यह सोम तीनों ही संध्याओं (प्रातः, मध्याह्न, सायं) में प्रकाशित होता है॥३॥

अद्रिभिः सुतो मतिभिश्चनोहितः प्ररोचयन्रोदसी मातरा शुचिः ।
रोमाण्यव्या समया वि धावति मधोर्धारा पिन्वमाना दिवेदिवे ॥४॥

विद्वज्जनों ने पत्थरों से कूटकर निकाले गए परिष्कृत सोमरस को अन्न रूप में रखा। यह सोमरस द्यावा-पृथिवी रूपी माताओं को तेजस्वी बनाता है । यह सोम प्रतदिन (यज्ञ के माध्यम से) मधुर धाराओं को पवित्र बनाता है॥४॥

परि सोम प्र धन्वा स्वस्तये नृभिः पुनानो अभि वासयाशिरम् ।
ये ते मदा आहनसो विहायसस्तेभिरिन्द्रं चोदय दातवे मघम् ॥५॥

हे सोमदेव ! आप हमारे समीप आकर हमारा कल्याण करें, याज्ञिकों द्वारा परिष्कृत हुए आप दूध में मिश्रित होकर रहें । आपका आनन्ददायी रस महान् शक्ति-सम्पन्न तथा शत्रुनाशक है। आप इन शक्तियों के साथ धन प्रदान करने के लिए इन्द्रदेव को प्रेरित करें॥५॥

सूक्त ७८

ऋषि: कविर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

धर्ता दिवः पवते कृत्व्यो रसो दक्षो देवानामनुमाद्यो नृभिः ।
हरिः सृजानो अत्यो न सत्वभिर्वृथा पाजांसि कृणुते नदीष्वा ॥१॥

धारक शक्ति से सम्पन्न, कर्मनिष्ठ, देव शक्ति संवर्धक, स्तोताओं द्वारा प्रशंसित, हरित सोम शोधित होता है। यह निष्पन्न सोमरस बलवान् अश्व के समान सहजता से ही अपने आप नदी (जल प्रवाहों) में मिल जाता है ॥१॥

शूरो न धत्त आयुधा गभस्त्योः स्वः सिषासन्रथिरो गविष्टिषु ।
इन्द्रस्य शुष्ममीरयन्नपस्युभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते मनीषिभिः ॥२॥

हाथों में शस्त्र धारण किये हुए सूरमाओं की तरह रथारूढ़, गौओं के रक्षक, वीरों का एवं इन्द्रदेव का बल बढ़ाते हुए, यह दिव्य सोम, अत्विजों द्वारा प्रेरित होकर, गौ दुग्ध के साथ मिलाया जाता है॥२॥

इन्द्रस्य सोम पवमान ऊर्मिणा तविष्यमाणो जठरेष्वा विश ।
प्र णः पिन्व विद्युदभ्रेव रोदसी धिया न वाजाँ उप मासि शश्वतः ॥३॥

हे संस्कारित सोमदेव ! आप महान् सामर्थ्यवान् बनकर इन्द्रदेव के उदर में प्रवेश करें । मेघों को बरसने के लिए प्रेरित करती विद्युत् की तरह आप आकाश और पृथ्वी को फलदायी बनाएँ । कर्म करते हुए, कर्म के माध्यम से आप हमारे लिए अक्षय पोषकतायुक्त अन्न प्रदान करें॥३॥

विश्वस्य राजा पवते स्वर्दृश ऋतस्य धीतिमृषिषाळवीवशत् ।
यः सूर्यस्यासिरेण मृज्यते पिता मतीनामसमष्टकाव्यः ॥४॥

यह सोम सम्पूर्ण विश्व का राजा है । अषयों द्वारा स्तुत्य यह सोम सर्वद्रष्टा इन्द्रदेव के कर्म को प्रशंसित करता है । सब प्रकार से प्रशंसनीय यह सोम स्तुतियों का संरक्षक है, इसे सूर्य किरणों से शोधित किया जाता है॥४॥

वृषेव यूथा परि कोशमर्षस्यपामुपस्थे वृषभः कनिक्रदत् ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरिन्तमो यथा जेषाम समिथे त्वोतयः ॥५॥

जिस प्रकार बैल अपने समूह में जाता है, उसी प्रकार सोमरस कलश पात्र में जाता है। आकाश में जिस प्रकार जलयुक्त मेघ गर्जना करते हैं, उसी प्रकार शब्दनाद करता हुआ सोमरस यज्ञ पात्र में जाता है । इन्द्रदेव के निमित्त शोधित वह सोम अत्यन्त आनन्ददायी है । हे सोम ! आपके संरक्षण में हम संग्राम में विजय प्राप्त करें॥५॥

सूक्त ७७

ऋषि: कविर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

एष प्र कोशे मधुमाँ अचिक्रददिन्द्रस्य वज्रो वपुषो वपुष्टरः ।
अभीमृतस्य सुदुघा घृतश्चुतो वाश्रा अर्षन्ति पयसेव धेनवः ॥१॥

दुधारू गौओं के घृत युक्त श्रेष्ठ दूध की धार की तरह ध्वनि करता हुआ, इन्द्रदेव के वज्र के समान शक्तिशाली, सुन्दरतम बीजों को अंकुरित करने वाला सोम, शब्द करता हुआ कोश (कलश, पदार्थों) में प्रवेश करता हैं॥१॥

स पूर्व्यः पवते यं दिवस्परि श्येनो मथायदिषितस्तिरो रजः ।
स मध्व आ युवते वेविजान इत्कृशानोरस्तुर्मनसाह बिभ्युषा ॥२॥

वह सोम आदिकाल से ही शुद्ध होता हैं । द्युलोक से प्रेरित श्येन पक्षी द्वारा समस्त बाधाओं को पार करके वह सोम पृथिवी पर लाया गया है । रजोलोक से प्राप्त वह सोम मधुरता से युक्त होकर दुग्धादि

से मिश्रित होता हैं । भयभीत मन से कार्य करने वाले मनुष्य की तरह (दुरुपयोग के भय से) यह सोम यज्ञ में रहता हैं॥२॥

ते नः पूर्वास उपरास इन्दवो महे वाजाय धन्वन्तु गोमते ।
ईक्षेण्यासो अह्यो न चारवो ब्रह्मब्रह्म ये जुजुषुर्हविर्हविः ॥३॥

सर्वोपरि विराजमान, पूर्व से ही लक्ष्य प्राप्त, महान् सोमरस गाय के दूध से युक्त अन्न हमें प्रदान करे । यह व्य सेवन करने वाला सोमरस सभी प्रकार की स्तुतियों से दर्शनीय तथा रमणीय होता है॥३॥

अयं नो विद्वान्वनवद्वनुष्यत इन्दुः सत्राचा मनसा पुरुष्टुतः ।
इनस्य यः सदने गर्भमादधे गवामुरुब्जमभ्यर्षति व्रजम् ॥४॥

यह सोम हानि पहुँचाने वाले शत्रुओं (विकारों) को जानकर उनका संहार करे । जो सोम यज्ञ स्थल की अग्नि में, ओषधियों के गर्भ में, गौओं के दुग्ध में तथा जल में मिश्रित होकर रहता है, उस सोम की सत्य मन से, संगठित रूप से स्तुति की जाती है॥४॥

चक्रिर्दिवः पवते कृत्व्यो रसो महाँ अदब्धो वरुणो हुरुग्यते ।
असावि मित्रो वृजनेषु यज्ञियोऽत्यो न यूथे वृषयुः कनिक्रदत् ॥५॥

सृष्टिकर्ता, कर्म-कुशल, रस-रूप यह सोम महान् है । दुष्टों का संहार करने वाले अविनाशी सोम का निष्पादन किया जाता है । समूह के चपल घोड़े की भाँति यज्ञ का मुख्य साधन यह सोम शब्दनाद करता हुआ शत्रुओं के द्वारा हमला होने पर हमारी रक्षा करता है॥५॥

सूक्त ७८

ऋषि: कविर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

प्र राजा वाचं जनयन्नसिष्यददपो वसानो अभि गा इयक्षति ।
गृभ्णाति रिप्रमविरस्य तान्वा शुद्धो देवानामुप याति निष्कृतम् ॥१॥

यह राजा सोम शब्दनाद करता हुआ जल में मिश्रित होकर स्तुतियों को स्वीकार कर रस प्रदान करता है । यह सोम भेड़ के बालों से निर्मित छलनी से शोधित होकर देवों के पास जाता है॥१॥

इन्द्राय सोम परि षिच्यसे नृभिर्नृचक्षा ऊर्मिः कविरज्यसे वने ।
पूर्वीर्हि ते स्रुतयः सन्ति यातवे सहस्रमश्वा हरयश्चमूषदः ॥२॥

हे सोमदेव ! यज्ञकर्ताओं द्वारा इन्द्रदेव के निमित्त आपका रस निकाला जाता है । उस रस को याजकों के द्वारा जल में मिश्रित किया जाता है । अनादिकाल से आप यज्ञ के हव्यरूप में जाने जाते हैं ।

आपके क्षरण के लिए हजारों मार्ग (छिद्र) हैं तथा अश्व (सूर्य) के समान सहस्रों किरणें हैं॥२॥

समुद्रिया अप्सरसो मनीषिणमासीना अन्तरभि सोममक्षरन् ।
ता ईं हिन्वन्ति हर्म्यस्य सक्षणिं याचन्ते सुम्नं पवमानमक्षितम् ॥३॥

महान् आकाश में विद्यमान सोम जल में मिश्रित होने के लिए पहुंच रहा है । यह (सोम मिश्रित) जल यज्ञ-स्थल के समीप जाने के लिए सोम को प्रेरित करता है । इस पवित्र सोम से याजकगण सुख की याचना करते हैं॥३॥

गोजिन्नः सोमो रथजिद्धिरण्यजित्स्वर्जिदब्जित्पवते सहस्रजित् ।
यं देवासश्चक्रिरे पीतये मदं स्वादिष्ठं द्रप्समरुणं मयोभुवम् ॥४॥

हमारे लिए (दूध उपलब्ध कराने के लिए) गौओं को जीतने वाला, (वीर शत्रुओं के विनाश के लिए रथों को जीतने वाला, सुवर्ण को जीतने वाला, जल को जीतने (अपने अधीन करने) वाला, हजारों प्रकार का धन जीतने वाला सोमरस शोधित किया जाता है । इस अरुणाभ मधुर रस रूपी सोम को देवों के निमित्त आनन्द बढ़ाने के लिए, सुख की वृद्धि के लिए बनाया गया है॥४॥

एतानि सोम पवमानो अस्मयुः सत्यानि कृण्वन्द्रविणान्यर्षसि ।

जहि शत्रुमन्तिके दूरके च य उर्वीं गव्यूतिमभयं च नस्कृधि ॥५॥

हे सोमदेव ! सत्यपथ पर चलने वालों की सहायता करने वाले आप शोधित होकर धन प्रदान करते हुए आगे जाएँ। जो शत्रु हमारे पास हैं अथवा हमसे दूर हैं, उन्हें पराजित करके, हमारा संरक्षण कर हमें विस्तीर्ण मार्ग में निर्भयता प्रदान करें॥५॥

सूक्त ७९

ऋषि: कविर्भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

अचोदसो नो धन्वन्त्विन्दवः प्र सुवानासो बृहद्दिवेषु हरयः ।
वि च नशन्न इषो अरातयोऽर्यो नशन्त सनिषन्त नो धियः ॥१॥

उत्तेजित न होने वाला सोमरस हमें प्रेरणा प्रदान करे, हरित (हरियाली के कारणभूत) वर्षा का रस प्रदान करे । हमारे अन्न के शत्रु नष्ट हो जाएँ । हमारी भावनाएँ (स्तोत्रों के माध्यम से) देवों तक पहुँचें फलित हों॥१॥

प्र णो धन्वन्त्विन्दवो मदच्युतो धना वा येभिरर्वतो जुनीमसि ।
तिरो मर्तस्य कस्य चित्परिह्वृतिं वयं धनानि विश्वधा भरेमहि ॥२॥

सोमरस हमारे आनन्द में वृद्धि करते हुए धन को हमारे पास आने के लिए प्रेरित करे । इस बलवान् सोम की शक्ति से सभी बाधाओं

को दूर करते हुए हम शत्रु के साथ मुकाबला कर सकें तथा अनेक प्रकार का धन प्राप्त करने में समर्थ हों॥२॥

उत स्वस्या अरात्या अरिर्हि ष उतान्यस्या अरात्या वृको हि षः ।
धन्वन्न तृष्णा समरीत ताँ अभि सोम जहि पवमान दुराध्यः ॥३॥

वह सोम अपने तथा दूसरों के शत्रुओं का संहार करने वाला है । मरुदेश में रहने वालों की प्यास की तरह आप (सोमदेव) शत्रुओं के पीछे पड़ जाएँ, उन शत्रुओं (विकारों) को नष्ट करें॥३॥

दिवि ते नाभा परमो य आददे पृथिव्यास्ते रुरुहुः सानवि क्षिपः ।
अद्रयस्त्वा बप्सति गोरधि त्वच्यप्सु त्वा हस्तैर्दुदुहुर्मनीषिणः ॥४॥

हे सोमदेव ! आपका हविष्यान्न स्वीकार करने वाला अंश द्युलोक में सर्वोपरि रहता है । पृथिवी के उच्च भाग में रहकर वह विस्तार पाता है । ज्ञानी जनों द्वारा पत्थर से कूटकर आपका रस निकाला जाता है और उसे हाथों से जल में मिलाकर भूमि के पृष्ठ भाग पर स्थापित किया जाता है॥४॥

एवा त इन्दो सुभ्वं सुपेशसं रसं तुञ्जन्ति प्रथमा अभिश्रियः ।
निदंनिदं पवमान नि तारिष आविस्ते शुष्मो भवतु प्रियो मदः ॥५॥

हे सोमदेव ! इस प्रकार मुख्य याजक एकत्रित होकर ज्येष्ठ यज्ञ स्थल में आपका सौन्दर्ययुक्त रस निकालते हैं । हे सोमदेव ! हमारे शत्रुओं का आप संहार करें । आपका आनन्दवर्द्धक, बलवर्द्धक रस प्रकट हो॥५॥

सूक्त ८०

ऋषि: वसुर्भारद्वाज:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

सोमस्य धारा पवते नृचक्षस ऋतेन देवान्हवते दिवस्परि ।
बृहस्पते रवथेना वि दिद्युते समुद्रासो न सवनानि विव्यचुः ॥१॥

सोमरस की धाराएँ शोधित हो रही हैं। सर्वद्रष्टा सोमदेव, यज्ञ के द्वारा देवगणों को सुखी बनाते हैं। बृहस्पतिदेव की स्तुतियों से वह सोम द्युलोक में सर्वोपरि प्रकाशित होता है। जैसे पृथिवी पर समुद्र व्याप्त है, उसी प्रकार यज्ञ में सोमरस व्याप्त है॥१॥

यं त्वा वाजिन्नघ्न्या अभ्यनूषतायोहतं योनिमा रोहसि द्युमान् ।
मघोनामायुः प्रतिरन्महि श्रव इन्द्राय सोम पवसे वृषा मदः ॥२॥

हे बलवान् सोमदेव ! जब अविनाशी वाणियाँ (स्तोत्रों द्वारा) आपकी स्तुति करती हैं, तब आप सुवर्ण आभूषणों (सुनहली किरणों) से युक्त हाथों से सुसंस्कारित होकर यज्ञ स्थल पर प्रतिष्ठित होते तथा तेजस्वी

होते हैं । हे सोमदेव ! यज्ञ कर्ताओं को आयु तथा भरपूर अन्न प्रदान करते हुए आप इन्द्रदेव के आनन्द और बल की वृद्धि करें ॥२॥

एन्द्रस्य कुक्षा पवते मदिन्तम ऊर्जं वसानः श्रवसे सुमङ्गलः ।
प्रत्यङ्स विश्वा भुवनाभि पप्रथे क्रीळन्हरिरत्यः स्यन्दते वृषा ॥३॥

यह सोमरस इन्द्रदेव को तृप्त करने के लिए निकाला जाता है । अन्न वृद्धि के लिए, आनन्ददायी बलवृद्धि के लिए यह सोमरस निकाला जाता है । यह सोमरस सभी भुवनों को प्रत्यक्ष रूप से प्रकाशित करते हुए उनका उत्तम कल्याण करता है । यह हरिताभ सोम चपल घोड़े के समान यज्ञस्थल में खेलते हुए बलशाली होकर दूर-दूर तक संव्याप्त होता हैं ॥३॥

तं त्वा देवेभ्यो मधुमत्तमं नरः सहस्रधारं दुहते दश क्षिपः ।
नृभिः सोम प्रच्युतो ग्रावभिः सुतो विश्वान्देवाँ आ पवस्वा सहस्रजित्
॥४॥

हजारों धाराओं वाले अत्यन्त मधुर सोमरस को देवों के निमित्त याजकों की दसों अँगुलियाँ निकालती हैं। हे सोमदेव ! पत्थरों से कूटकर याजकों द्वारा निकाले गए आप, देवों के निमित्त हजारों प्रकार से विजय दिलाने वाला रस प्रदान करें॥४॥

तं त्वा हस्तिनो मधुमन्तमद्रिभिर्दुहन्त्यप्सु वृषभं दश क्षिपः ।
इन्द्रं सोम मादयन्दैव्यं जनं सिन्धोरिवोर्मिः पवमानो अर्षसि ॥५॥

पत्थरों से कूटकर (सोम निचोड़ने के पश्चात्) उत्तम हाथ वाले (याजकों) की दसों अँगुलियाँ बलशाली , मधुर सोमरस को जल में मिश्रित करती हैं। इन्द्रदेव तथा अन्य देवगणों को आनन्दित करने के लिए हे पवित्र एवं बलशाली सोमदेव ! आप सिन्धु (सिन्धु नदी या समुद्र) की लहरों के समान परिशोधित (पवित्र) होकर प्रवाहित हों॥५॥

सूक्त ८१

ऋषिः वसुर्भारद्वाजः
देवता – पवमानः सोमः । छंद – जगती, ५ त्रिष्टुप

प्र सोमस्य पवमानस्योर्मय इन्द्रस्य यन्ति जठरं सुपेशसः ।
दध्ना यदीमुन्नीता यशसा गवां दानाय शूरमुदमन्दिषुः सुताः ॥१॥

शोधित सोमरस की सुन्दर धाराएँ इन्द्रदेव के पेट में प्रवेश कर रही हैं । यह सोमरस जब गौ के दही के साथ मिलाया जाता है, तब वीर इन्द्रदेव को दान देने के लिए उल्लसित करता है॥१॥

अच्छा हि सोमः कलशाँ असिष्यददत्यो न वोळ्हा रघुवर्तनिर्वृषा ।
अथा देवानामुभयस्य जन्मनो विद्वाँ अश्नोत्यमुत इतश्च यत् ॥२॥

जिस तरह रथ को खींचने वाला घोड़ा द्रुतगति से जाता है, उसी प्रकार यह सोमरस उत्तम विधि से कलशों में स्थापित होता है । यह बलशाली सोम सूर्यादि लोकों को घुमाने में समर्थ हैं । द्युलोक तथा

भूलोक में व्याप्त वह ज्ञानी सोम, देवों को आनन्दित करने वाला है॥२॥

आ नः सोम पवमानः किरा वस्विन्दो भव मघवा राधसो महः ।
शिक्षा वयोधो वसवे सु चेतुना मा नो गयमारे अस्मत्परा सिचः ॥३॥

हे शोधित सोमदेव ! आप हमें महान् ऐश्वर्य प्रदान करें । हे अन्नदाता सोमदेव ! आप हमारे लिए कल्याणकारी ज्ञानयुक्त धन प्राप्त कराएँ; वह (धन) कभी भी हमसे दूर न हो॥३॥

आ नः पूषा पवमानः सुरातयो मित्रो गच्छन्तु वरुणः सजोषसः ।
बृहस्पतिर्मरुतो वायुरश्विना त्वष्टा सविता सुयमा सरस्वती ॥४॥

पोषणकारी पूषादेव, पवित्र सोम, मित्र, श्रेष्ठ वरुण, ज्ञान-प्रदाता बृहस्पति, मरुत, वायु, अश्विनीकुमार, त्वष्टादेव, सवितादेव, विद्यादायिनी सरस्वती आदि देवशक्तियाँ हमारे पास आएँ॥४॥

उभे द्यावापृथिवी विश्वमिन्वे अर्यमा देवो अदितिर्विधाता ।
भगो नृशंस उर्वन्तरिक्षं विश्वे देवाः पवमानं जुषन्त ॥५॥

सर्वव्यापी द्‌युलोक तथा पृथिवीलोक, अर्यमा देव, प्रकृति देवी, विधाता देव, भग तथा मानवों द्वारा प्रशंसित यह विशाल अन्तरिक्ष आदि सभी देव समुदाय इस सोमरस का पान करें॥५॥

सूक्त ८२

ऋषि: वसुर्भारद्वाज:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, ५ त्रिष्टुप

असावि सोमो अरुषो वृषा हरी राजेव दस्मो अभि गा अचिक्रदत् ।
पुनानो वारं पर्येत्यव्ययं श्येनो न योनिं घृतवन्तमासदम् ॥१॥

ओजस्वी, शक्तिवर्द्धक, हरित वर्ण का सोमरस निकाला जा रहा है। वह सोम सम्राट् के सदृश सौन्दर्ययुक्त है। गौ का दुग्ध मिश्रित करने के बाद सोम ध्वनि करता हुआ, पवित्र होकर छलनी से अभिषुत किया जाता है। उसके बाद श्येन पक्षी के सदृश पानी से युक्त पात्र में स्थित होता है॥१॥

कविर्वेधस्या पर्येषि माहिनमत्यो न मृष्टो अभि वाजमर्षसि ।
अपसेधन्दुरिता सोम मृळय घृतं वसानः परि यासि निर्णिजम् ॥२॥

हे सोमदेव ! यज्ञ की इच्छा से जल से युक्त आप छत्रे में शोधित होकर, युद्ध स्थल पर जाने वाले अश्व के सदृश, वेगपूर्वक स्थिर होते हैं । हे सोमदेव ! आप हमें दुष्प्रवृत्तियों से दूर कर सुखी करें॥२॥

पर्जन्यः पिता महिषस्य पर्णिनो नाभा पृथिव्या गिरिषु क्षयं दधे ।
स्वसार आपो अभि गा उतासरन्त्सं ग्रावभिर्नसते वीते अध्वरे ॥३॥

पर्जन्य की वर्षा करने वाले मेघ ही बड़े-बड़े पत्तों वाले सोम के जनक हैं। वह सोम पृथ्वी के नाभि स्थल पर अवस्थित पर्वतों का निवासक है । वह गौ-दुग्ध, जल और स्तुतियों को प्राप्त करता हुआ यज्ञस्थल पर स्थित होता है॥३॥

जायेव पत्यावधि शेव मंहसे पज्राया गर्भ शृणुहि ब्रवीमि ते ।
अन्तर्वाणीषु प्र चरा सु जीवसेऽनिन्द्यो वृजने सोम जागृहि ॥४॥

जिस प्रकार पति के लिए पत्नी सुखकारी होती हैं, उसी प्रकार यजमान के लिए सोम सुखकारी है । हे पर्जन्य पुत्र सोमदेव ! स्तुतियों के अन्दर शुभ गुणों के साथ रहने के लिए हम आपसे कहते हैं, उसे सुनें । हे स्तुत्य सोमदेव ! हमारा जीवन सुखी हो, इसके लिए आप हमारे शत्रुओं पर दृष्टि रखें॥४॥

यथा पूर्वेभ्यः शतसा अमृध्रः सहस्रसाः पर्यया वाजमिन्दो ।

एवा पवस्व सुविताय नव्यसे तव व्रतमन्वापः सचन्ते ॥५॥

हे सोम ! जिस प्रकार ऋषियों ने सैकड़ों प्रकार का धन दिया, उसी प्रकार हिंसारहित होकर हजारों प्रकार का धन हमें प्रदान करें तथा ज्ञान पिपासुओं को सुखदायी रस दें । आपका व्रत यज्ञीय कर्म के अनुरूप पूरा हो ॥५॥

सूक्त ८३

ऋषि: पवित्र अंगिरस:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

पवित्रं ते विततं ब्रह्मणस्पते प्रभुर्गात्राणि पर्येषि विश्वतः ।
अतप्ततनूर्न तदामो अश्नुते शृतास इद्वहन्तस्तत्समाशत ॥१॥

हे मन्त्राधिपति सोमदेव ! आपके पवित्र अंग (अंश) सर्वत्र विद्यमान हैं। आप शक्तिशाली होने के कारण पान करने वालों के देह में स्फूर्ति की वृद्धि करते हैं। तप से हीन शरीर वाले अपरिपक्व (साधक या वनस्पति आदि) वह फल प्राप्त नहीं कर पाते । परिपक्व होने के पश्चात् ही वे उसे प्राप्त करने में समर्थ होते हैं॥१॥

तपोष्पवित्रं विततं दिवस्पदे शोचन्तो अस्य तन्तवो व्यस्थिरन् ।
अवन्त्यस्य पवीतारमाशवो दिवस्पृष्ठमधि तिष्ठन्ति चेतसा ॥२॥

सोम के पवित्र अंग शत्रुओं को संताप देने के लिए द्युलोक में फैले हैं। इनकी चमकती हुई रश्मियाँ द्युलोक के पृष्ठ भाग पर विशेष रीति से स्थिर हो गईं हैं। यह रश्मियाँ याज्ञिकों की रक्षा करती हैं॥२॥

अरूरुचदुषसः पृश्निरग्रिय उक्षा बिभर्ति भुवनानि वाजयुः ।
मायाविनो ममिरे अस्य मायया नृचक्षसः पितरो गर्भमा दधुः ॥३॥

सूर्य रूप में सोम ही स्वप्रकाशित एवं प्रमुख है । वही वर्षा करके पोषक जले-धाराओं से प्राणिमात्र को पोषण प्रदान करने वाला है । वह सोम ही अपनी क्षमता से जगत् का निर्माण करने वाला है । उसकी आज्ञा से देवमानवों ने ओषधियों में गर्भ की स्थापना की॥३॥

गन्धर्व इत्था पदमस्य रक्षति पाति देवानां जनिमान्यद्भुतः ।
गृभ्णाति रिपुं निधया निधापतिः सुकृत्तमा मधुनो भक्षमाशत ॥४॥

सत्य रूप सूर्यदेव इस सोम को संरक्षण प्रदान करते हैं। यह सोम देवत्वधारियों के जीवन की रक्षा करता है । शत्रु को जाल से बाँधता है । पाशाधिपति श्रेष्ठ कार्य के लिए इस मधुर सोम का पान करते हैं॥४॥

हविर्हविष्मो महि सद्म दैव्यं नभो वसानः परि यास्यध्वरम् ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहः सहस्रभृष्टिर्जयसि श्रवो बृहत् ॥५॥

जिस प्रकार राजा श्रेष्ठ रथ में बैठकर संग्राम में जाता है और अनेक अस्त्र-शस्त्रों से युद्ध करके बहुत खाद्यान्न जीतकर लाता है, उसी प्रकार हे जलयुक्त सोमदेव ! महान् जलनिधि में रहने वाले पवित्र जल के साथ आप यज्ञशाला में प्रतिष्ठित हों॥५॥

सूक्त ८४

ऋषि: वाच्य: प्रजापति:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

पवस्व देवमादनो विचर्षणिरप्सा इन्द्राय वरुणाय वायवे ।
कृधी नो अद्य वरिवः स्वस्तिमदुरुक्षितौ गृणीहि दैव्यं जनम् ॥१॥

हे सोमदेव ! आप आनन्ददायी, सर्वद्रष्टा, जल धाराओं को प्रवाहित करने वाला रस प्रदान करें, इन्द्र, वरुण तथा वायु आदि देवों के लिए रस प्रदान करें। आज ही हमारे धन को आप कल्याणकारी बनायें तथा इस विशाल भूमि में देवत्वधारियों को सुखी बनायें॥१॥

आ यस्तस्थौ भुवनान्यमर्त्यो विश्वानि सोमः परि तान्यर्षति ।
कृण्वन्त्संचृतं विचृतमभिष्टय इन्दुः सिषक्त्युषसं न सूर्यः ॥२॥

जिस प्रकार उषा के साथ सूर्यदेव रहते हैं, उसी प्रकार इष्ट फल प्रदाता सोम यज्ञ में रहता है । जो अविनाशी सोम सभी भुवनों में

व्याप्त है, वह देवत्वधारियों के दिव्य संस्कारों को सुदृढ़ करता है तथा कुविचारों को दूर करते हुए, उनमें प्रवेश करता है॥२॥

आ यो गोभिः सृज्यत ओषधीष्वा देवानां सुम्न इषयन्नुपावसुः ।
आ विद्युता पवते धारया सुत इन्द्रं सोमो मादयन्दैव्यं जनम् ॥३॥

जो सोम गाय के दूध के साथ ओषधियों में मिलाया जाता है और देवजनों की सुख-वृद्धि के लिए निकाला जाता है, देवों को प्राप्त करने की कामना से शत्रुओं को पराजित करके उनका धन प्राप्त कराता है, वह सोम तेजस्वी धारा के रूप में रस प्रदान करते हुए इन्द्र तथा अन्य देवजनों को आनन्दित करता है॥३॥

एष स्य सोमः पवते सहस्रजिद्धिन्वानो वाचमिषिरामुषर्बुधम् ।
इन्दुः समुद्रमुदियर्ति वायुभिरेन्द्रस्य हार्दि कलशेषु सीदति ॥४॥

रस प्रदान करने वाला यह सोम हजारों प्रकार के धन पर विजय प्राप्त करता हुआ, स्तोताओं को स्तुति करने के लिए प्रेरित करता है । उषःकाल में जाग्रत् होने की, योग्य इच्छा की प्रेरणा देता है। यह सोम वायु के द्वारा रस-प्रवाह को ऊपर जाने की प्रेरणा देते हुए, इन्द्रदेव के लिए कलश में स्थापित होता है॥४॥

अभि त्यं गावः पयसा पयोवृधं सोमं श्रीणन्ति मतिभिः स्वर्विदम् ।

धनंजयः पवते कृत्व्यो रसो विप्रः कविः काव्येना स्वर्चनाः ॥५॥

दूध के साथ मिलकर विस्तार पाने वाले उस सोम को गौएँ (वाणियाँ) ज्ञानवर्द्धक स्तुतियों के साथ अपने दूध में मिश्रित करती हैं । शत्रुओं के धन पर विजय प्राप्त करने वाला सोम स्तोत्रों के गायन से रस प्रदान करता है। यह कर्म-कौशल बढ़ाने वाला मेधावान् ज्ञानी सोम पौष्टिक अन्न से युक्त रस प्रदान करता है ॥५॥

सूक्त ८५

ऋषि: येनो भार्गव:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती, ११-१२ त्रिष्टुप

इन्द्राय सोम सुषुतः परि स्रवापामीवा भवतु रक्षसा सह ।
मा ते रसस्य मत्सत द्वयाविनो द्रविणस्वन्त इह सन्त्विन्दवः ॥१॥

हे सोमदेव ! आप श्रेष्ठ रीति से अभिषुत होकर इन्द्रदेव के पीने के लिये प्रवाहित हों और रोगरूपी राक्षसों से रहित हों । दो प्रकार का (छल युक्तो व्यवहार करने वाले दुष्टों को सोमरस न प्राप्त हो । इस यज्ञ में यह सोमरस ऐश्वर्य-युक्त बने ॥१॥

अस्मान्त्समर्ये पवमान चोदय दक्षो देवानामसि हि प्रियो मदः ।
जहि शत्रूँरभ्या भन्दनायतः पिबेन्द्र सोममव नो मृधो जहि ॥२॥

हे सोमदेव ! आप हमें युद्ध के लिए प्रेरित करें, हमारे पास आकर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करें । आप देवों को पूर्ण दक्ष बनाने वाले

तथा हर्षित करने वाले हों। स्तुति की कामना वाले हे इन्द्रदेव ! सोमरस का पान करके आप हमारे शत्रुओं को पराजित करें॥२॥

अदब्ध इन्दो पवसे मदिन्तम आत्मेन्द्रस्य भवसि धासिरुत्तमः ।
अभि स्वरन्ति बहवो मनीषिणो राजानमस्य भुवनस्य निंसते ॥३॥

हे सोम ! आप हिंसारहित तथा आनन्ददायक रस प्रदान करें। आप सर्वोत्तम धारक तथा इन्द्रदेव के प्रिय अन्तरंग हैं । इन भुवनों के राजा सोम की ज्ञानीजन स्तुति करते हैं तथा अति घनिष्ठ के समान उसे प्राप्त करते हैं॥३॥

सहस्रणीथः शतधारो अद्भुत इन्द्रायेन्दुः पवते काम्यं मधु ।
जयन्क्षेत्रमभ्यर्षा जयन्नप उरुं नो गातुं कृणु सोम मीढ्वः ॥४॥

सैकड़ों धाराओं से स्रवित होने वाला, हजारों प्रकार से लाया गया अद्भुत सोम इन्द्रदेव के निमित्त, उनके द्वारा चाहा गया रस प्रदान करता है । हे सोमदेव ! रणक्षेत्र को जीतकर आगे बढ़ते हुए मेघवत् सुखों की वर्षा करते हुए तथा प्रजा को अपने अनुशासन में रखते हुए हमारे लिए उन्नतिशील मार्ग बनायें॥४॥

कनिक्रदत्कलशे गोभिरज्यसे व्यव्ययं समया वारमर्षसि ।
मर्मृज्यमानो अत्यो न सानसिरिन्द्रस्य सोम जठरे समक्षरः ॥५॥

हे सोमदेव ! आप गाय के दूध के साथ मिश्रित होकर शब्दनाद करते हुए ऊन की बनी छलनी में से कलश में स्थापित होते हैं । चपल घोड़े के समान परिष्कृत होकर सेवन के योग्य बनकर आप इन्द्रदेव को तृप्त करें॥५॥

स्वादुः पवस्व दिव्याय जन्मने स्वादुरिन्द्राय सुहवीतुनाम्ने ।
स्वादुर्मित्राय वरुणाय वायवे बृहस्पतये मधुमाँ अदाभ्यः ॥६॥

हे सोम ! आप दिव्यता प्राप्त करने वाले देवों के निमित्त अपना मधुर रस प्रदान करें । पुण्यशील इन्द्र के निमित्त सुस्वादु रस दें । मित्र, वरुण, वायु तथा बृहस्पति आदि के लिए अमृत के समान मधुर रस प्रदान करें॥६॥

अत्यं मृजन्ति कलशे दश क्षिपः प्र विप्राणां मतयो वाच ईरते ।
पवमाना अभ्यर्षन्ति सुष्टुतिमेन्द्रं विशन्ति मदिरास इन्दवः ॥७॥

इस सोम को कलश में सबसे ऊपर रखकर दस अँगुलियाँ शोधित करती हैं। इस समय स्तोतागण स्तुतियाँ करते हैं । इन स्तुतियों को पवित्र सोमरस सुनता है । यह आनन्दप्रदायक सोमरस इन्द्रदेव को प्राप्त होता है॥७॥

पवमानो अभ्यर्षा सुवीर्यमुर्वीं गव्यूतिं महि शर्म सप्रथः ।
माकिर्नो अस्य परिषूतिरीशतेन्दो जयेम त्वया धनंधनम् ॥८॥

हे पवित्र सोमदेव ! आप हमें श्रेष्ठ पराक्रम युक्त महान् सुख प्रदान करने वाली सुविस्तृत मार्ग दिखाएँ । हे सोमदेव ! आपके सान्निध्य में हम हर प्रकार का धन प्राप्त करें । इसे कोई हिंसाकारी अपने अधिकार में न ले॥८॥

अधि द्यामस्थाद्वृषभो विचक्षणोऽरूरुचद्वि दिवो रोचना कविः ।
राजा पवित्रमत्येति रोरुवद्दिवः पीयूषं दुहते नृचक्षसः ॥९॥

यह बलवान्, सर्वद्रष्टा, ज्ञानी सोम द्युलोक में रहकर अपने तेज को विशेष रूप से प्रकाशित करता है एवं अमृत के समान रस प्रदान करता है । छलनी में शोधित होते समय शब्द करता हुआ पात्र में एकत्रित होता है॥९॥

दिवो नाके मधुजिह्वा असश्चतो वेना दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
अप्सु द्रप्सं वावृधानं समुद्र आ सिन्धोरूर्मा मधुमन्तं पवित्र आ ॥१०॥

सुखमय वातावरण में रहनेवाले, मधुरभाषी ऋषिगण पृथक्-पृथक् पर्वतों पर रहने वाले, जल से वृद्धि पाने वाले, रस रूप में विद्यमान

मधुर सोमरस को सिन्धु की लहरों (जल) में मिश्रित करके पवित्र बनाते हैं॥१०॥

नाके सुपर्णमुपपप्तिवांसं गिरो वेनानामकृपन्त पूर्वीः ।
शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतं हिरण्ययं शकुनं क्षामणि स्थाम् ॥११॥

द्युलोक में उत्पन्न सोम की आदिकाल से ज्ञानीजन स्तुतियाँ करते रहे हैं। सुवर्ण जैसा तेजस्वी, शक्तिमान् , शब्द करने वाला, बालक के समान संस्कार के योग्य, सोम यज्ञस्थल में स्थापित होकर स्तुतियाँ प्राप्त करता है॥११॥

ऊर्ध्वो गन्धर्वो अधि नाके अस्थाद्विश्वा रूपा प्रतिचक्षाणो अस्य ।
भानुः शुक्रेण शोचिषा व्यद्यौत्प्रारूरुचद्रोदसी मातरा शुचिः ॥१२॥

सूर्य किरणों को धारण करने वाला सोम स्वर्ग के ऊपर ऊँचे स्थान में रहकर सूर्यदेव के अनेक रूपों को देखता है। तेजस्वी प्रकाश से सूर्यदेव चमकते हैं । माता की भाँति द्युलोक तथा पृथिवी लोक को तेजस्वी सूर्यदेव प्रकाशित करते हैं॥१२॥

सूक्त ८६

ऋषि: १-१० अकृष्टा माषा: ११-२० सिकता निवावरी, २१-३० पृथिन्योऽजा, ३१-४० अकृष्टमाषादयस्त्रय:, ४१-४५ भौमोऽत्रि, ४६-४८ गृत्समद: शौनक:। देवता – पवमान: सोम: । छंद – जगती

प्र त आशवः पवमान धीजवो मदा अर्षन्ति रघुजा इव त्मना ।
दिव्याः सुपर्णा मधुमन्त इन्दवो मदिन्तमासः परि कोशमासते ॥१॥

हे सोमदेव ! द्रुतगामी घोड़े के समान आपका आनन्ददायी रस व्यापक मन के वेग से प्रवाहित हो रहा है । तेज एवं ज्ञान से युक्त यह मधुर सोमरस हर्षित करते हुए कलश में स्थापित होता है॥१॥

प्र ते मदासो मदिरास आशवोऽसृक्षत रथ्यासो यथा पृथक् ।
धेनुर्न वत्सं पयसाभि वज्रिणमिन्द्रमिन्दवो मधुमन्त ऊर्मयः ॥२॥

गतिमान् रथ के घोड़े की भाँति आपका आनन्ददायी रस स्वतंत्र रूप से प्रवाहित हो रहा है । जिस तरह गौएँ अपने बछड़ों को तृप्त करती

हैं, उसी प्रकार मधुर धाराओं में प्रवाहित होने वाला सोमरस वज्रधारी इन्द्रदेव को तृप्त करता है॥२॥

अत्यो न हियानो अभि वाजमर्ष स्वर्वित्कोशं दिवो अद्रिमातरम् ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्यये सोमः पुनान इन्द्रियाय धायसे ॥३॥

जिस तरह घोड़ा प्रेरणा पाकर युद्ध में जाता है, उसी प्रकार सर्वज्ञ सोम द्युलोक से मेघों द्वारा जल संचार की भाँति कोशों (पात्र या जीदकोशों) में प्रतिष्ठित हो । हे बलशाली सोमदेव ! अनश्वर पवित्र (छलनी) से शोधित होकर आप धारणकर्ता इन्द्रदेव के निमित्त तैयार हों॥३॥

प्र त आश्विनीः पवमान धीजुवो दिव्या असृग्रन्पयसा धरीमणि ।
प्रान्तर्ऋषयः स्थाविरीरसृक्षत ये त्वा मृजन्त्यृषिषाण वेधसः ॥४॥

है पवित्र सोमदेव ! दिव्य रस से परिपूर्ण आपकी धाराएँ' वाणी के प्रवाह के साथ कलश में पहुँचती हैं। संस्कारित करने वाले विद्वान् ऋषि आपको ऊपर के पात्र से नीचे के पात्र में डालते हैं॥४॥

विश्वा धामानि विश्वचक्ष ऋभ्वसः प्रभोस्ते सतः परि यन्ति केतवः ।
व्यानशिः पवसे सोम धर्मभिः पतिर्विश्वस्य भुवनस्य राजसि ॥५॥

हे सर्वदर्शी, व्यापक स्वभाव वाले सोमदेव ! आपकी दीर्घ रश्मियों का प्रभाव सर्वत्र फैला हुआ हैं, अपने स्वाभाविक धर्म से शुद्ध होने वाले आप अखिल विश्व के स्वामी के रूप में सुशोभित हो रहे हैं॥५॥

उभयतः पवमानस्य रश्मयो ध्रुवस्य सतः परि यन्ति केतवः ।
यदी पवित्रे अधि मृज्यते हरिः सत्ता नि योना कलशेषु सीदति ॥६॥

पवित्रता को प्राप्त हुआ संस्कारित हरिताभ सोम पात्रों में स्थिर होता है। उसकी सुवासे चतुर्दिक् फैलती एवं पवित्रता का संचार करती है॥६॥

यज्ञस्य केतुः पवते स्वध्वरः सोमो देवानामुप याति निष्कृतम् ।
सहस्रधारः परि कोशमर्षति वृषा पवित्रमत्येति रोरुवत् ॥७॥

यज्ञ चक्र को प्रकाशित करने वाला, उत्तम याज्ञिक सोम देवस्थल पर पहुँचकर रस प्रदान करता है । रस प्रदान करने वाला यह सोमरस शब्द नाद करता हुआ हजारों धाराओं से शोधन प्रणाली को पार करके निर्धारित कोशों (पात्रों) में स्थापित होता है॥७॥

राजा समुद्रं नद्यो वि गाहतेऽपामूर्मिं सचते सिन्धुषु श्रितः ।
अध्यस्थात्सानु पवमानो अव्ययं नाभा पृथिव्या धरुणो महो दिवः
॥८॥

अन्तरिक्ष के जल में मिश्रित होकर यह राजा सोम जल के प्रवाह में सम्मिलित होते हुए समुद्र के जल में मिश्रित होता हैं । महान् द्युलोक को धारण करने वाला यह सोमरस अनश्वर शोधक उपकरण में छनकर पवित्र होता है॥८॥

दिवो न सानु स्तनयन्नचिक्रदद्द्यौश्च यस्य पृथिवी च धर्मभिः ।
इन्द्रस्य सख्यं पवते विवेविदत्सोमः पुनानः कलशेषु सीदति ॥९॥

द्युलोक के सर्वोच्च स्थान की आकांक्षा करता हुआ, यह सोम इन्द्रदेव की मित्रता चाहते हुए शब्दनाद करता है । जिसकी धारण शक्ति से द्युलोक और पृथिवीलोक धारण किए गये हैं, ऐसा सोमरस शोधित होकर कलश में विराजता है॥९॥

ज्योतिर्यज्ञस्य पवते मधु प्रियं पिता देवानां जनिता विभूवसुः ।
दधाति रत्नं स्वधयोरपीच्यं मदिन्तमो मत्सर इन्द्रियो रसः ॥१०॥

यज्ञों के प्रकाशक, देवताओं के लिए प्रिय, मधुर रस प्रदायक, पोषक, जनक, वैभवशाली, आनन्दवर्द्धक, उत्साहवर्द्धक, इन्द्रदेव को प्रिय लगने वाले हे सोमदेव ! आप अन्तरिक्ष और भूलोक के गुप्त वैभव को यजमानों के लिए प्रदान करते हैं॥१०॥

अभिक्रन्दन्कलशं वाज्यर्षति पतिर्दिवः शतधारो विचक्षणः ।
हरिर्मित्रस्य सदनेषु सीदति मर्मृजानोऽविभिः सिन्धुभिर्वृषा ॥११॥

दिव्यलोक के अधिपति सैकड़ों विधियों (धाराओं) द्वारा शोधित, बुद्धिवर्द्धक और बलशाली हरिताभ सोमरस ध्वनियुक्त होकर कलश में स्थापित है । जल मिश्रित होकर शोधन यन्त्र से शोधित हे शौर्यवान् सोमदेव ! आप अभीष्ट पूर्ति हेतु मित्र के समान यज्ञ के पात्र में प्रतिष्ठित होते हैं॥११॥

अग्रे सिन्धूनां पवमानो अर्षत्यग्रे वाचो अग्रियो गोषु गच्छति ।
अग्रे वाजस्य भजते महाधनं स्वायुधः सोतृभिः पूयते वृषा ॥१२॥

हे सोमदेव ! जल मिश्रित होने से पूर्व शोधित होने के लिए और स्तुतियों को प्राप्त करने के लिए आप पूज्यभाव से आमन्त्रित किये जाते हैं। श्रेष्ठ आयुधों से युक्त होकर शौर्य हेतु गौओं का संरक्षण प्रदान करते हुए आप प्रवाहित होते हैं और प्रचुर वैभव प्रदान करते हैं। हे सोमदेव ! आप याजकों द्वारा शोधित किये जाते हैं॥१२॥

अयं मतवाञ्छकुनो यथा हितोऽव्ये ससार पवमान ऊर्मिणा ।
तव क्रत्वा रोदसी अन्तरा कवे शुचिर्धिया पवते सोम इन्द्र ते ॥१३॥

स्तोत्रों से स्तुत्य यह सोम यज्ञ स्थल में प्रतिष्ठित है । जिस प्रकार शकुन (पक्षी) द्रुतगामी होते हैं, उसी प्रकार हे सोमदेव ! अनश्वर शोधक यंत्र में से धारा रूप में आप नीचे पात्र में आएँ । हे इन्द्रदेव ! आपके सुकर्मों से ही द्युलोक और पृथिवी लोक के मध्य यह पवित्र सोम स्तुतियों के साथ शोधित होता हैं॥१३॥

द्रापिं वसानो यजतो दिविस्पृशमन्तरिक्षप्रा भुवनेष्वर्पितः ।
स्वर्जज्ञानो नभसाभ्यक्रमीत्प्रत्नमस्य पितरमा विवासति ॥१४॥

यह पूज्य सोम द्युलोक को स्पर्श करने वाले रक्षा कवच को धारण करता है तथा अपने प्रकाश से अन्तरिक्ष को पूर्ण रूप से भर देता है। स्वर्ग तुल्य सुख उत्पन्न करने वाला यह सोम आकाश मार्ग से जल के साथ संचरित होकर (यज्ञ स्थल या भूमण्डल में) आता है । इस प्रकार यह अपने पुरातन पितर (इन्द्र, परब्रह्म अथवा यज्ञ) की परिचर्या – सेवा करता है॥१४॥

सो अस्य विशे महि शर्म यच्छति यो अस्य धाम प्रथमं व्यानशे ।
पदं यदस्य परमे व्योमन्यतो विश्वा अभि सं याति संयतः ॥१५॥

जो सोम इन्द्रदेव की देह (उदर) में सर्वप्रथम प्रविष्ट होता है, वह उन्हें तृप्त करते हुए महान् सुख प्रदान करता है । द्युलोक में इस सोम

का यह परम पवित्र स्थान है। इस सोम से तृप्त होकर इन्द्रदेव सभी संग्रामों में जाते हैं॥१५॥

प्रो अयासीदिन्दुरिन्द्रस्य निष्कृतं सखा सख्युर्न प्र मिनाति संगिरम् ।
मर्य इव युवतिभिः समर्षति सोमः कलशे शतयाम्ना पथा ॥१६॥

मित्र की तरह यह सोम इन्द्रदेव के पेट में पहुँचकर उन्हें कोई पीड़ा नहीं देता। जिस प्रकार युवा पुरुष स्त्रियों के साथ घुलमिलकर रहता है, उसी प्रकार यह सोम पानी के साथ मिलकर शोधक यंत्र के सैकड़ों छिद्रों से निकलकर कलश में प्रविष्ट होता है॥१६॥

प्र वो धियो मन्द्रयुवो विपन्युवः पनस्युवः संवसनेष्वक्रमुः ।
सोमं मनीषा अभ्यनूषत स्तुभोऽभि धेनवः पयसेमशिश्रयुः ॥१७॥

हे सोमदेव ! आपका ध्यान करने वाले, आनन्दपूर्वक स्तुति करने के अभिलाषी, याजक जब यज्ञस्थल में यज्ञ करने लगते हैं, तब मननशील स्तोतागण तरंगित होकर आपकी स्तुतियाँ करते हैं, उस समय धेनुएँ (गौएँ अथवा धारक किरणें) पय (दुग्ध या जल) के साथ आपको संयुक्त करती हैं॥१७॥

आ नः सोम संयतं पिप्युषीमिषमिन्दो पवस्व पवमानो अस्रिधम् ।
या नो दोहते त्रिरहन्नसश्चुषी क्षुमद्वाजवन्मधुमत्सुवीर्यम् ॥१८॥

हे पवित्र होने वाले तेजोमय सोमदेव ! दिन के तीनों सवनों में प्रयुक्त जो अन्न, प्रशंसित, बलवर्द्धक, मधुर तथा उत्तम पुत्र प्रदान करने वाला है, हमारे उस पोषक अन्न को आप अपनी तरंगों से शुद्ध करें॥१८॥

वृषा मतीनां पवते विचक्षणः सोमो अह्नः प्रतरीतोषसो दिवः ।
क्राणा सिन्धूनां कलशाँ अवीवशदिन्द्रस्य हार्द्याविशन्मनीषिभिः ॥१९॥

स्तोताओं की कामना को पूर्ण करने वाला, द्रष्टा, दिन, उषा और आदित्य का शक्ति संवर्द्धक — यह सोम छाना जाता है। नदियों के प्राण स्वरूप पानी में मिलाकर मनीषी उद्गाताओं द्वारा निष्पन्न यह सोमरस इन्द्रदेव के पेट में प्रवेश करने की इच्छा से पात्र में स्थित होता है॥१९॥

मनीषिभिः पवते पूर्व्यः कविर्नृभिर्यतः परि कोशाँ अचिक्रदत् ।
त्रितस्य नाम जनयन्मधु क्षरदिन्द्रस्य वायोः सख्याय कर्तवे ॥२०॥

सर्वज्ञ शोधित सोम याजकों द्वारा कलश में एकत्रित किया जाता है। त्रैलोक्य पूजित इन्द्रदेव की ख्याति बढ़ाता हुआ यह मधुर सोम, उनको तृप्त करने के लिये, वायु के साथ कोशों (पात्रों) में ध्वनि करता हुआ सवित होता है॥२०॥

अयं पुनान उषसो वि रोचयदयं सिन्धुभ्यो अभवदु लोककृत् ।
अयं त्रिः सप्त दुदुहान आशिरं सोमो हृदे पवते चारु मत्सरः ॥२१॥

जनहितकारी यह पवित्र सोम (अपने दिव्य रूप में) उषा को प्रकाशित करता है, (अपने प्राकृतिक रूप में) नदियों को बढ़ाने वाला है और अपने जीवगत रूप में) हृदयस्थ होने के लिये इक्कीस घटकों (१० प्राण +१० इन्द्रियाँ +१ मन = कुल२१) को पुष्ट करता हुआ प्रवाहित होता है॥२१॥

पवस्व सोम दिव्येषु धामसु सृजान इन्दो कलशे पवित्र आ ।
सीदन्निन्द्रस्य जठरे कनिक्रदन्नृभिर्यतः सूर्यमारोहयो दिवि ॥२२॥

हे सर्व प्रकाशक सोमदेव ! यज्ञ स्थल में आप अपना दिव्य रस प्रवाहित करें। कलश में रखा हुआ यह पवित्र सोम इन्द्रदेव के पेट में ध्वनि करता हुआ जाता है । याजकों द्वारा यज्ञ में प्रतिष्ठित इस सोम को, द्युलोक में सूर्यदेव को अर्पित किया जाता है॥२२॥

अद्रिभिः सुतः पवसे पवित्र आँ इन्दविन्द्रस्य जठरेष्वाविशन् ।
त्वं नृचक्षा अभवो विचक्षण सोम गोत्रमङ्गिरोभ्योऽवृणोरप ॥२३॥

पत्थरों से कूटकर निकाला गया शोधित पवित्र सोमरस इन्द्रदेव के उदर में प्रविष्ट होता है । हे सोमदेव ! आप सर्वद्रष्टा हैं, आप दिव्य द्रष्टा हैं। अंगिराओं (याजकों – अंगधारियों- जीवों) के लिए गो (इन्द्रियों) रक्षक रस आप अपने पास रखते हैं॥२३॥

त्वां सोम पवमानं स्वाध्योऽनु विप्रासो अमदन्नवस्यवः ।
त्वां सुपर्ण आभरद्दिवस्परीन्दो विश्वाभिर्मतिभिः परिष्कृतम् ॥२४॥

हे सोमदेव ! स्वाध्यायी ब्राह्मण अपने संरक्षण की कामना से आपके द्वारा निकाले गये पवित्र सोमरस की स्तुति करते हैं। है स्तुतियों द्वारा प्रशंसित सोमदेव ! आपको धुलोक के ऊपर सुपर्ण (पक्षी या श्रेष्ठ पालनकर्ता) लेकर आया है॥२४॥

अव्ये पुनानं परि वार ऊर्मिणा हरिं नवन्ते अभि सप्त धेनवः ।
अपामुपस्थे अध्यायवः कविमृतस्य योना महिषा अहेषत ॥२५॥

ऊन की छलनी के द्वारा शोधित हरिताभ सोमरस को सात धेनुएँ (धारक प्रवाह या नदियाँ) प्राप्त करती हैं। ज़ल में विद्यमान ज्ञानवर्द्धक सोम को मनीषीगण यज्ञस्थल में जाने के लिए प्रेरित करते हैं॥२५॥

इन्दुः पुनानो अति गाहते मृधो विश्वानि कृण्वन्त्सुपथानि यज्यवे ।

गाः कृण्वानो निर्णिजं हर्यतः कविरत्यो न क्रीळन्परि वारमर्षति ॥२६॥

यह सोमरस शोधित होते हुए विनाशक प्रवृत्तियों को पार करते हुए जाता है तथा याज्ञिकों के लिए श्रेष्ठ मार्ग विनिर्मित करता है । अपना स्वरूप गौओं के समान पवित्र बनाकर सुशोभित होता है । कान्तिमान् ज्ञानी सोम घोड़े के समान क्रीड़ा करता हुआ वरण योग्य स्थानों पर प्रतिष्ठित होता है॥२६॥

असश्चतः शतधारा अभिश्रियो हरिं नवन्तेऽव ता उदन्युवः ।
क्षिपो मृजन्ति परि गोभिरावृतं तृतीये पृष्ठे अधि रोचने दिवः ॥२७॥

सैकड़ों धाराओं से निःसृत हरिताभ सोम के चारों ओर रहने वाली सूर्यदेव की किरणें परस्पर साथ रहती हैं । दिव्य वाणियों (मंत्रों) से आवृत होकर यह क्षिप्त किरणें (अथवा प्रेरणाएँ) इस सोमरस को शुद्ध करती हैं। यह सोम द्युलोक के तीसरे स्थान (सर्वोच्च पद) पर प्रतिष्ठित होता है॥२७॥

तवेमाः प्रजा दिव्यस्य रेतसस्त्वं विश्वस्य भुवनस्य राजसि ।
अथेदं विश्वं पवमान ते वशे त्वमिन्दो प्रथमो धामधा असि ॥२८॥

हे सोमदेव ! यह समूचा विश्व आपके अधीन हैं । आप ही सभी भुवनों के स्वामी हैं। आपकी ही दिव्य शक्ति से सभी प्रजाएँ उत्पन्न हुई हैं । हे सोमदेव ! आप सबसे पहले विश्व को धारण करने वाले हैं॥२८॥

त्वं समुद्रो असि विश्ववित्कवे तवेमाः पञ्च प्रदिशो विधर्मणि ।
त्वं द्यां च पृथिवीं चाति जभ्रिषे तव ज्योतींषि पवमान सूर्यः ॥२९॥

हे ज्ञानी सोमदेव ! आप जलमय हैं, सर्वज्ञ हैं, आप द्युलोक और पृथिवी लोक को धारण करते हैं । आपकी धारणशक्ति से ही ये पाँचों दिशाएँ विद्यमान हैं। हे सोमदेव ! सूर्यदेव आपके तेज को बढ़ाते हैं॥२९॥

त्वं पवित्रे रजसो विधर्मणि देवेभ्यः सोम पवमान पूयसे ।
त्वामुशिजः प्रथमा अगृभ्णत तुभ्येमा विश्वा भुवनानि येमिरे ॥३०॥

हे शोधित सोमदेव ! रस धारण करने वाली छलनी से देवों के निमित्त आपको पवित्र बनाया जाता है। आपकी इच्छा करने वाले मुख्य याजक आपको (आनन्द प्राप्त करने के लिए) ग्रहण करते हैं। ये सभी भुवन आपके बल से बँधे हुए हैं॥३०॥

प्र रेभ एत्यति वारमव्ययं वृषा वनेष्वव चक्रदद्धरिः ।
सं धीतयो वावशाना अनूषत शिशुं रिहन्ति मतयः पनिप्रतम् ॥३१॥

बलशाली हरिताभ सोम ध्वनि करता हुआ जल में व्याप्त होता है तथा ऊन की छलनी से शोधित किया जाता है। शोधित करने वाले याजकगण इस सोम की उत्तम विधि से स्तुति करते हैं॥३१॥

स सूर्यस्य रश्मिभिः परि व्यत तन्तुं तन्वानस्त्रिवृतं यथा विदे ।
नयन्नृतस्य प्रशिषो नवीयसीः पतिर्जनीनामुप याति निष्कृतम् ॥३२॥

सोम सूर्य की रश्मियों को आत्मसात् करके तीन सवनों (प्रातः, मध्याह्न, साय) से युक्त यज्ञ का विस्तार करता है तथा (याजकों की) यज्ञ में की गई नवीन श्रेष्ठ इच्छाओं को यथा रीति पूर्ण करता है । यह सोमरस जननियों (नारियों अथवा उत्पादक क्षमताओं) का स्वामी है। यह सोम सर्वश्रेष्ठ पद पर प्रतिष्ठित होता है॥३२॥

राजा सिन्धूनां पवते पतिर्दिव ऋतस्य याति पथिभिः कनिक्रदत् ।
सहस्रधारः परि षिच्यते हरिः पुनानो वाचं जनयन्नुपावसुः ॥३३॥

द्युलोक का स्वामी तथा जल का स्वामी हरिताभ सोम हजारों धाराओं से ध्वनि करता हुआ यज्ञ मार्ग से पात्रों में प्रतिष्ठित होता है । यज्ञ के पास रहने की कामना वाला यह सोम स्तुतियों का निर्माण करता हैं॥३३॥

पवमान मह्यर्णो वि धावसि सूरो न चित्रो अव्ययानि पव्यया ।
गभस्तिपूतो नृभिरद्रिभिः सुतो महे वाजाय धन्याय धन्वसि ॥३४॥

हे सोमदेव ! आप जलनिधि के पास जाते हैं । सूर्यदेव की भाँति पूज्य होकर आप ऊन की बनी छलनी से पात्रों में प्रतिष्ठित होते हैं । पत्थरों से कूटकर याजकों के द्वारा निकाला गया यह सोमरस धन प्राप्ति के निमित्त बड़े युद्धों में जाता है॥३४॥

इषमूर्जं पवमानाभ्यर्षसि श्येनो न वंसु कलशेषु सीदसि ।
इन्द्राय मद्वा मद्यो मदः सुतो दिवो विष्टम्भ उपमो विचक्षणः ॥३५॥

हे सोमदेव ! आप अन्न और बल की वृद्धि करने वाले हैं। जिस प्रकार श्येन पक्षी अपने निवास में आकर रहता है, उसी प्रकार आप कलशों में रहते हैं। द्युलोक को धारण करने वाला यह सोम उदाहरण देने योग्य सर्व द्रष्टा है । यह सोमरस इन्द्रदेव के लिए आनन्द प्रदायक तथा उत्साहवर्धक है॥३५॥

सप्त स्वसारो अभि मातरः शिशुं नवं जज्ञानं जेन्यं विपश्चितम् ।
अपां गन्धर्वं दिव्यं नृचक्षसं सोमं विश्वस्य भुवनस्य राजसे ॥३६॥

माता तथा बहिनों के समान उपकार करने वाली सात नदियों का जल निकाले गए ज्ञानी सोमरस में मिलाने के लिए लाया जाता है। समस्त भुवनों पर राज्य करने की कामना से देव मानवों के द्रष्टा, जल मिश्रित सोम को सर्वोच्च पद पर प्रतिष्ठित करते हैं॥३६॥

ईशान इमा भुवनानि वीयसे युजान इन्दो हरितः सुपर्ण्यः ।
तास्ते क्षरन्तु मधुमद्घृतं पयस्तव व्रते सोम तिष्ठन्तु कृष्टयः ॥३७॥

हरे वर्ग के तीव्रगामी अश्वों (किरणों) से सभी लोकों में संव्याप्त, जगत् के स्वामी, हे तेजस्वी सूर्यरूप सोमदेव ! मधुर स्निग्ध जलधाराओं में आपका रस (शक्ति) स्थिर रहे । हे दिव्य सोमदेव ! आपकी प्रेरणा से याजक गण सत्कर्म में निरत रहें॥३७॥

त्वं नृचक्षा असि सोम विश्वतः पवमान वृषभ ता वि धावसि ।
स नः पवस्व वसुमद्धिरण्यवद्वयं स्याम भुवनेषु जीवसे ॥३८॥

हे शक्तिवर्द्धक पवित्र सोमदेव ! आप सभी में व्याप्त, साक्षी रूप, आप संस्कारित होते हुए हमारे पास पधारें। आपके अनुग्रह से हम सभी धन-सम्पदा से सम्पन्न होकर सुखी जीवन जियें॥३८॥

गोवित्पवस्व वसुविद्धिरण्यविद्रेतोधा इन्दो भुवनेष्वर्पितः ।
त्वं सुवीरो असि सोम विश्ववित्तं त्वा विप्रा उप गिरेम आसते ॥३९॥

स्वर्ण – सम्पदा से युक्त, पराक्रम बढ़ाने वाले, सभी भुवनों में व्याप्त गो दुग्ध मिश्रित हे सोमदेव ! आप पवित्र हैं। आप सर्वज्ञ, शूरवीर एवं श्रेष्ठ पथ पर ले जाने वाले हैं। सभी ऋत्विज् (साधक) आपकी प्रार्थना करते हैं॥३९॥

उन्मध्व ऊर्मिर्वनना अतिष्ठिपदपो वसानो महिषो वि गाहते ।
राजा पवित्ररथो वाजमारुहत्सहस्रभृष्टिर्जयति श्रवो बृहत् ॥४०॥

जल मिश्रित महान् सोमरस जब कलश में जाता है, तब उसकी मधुर धाराएँ तथा स्तुतियाँ ऊपर उठती (सुनाई देती) हैं। उत्तम रथवाला यह राजा (सोम) जब युद्ध में जाता है, तब हजारों प्रकार का अन्न जीत (अपने अधिकार में कर लेता है॥४०॥

स भन्दना उदियर्ति प्रजावतीर्विश्वायुर्विश्वाः सुभरा अहर्दिवि ।
ब्रह्म प्रजावद्रयिमश्वपस्त्यं पीत इन्दविन्द्रमस्मभ्यं याचतात् ॥४१॥

वह सोम सभी मनुष्यों का स्वामीं, उत्तम प्रजा तथा सुख प्रदान करने वाला है, इसे (सोम को) स्तुतियाँ दिन और रात प्रेरित करती हैं । हे सोमदेव ! इन्द्रदेव के द्वारा पान किये जाने पर आप हमारे लिए प्रजायुक्त, धनयुक्त तथा गृहादि से युक्त ऐश्वर्य प्रदान करें॥४१॥

सो अग्रे अह्नां हरिर्हर्यतो मदः प्र चेतसा चेतयते अनु द्युभिः ।
द्वा जना यातयन्नन्तरीयते नरा च शंसं दैव्यं च धर्तरि ॥४२॥

यह सोम ब्राह्ममुहूर्त में स्तोताओं की स्तुतियों से उत्कृष्ट रूप में जाना जाता है । यह हर्षप्रदायक, प्रिय हरिताभ सोम दो जनों (दाता एवं धारणकर्ता) को प्रयत्नरत करता है तथा धुलोक और पृथिवीलोक के मध्य स्थापित होता है। मनुष्यों तथा देवताओं द्वारा प्रशंसित दिव्य धन, धारणकर्ता (सत्पात्रों) को हस्तगत कराता है॥४२॥

अञ्जते व्यञ्जते समञ्जते क्रतुं रिहन्ति मधुनाभ्यञ्जते ।
सिन्धोरुच्छ्वासे पतयन्तमुक्षणं हिरण्यपावाः पशुमासु गृभ्णते ॥४३॥

स्तोता, सोमरस को गौ के दुग्ध में विशेष ढंग से भली प्रकार मिलाते हैं, जिसका स्वाद देवगण लेते हैं। उस सोम में गोघृत तथा शहद मिश्रित करते हैं। इसके बाद नदी के जल में स्थित सोम को स्वर्ण से शुद्ध करके तेजस्वी रूप प्रदान करते हैं॥४३॥

विपश्चिते पवमानाय गायत मही न धारात्यन्धो अर्षति ।
अहिर्न जूर्णामति सर्पति त्वचमत्यो न क्रीळन्नसरद्वृषा हरिः ॥४४॥

हे ऋत्विजो ! श्रेष्ठ विचारशील और शुद्ध सोम की स्तुति करो, यह सोम महाधारा के समान वेग से अन्न (पोषण) प्रदान करता है । सर्पतुल्य वह अपनी पुरानी त्वचा (छाल) का त्याग करता हैं । शक्तिमान् और हरित वर्ण का सोमरस घोड़े की तरह खेल करता हुआ कलश- पात्र में स्थापित होता है॥४४॥

अग्रेगो राजाप्यस्तविष्यते विमानो अह्नां भुवनेष्वर्पितः ।
हरिर्घृतस्नुः सुदृशीको अर्णवो ज्योतीरथः पवते राय ओक्यः ॥४५॥

प्रगतिशील राजा सोम जल में मिश्रित होता हुआ प्रशंसित होता हैं । वह दिवस का मापक (निर्माण करने वाला) सोम जल में स्थापित है । हरित वर्ण का, जल मिश्रित, सुन्दर दर्शनीय और जल में निवास करने वाला, ज्योति स्वरूप रथ वाला सोम धनागार स्वरूप हैं॥४५॥

असर्जि स्कम्भो दिव उद्यतो मदः परि त्रिधातुर्भुवनान्यर्षति ।
अंशुं रिहन्ति मतयः पनिप्नतं गिरा यदि निर्णिजमृग्मिणो ययुः ॥४६॥

द्युलोक के आधार स्तंभ , पराक्रमी सोम का रस निकालते हैं। तीन कलशों (तीनों लोकों) में यह सोम व्याप्त रहता है । ध्वनि करने वाले सोम की ज्ञानी स्तोता स्तुति करते हैं। याजकगण स्तुतियों के द्वारा तेजस्वी सोम को प्राप्त करते हैं॥४६॥

प्र ते धारा अत्यण्वानि मेष्यः पुनानस्य संयतो यन्ति रंहयः ।
यद्गोभिरिन्दो चम्वोः समज्यस आ सुवानः सोम कलशेषु सीदसि ॥४७॥

हे शोधित सोम ! ध्वनि करने वाली आपकी संयुक्त धाराएँ ऊन की छलनी से परिष्कृत होकर स्रवित हो रही हैं । हे सोम ! जब जल के साथ आपको पात्र में मिश्रित करते हैं, उस समय आप कलशों में प्रतिष्ठित होते हैं॥४७॥

पवस्व सोम क्रतुविन्न उक्थ्योऽव्यो वारे परि धाव मधु प्रियम् ।
जहि विश्वान्रक्षस इन्दो अत्रिणो बृहद्वदेम विदथे सुवीराः ॥४८॥

सभी कर्मों के ज्ञाता, प्रशंसनीय हे सोमदेव ! आप हमारे यज्ञ के लिए रस प्रदान करें । आनन्दवर्द्धक रस प्रदान करने के लिए अनश्वर शोधक यन्त्र से शीघ्र ही स्रवित हों । हे सोमदेव ! आप दूसरे के अधिकारों का हनन करने वालों का संहार करें । उत्तम वीरों से युक्त होकर हम यज्ञ में स्तुतियों के द्वारा आपका गुणगान करेंगे॥४८॥

सूक्त ८७

ऋषिः उशना काव्यः ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – त्रिष्टुप

प्र तु द्रव परि कोशं नि षीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष ।
अश्वं न त्वा वाजिनं मर्जयन्तोऽच्छा बर्ही रशनाभिर्नयन्ति ॥१॥

हे सोमदेव ! याजकों द्वारा पवित्र किये जाते हुए आप शीघ्र ही पात्र में स्थित हों तथा यजमान को पोषक तत्त्व प्रदान करें । शक्तिमान् घोड़े की भाँति शुद्ध करते हुए याजक आपको यज्ञ मण्डप में ले जाते हैं॥१॥

स्वायुधः पवते देव इन्दुरशस्तिहा वृजनं रक्षमाणः ।
पिता देवानां जनिता सुदक्षो विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्याः ॥२॥

उत्तम आयुधों से युक्त, शत्रुनाशक, विघ्नों को दूर कर उनसे रक्षा करने वाला, पालन करने वाला, दिव्यता का विकास करने वाला, उत्तम बलवान् , दिव्य सोम शोधित किया जाता है॥२॥

ऋषिर्विप्रः पुरएता जनानामृभुर्धीर उशना काव्येन ।
स चिद्विवेद निहितं यदासामपीच्यं गुह्यं नाम गोनाम् ॥३॥

नेतृत्व प्रदान करने वाले प्रखर , परमज्ञानी, धैर्यवान् उशना (नियंत्रण में सक्षम अधि इन गौओं (गौओं, इन्द्रियों, वाणियों) में गुप्त रूप से रहने वाले सोम को यत्नपूर्वक प्राप्त करते हैं॥३॥

एष स्य ते मधुमाँ इन्द्र सोमो वृषा वृष्णे परि पवित्रे अक्षाः ।
सहस्रसाः शतसा भूरिदावा शश्वत्तमं बर्हिरा वाज्यस्थात् ॥४॥

हे इन्द्रदेव ! बलवर्धक आपका यह सोम मधुर और वीर्यवान् होकर शोधक यंत्र से निकलता है। हजारों सैकड़ों प्रकार का प्रचुर धन प्रदान करने वाला, यह शक्ति सम्पन्न सोम, लगातार सम्पन्न होने वाले यज्ञ में जाकर स्थित होता है॥४॥

एते सोमा अभि गव्या सहस्रा महे वाजायामृताय श्रवांसि ।
पवित्रेभिः पवमाना असृग्रञ्छ्रवस्यवो न पृतनाजो अत्याः ॥५॥

जिस प्रकार अन्न की कामना वाले शत्रुजयी अश्व आगे बढ़ते हैं । उसी प्रकार गौ के दूध से मिश्रित हजारों प्रकार का अन्न प्रदान करने वाला

सोम छलनी से शोधित हो रहा है । अमृत तुल्य यह सोमरस प्रचुर मात्रा में (पौष्टिक) अन्न देने के लिए तैयार हो रहा है॥५॥

परि हि ष्मा पुरुहूतो जनानां विश्वासरद्भोजना पूयमानः ।
अथा भर श्येनभृत प्रयांसि रयिं तुञ्जानो अभि वाजमर्ष ॥६॥

मनुष्यों को हर प्रकार का भोज्य पदार्थ प्रदान करने के लिए ज्ञानी जनों द्वारा प्रशंसित परिष्कृत होने वाला सोमरस यज्ञ स्थल में आता है । श्येन पक्षी द्वारा लाये गये हे सोमदेव ! आप धन प्रदान करते हुए प्रचुर मात्रा में अन्न प्रदान करें॥६॥

एष सुवानः परि सोमः पवित्रे सर्गो न सृष्टो अदधावदर्वा ।
तिग्मे शिशानो महिषो न शृङ्गे गा गव्यन्नभि शूरो न सत्वा ॥७॥

बंधन से मुक्त होकर वेगवान् घोड़ा जिस प्रकार दौड़ता है, उसी प्रकार रस निकालते समय सोमरस शोधन यंत्र में से दौड़ता है। भैंसे द्वारा अपने तीक्ष्ण सींगों को और तीक्ष्ण बनाने के समान यह सोमरस गौ (गाय, पृथ्वी, इन्द्रियादि) से संयुक्त होने की कामना से अपने (निर्धारित) स्थान पर जाता है॥७॥

एषा ययौ परमादन्तरद्रेः कूचित्सतीरूर्वे गा विवेद ।
दिवो न विद्युत्स्तनयन्त्यभ्रैः सोमस्य ते पवत इन्द्र धारा ॥८॥

यह सोम की धारा परम (सत्ता या लोक) से प्रवाहित होती. है । यह अद्रि (पर्वत या मेघों) से निकलकर अन्य प्रदेशों से होती हुई गौ (गौओं, पृथ्वी, वाणी, इन्द्रियों आदि) को जानती – प्राप्त करती है, बादलों से प्रेरित होकर धुलोक से विद्‌युत् जैसी ध्वनि करते हुए सोमरस की धाराएँ इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित होती हैं॥८॥

उत स्म राशिं परि यासि गोनामिन्द्रेण सोम सरथं पुनानः ।
पूर्वीरिषो बृहतीर्जीरदानो शिक्षा शचीवस्तव ता उपष्टुत् ॥९॥

हे सोमदेव ! शोधित होते हुए आप गौओं के समूह के समीप जाते हैं। आप इन्द्रदेव के रथ में एक साथ बैठकर त्वरित दान की कामना से स्तुत्य धन, प्रचुर मात्रा में प्रदान करें । हे शक्तिमान् सोमदेव ! वह अन्न आपका ही है॥९॥

सूक्त ८८

ऋषि: उशना काव्य: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

अयं सोम इन्द्र तुभ्यं सुन्वे तुभ्यं पवते त्वमस्य पाहि ।
त्वं ह यं चकृषे त्वं ववृष इन्दुं मदाय युज्याय सोमम् ॥१॥

हे इन्द्रदेव ! यह सोमरस आपके निमित्त निकालकर शोधित किया जाता हैं। इस पवित्र हुए। सोम का आप पान करें। आप ही इसके उत्पादक हैं, इस दीप्तिमान् सोम को आनन्द के लिए योग के लिए आप ग्रहण करें॥१॥

स ईं रथो न भुरिषाळयोजि महः पुरूणि सातये वसूनि ।
आदीं विश्वा नहुष्याणि जाता स्वर्षाता वन ऊर्ध्वा नवन्त ॥२॥

वे महान् इन्द्रदेव अधिक भार धारण किये हुए रथ के समान हमें अपार वैभव प्रदान करने के निमित्त, नियुक्त किये गये हैं। वे हमारे विरोधी शत्रुओं को संग्राम में विनष्ट करते हैं॥२॥

वायुर्न यो नियुत्वाँ इष्टयामा नासत्येव हव आ शम्भविष्ठः ।
विश्ववारो द्रविणोदा इव त्मन्पूषेव धीजवनोऽसि सोम ॥३॥

जो सोम वायु की भाँति इच्छानुसार गमन करने वाले घोड़ों के समान है । जो सोम अश्विनीकुमारों की भाँति आमंत्रण पाते ही आता है । जो सोम धनदाता स्वामी के तुल्य अपने को योग्य मानता है । हे सोमदेव! आप पूषादेव के समान मन के वेग से यज्ञस्थल में पधारें॥३॥

इन्द्रो न यो महा कर्माणि चक्रिर्हन्ता वृत्राणामसि सोम पूर्भित् ।
पैद्वो न हि त्वमहिनाम्नां हन्ता विश्वस्यासि सोम दस्योः ॥४॥

हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के समान महान् कर्म करने वाले तथा दुर्विचारों को शत्रुवत् नष्ट करने वाले हैं। आप शत्रु के नगरों को ध्वस्त करने वाले हैं । हे सोमदेव ! आप सभी शत्रुओं का संहार करने वाले हैं। अत: अश्व के समान ही आप 'अहि' नामक शत्रु को नष्ट करें॥४॥

अग्निर्न यो वन आ सृज्यमानो वृथा पाजांसि कृणुते नदीषु ।
जनो न युध्वा महत उपब्दिरियर्ति सोमः पवमान ऊर्मिम् ॥५॥

जो सोम वन में उत्पन्न होकर वन में उत्पन्न अग्निदेव द्वारा बल प्रदर्शन की भाँति अपनी सामर्थ्य को प्रदर्शित करता है, शूरवीर की तरह बड़े शत्रुओं से लोहा लेता है, वैसा यह शोधित सोम, रस की धाराओं को प्रेरित करता है॥५॥

एते सोमा अति वाराण्यव्या दिव्या न कोशासो अभ्रवर्षाः ।
वृथा समुद्रं सिन्धवो न नीचीः सुतासो अभि कलशाँ असृग्रन् ॥६॥

बादलों द्वारा की जा रही वर्षा से प्रवाहित नदियाँ जिस प्रकार स्वाभाविक रूप से समुद्र के पास जाती हैं, उसी प्रकार जलमिश्रित यह सोम दिव्य कोशों (पात्र अथवा जीव कोशों) में जाता है । इस सोमरस को अविनाशी अथवा ऊन की छलनी से शोधित किया जाता है॥६॥

शुष्मी शर्धो न मारुतं पवस्वानभिशस्ता दिव्या यथा विट् ।
आपो न मक्षू सुमतिर्भवा नः सहस्राप्साः पृतनाषाण्न यज्ञः ॥७॥

हे बलशाली सोमदेव ! आप वायु के समान बल हमें प्रदान करें , जिससे उत्तम प्रजा पीड़ित न हो । ज्ञानी जनों की भाँति हम शीघ्र ही बुद्धिमान् हों । अनेकों रूपों वाले हे सोमदेव ! युद्ध में विजय प्राप्त करने वाले इन्द्रदेव के समान आप यज्ञ में पूज्य हों॥७॥

राज्ञो नु ते वरुणस्य व्रतानि बृहद्गभीरं तव सोम धाम ।
शुचिष्ट्वमसि प्रियो न मित्रो दक्षाय्यो अर्यमेवासि सोम ॥८॥

हे सोमदेव ! आप श्रेष्ठ राजा हैं, आपके नियमों का हम पालन करते हैं । आप महान् तेजस्वी और गंभीर हैं । आप मित्र देवता के समान पवित्र हैं तथा अर्यमा के समान पूज्य हैं॥८॥

सूक्त ८९

ऋषि: उशना काव्य: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

प्रो स्य वह्निः पथ्याभिरस्यान्दिवो न वृष्टिः पवमानो अक्षाः ।
सहस्रधारो असदन्न्यस्मे मातुरुपस्थे वन आ च सोमः ॥१॥

आकाश से होने वाली वर्षा के समान सोम प्रवाहित होता हैं । वह सोम आगे बढ़ता हैं । विभिन्न मार्गों से गमन करने वाला वह सोमरस अनेक धाराओं से हमें प्राप्त हो॥१॥

राजा सिन्धूनामवसिष्ट वास ऋतस्य नावमारुहद्रजिष्ठाम् ।
अप्सु द्रप्सो वावृधे श्येनजूतो दुह ईं पिता दुह ईं पितुर्जाम् ॥२॥

जल का राजा सोम गोदुग्ध में निवास करता है । श्येन पक्षी द्वारा लाया गया सोम, जल में मिश्रित होकर सत्यरूपी नौका पर आसीन होकर गतिशील होता है । द्युलोक से उत्पन्न हुए सोमरस को याज्ञिक निकालते हैं॥२॥

सिंहं नसन्त मध्वो अयासं हरिमरुषं दिवो अस्य पतिम् ।
शूरो युत्सु प्रथमः पृच्छते गा अस्य चक्षसा परि पात्युक्षा ॥३॥

मधुर जल को प्रेरित करने वाले, शत्रुनाशक, प्रकाशक, द्युलोक के पालक, हरिताभ सोमरस को (याजकगण) निकालते हैं। युद्धों का शूर यह सोमरस सर्वप्रथम गौओं (किरणों) की कुशलता पूछता है । इस सोमरस की सामर्थ्य से ही इन्द्रदेव सभी को संरक्षण प्रदान करते हैं॥३॥

मधुपृष्ठं घोरमयासमश्वं रथे युञ्जन्त्युरुचक्र ऋष्वम् ।
स्वसार ईं जामयो मर्जयन्ति सनाभयो वाजिनमूर्जयन्ति ॥४॥

उत्तम पीठ वाला मधुर सोम देखने में सुन्दर , गमनशील तथा कर्म में भयंकर है । यज्ञरूपी रथ में इस सोम को अश्व के समान युक्त करते हैं। बहिने (ज्वालाएँ, अँगुलियाँ) इसका मार्जन करती हैं। समान नाभि (केन्द्र, उद्देश्य, बन्धन) वाले (याजक या प्रकृति प्रवाह) इसे बलवान् बनाते हैं॥४॥

चतस्र ईं घृतदुहः सचन्ते समाने अन्तर्धरुणे निषत्ताः ।
ता ईमर्षन्ति नमसा पुनानास्ता ईं विश्वतः परि षन्ति पूर्वीः ॥५॥

घृत (तेजस्) का दोहन करने वाली चार गौएँ (चार प्रकार की वाणियाँ) सोम से संयुक्त होती हैं । समान आश्रय में रहने वाली वे सोम को

प्राप्त करती हैं। नमनपूर्वक (या अन्न द्वारा) पवित्र होने वाली अनेक गौएँ (किरणें, इन्द्रियाँ) उसे सब ओर से आवृत कर लेती हैं॥५॥

विष्टम्भो दिवो धरुणः पृथिव्या विश्वा उत क्षितयो हस्ते अस्य ।
असत्त उत्सो गृणते नियुत्वान्मध्वो अंशुः पवत इन्द्रियाय ॥६॥

यह सोम द्यु तथा पृथिवीलोक का आधार है। समस्त मानव सोम के ही हाथ में हैं । इन्द्रदेव को अर्पित करने के लिए मधुर तथा उत्साहवर्द्धक सोम की स्तुतियाँ की जाती हैं । हे सोम ! आप शक्तियों के स्वामी हैं॥६॥

वन्वन्नवातो अभि देववीतिमिन्द्राय सोम वृत्रहा पवस्व ।
शग्धि महः पुरुश्चन्द्रस्य रायः सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥७॥

हे अजेय सोमदेव ! यज्ञस्थल पर जाकर वृत्र का वध करने वाले इन्द्रदेव के निमित्त आप रस प्रदान करें। हम उत्तम पराक्रम के स्वामी बने, इसके लिए आप हमें तेजस्वी धन प्रचुर मात्रा में प्रदान करें॥७॥

सूक्त ९०

ऋषिः वसिष्ठो मैत्रावरुणिः ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – त्रिष्टुप

प्र हिन्वानो जनिता रोदस्यो रथो न वाजं सनिष्यन्नयासीत् ।
इन्द्रं गच्छन्नायुधा संशिशानो विश्वा वसु हस्तयोरादधानः ॥१॥

द्युलोक एवं पृथिवीलोक को उत्पन्न करने वाले, शस्त्रों की प्रखरता को बढ़ाने वाले देवताओं के पोषक सोमदेव, वेगपूर्वक इन्द्रदेव के समीप पहुँचते हुए मानो विश्व का अपार वैभव हमें (याजकों को) प्रदान करने के लिए आए हैं॥१॥

अभि त्रिपृष्ठं वृषणं वयोधामाङ्गूषाणामवावशन्त वाणीः ।
वना वसानो वरुणो न सिन्धून्वि रत्नधा दयते वार्याणि ॥२॥

ऋत्विजों की वाणियाँ तीन स्थानों (द्यु, अन्तरिक्ष एवं पृथिवी अथवा अन्तरिक्ष, वनस्पति एवं शरीर) में निवास करने वाले काम्यवर्धक अन्नदाता सोम की तीव्र स्वर से स्तुति करती हैं। जल में अधिष्ठित

वरुणदेव की भाँति पानी में मिलकर सोम स्तोताओं को रत्न और धन प्रदान करता है॥२॥

शूरग्रामः सर्ववीरः सहावाञ्जेता पवस्व सनिता धनानि ।
तिग्मायुधः क्षिप्रधन्वा समत्स्वषाळ्हः साह्वान्पृतनासु शत्रून् ॥३॥

हे सोमदेव ! आप शूरों के समूह और अनेक वीरों के प्रेरक, शक्तिशाली, विजेता, धनप्रदाता, आयुधों से युक्त, अतिशीघ्र गतिवाले, शस्त्र प्रहारक, संग्राम में अदम्य तथा युद्ध में शत्रुओं को हराने वाले हैं॥३॥

उरुगव्यूतिरभयानि कृण्वन्त्समीचीने आ पवस्वा पुरंधी ।
अपः सिषासन्नुषसः स्वर्गाः सं चिक्रदो महो अस्मभ्यं वाजान् ॥४॥

विस्तीर्ण पथयुक्त, निर्भय बनाने वाले, आकाश और पृथ्वी को जोड़ने वाले हे सोमदेव ! आप अवतरित हों । जल, उषा, सूर्य किरणों और गौओं द्वारा पोषित आप शब्दनाद करते हुए हमें अपार ऐश्वर्य प्रदान करें॥४॥

मत्सि सोम वरुणं मत्सि मित्रं मत्सीन्द्रमिन्दो पवमान विष्णुम् ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि महामिन्द्रमिन्दो मदाय ॥५॥

हे पवित्र सोमदेव ! आप वरुणदेव, मित्र देव, इन्द्रदेव, विष्णुदेव, मरुत्देव तथा सभी देवों सहित महान् सनातन इन्द्रदेव को आनन्दित करते हैं॥५॥

एवा राजेव क्रतुमाँ अमेन विश्वा घनिघ्नद्दुरिता पवस्व ।
इन्दो सूक्ताय वचसे वयो धा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

यज्ञ करने वाले राजा के समान स्तुत्य हे सोमदेव ! आप सभी दुष्टों का विनाश करते हुए रस प्रदान करें तथा अन्न प्रदान करते हुए कल्याणकारी ढंग से हमारा संरक्षण करें, इसके लिए स्तोत्रों से आपकी स्तुति करते हैं॥६॥

सूक्त ९१

ऋषि: कश्यपो मारीच:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

असर्जि वक्वा रथ्ये यथाजौ धिया मनोता प्रथमो मनीषी ।
दश स्वसारो अधि सानो अव्येऽजन्ति वह्निं सदनान्यच्छ ॥१॥

जिस प्रकार युद्ध में अश्वों को भेजा जाता है, उसी प्रकार सबको प्रिय लगने वाला सर्वप्रथम स्तुत्य सोम शब्द करता हुआ यज्ञ कर्म में प्रेरित किया जाता है । दस बहिनें (दस दिशाएँ, इन्द्रियाँ अथवा अँगुलियाँ) सोम को अनश्वर शोधन यंत्र के द्वारा अपने स्थान की ओर प्रेरित करती हैं ॥१॥

वीती जनस्य दिव्यस्य कव्यैरधि सुवानो नहुष्येभिरिन्दुः ।
प्र यो नृभिरमृतो मर्त्येभिर्मर्मृजानोऽविभिर्गोभिरद्भिः ॥२॥

विद्वज्जनों द्वारा शोधित सोमरस देवगणों के पान हेतु गमन करता है । यह अविनाशी सोम याजकों द्वारा परिष्कृत किया जाता है। ऊन

की बनी छलनी से शुद्ध होकर गाय के दूध के साथ जल में मिश्रित होकर यह सोमरस यज्ञस्थल पर पहुँचता है॥२॥

वृषा वृष्णे रोरुवदंशुरस्मै पवमानो रुशदीर्ते पयो गोः ।
सहस्रमृक्वा पथिभिर्वचोविदध्वस्मभिः सूरो अण्वं वि याति ॥३॥

बलशाली सोम ध्वनि करते हुए परिष्कृत रूप में वर्षा करने वाले इन्द्रदेव के लिए अपना तेज प्रदर्शित करता है। वह गाय के दूध में मिलाया जाता हैं । स्तुत्य, श्रेष्ठ, पराक्रमी सोम हिंसा से रहित हजारों मार्गों वाली छलनी से शोधित किया जाता है॥३॥

रुजा दृळ्हा चिद्रक्षसः सदांसि पुनान इन्द ऊर्णुहि वि वाजान् ।
वृश्चोपरिष्टात्तुजता वधेन ये अन्ति दूरादुपनायमेषाम् ॥४॥

हे सोमदेव ! आप असुरों के किलों को नष्ट करें, परिष्कृत होकर उनके बल तथा अन्न को भी नष्ट करें। जो (असुर) ऊपर से आते हैं, हमारे समीप हैं अथवा जो दूर से आते हैं, उनके नायकों का संहार करके आप उन्हें समाप्त करें॥४॥

स प्रत्नवन्नव्यसे विश्ववार सूक्ताय पथः कृणुहि प्राचः ।
ये दुःषहासो वनुषा बृहन्तस्ताँस्ते अश्याम पुरुकृत्पुरुक्षो ॥५॥

सभी के स्तुत्य हे सोमदेव ! आप आदि सूक्तों की तरह नवीन सूक्तों को भी ग्रहण करें । हे बहुकर्मा, स्तुत्य सोमदेव ! आपकी शक्ति शत्रुओं के लिए अजेय और असह्य है । शत्रुनाशक उस सामर्थ्य को हम आप से प्राप्त करें॥५॥

एवा पुनानो अपः स्वर्गा अस्मभ्यं तोका तनयानि भूरि ।
शं नः क्षेत्रमुरु ज्योतींषि सोम ज्योङ्नः सूर्यं दृशये रिरीहि ॥६॥

हे सोमदेव ! इस प्रकार परिष्कृत होते हुए आप हमें स्वर्ग, गौएँ, सन्तति तथा जल प्रदान करें । हे सोमदेव ! हमारे क्षेत्र को सुखदायी बनाते हुए आप इन नक्षत्रों का विस्तार करें । हम चिरकाल तक सूर्यदेव के दर्शन कर सकें॥६॥

सूक्त ९२

ऋषि: कश्यपो मारीच:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

परि सुवानो हरिरंशुः पवित्रे रथो न सर्जि सनये हियानः ।
आपच्छ्लोकमिन्द्रियं पूयमानः प्रति देवाँ अजुषत प्रयोभिः ॥१॥

हरितवर्ण (दोषों का हरण करने वाला सोम शोधक उपकरण में से निकलता है । पवित्र होता हुआ यह सोम स्तुतियों को सुनता (मन्त्रशक्ति से प्रभावित होता है । यह सोम हव्यरूप में इन्द्रादि देवों की प्रसन्नता के लिए रथ की तरह उनकी ओर प्रेरित किया जाता है॥१॥

अच्छा नृचक्षा असरत्पवित्रे नाम दधानः कविरस्य योनौ ।
सीदन्होतेव सदने चमूषूपेमग्मन्नृषयः सप्त विप्राः ॥२॥

दिव्य द्रष्टा ज्ञानी सोम को इस यज्ञ स्थल पर जल में मिलाकर छलनी से अच्छी प्रकार शोधित किया जाता है । होता (यज्ञों में मन्त्रोच्चारण

करने वाला) के समान यह सोम यज्ञस्थल पर सुपात्रों में प्रतिष्ठित रहता है । सात ज्ञानवान् याजक ऋषि स्तोत्रों का उच्चारण करते हुए सोम के पास बैठते हैं॥२॥

प्र सुमेधा गातुविद्विश्वदेवः सोमः पुनानः सद एति नित्यम् ।
भुवद्विश्वेषु काव्येषु रन्तानु जनान्यतते पञ्च धीरः ॥३॥

उत्तम मार्ग का ज्ञाता, प्रकाशमय, ज्ञानी, शोधित सोम सदैव कलश में स्थापित होता है । समस्त स्तोत्रों को ग्रहण करता हुआ यह धैर्यवान् सोम पाँच (पंचभूतों, पंचप्राणों अथवा पाँच प्रकार की प्रजाओं) के अनुकूल होकर उनकी उन्नति का मार्ग बनाता है॥३॥

तव त्ये सोम पवमान निण्ये विश्वे देवास्त्रय एकादशासः ।
दश स्वधाभिरधि सानो अव्ये मृजन्ति त्वा नद्यः सप्त यह्वीः ॥४॥

हे पवमान सोमदेव ! वे तैतीस विश्वदेव द्युलोक में आपको अनश्वर शोधन प्रक्रिया द्वारा दसों (दिशाओं-सामर्थ्यो) से शुद्ध करते हैं । सात विशाल धाराएँ जल के द्वारा आपका मार्जन करती हैं॥४॥

तन्नु सत्यं पवमानस्यास्तु यत्र विश्वे कारवः संनसन्त ।
ज्योतिर्यदह्ने अकृणोदु लोकं प्रावन्मनुं दस्यवे करभीकम् ॥५॥

जहाँ सभी कर्ता (कर्मनिष्ठ, याजक, क्रियाशील) सम्यक् रूप से एक जुट होते हैं, वहीं इस पवमान-सत्य रूप सोम का निवास होता है । दिन में प्रकाश करने वाली जो सोम की ज्योति है, वह मनुष्यों को संरक्षण प्रदान करती हैं। दस्युओं-दुष्टों के लिए सोम अपने तेज को विनाशक बनाता है॥५॥

परि सद्मेव पशुमान्ति होता राजा न सत्यः समितीरियानः ।
सोमः पुनानः कलशाँ अयासीत्सीदन्मृगो न महिषो वनेषु ॥६॥

पशु आदि से समृद्ध घर में जिस प्रकार होता जाता है, श्रेष्ठ कर्म करने वाला राजा जिस प्रकार सभागृह में जाता है, भैंसा जिस प्रकार जल में जाता है, उसी प्रकार शोधित होने वाला सोम कलशों में जाता है॥६॥

सूक्त ९३

ऋषि: नौधा गौतम:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

साकमुक्षो मर्जयन्त स्वसारो दश धीरस्य धीतयो धनुत्रीः ।
हरिः पर्यद्रवज्जाः सूर्यस्य द्रोणं ननक्षे अत्यो न वाजी ॥१॥

कर्म करने वाली अँगुलियाँ सोमरस को पवित्र करती हैं। ये दस अँगुलियाँ वीर्यवान् सोम को हिलाती तथा ग्रहण करती हैं। यह हरिताभ सोमरस सभी दिशाओं में ज्ञाता हुआ तेजगति से दौड़ने वाले अश्व के समान कलश में स्थित होता है॥१॥

सं मातृभिर्न शिशुर्वावशानो वृषा दधन्वे पुरुवारो अद्भिः ।
मर्यो न योषामभि निष्कृतं यन्त्सं गच्छते कलश उस्रियाभिः ॥२॥

देवताओं का इष्ट, वरणीय शक्तिशाली सोम, माता द्वारा शिशु से या पुरुष द्वारा स्त्री से मिलने के तुल्य जल में मिलाकर धारण किया जाता है। संस्कार किए जाने वाले स्थान में फिर गौ-दुग्धादि से मिश्रित होता है॥२॥

उत प्र पिप्य ऊधरघ्न्याया इन्दुर्धाराभिः सचते सुमेधाः ।
मूर्धानं गावः पयसा चमूष्वभि श्रीणन्ति वसुभिर्न निक्तैः ॥३॥

गौओं के योग्य पोषक वनस्पतियों में प्रविष्ट हुआ सोम उनके दुग्धाशय को पूर्ण करता है । उत्तम मेधावी यह सोम दुग्ध धाराओं में मिलाया जाता है। जिस प्रकार लोग स्वयं को कपड़ों से आच्छादित करते हैं, उसी प्रकार कलशस्थ सोम को गौएँ अपने दूध से आवृत करती हैं॥३॥

स नो देवेभिः पवमान रदेन्दो रयिमश्विनं वावशानः ।
रथिरायतामुशती पुरंधिरस्मद्र्यगा दावने वसूनाम् ॥४॥

हे सोम ! हमारी इच्छाओं की पूर्ति करते हुए अश्वों से युक्त दैवी धन हमें प्रदान करें। आप महारथियों द्वारा धारण की जाने वाली बुद्धि हमें प्रदान करें, जिससे हम अपने धन को श्रेष्ठ कार्य में लगाने का साहस कर सकें॥४॥

नू नो रयिमुप मास्व नृवन्तं पुनानो वाताप्यं विश्वश्चन्द्रम् ।
प्र वन्दितुरिन्दो तार्यायुः प्रातर्मक्षू धियावसुर्जगम्यात् ॥५॥

हे शोधित सोमदेव ! हमें सन्ततियुक्त आनन्ददायी तथा शीतल (शान्तिदायक) धन तथा स्तोताओं को दीर्घायुष्य प्रदान करें । बुद्धियुक्त धन प्रदान करने वाले हे सोमदेव ! आप हमारे यज्ञ में शीघ्र ही पधारें॥५॥

सूक्त ९४

ऋषि: कण्वो घौर ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

अधि यदस्मिन्वाजिनीव शुभः स्पर्धन्ते धियः सूर्ये न विशः ।
अपो वृणानः पवते कवीयन्व्रजं न पशुवर्धनाय मन्म ॥१॥

जब इस (सोम) को अश्व की तरह शुभ(संस्कारों) से सज्जित करने, सूर्य को किरणों से सुशोभित करने की तरह संस्कारित करने के लिए बुद्धि (मेधा या मंत्रशक्ति) स्पर्धा करती है, (तब) पशुओं के संवर्धन के लिए विचरण स्थल (चरागाह) की भाँति यह सोम क्रान्तदर्शी की भाँति (कलश या विश्वघट) में संचरित होता है॥१॥

द्विता व्यूर्णवन्नमृतस्य धाम स्वर्विदे भुवनानि प्रथन्त ।
धियः पिन्वानाः स्वसरे न गाव ऋतायन्तीरभि वावश्र इन्दुम् ॥२॥

यह सोम अमृततुल्य स्थान प्राप्त करने के लिए (पृथ्वी पर) दो प्रकार (स्थूल रूप में सोमरस, सूक्ष्मरूप में रश्मियों के माध्यम से अपने तेज़ को प्रकट करता है । आनन्दमय सोम के लिए समस्त भुवन विस्तृत हो जाते हैं । उस समय यज्ञ की कामना वाली स्तोताओं की वाणियाँ सोम की उसी प्रकार की स्तुति करती हैं, जैसे गौशाला में गौएँ ध्वनि करती हैं॥२॥

परि यत्कविः काव्या भरते शूरो न रथो भुवनानि विश्वा ।
देवेषु यशो मर्ताय भूषन्दक्षाय रायः पुरुभूषु नव्यः ॥३॥

जिस प्रकार युद्ध में शूरवीरों के लिए रथ, आभूषण की तरह होता है, उसी प्रकार दैवी धन मनुष्य को विभूषित करता है । जिस समय ज्ञानी सोम स्तोत्रों का श्रवण करता है, उस समय यज्ञों में धन की वृद्धि होती है॥३॥

श्रिये जातः श्रिय आ निरियाय श्रियं वयो जरितृभ्यो दधाति ।
श्रियं वसाना अमृतत्वमायन्भवन्ति सत्या समिथा मितद्रौ ॥४॥

सम्पत्ति की वृद्धि करने वाला सोम यज्ञ में धन प्रदान करने के लिए आता है। वह सोम स्तोताओं को धन-धान्य प्रदान करता है । स्तुति करने वाले शोभायमान याजक अमरत्व को प्राप्त करते हैं । नियमित

अभ्यास) करने वाले वीर के संग्राम (जीवन – संग्राम) सत्य (सार्थक) होते हैं॥४॥

इषमूर्जमभ्यर्षाश्वं गामुरु ज्योतिः कृणुहि मत्सि देवान् ।
विश्वानि हि सुषहा तानि तुभ्यं पवमान बाधसे सोम शत्रून् ॥५॥

हे विचित्र सोमदेव ! हमें अन्न तथा बल बढ़ाने वाला रस प्रदान करें। हमें महान् प्रकाश देने वाली सूर्य किरणें तथा अश्व और गौएँ दें । समस्त राक्षस आपके समक्ष सहज ही पराजित होने वाले हैं, अत: शत्रुओं पर विजय प्राप्त करके सभी देवों को हर्षित करें॥५॥

सूक्त ९५

ऋषि: प्रस्कण्व: काण्व: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

कनिक्रन्ति हरिरा सृज्यमानः सीदन्वनस्य जठरे पुनानः ।
नृभिर्यतः कृणुते निर्णिजं गा अतो मतीर्जनयत स्वधाभिः ॥१॥

मनुष्यों द्वारा दबाकर रस निकाला जाने वाला, हरिताभ सोम पवित्र होता है । काष्ठ के बर्तन में गो दुग्ध मिश्रित वह सोमरस शब्द करते हुए गिरता है । याजक इस सोम की हवियुक्त स्तुति करते हैं॥१॥

हरिः सृजानः पथ्यामृतस्येयर्ति वाचमरितेव नावम् ।
देवो देवानां गुह्यानि नामाविष्कृणोति बर्हिषि प्रवाचे ॥२॥

जिस प्रकार नाविक नौका को चलाता है, उसी प्रकार अभिषुत हरिताभ सोम यज्ञ का मार्गदर्शन करने वाले । स्तोत्रों को प्रेरित करता है । वह तेजस्वी सोम देवों के गुप्त नामों का गुणगान (गुप्त शक्तियों को प्रकट करता है॥२॥

अपामिवेदूर्मयस्तर्तुराणाः प्र मनीषा ईरते सोममच्छ ।
नमस्यन्तीरुप च यन्ति सं चा च विशन्त्युशतीरुशन्तम् ॥३॥

पानी की द्रुतगामी तरंगों के सदृश बोलने में शीघ्रता करने वाले स्तोतागण स्तुति को सोम के पास शीघ्र ही प्रेषित करते हैं। उन्नति की कामना वाली नमनशील स्तुतियाँ कामना करने वाले सोम के निकट जाती हैं और उसी में समाहित हो जाती हैं॥३॥

तं मर्मृजानं महिषं न सानावंशुं दुहन्त्युक्षणं गिरिष्ठाम् ।
तं वावशानं मतयः सचन्ते त्रितो बिभर्ति वरुणं समुद्रे ॥४॥

शोधित करने वाले याजक पर्वत में उत्पन्न हुए सोम से भैंस को दुहने के समान रस निकालते हैं। तीनों लोकों में व्याप्त शत्रुनाशक इस सोम को अन्तरिक्ष धारण करता है, ऐसे सोम की स्तुति की जाती हैं॥४॥

इष्यन्वाचमुपवक्तेव होतुः पुनान इन्दो वि ष्या मनीषाम् ।
इन्द्रश्च यत्क्षयथः सौभगाय सुवीर्यस्य पतयः स्याम ॥५॥

हे शोधित सोमदेव ! स्तोताओं को प्रेरित करने वाले याज्ञिकों के समान आप हमारी बुद्धि को यज्ञ के निमित्त प्रेरित करें । जब इन्द्रदेव के साथ आप रहते हैं, तब हम श्रेष्ठ पराक्रमी होने का सौभाग्य प्राप्त करते हैं॥५॥

सूक्त ९६

ऋषि: दैवोदासि: प्रतर्दन: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

प्र सेनानीः शूरो अग्रे रथानां गव्यन्नेति हर्षते अस्य सेना ।
भद्रान्कृण्वन्निन्द्रहवान्त्सखिभ्य आ सोमो वस्त्रा रभसानि दत्ते ॥१॥

सेना के नायक (की भाँति) शूरवीर (सोम) शत्रुओं की गौओं (पोषण सामर्थ्यों) को प्राप्त करने की कामना करते हुए रथों के आगे चलते हैं। इस कार्य से इनकी सेना हर्षित होती है । यह सोम इन्द्रदेव की प्रार्थना को मित्रो और याजकों के लिए मंगलमय बनाते हुए तेजस्विता को धारण करता हैं॥१॥

समस्य हरिं हरयो मृजन्त्यश्वहयैरनिशितं नमोभिः ।
आ तिष्ठति रथमिन्द्रस्य सखा विद्वाँ एना सुमतिं यात्यच्छ ॥२॥

याजकगण हरिताभ सोमरस का शोधन करते हैं । यह सोमरस, रथ रूपी पात्र में स्तुतियों से हर्षित होकर रहता है। यह ज्ञानी सोम, मित्र

इन्द्रदेव के साथ यज्ञ के साधन रूप श्रेष्ठ स्तोताओं के पास पहुँचता है॥२॥

स नो देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरस इन्द्रपानः ।
कृण्वन्नपो वर्षयन्द्यामुतेमामुरोरा नो वरिवस्या पुनानः ॥३॥

हे दिव्य सोमदेव ! हमारे इस दैवी यज्ञ में महान् ऐश्वर्य की प्राप्ति के लिये आप इन्द्रदेव के पान करने योग्य रस प्रदान करें । आकाश की वर्षा के जल के साथ मिश्रित विशाल अन्तरिक्ष से आने वाले हे सोमदेव ! शोधित होकर आप हमें ऐश्वर्य प्रदान करें॥३॥

अजीतयेऽहतये पवस्व स्वस्तये सर्वतातये बृहते ।
तदुशन्ति विश्व इमे सखायस्तदहं वश्मि पवमान सोम ॥४॥

हे सोमदेव ! शत्रुओं को पराजित करने के लिए प्रजा को पीड़ित न होने देने के लिए, सुख की वृद्धि के लिए तथा महान् यज्ञों के लिए आप हमें शुद्ध सोमरस प्रदान करें । हे पवित्र सोमदेव ! हम तथा हमारे सभी मित्र आपसे यही कामना करते हैं॥४॥

सोमः पवते जनिता मतीनां जनिता दिवो जनिता पृथिव्याः ।
जनिताग्नेर्जनिता सूर्यस्य जनितेन्द्रस्य जनितोत विष्णोः ॥५॥

द्युलोक, पृथिवी लोक, अग्नि, सूर्य, इन्द्र विष्णु तथा श्रेष्ठ बुद्धि, को उत्पन्न करने वाला सोम शुद्ध किया जा रहा है॥५॥

ब्रह्मा देवानां पदवीः कवीनामृषिर्विप्राणां महिषो मृगाणाम् ।
श्येनो गृध्राणां स्वधितिर्वनानां सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥६॥

देवताओं, कवियों, विप्रों, पशुओं, पक्षियों एवं हिंसा करने वालों में विभिन्न रूपों से संव्याप्त दिव्य सोम संस्कारित होते हुए ध्वनि के साथ कलश में स्थित हो रहा है॥६॥

प्रावीविपद्वाच ऊर्मिं न सिन्धुर्गिरः सोमः पवमानो मनीषाः ।
अन्तः पश्यन्वृजनेमावराण्या तिष्ठति वृषभो गोषु जानन् ॥७॥

प्रवाहित नदी की लहरों द्वारा उठ रही मधुर ध्वनि की भाँति पवित्र होता हुआ सोम, मनोरम ध्वनि कर रहा है। अन्तर्दृष्टि से छिपी हुई शक्तियों को जानकर वह सोम कभी कम न होने वाली सामर्थ्य को प्राप्त करता है॥७॥

स मत्सरः पृत्सु वन्वन्नवातः सहस्ररेता अभि वाजमर्ष ।
इन्द्रायेन्दो पवमानो मनीष्यंशोरूर्मिमीरय गा इषण्यन् ॥८॥

हे आनन्दवर्द्धक सोमदेव ! आप सूर्यदेव के समान तेजस्वीं एवं हजारों बलों से युक्त होकर युद्ध में शत्रु बल पर आक्रमण करके उनका नाश करें । हे शोधित होते हुए ज्ञानी सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त स्तुतियों को प्रेरित करते हुए गाय के दूध में मिश्रित सोमरस की धाराएँ प्रवाहित करें॥८॥

परि प्रियः कलशे देववात इन्द्राय सोमो रण्यो मदाय ।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुर्वाजी न सप्तिः समना जिगाति ॥९॥

देवों का प्रिय रमणीय सोम, इन्द्र को हर्षित करने के लिए कलश में स्थापित होता है । सैंकड़ों बलों से युक्त, हजारों धाराओं से स्रावित होने वाला यह सोम कलश में उसी प्रकार जाता है, जैसे बलवान् अश्व युद्ध में जाते हैं॥९॥

स पूर्व्यो वसुविज्जायमानो मृजानो अप्सु दुदुहानो अद्रौ ।
अभिशस्तिपा भुवनस्य राजा विदद्गातुं ब्रह्मणे पूयमानः ॥१०॥

पत्थरों से कूटकर निकाला गया, जल मिश्रित , समस्त भुवनों का राजा , शोधित सोमरस, आदिकाल से याजकों द्वारा यज्ञ में लाया जाता रहा है । वह शत्रुओं से रक्षा प्रदान करने वाला ऐश्वर्ययुक्त सोम यज्ञ के लिए (याजकों का मार्ग प्रशस्त करता है॥१०॥

त्वया हि नः पितरः सोम पूर्वे कर्माणि चक्रुः पवमान धीराः ।
वन्वन्नवातः परिधीँरपोर्णु वीरेभिरश्वैर्मघवा भवा नः ॥११॥

हे शोधित सोमदेव ! बुद्धिपूर्वक कार्य करने वाले हमारे पूर्वज अनादिकाल से आपकी सहायता से यज्ञीय कर्म करते रहे हैं। आप शत्रुओं का नाश करते हुए अपराजित होकर, उन्हें दूर करें एवं हमें वीरों तथा घोड़ों से युक्त धन प्रदान करें॥११॥

यथापवथा मनवे वयोधा अमित्रहा वरिवोविद्धविष्मान् ।
एवा पवस्व द्रविणं दधान इन्द्रे सं तिष्ठ जनयायुधानि ॥१२॥

हे सोमदेव ! जिस प्रकार पूर्वकाल में आप मनस्वी याजकों को शत्रु विनाशक ऐश्वर्य तथा हविष्यान्न युक्त धन प्रदान करते थे, उसी प्रकार हमें भी धन प्रदान करें तथा इन्द्रदेव के निमित्त आयुधों का निर्माण करें॥१२॥

पवस्व सोम मधुमाँ ऋतावापो वसानो अधि सानो अव्ये ।
अव द्रोणानि घृतवान्ति सीद मदिन्तमो मत्सर इन्द्रपानः ॥१३॥

हे मधुर सोमदेव ! आप जल में मिलकर , ऊँचे स्थान पर स्थित होकर एवं छलनी से छुनकर पवित्र होते हैं। तत्पश्चात् इन्द्रदेव के पीने योग्य

यह हर्षप्रदायक सोम जलयुक्त बर्तन में पहुँचकर स्थित रहता है॥१३॥

वृष्टिं दिवः शतधारः पवस्व सहस्रसा वाजयुर्देववीतौ ।
सं सिन्धुभिः कलशे वावशानः समुस्रियाभिः प्रतिरन्न आयुः ॥१४॥

हे सोमदेव ! आप द्युलोक से सैकड़ों धाराओं में वर्षा करें । सहस्रों प्रकार का धन तथा अन्न देने की कामना से जल में मिश्रित होकर आप यज्ञस्थल के कलश में स्थापित हों। गाय के दूध में मिश्रित होकर आप यज्ञ में प्रवेश करें तथा हमें दीर्घायु बनायें॥१४॥

एष स्य सोमो मतिभिः पुनानोऽत्यो न वाजी तरतीदरातीः ।
पयो न दुग्धमदितेरिषिरमुर्विव गातुः सुयमो न वोळ्हा ॥१५॥

मनस्वी याजकों से शोधित यह सोम चपल घोड़े की भाँति शत्रुओं को लाँघकर जाता है । गोदुग्ध के समान यह सोम पवित्र है । लक्ष्य तक पहुँचाने वाला घोड़ा जैसे सुखदायी होता है, वैसे ही यह सोम सुखदायी है॥१५॥

स्वायुधः सोतृभिः पूयमानोऽभ्यर्ष गुह्यं चारु नाम ।
अभि वाजं सप्तिरिव श्रवस्याभि वायुमभि गा देव सोम ॥१६॥

याज्ञिकों द्वारा शोधित, श्रेष्ठ यज्ञीय साधनों से युक्त सोम, सुन्दर रसमय स्वरूप प्राप्त करता है। अश्व के समान सर्वत्र गमनशील हे सोमदेव ! आप हमें अन्न प्रदान करें, गाय का दूध प्रदान करें तथा प्राणवान् बनाएँ॥१६॥

शिशुं जज्ञानं हर्यतं मृजन्ति शुम्भन्ति वह्निं मरुतो गणेन ।
कविर्गीर्भिः काव्येना कविः सन्त्सोमः पवित्रमत्येति रेभन् ॥१७॥

नवजात शिशु के सदृश सभी को प्रमुदित करने वाले सोम को मरुद्गण शुद्ध करते हैं । सप्त गुणों से युक्त यह मेधावर्द्धक सोम स्तुतियों के साथ शब्द करता हुआ शुद्ध हो जाता है॥१७॥

ऋषिमना य ऋषिकृत्स्वर्षाः सहस्रणीथः पदवीः कवीनाम् ।
तृतीयं धाम महिषः सिषासन्त्सोमो विराजमनु राजति ष्टुप् ॥१८॥

ऋषियों जैसे संस्कार वाला, ऋषित्व प्रदान करने वाला, स्तुत्य, ज्ञानदायी सोम स्वयं महान् है । यह तृतीय धाम स्वर्गलोक में रहने वाले तेजस्वी इन्द्रदेव को और भी अधिक तेजस्- सम्पन्न बनाता है॥१८॥

चमूषच्छ्येनः शकुनो विभृत्वा गोविन्दुर्द्रप्स आयुधानि बिभ्रत् ।
अपामूर्मिं सचमानः समुद्रं तुरीयं धाम महिषो विवक्ति ॥१९॥

यह प्रशंसनीय, सभी सामर्थ्यों से युक्त, शक्तिमान् , समुद्र की तरंगों के समान गतिमान् तथा गौ दुग्ध में मिलाया जाने वाला प्रवाही सोम चतुर्थ (महः) लोक में स्थापित होता है॥१९॥

मर्यो न शुभ्रस्तन्वं मृजानोऽत्यो न सृत्वा सनये धनानाम् ।
वृषेव यूथा परि कोशमर्षन्कनिक्रदच्चम्वोरा विवेश ॥२०॥

अलंकृत मनुष्य के समान, शरीर को स्वच्छ बनाने के समान, द्रुतगामी अश्व के समान, धन प्राप्ति के इच्छुक के समान, शब्द करते तथा समूह में जाते वृषभ के समान सोमरस कलश में स्थापित होता है॥२०॥

पवस्वेन्दो पवमानो महोभिः कनिक्रदत्परि वाराण्यर्ष ।
क्रीळञ्चम्वोरा विश पूयमान इन्द्रं ते रसो मदिरो ममत्तु ॥२१॥

महान् याजकों के द्वारा शोधित हे सोमदेव ! ध्वनि करते हुए आप कलश में स्थापित हों । पवित्र होकर क्रीड़ा करते हुए यज्ञ पात्र में प्रवेश करें । आपका आनन्ददायी रस इन्द्रदेव को आनन्दित करे॥२१॥

प्रास्य धारा बृहतीरसृग्रन्नक्तो गोभिः कलशाँ आ विवेश ।
साम कृण्वन्त्सामन्यो विपश्चित्क्रन्दन्नेत्यभि सख्युर्न जामिम् ॥२२॥

इस सोमरस की बृहद् धाराएँ विशेष रीति से प्रवाहित होते हुए गाय के दूध में मिश्रित होकर कलशों में प्रवेश करती हैं। सामगान करने वाले ज्ञानी याजक मित्रवत् स्नेह भाव से प्रवाहित सोम की स्तुतियाँ करते हैं॥२२॥

अपघ्नन्नेषि पवमान शत्रून्प्रियां न जारो अभिगीत इन्दुः ।
सीदन्वनेषु शकुनो न पत्वा सोमः पुनानः कलशेषु सत्ता ॥२३॥

जिस प्रकार पक्षी अपने घोंसलों में जाते हैं, जिस प्रकार पुरुष अपनी प्रिय पत्नी के पास जाता है, उसी प्रकार पवित्र, शोधित हुआ, शत्रुओं का संहार करके (विकारों से मुक्त होकर) जल के साथ मिलकर परिष्कृत हुआ सोमरस कलशों में स्थापित होता है॥२३॥

आ ते रुचः पवमानस्य सोम योषेव यन्ति सुदुघाः सुधाराः ।
हरिरानीतः पुरुवारो अप्स्वचिक्रदत्कलशे देवयूनाम् ॥२४॥

हे पवमान सोमदेव ! आपकी किरणें श्रेष्ठ नारियों एवं उत्तम दूध की धाराओं के समान प्रकट होती हैं। यह हरि (हरे रंग का अथवा विकारनाशक) सोम बहुत बार (बार-बार) जल में, देवों के कलश (यज्ञ कलश या विश्वघट) में शब्द करता हुआ प्रविष्ट होता है॥२४॥

सूक्त ९७

ऋषि: १-३ मैत्रावरुणिर्वसिष्ठ, ४-६ वासिष्ठ इन्द्र प्रमति: , ७-९ वसिष्ठो वृषगण:, १०-१२ वसिष्ठो मन्यु; १३-१५ वासिष्ठ उपमन्यु:, १६-१८ वसिष्ठो व्याघ्रपाद, १९-२१ वासिष्ठ: शक्ति:, २२-२४ वासिष्ठ: कर्णश्रुद, २५-२७ वासिष्ठो मृलीक, २८-३० वासिष्ठो वसुक्र, ३१-४४ पराशर: शाक्त:, ४५-५८ कृत्स अंगिरस: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – त्रिष्टुप

अस्य प्रेषा हेमना पूयमानो देवो देवेभिः समपृक्त रसम् ।
सुतः पवित्रं पर्येति रेभन्मितेव सद्म पशुमान्ति होता ॥१॥

जिस प्रकार (गोपालको पशुओं के घर में जाते हैं, उसी प्रकार) इस (यज्ञ) का प्रेरक देव (दिव्य) सोम अभिषुत होकर शोधक छने में से प्रवाहित होता है, स्वर्ण (अथवा स्वर्णिम किरणों) से शोधित होता हुआ यह देवों को अपने रस से संपृक्त (तृप्त) कर देता है॥१॥

भद्रा वस्त्रा समन्या वसानो महान्कविर्निवचनानि शंसन् ।
आ वच्यस्व चम्वोः पूयमानो विचक्षणो जागृविर्देववीतौ ॥२॥

वीरोचित शौर्य एवं शोभा-सम्पन्न- महान् ज्ञानी, स्तुत्य, चैतन्य, विशिष्ट द्रष्टा हे सोमदेव ! आप पवित्र होकर यज्ञशाला के पात्रों में प्रविष्ट हों॥२॥

समु प्रियो मृज्यते सानो अव्ये यशस्तरो यशसां क्षैतो अस्मे ।
अभि स्वर धन्वा पूयमानो यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥३॥

यशस्वियों में श्रेष्ठ भूमि में प्रकट, तृप्तिदायक सोम छन्ने द्वारा शुद्ध होता है । हे पवित्र होने वाले सोमदेव ! आप शब्द करते हुए कल्याणकारी साधनों से हमारी रक्षा करें॥३॥

प्र गायताभ्यर्चाम देवान्त्सोमं हिनोत महते धनाय ।
स्वादुः पवाते अति वारमव्यमा सीदाति कलशं देवयुर्नः ॥४॥

मधुर, तेजस्वी सोमरस छन्ने से छनकर पवित्रता को धारण करते हुए पात्र में स्थिर रहे । वैभव प्राप्ति की कामना से हम स्तुत्य सोमरस को प्रेरित करते हुए देवताओं की अर्चना करें॥४॥

इन्दुर्देवानामुप सख्यमायन्त्सहस्रधारः पवते मदाय ।
नृभिः स्तवानो अनु धाम पूर्वमगन्निन्द्रं महते सौभगाय ॥५॥

देवों की मित्रता की कामना से यह सोम आनन्द प्रदान करने के लिए हजारों धाराओं से प्रवाहित होता है । याजकों द्वारा स्तुत्य सोम सनातन स्वरूप को प्राप्त करता हुआ इन्द्र के पास पहुँचकर सौभाग्यशाली बनता है॥५॥

स्तोत्रे राये हरिरर्षा पुनान इन्द्रं मदो गच्छतु ते भराय ।
देवैर्याहि सरथं राधो अच्छा यूयं पात स्वस्तिभिः सदा नः ॥६॥

हे हरिताभ सोमदेव ! आप परिष्कृत होकर स्तोत्रों को स्वीकार करते हुए हमें ऐश्वर्य प्रदान करें। आपका आनन्द प्रदायक रस युद्ध में इन्द्रदेव को प्राप्त हो । देवों के साथ एक ही रथ पर आरूढ़ होकर श्रेष्ठ साधनों से आप हमारी रक्षा करते हुए हमें धन प्रदान करें॥६॥

प्र काव्यमुशनेव ब्रुवाणो देवो देवानां जनिमा विवक्ति ।
महिव्रतः शुचिबन्धुः पावकः पदा वराहो अभ्येति रेभन् ॥७॥

अषि उशना के सदृश स्तोत्रों का पाठ करने वाले ऋत्विज् देवताओं के जन्म वृत्तान्तों का वर्णन करते हैं। महान् वती, तेजस्वी और पवित्र करने वाला श्रेष्ठ सोमरस, शब्द करते हुए पात्र में प्रवाहित होता है॥७॥

प्र हंसासस्तृपलं मन्युमच्छामादस्तं वृषगणा अयासुः ।

आङ्गूष्यं पवमानं सखायो दुर्मर्षं साकं प्र वदन्ति वाणम् ॥८॥

हंसों के समान (विवेक-सवृत्तियुक्त) बलवान् (धीर-वीर पुरुष त्रस्त (शत्रुओं या दुःखों से पीड़ित होने पर इस शीघ्र कार्य करने वाले, मन्युयुक्त, शत्रुनाशक सोम के स्थान (यज्ञ स्थल या आवास) पर पहुँचते हैं। सर्वसुलभ, अजेय, पवमान, साथ रहने वाले इस मित्र (को प्रसन्न करने के लिए वाद्य बजाते हैं॥८॥

स रंहत उरुगायस्य जूतिं वृथा क्रीळन्तं मिमते न गावः ।
परीणसं कृणुते तिग्मशृङ्गो दिवा हरिर्ददृशे नक्तमृज्रः ॥९॥

क्रीड़ा करते हुए सहजरूप से ही वह सोम प्रशंसनीय गति को प्राप्त करता है । जिसे अन्यों के द्वारा मापा नहीं जा सकता, उसका तेजस्वी प्रकाश, दिन में हरित(हरणशील किरणों वाला) तथा सौम्य आभायुक्त होता है॥९॥

इन्दुर्वाजी पवते गोन्योघा इन्द्रे सोमः सह इन्वन्मदाय ।
हन्ति रक्षो बाधते पर्यरातीर्वरिवः कृण्वन्वृजनस्य राजा ॥१०॥

इन्द्रदेव की शक्ति बढ़ाने वाला, होताओं को धन देने वाला , शक्ति का स्वामी सोम हर्ष बढ़ाने के लिए बर्तन में छाना जाता है । वह सोमरस राक्षसों को नष्ट करता हैं और दुष्टों को मार भगाता है॥१०॥

अध धारया मध्वा पृचानस्तिरो रोम पवते अद्रिदुग्धः ।
इन्दुरिन्द्रस्य सख्यं जुषाणो देवो देवस्य मत्सरो मदाय ॥११॥

पत्थरों की सहायता से निकाला गया, तेजस्वी, सुखदायी सोम अपनी मधुर धार से पवित्रता को प्राप्त हो रहा है। इन्द्रदेव का सान्निध्य पाने की इच्छा वाला वह सोम उनके उत्साह को बढ़ाते हुए सभी को तृप्त कर रहा है॥११॥

अभि प्रियाणि पवते पुनानो देवो देवान्त्स्वेन रसेन पृञ्चन् ।
इन्दुर्धर्माण्यृतुथा वसानो दश क्षिपो अव्यत सानो अव्ये ॥१२॥

ऋतुओं को धारण करने वाला व्रतशील तेजस्वी सोम अपने मधुर रस से देवताओं को तृप्त करता है। अँगुलियों द्वारा पवित्र होते हुए पात्र में स्थिर हो रहा है॥१२॥

वृषा शोणो अभिकनिक्रदद्गा नदयन्नेति पृथिवीमुत द्याम् ।
इन्द्रस्येव वग्नुरा शृण्व आजौ प्रचेतयन्नर्षति वाचमेमाम् ॥१३॥

निरन्तर गतिशील सुखों की वर्षा करने वाले हे दिव्य सोमदेव ! आप द्युलोक से पृथिवी तक किरणों के बीच मेघ जैसी गर्जना-प्रतिध्वनियाँ उत्पन्न करते हुए संव्याप्त हैं। हम इन्द्रदेव की तरह आपके निर्देशों

को सुनते हैं। आप भी अपनी उपस्थिति का बोध कराते हुए हमारी स्तुतियों को स्वीकार करते हैं॥१३॥

रसाय्यः पयसा पिन्वमान ईरयन्नेषि मधुमन्तमंशुम् ।
पवमानः संतनिमेषि कृण्वन्निन्द्राय सोम परिषिच्यमानः ॥१४॥

अपने आप में मधुर, गाय के दूध में मिश्रित होने के बाद अधिक सुस्वाद हुए हे सोमदेव ! पानी में शोधित होकर आप (निरन्तर) धार रूप में इन्द्रदेव को प्राप्त हों॥१४॥

एवा पवस्व मदिरो मदायोदग्राभस्य नमयन्वधस्नैः ।
परि वर्णं भरमाणो रुशन्तं गव्युर्नो अर्ष परि सोम सिक्तः ॥१५॥

हे उत्साहवर्द्धक सोमदेव ! आप छाये हुए मेघों को जलवृष्टि के लिए प्रेरित करते हुए आनन्ददायी बने तथा पानी के साथ श्वेत वर्ण धारण करके गौ दुग्ध के रूप में हमारे चारों ओर स्रवित हों॥१५॥

जुष्ट्वी न इन्दो सुपथा सुगान्युरौ पवस्व वरिवांसि कृण्वन् ।
घनेव विष्वग्दुरितानि विघ्नन्नधि ष्णुना धन्व सानो अव्ये ॥१६॥

हे सोमदेव ! स्तुतियों से हर्षित होकर, श्रेष्ठ मार्ग से, सुगमता पूर्वक धन प्रदान करते हुए आप रस रूप में कलश में प्रतिष्ठित हों तथा

सभी राक्षसों को आयुधों से नष्ट करके अनश्वर छलनी में उच्च भाग से धारा रूप में प्रवाहित हों॥१६॥

वृष्टिं नो अर्ष दिव्यां जिगत्नुमिळावतीं शंगयीं जीरदानुम् ।
स्तुकेव वीता धन्वा विचिन्वन्बन्धूँरिमाँ अवराँ इन्दो वायून् ॥१७॥

हे सोमदेव ! आप हमारे लिए सुखदायक, जीवनप्रद, द्युलोक से आने वाली अन्नयुक्त वृष्टि करें । पृथ्वी पर चलने वाली वायु से सन्तति के समान सम्बन्ध बनाते हुए हम उसे (वृष्टि को) प्राप्त करें॥१७॥

ग्रन्थिं न वि ष्य ग्रथितं पुनान ऋजुं च गातुं वृजिनं च सोम ।
अत्यो न क्रदो हरिरा सृजानो मर्यो देव धन्व पस्त्यावान् ॥१८॥

जिस प्रकार ग्रन्थि को खोलते हैं, उसी प्रकार है सोमदेव ! हमें आप पापों से मुक्ति दिलाएँ तथा हमारे मार्ग को सुगम बनाते हुए हमें बलशाली बनाएँ । हे हरिताभ दिव्य सोमदेव ! शोधित होते समय अश्व के समान ध्वनि करते हुए, शत्रुओं का संहार करते हुए आप अपने निवास स्थल कलश में स्थापित हों॥१८॥

जुष्टो मदाय देवतात इन्दो परि ष्णुना धन्व सानो अव्ये ।
सहस्रधारः सुरभिरदब्धः परि स्रव वाजसातौ नृषह्ये ॥१९॥

हे सोमदेव ! अनश्वर (या उनकी) छलनी पर धारा रूप से प्रवाहित होकर आप आनन्दवर्द्धक स्वरूप प्राप्त करते हुए शोधित हों, हिंसारहित होते हुए सुगन्ध युक्त हजारों धाराओं में प्रवाहित हों तथा संग्राम में जाने वाले वीरों के लिए आप अन्न प्रदान करने वाला रस स्रवित करें॥१९॥

अरश्मानो येऽरथा अयुक्ता अत्यासो न ससृजानास आजौ ।
एते शुक्रासो धन्वन्ति सोमा देवासस्ताँ उप याता पिबध्यै ॥२०॥

जिस प्रकार बन्धन एवं रथादि से मुक्त घोड़ा युद्ध में द्रुतगति से लक्ष्य तक पहुँचता है, उसी प्रकार परिष्कृत सोमरस कलशों में शीघ्रता से गतिमान होता है । देवगण उस आनन्ददायी सोमरस का पान करने के लिए यज्ञस्थल पर जाते हैं॥२०॥

एवा न इन्दो अभि देववीतिं परि स्रव नभो अर्णश्चमूषु ।
सोमो अस्मभ्यं काम्यं बृहन्तं रयिं ददातु वीरवन्तमुग्रम् ॥२१॥

हे सोमदेव ! आप द्युलोक के जल से हमारे यज्ञ के कलशों को भर दें तथा वीर सन्तति युक्त धन प्रदान करने वाला सोमरस हमें प्रदान करें॥२१॥

तक्षद्यदी मनसो वेनतो वाग्ज्येष्ठस्य वा धर्मणि क्षोरनीके ।
आदीमायन्वरमा वावशाना जुष्टं पतिं कलशे गाव इन्दुम् ॥२२॥

जब बोलने वाले (मंत्र वक्ता) तेजस्वी पुरुष के अन्त:करण से वाणी (स्तुति) निकलती हैं, मुख से शब्द उच्चरित होते हैं, तभी ज्येष्ठ तेजस्वी सोम लाया जाता है । उसी समय कलश में स्थित श्रेष्ठ, सेवनीय, पालक सोम की इच्छा करने वाले (देवों-याजकों) को गौएँ (इन्द्रियाँ-पोषण सामर्थ्य) प्राप्त होती हैं॥२२॥

प्र दानुदो दिव्यो दानुपिन्व ऋतमृताय पवते सुमेधाः ।
धर्मा भुवद्वृजन्यस्य राजा प्र रश्मिभिर्दशभिर्भारि भूम ॥२३॥

दाताओं (श्रेष्ठ कार्य में धन लगाने वालों) को धन प्रदान करने वाला, द्युलोक से उत्पन्न हुआ, उत्तम ज्ञान से युक्त सोम इन्द्रदेव के निमित्त ज्ञानवर्द्धक रस प्रदान करता है । उत्तम बलों के धारणकर्ता राजा सौम को दस रश्मियों (किरणों या अँगुलियों) द्वारा विशेष विधि से धारण किया जाता है॥२३॥

पवित्रेभिः पवमानो नृचक्षा राजा देवानामुत मर्त्यानाम् ।
द्विता भुवद्रयिपती रयीणामृतं भरत्सुभृतं चार्विन्दुः ॥२४॥

दिव्य द्रष्टा , शोधित होने वाला यह पवित्र सोम, देवगणों तथा मनुष्यों का राजा तथा समस्त धनों की स्वामी हैं। यह उत्तम तथा सुन्दर सोम, विशेष रीति से जल को धारण करते हुए देवगणों तथा मनुष्यों में विद्यमान रहता है॥२४॥

अर्वाँइव श्रवसे सातिमच्छेन्द्रस्य वायोरभि वीतिमर्ष ।
स नः सहस्रा बृहतीरिषो दा भवा सोम द्रविणोवित्पुनानः ॥२५॥

हे सोमदेव ! जिस प्रकार अश्व युद्ध क्षेत्र में जाते हैं, उसी प्रकार आप इन्द्रदेव एवं वायुदेव के पान हेतु तथा हमें अन्न और धन का लाभ देने के लिए गतिशील हों । हे सोमदेव ! आप शोधित होकर हमें सभी प्रकार का ऐश्वर्य प्रदान करें॥२५॥

देवाव्यो नः परिषिच्यमानाः क्षयं सुवीरं धन्वन्तु सोमाः ।
आयज्यवः सुमतिं विश्ववारा होतारो न दिवियजो मन्द्रतमाः ॥२६॥

जल के साथ मिश्रित होकर पात्र में रहने वाला, देवगणों को तृप्त करने वाला सोमरस हमें उत्तम सन्तति युक्त आवास प्रदान करे । संयुक्त रूप से यज्ञ करने वाले, सबके लिए स्वीकार्य हवन करने वाले, द्युलोकवासी देवगणों के निमित्त आहुति देने वाले के समान यह सोमरस अत्यन्त आनन्द प्रदान करने वाला है॥२६॥

एवा देव देवताते पवस्व महे सोम प्सरसे देवपानः ।
महश्चिद्धि ष्मसि हिताः समर्ये कृधि सुष्ठाने रोदसी पुनानः ॥२७॥

हे सोमदेव !आप इस दैवी यज्ञ में देवों के पान योग्य सोमरस प्रदान करें। सोमरस की प्रेरणा से वे देवगण संग्राम में दुर्दान्त शत्रुओं को भी हरा सकें। हे सोमदेव ! परिष्कृत होकर आप भूलोक तथा पृथ्वी लोक को भली-भाँति रहने के योग्य बनायें॥२७॥

अश्वो न क्रदो वृषभिर्युजानः सिंहो न भीमो मनसो जवीयान् ।
अर्वाचीनैः पथिभिर्ये रजिष्ठा आ पवस्व सौमनसं न इन्दो ॥२८॥

याजकों द्वारा एकत्रित किया गया सोमरस सिंह के समान भयंकर, मन के समान द्रुतगामी तथा अश्व के समान ध्वनि करने वाला है । हे सोमदेव ! सुगम तथा प्रत्यक्ष दिखाई पड़ने वाले मार्गों से सद्भावपूर्वक आप हमें रस प्रदान करें॥२८॥

शतं धारा देवजाता असृग्रन्त्सहस्रमेनाः कवयो मृजन्ति ।
इन्दो सनित्रं दिव आ पवस्व पुरएतासि महतो धनस्य ॥२९॥

हे सोमदेव ! देवगणों के निमित्त उत्पन्न हुई आपकी सौ धाराएँ प्रवाहित हुईं, जिन्हें हजारों प्रकार से ज्ञानीजन पवित्र बनाते हैं। हे

सोमदेव ! आप महान् ऐश्वर्य के दाता बनकर हमें द्युलोक को धन प्रदान करें॥२९॥

दिवो न सर्गा अससृग्रमह्नां राजा न मित्रं प्र मिनाति धीरः ।
पितुर्न पुत्रः क्रतुभिर्यतान आ पवस्व विशे अस्या अजीतिम् ॥३०॥

जिस प्रकार दिन में सूर्य की किरणें प्रसरित होती हैं, उसी प्रकार सोमरस की धाराएँ प्रवाहित होती हैं। बुद्धिवर्द्धक यह राजा सोम मित्र की भाँति किसी के लिए भी दुःखदायी नहीं हैं, अपने कार्य कौशल से उन्नति करने वाले पुत्र के समान सम्पूर्ण प्रजा को उन्नतिशील बनाने वाला सोमरस हमें प्राप्त हो॥३०॥

प्र ते धारा मधुमतीरसृग्रन्वारान्यत्पूतो अत्येष्यव्यान् ।
पवमान पवसे धाम गोनां जज्ञानः सूर्यमपिन्वो अर्कैः ॥३१॥

हे सोमदेव ! जब आप अनश्वर छन्ने से पार निकलते हैं, तब आपकी मधुर धाराएँ प्रकट होती हैं। गौओं के धाम (किरणों के क्षेत्र) में प्रकट एवं शुद्ध होकर आप सूर्य को तेजस्विता से पूर्ण कर देते हैं॥३१॥

कनिक्रददनु पन्थामृतस्य शुक्रो वि भास्यमृतस्य धाम ।
स इन्द्राय पवसे मत्सरवान्हिन्वानो वाचं मतिभिः कवीनाम् ॥३२॥

वह अमृत तुल्य सोम यज्ञ मार्ग से गमन करता हुआ, ध्वनि करता हुआ यज्ञस्थल को तेजस्वी बनाकर प्रकाशित करता है । ज्ञानीजनों की स्तुतियों को स्वीकार कर वह आनन्दवर्द्धक सोम घोषणापूर्वक इन्द्रदेव को रस प्रदान करता है॥३२॥

दिव्यः सुपर्णोऽव चक्षि सोम पिन्वन्धाराः कर्मणा देववीतौ ।
एन्दो विश कलशं सोमधानं क्रन्दन्निहि सूर्यस्योप रश्मिम् ॥३३॥

हे सोमदेव ! आप द्युलोक में उत्पन्न होने वाले श्रेष्ठ पत्तों से युक्त हैं । यज्ञीय कर्म के साथ इस दैवी यज्ञ में चारों तरफ देखते हुए, सूर्य किरणों को आत्मसात् करते हुए घोषणापूर्वक आप सोम कलश में रस की धाराओं के रूप में प्रवेश करें॥३३॥

तिस्रो वाच ईरयति प्र वह्निर्ऋतस्य धीतिं ब्रह्मणो मनीषाम् ।
गावो यन्ति गोपतिं पृच्छमानाः सोमं यन्ति मतयो वावशानाः ॥३४॥

याजकगण सत्य को धारण करने वाले, तीनों वेदों के मंत्रों से दिव्य, श्रेष्ठ सोम की स्तुति करते हैं । बैल के पास जाने वाली गौओं की तरह उत्तम सुख की इच्छा करने वाले स्तोता, सोम के पास पहुँचते हैं॥३४॥

सोमं गावो धेनवो वावशानाः सोमं विप्रा मतिभिः पृच्छमानाः ।

सोमः सुतः पूयते अज्यमानः सोमे अर्कास्त्रिष्टुभः सं नवन्ते ॥३५॥

निकालने के बाद शोधित हुआ सोम पात्र में गिरता है । ज्ञानीजन अपनी बुद्धियों द्वारा त्रिष्टुप् छन्दके मंत्र से उसकी स्तुति करते हैं। दुधारू गौएँ (परमार्थ निष्ठ बुद्धियाँ) सोम की इच्छा करती हैं॥३५॥

एवा नः सोम परिषिच्यमान आ पवस्व पूयमानः स्वस्ति ।
इन्द्रमा विश बृहता रवेण वर्धया वाचं जनया पुरंधिम् ॥३६॥

हे सोमदेव ! जल मिश्रित तथा शुद्ध होते हुए आप हमारे कल्याण के लिए ध्वनि करते हुए शोधित हों तथा आनन्दपूर्वक इन्द्रदेव को तृप्त करें । हमारी प्रार्थना को स्वीकार करते हुए आप हमें सद्‌बुद्धि प्रदान करें॥३६॥

आ जागृविर्विप्र ऋता मतीनां सोमः पुनानो असदच्चमूषु ।
सपन्ति यं मिथुनासो निकामा अध्वर्यवो रथिरासः सुहस्ताः ॥३७॥

चैतन्य, सत्य स्तुतियों के ज्ञाता सोमदेव शुद्ध होकर पात्र में उतरते हैं । उत्तम कर्म-कुशल, देहधारी, मनोकांक्षी अध्वर्यु इसे एकत्रित करके सुरक्षित रखते हैं॥३७॥

स पुनान उप सूरे न धातोभे अप्रा रोदसी वि ष आवः ।
प्रिया चिद्यस्य प्रियसास ऊती स तू धनं कारिणे न प्र यंसत् ॥३८॥

पवित्र होने वाला, वह सोम, इन्द्रदेव को प्राप्त होता है । यह सोम आकाश और पृथ्वी को अपने तेज से पूर्ण करने वाला है; जिसकी अत्यन्त प्रिय रस युक्त धाराएँ हमारा संरक्षण करती हैं और हमें ऐश्वर्य प्रदान करती हैं॥३८॥

स वर्धिता वर्धनः पूयमानः सोमो मीढ्वाँ अभि नो ज्योतिषावीत् ।
येना नः पूर्वे पितरः पदज्ञाः स्वर्विदो अभि गा अद्रिमुष्णन् ॥३९॥

वृद्धि पाने वाला, देवत्व की वृद्धि करने वाला, इष्ट प्रदायक, शोधित सोम अपने तेज से हमारी रक्षा करे । मंत्रज्ञ, आत्मज्ञानी, पदज्ञ (विभिन्न चरणों को जानने वाले), सर्वज्ञ हमारे पूर्वज अद्रि (पर्वत या मेघों) से गौओं (खोई गौओं या किरणों) को प्राप्त कर सकें॥३९॥

अक्रान्त्समुद्रः प्रथमे विधर्मञ्जनयन्प्रजा भुवनस्य राजा ।
वृषा पवित्रे अधि सानो अव्ये बृहत्सोमो वावृधे सुवान इन्दुः ॥४०॥

जलयुक्त, समस्त भुवनों का राजा बलवर्द्धक अभिषुत सोम सर्वप्रथम प्रजाजनों का उत्साह बढ़ाकर उनकी उन्नति करते हुए सबसे महान् हो गया॥४०॥

महत्तत्सोमो महिषश्चकारापां यद्गर्भोऽवृणीत देवान् ।
अदधादिन्द्रे पवमान ओजोऽजनयत्सूर्ये ज्योतिरिन्दुः ॥४१॥

महान् शक्तिशाली दिव्य सोम द्वारा महान् कार्य सम्पादित होते हैं। वहीं जल का गर्भ धारण करने वाला) और देवताओं को पोषण देने वाला हैं । शुद्ध होकर वहीं इन्द्रदेव को सामर्थ्य प्रदान करता है और वहीं सूर्य में तेज स्थापित करता है॥४१॥

मत्सि वायुमिष्टये राधसे च मत्सि मित्रावरुणा पूयमानः ।
मत्सि शर्धो मारुतं मत्सि देवान्मत्सि द्यावापृथिवी देव सोम ॥४२॥

हे दिव्य सोमदेव ! हमें अन्न और धन की प्राप्ति कराने हेतु आप वायु को प्रमुदित करें । शोधित किये गये आप मित्र और वरुण को, मरुत् की सामर्थ्यों को, आकाश और पृथ्वी के हर्ष को बढ़ाने वाले हों॥४२॥

ऋजुः पवस्व वृजिनस्य हन्तापामीवां बाधमानो मृधश्च ।
अभिश्रीणन्पयः पयसाभि गोनामिन्द्रस्य त्वं तव वयं सखायः ॥४३॥

हे सोमदेव ! आप दुष्ट नाशक, रोग निवारक तथा शत्रुनाशक रस सुगमता से प्रदान करें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के मित्र हैं और

हम आपके मित्र हैं, अत: गौ दुग्ध मिश्रित सोमरस हमें भी प्रदान करें॥४३॥

मध्वः सूदं पवस्व वस्व उत्सं वीरं च न आ पवस्वा भगं च ।
स्वदस्वेन्द्राय पवमान इन्दो रयिं च न आ पवस्वा समुद्रात् ॥४४॥

हे सोमदेव ! आप मधुरता से युक्त अन्न तथा धन प्रदान करने वाला रस हमें प्रदान करें । आप सन्तानरूपी धन भी प्रदान करें । हे शोधित सोमदेव ! इन्द्रदेव के लिए रस देते हुए आप हमें भी अन्तरिक्ष से धन प्रदान करने वाला रस दें॥४४॥

सोमः सुतो धारयात्यो न हित्वा सिन्धुर्न निम्नमभि वाज्यक्षाः ।
आ योनिं वन्यमसदत्पुनानः समिन्दुर्गोभिरसरत्समद्भिः ॥४५॥

निकाला गया सोमरस अश्व के समान तीव्रगति से धारा रूप में प्रवाहित होता है । वह बलशाली सोम नीचे रखे कलश में नदी के समान गमन करता है । शोधित सोम वनों की योनि (वनस्पति आदि की उर्वरता में अथवा काष्ठ पात्र) में प्रतिष्ठित होता है । वह सोम गोदुग्ध में मिश्रित होकर जल के साथ शोधित किया जाता है॥४५॥

एष स्य ते पवत इन्द्र सोमश्चमूषु धीर उशते तवस्वान् ।
स्वर्चक्षा रथिरः सत्यशुष्मः कामो न यो देवयतामसर्जि ॥४६॥

हे इन्द्रदेव ! सर्वद्रष्टा, उत्तम रथीं, श्रेष्ठ बलों से युक्त, धैर्यवान् तथा द्रुतगामी सोमरस याजकों की इच्छा के समान (आपकी) इच्छा पूर्ति के लिए कामना करते हुए कलश में प्रतिष्ठित होता है॥४६॥

एष प्रत्नेन वयसा पुनानस्तिरो वर्पांसि दुहितुर्दधानः ।
वसानः शर्म त्रिवरूथमप्सु होतेव याति समनेषु रेभन् ॥४७॥

यह सोमरस अनादि काल से हविष्यान्न के साथ शोधित किया जाता रहा है। पृथ्वी के रूपों को दूर करता हुआ (देशभेद-रूप भेद मिटाता हुआ सम्पूर्ण पृथ्वी को) शीत, उष्ण और वर्षा इन तीनों कालों में समान रूप से प्राप्त होने वाला यह सोमरस ध्वनि करता हुआ यज्ञ में स्थापित होता है॥४७॥

नू नस्त्वं रथिरो देव सोम परि स्रव चम्वोः पूयमानः ।
अप्सु स्वादिष्ठो मधुमाँ ऋतावा देवो न यः सविता सत्यमन्मा ॥४८॥

हे सोमदेव ! स्वाद युक्त, मधुर, ज्ञानवान् तथा सर्वप्रेरक बनकर रथ में आरूढ़ होकर आप जल मिश्रित रस के रूप में शोधित होते हुए यज्ञपात्र में स्थापित हों । आप देवों की भाँति सत्य रूप एवं मननीय स्तुतियों को श्रवण करते हुए अपना रस प्रदान करें॥४८॥

अभि वायुं वीत्यर्षा गृणानोऽभि मित्रावरुणा पूयमानः ।
अभी नरं धीजवनं रथेष्ठामभीन्द्रं वृषणं वज्रबाहुम् ॥४९॥

हे सोम ! आप स्तुति के बाद वायुदेव के पान हेतु प्रस्तुत हों । पवित्र होकर मित्र और वरुण को प्राप्त हों । नेतृत्ववान्, बुद्धिप्रदाता, रथ में सवार अश्विनीकुमारों की ओर पहुँचें और वज्रतुल्य भुजाओं वाले इन्द्र के पास जाएँ॥४९॥

अभि वस्त्रा सुवसनान्यर्षाभि धेनूः सुदुघाः पूयमानः ।
अभि चन्द्रा भर्तवे नो हिरण्याभ्यश्वान्रथिनो देव सोम ॥५०॥

हे दिव्य सोमदेव ! आप हमें उत्तम वस्त्र, तेजस्वी स्वर्ण आदि ऐश्वर्य प्रदान करें । रथों के लिए आप हमें अश्व दें। शुद्ध हुए आप हमें नव प्रसूता दुधारू गौएँ प्रदान करें॥५०॥

अभी नो अर्ष दिव्या वसून्यभि विश्वा पार्थिवा पूयमानः ।
अभि येन द्रविणमश्नवामाभ्यार्षेयं जमदग्निवन्नः ॥५१॥

हे सोमदेव ! शुद्ध हुए आप हमें दिव्य धनों एवं पार्थिव ऐश्वर्यों से युक्त करें । जमदग्नि आदि ऋषियों के समान सम्पत्ति (सामर्थ्य) प्रदान करें । हमें श्रेष्ठ धन के सदुपयोग करने की सामर्थ्य आपसे प्राप्त हो॥५१॥

अया पवा पवस्वैना वसूनि माँश्चत्व इन्दो सरसि प्र धन्व ।
ब्रध्नश्चिदत्र वातो न जूतः पुरुमेधश्चित्तकवे नरं दात् ॥५२॥

हे सोमदेव ! आप पवित्र हुई धारा से हमें ऐश्वर्य प्रदान करें। जिस प्रकार प्रकृति के मूल आधार सूर्यदेव, वायुदेव को प्रवाहित करते हैं, उसी प्रकार आप वसतीवरी नामक कलश में प्रवाहित होकर बुद्धिशाली इन्द्रदेव को प्राप्त हों तथा हमें सुसन्तति प्रदान करें॥५२॥

उत न एना पवया पवस्वाधि श्रुते श्रवाय्यस्य तीर्थे ।
षष्टिं सहस्रा नैगुतो वसूनि वृक्षं न पक्वं धूनवद्रणाय ॥५३॥

हे सोमदेव ! सबके लिये स्तुति योग्य स्थल, हमारे यज्ञ में आप पवित्र धारा के साथ शुद्ध हों । हे शत्रुनाशक सोमदेव ! आप पेड़ों से मिलने वाले पके फल की भाँति (सुगमता से प्राप्त होने वाले परिपक्व) साठ हजार धन (स्वर्ण मुद्राएँ), युद्ध में विजय हेतु हमें प्रदान करें॥५३॥

महीमे अस्य वृषनाम शूषे माँश्चत्वे वा पृशने वा वधत्रे ।
अस्वापयन्निगुतः स्नेहयच्चापामित्राँ अपाचितो अचेतः ॥५४॥

साधकों पर सुखों की वर्षा करना और दुराचारियों को पराजित कर झुकाना ये दो आपके सुखदायी कार्य है । हे सोमदेव ! आप संग्राम

द्वारा (अस्त्र प्रहार द्वारा), मल्लयुद्ध द्वारा अथवा छुपकर हानि पहुँचाने वाले शत्रुओं (दोषों) को शक्तिहीन करके नष्ट करें तथा जड़ता को (मूर्खता को) हमसे दूर करें॥५४॥

सं त्री पवित्रा विततान्येष्यन्वेकं धावसि पूयमानः ।
असि भगो असि दात्रस्य दातासि मघवा मघवद्भ्य इन्दो ॥५५॥

हे सोमदेव ! तीन (अग्नि, वायु, जल) विशाल छलनियों से शोधित होकर, आप एक (कलश या भूमण्डल) के पास दौड़कर पहुँचते हैं। आप ऐश्वर्यवान् हैं, दान योग्य धन के दाता तथा धनवानों के भी धनपति हैं॥५५॥

एष विश्ववित्पवते मनीषी सोमो विश्वस्य भुवनस्य राजा ।
द्रप्साँ ईरयन्विदथेष्विन्दुर्वि वारमव्यं समयाति याति ॥५६॥

सर्वज्ञ ज्ञानी तथा सभी भुवनों के राजा ये सोमदेव अनश्वर छलनी में दोनों ओर से प्रवाहित होते हुए सभी यज्ञों में रस प्रदान करते हैं॥५६॥

इन्दुं रिहन्ति महिषा अदब्धाः पदे रेभन्ति कवयो न गृध्राः ।
हिन्वन्ति धीरा दशभिः क्षिपाभिः समञ्जते रूपमपां रसेन ॥५७॥

महान् अषिगण इस अविनाशी समरस का स्वाद लेते हैं। धन की कामना वाले ज्ञानी जनों के समान विद्वान् याजक जल के साथ इस सोमरस को दसों (दिशाओं या अंगुलियों) से मिलाते हुए उनकी स्तुति करते हैं॥५७॥

त्वया वयं पवमानेन सोम भरे कृतं वि चिनुयाम शश्वत् ।
तन्नो मित्रो वरुणो मामहन्तामदितिः सिन्धुः पृथिवी उत द्यौः ॥५८॥

हे संसार को शुद्ध-पवित्र करने वाले सोमदेव ! आपकी सहायता से हम जीवन-संग्राम में निरन्तर उत्तम कर्मों का चयन करें । इसके कारण अदिति, मित्र, वरुण, पृथ्वी, सिन्धु और द्युलोक हमें यशो भागों बनाएँ॥५८॥

सूक्त ९८

ऋषिः अम्बरीषो वार्षागिरः ऋजिश्वा भारद्वाजश्च ।
देवता – पवमानः सोमः । छंद – अनुष्टुप, ११ वृहती

अभि नो वाजसातमं रयिमर्ष पुरुस्पृहम् ।
इन्दो सहस्रभर्णसं तुविद्युम्नं विभ्वासहम् ॥१॥

सैकड़ों लोगों द्वारा प्रशंसित, हजारों का पोषक, विशेष ओजस्वी, बल बढ़ाने वाला यह सोमरस हमें धन प्रदान करे॥१॥

परि ष्य सुवानो अव्ययं रथे न वर्माव्यत ।
इन्दुरभि द्रुणा हितो हियानो धाराभिरक्षाः ॥२॥

जिस प्रकार कवच से युक्त पुरुष रथ में आरूढ़ होता है, उसी प्रकार स्तुत्य सोम कलश से डालने पर धारा रूप में प्रवाहित होता है॥२॥

परि ष्य सुवानो अक्षा इन्दुरव्ये मदच्युतः ।
धारा य ऊर्ध्वो अध्वरे भ्राजा नैति गव्ययुः ॥३॥

सूर्य रश्मियों की कामना करने वाला, स्वाभाविक तेज से युक्त यह श्रेष्ठ सोम धारा रूप में यज्ञार्थ प्रयुक्त होता है । याजकों को आनंदित करने के लिए प्राकृतिक ढंग से परिष्कृत होता है॥३॥

स हि त्वं देव शश्वते वसु मर्ताय दाशुषे ।
इन्दो सहस्रिणं रयिं शतात्मानं विवाससि ॥४॥

हे सोमदेव ! आप सदैव दान (श्रेष्ठ कार्यों के लिये धन) देने वाले मनुष्यों को सैकड़ों प्रकार कम धन प्रदान करते हैं॥४॥

वयं ते अस्य वृत्रहन्वसो वस्वः पुरुस्पृहः ।
नि नेदिष्ठतमा इषः स्याम सुम्नस्याध्रिगो ॥५॥

हे उत्तम आश्रय देने वाले सोमदेव ! सबके द्वारा सराहनीय, सभी को पोषण देने वाली आपकी विभूतियों का हम सान्निध्य-लाभ चाहते हैं । सूर्य रश्मियों के साथ रहने वाले हे सोमदेव ! आपके द्वारा प्रदत्त अन्नादि (पोषक पदार्थों) के उपयोग से हम सुखी हों॥५॥

द्विर्यं पञ्च स्वयशसं स्वसारो अद्रिसंहतम् ।
प्रियमिन्द्रस्य काम्यं प्रस्नापयन्त्यूर्मिणम् ॥६॥

पाषाणों द्वारा कूटकर निष्पन्न, कीर्तिवान्, सबके इष्ट और इन्द्रदेव के प्रिय सोम को दसों अँगुलियाँ भली प्रकार शोधित करती हैं और जलों से युक्त करती हैं॥६॥

परि त्यं हर्यतं हरिं बभ्रुं पुनन्ति वारेण ।
यो देवान्विश्वाँ इत्परि मदेन सह गच्छति ॥७॥

हरित और भूरे रंग के सुन्दर सोम को जल से पवित्र बनाते हैं। यह सोम इन्द्र आदि देवताओं के निकट अपने हर्ष प्रदायक गुणों के साथ जाता है॥७॥

अस्य वो ह्यवसा पान्तो दक्षसाधनम् ।
यः सूरिषु श्रवो बृहद्दधे स्वर्ण हर्यतः ॥८॥

हे देवो ! रक्षण सामर्थ्य से युक्त तथा बलवर्द्धक इस सोमरस का आप पान करें। यह सोमरस ज्ञानी जनों को सूर्य के समान तेजस्विता प्रदान करता है॥८॥

स वां यज्ञेषु मानवी इन्दुर्जनिष्ट रोदसी ।
देवो देवी गिरिष्ठा अस्रेधन्तं तुविष्वणि ॥९॥

हे द्यु तथा पृथिवीं लोक ! यज्ञों में मानवों का हितकारी तथा तेजस्वी सोमरस उत्पन्न किया जाता है। यह तेजस्वी सोमरस पर्वत के उच्च शिखरों में रहता है । इसे यज्ञ में याजक तैयार करते हैं॥९॥

इन्द्राय सोम पातवे वृत्रघ्ने परि षिच्यसे ।
नरे च दक्षिणावते देवाय सदनासदे ॥१०॥

हे सोमदेव ! दुष्ट संहारक इन्द्रदेव के पान हेतु, यज्ञ में दक्षिणा देने वाले वीर के लिए और यज्ञ करने वाले यजमान के लिए आप पात्र में प्रवाहित होकर स्थिर हों॥१०॥

ते प्रत्नासो व्युष्टिषु सोमाः पवित्रे अक्षरन् ।
अपप्रोथन्तः सनुतर्हुरश्चितः प्रातस्ताँ अप्रचेतसः ॥११॥

प्रात: काल (ब्राह्ममुहूर्त में) अज्ञानी छिपे हुए चोर (आलस्य) को जो सोम भगा देता हैं, उस सनातन सोम को प्रातः काल में ही शोधित करके पवित्र बनाते हैं॥११॥

तं सखायः पुरोरुचं यूयं वयं च सूरयः ।
अश्याम वाजगन्ध्यं सनेम वाजपस्त्यम् ॥१२॥

हे मित्रो ! तुम और हम उस पराक्रमी, पौष्टिक, श्रेष्ठ सुगन्धि से युक्त, शक्ति सामर्थ्य को बढ़ाने वाले सोमरस को प्राप्त करें॥१२॥

सूक्त ९९

ऋषि: रेभसूनू कश्यपौ ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – अनुष्टुप, १ वृहती

आ हर्यताय धृष्णवे धनुस्तन्वन्ति पौंस्यम् ।
शुक्रां वयन्त्यसुराय निर्णिजं विपामग्रे महीयुवः ॥१॥

जिस प्रकार योद्धा धनुष पर प्रत्यञ्चा चढ़ाते हैं, उसी प्रकार महान् उद्देश्यों वाले ऋत्विग्गण विद्वानों के सम्मुख प्राणशक्ति संवर्द्धन के लिए वाणी (मंत्रों) से तेजस्वी (सोम) का विस्तार करते हैं॥१॥

अध क्षपा परिष्कृतो वाजाँ अभि प्र गाहते ।
यदी विवस्वतो धियो हरिं हिन्वन्ति यातवे ॥२॥

रात्रि की समाप्ति पर उषा काल में जल मिश्रित परिष्कृत सोम पौष्टिकता प्रदान करता है। साधकों की अँगुलियाँ हरित वर्ण के सोम को कलश पात्रों की ओर प्रेरित करती हैं॥२॥

तमस्य मर्जयामसि मदो य इन्द्रपातमः ।
यं गाव आसभिर्दधुः पुरा नूनं च सूरयः ॥३॥

परिष्कृत सोमरस आनन्ददायक है, इन्द्रदेव के पीने योग्य है । गौएँ और साधकगण, जिसका पूर्व से सेवन करते रहे हैं और आज भी करते हैं, ऐसे सोम को हम परिष्कृत करते हैं॥३॥

तं गाथया पुराण्या पुनानमभ्यनूषत ।
उतो कृपन्त धीतयो देवानां नाम बिभ्रतीः ॥४॥

पवित्र सोमरस के प्रचलित स्तवनों से याजक लोग स्तुति करते हैं। यह कर्म के लिए प्रेरित अँगुलियाँ देवताओं के निमित्त सोम को हविरूप में तैयार करती हैं॥४॥

तमुक्षमाणमव्यये वारे पुनन्ति धर्णसिम् ।
दूतं न पूर्वचित्तय आ शासते मनीषिणः ॥५॥

सबके धारण कर्ता, दुग्ध से सिंचित सोमरस को बालों की छलनी से शोधित करके पवित्र बनाते हैं। पूर्ण ज्ञान प्राप्त करने की कामना से दूत के समान उस सोम की ज्ञानी जन स्तुति करते हैं॥५॥

स पुनानो मदिन्तमः सोमश्चमूषु सीदति ।
पशौ न रेत आदधत्पतिर्वचस्यते धियः ॥६॥

भार वाहक पशुओं पर जिस तरह वजन लादा जाता हैं, उसी तरह आनन्ददायक पवित्र सोमरस को पात्र में स्थापित किया जाता है । पात्र में स्थापित वह बुद्धियों का अधिष्ठाता सोम स्तुत्य होता है॥६॥

स मृज्यते सुकर्मभिर्देवो देवेभ्यः सुतः ।
विदे यदासु संददिर्महीरपो वि गाहते ॥७॥

मनुष्य समुदाय में दाता के रूप में यह सोम जाना जाता है । उत्तम कर्म करने वाले याजकों के द्वारा देवों के निमित्त निकाला गया सोमरस जल में मिश्रित होकर शोधित किया जाता है॥७॥

सुत इन्दो पवित्र आ नृभिर्यतो वि नीयसे ।
इन्द्राय मत्सरिन्तमश्चमूष्वा नि षीदसि ॥८॥

हे सोमदेव ! आपका निकाला गया अत्यन्त विशाल तथा अति आनन्ददायी रस इन्द्रदेव के पान हेतु याजकों द्वारा छलनी में शोधित और कलश में स्थापित किया जाता हैं॥८॥

सूक्त १००

ऋषि: रेभसूनू कश्यपौ ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – अनुष्टुप

अभी नवन्ते अद्रुहः प्रियमिन्द्रस्य काम्यम् ।
वत्सं न पूर्व आयुनि जातं रिहन्ति मातरः ॥१॥

गौएँ जिस प्रकार नवजात बछड़े को चाटती हैं, उसी प्रकार विद्रोह न करने वाला जल, इन्द्रदेव को प्रिय लगने वाले और चाहने योग्य सोम को प्राप्त होता हैं॥१॥

पुनान इन्दवा भर सोम द्विबर्हसं रयिम् ।
त्वं वसूनि पुष्यसि विश्वानि दाशुषो गृहे ॥२॥

हे कान्तिमान् सोमदेव ! पवित्र होते हुए आप दोनों लोकों (इहलोक एवं परलोक) वाला धन हमें प्रदान करें। आप दाता के घर में नाना प्रकार के ऐश्वर्यों को पुष्ट बनाते हैं॥२॥

त्वं धियं मनोयुजं सृजा वृष्टिं न तन्यतुः ।
त्वं वसूनि पार्थिवा दिव्या च सोम पुष्यसि ॥३॥

हे सोमदेव ! जिस तरह बादल वर्षा करते हैं, उसी तरह मन को श्रेष्ठ बनाने वाली बुद्धि आप हमें प्रदान करें । आप द्युलोक तथा पृथिवी लोक के ऐश्वर्यों को बढ़ाते हैं॥३॥

परि ते जिग्युषो यथा धारा सुतस्य धावति ।
रंहमाणा व्यव्ययं वारं वाजीव सानसिः ॥४॥

हे सोमदेव ! निकाला गया आपका सेवनीय रस अनश्वर छलनी पर द्रुतगामी धारा के रूप में वीर अश्व की भाँति प्रवाहित होता है॥४॥

क्रत्वे दक्षाय नः कवे पवस्व सोम धारया ।
इन्द्राय पातवे सुतो मित्राय वरुणाय च ॥५॥

हे ज्ञानी सोमदेव ! इन्द्र, वरुण तथा मित्रदेवों के पान हेतु निकाला गया आपका रस हमें ज्ञानवान् तथा बलशाली बनाने के लिए धारारूप में प्रवाहित होते हुए पवित्र बने ॥५॥

पवस्व वाजसातमः पवित्रे धारया सुतः ।
इन्द्राय सोम विष्णवे देवेभ्यो मधुमत्तमः ॥६॥

रस रूप में निष्पन्न हे सोमदेव ! आप अपनी मधुर पोषक धारा से इन्द्र, विष्णु आदि सभी देवताओं की तृप्ति के लिए पवित्र होकर सुपात्र में स्थिर हों॥६॥

त्वां रिहन्ति मातरो हरिं पवित्रे अद्रुहः ।
वत्सं जातं न धेनवः पवमान विधर्मणि ॥७॥

संस्कारित होने वाले (छनने वाले) हे हरिताभ सोम ! आपस में द्वेष न करने वाली अंगुलियाँ आपको उसी प्रकार निचोड़ती हैं अर्थात् साफ करती हैं, जैसे कोई गाय नवजात बछड़े को प्यार से चाटती हैं॥७॥

पवमान महि श्रवश्चित्रेभिर्यासि रश्मिभिः ।
शर्धन्तमांसि जिघ्नसे विश्वानि दाशुषो गृहे ॥८॥

हे पवित्र सोमदेव ! आप अपनी सुन्दर रश्मियों के साथ सर्वत्र जाते हुए महान् यशस्वी बनते हैं। आप दाताओं के घरों में जाकर अपना शौर्य दिखाते हुए सम्पूर्ण अन्धकार को समाप्त करते हैं॥८॥

त्वं द्यां च महिव्रत पृथिवीं चाति जभ्रिषे ।
प्रति द्रापिममुञ्चथाः पवमान महित्वना ॥९॥

पवित्रता को प्राप्त करने वाले हे महान् व्रती सोमदेव ! अन्तरिक्ष और पृथ्वी को भली-भाँति धारण करते हुए आप अपनी महिमा के अनुरूप कवच को धारण करते हैं॥९॥

सूक्त १०१

ऋषि: अंधीगु: श्यावाश्वि, ४-६ ययातिर्नाहुष; ७-९ नहुषो मानव:, १०-१२ मनु: सांवरण; १३-१६ वैश्वामित्रो वाच्यो वा प्रजापति। देवता – पवमान: सोम: । छंद – अनुष्टुप, २-३ गायत्री

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे ।
अप श्वानं श्नथिष्टन सखायो दीर्घजिह्व्यम् ॥१॥

हे मित्रो ! आप आगे रखे हुए, आनन्द प्रदान करने वाले, इस सोमरस के निकट जाने की इच्छा वाले, लम्बी जिह्वा वाले (जूठा करने वाले) श्वान को दूर भगाओ॥१॥

यो धारया पावकया परिप्रस्यन्दते सुतः ।
इन्दुरश्वो न कृत्व्यः ॥२॥

यज्ञ में सहयोगीं यह सोमरस शोधित होते समय अश्व की गति से पात्र में गिरता है॥२॥

तं दुरोषमभी नरः सोमं विश्वाच्या धिया ।
यज्ञं हिन्वन्त्यद्रिभिः ॥३॥

हे ऋत्विजो ! दुष्टतानाशक उस सोम को आवाहित करो और यज्ञ के निमित्त सम्पूर्ण बुद्धिमत्ता के साथ पत्थरों से कूटकर रस निकालो॥३॥

सुतासो मधुमत्तमाः सोमा इन्द्राय मन्दिनः ।
पवित्रवन्तो अक्षरन्देवान्गच्छन्तु वो मदाः ॥४॥

मधुर और हर्ष प्रदायक सोमरस पवित्र होकर इन्द्रदेव के लिये तैयार होता है । हे सोमदेव ! आपका यह आनन्ददायक रस देवगणों के पास पहुँचे॥४॥

इन्दुरिन्द्राय पवत इति देवासो अब्रुवन् ।
वाचस्पतिर्मखस्यते विश्वस्येशान ओजसा ॥५॥

स्तोताओं के अनुसार सोम, इन्द्र के लिए शोधित होता है । ज्ञान रक्षक, समर्थ सोम, यज्ञ में प्रयुक्त होता है॥५॥

सहस्रधारः पवते समुद्रो वाचमीङ्खयः ।
सोमः पती रयीणां सखेन्द्रस्य दिवेदिवे ॥६॥

वाणी का प्रेरक, ऐश्वर्यवान्, इन्द्रदेव का मित्र, सोम प्रतिदिन सहस्रों धाराओं से कलश में शोधित होता है॥६॥

अयं पूषा रयिर्भगः सोमः पुनानो अर्षति ।
पतिर्विश्वस्य भूमनो व्यख्यद्रोदसी उभे ॥७॥

परिपोषक, सेवनीय, सुन्दर यह दिव्य सोम छुनते हुए नीचे के बर्तन (भूमण्डल) में प्रवाहित होता है। सभी जीवों का पालक यह सोमरस अपने दिव्य तेज से दोनों लोकों (द्यावा-पृथिवी) को प्रकाशित करता है॥७॥

समु प्रिया अनूषत गावो मदाय घृष्वयः ।
सोमासः कृण्वते पथः पवमानास इन्दवः ॥८॥

हे सामदेव ! आनन्द प्राप्ति के लिए प्रेम और स्पर्धा प्रदर्शित करने वाली वाणियाँ आपकी स्तुति करती हैं। शोधित तथा ऐश्वर्यवान् सोमरस भी आनन्द के लिए संचरित होता है॥८॥

य ओजिष्ठस्तमा भर पवमान श्रवाय्यम् ।
यः पञ्च चर्षणीरभि रयिं येन वनामहै ॥९॥

हे सोमदेव ! समाज के पंचजनों (समाज के पाँचों वर्णो अर्थात् सम्पूर्ण समाज) को प्राप्त होने वाला शक्ति वर्द्धक, प्रशंसा के योग्य रस भरपूर मात्रा में आप हमें प्रदान करें॥९॥

सोमाः पवन्त इन्दवोऽस्मभ्यं गातुवित्तमाः ।
मित्राः सुवाना अरेपसः स्वाध्यः स्वर्विदः ॥१०॥

श्रेष्ठ मार्ग को ठीक ढंग से जानने वाला, मित्र के सदृश, पाप रहित , मन को भली प्रकार से एकाग्र करने वाला, आत्मविद् यह अभिषुत सोमरस हमारे लिए शुद्ध किया जाता है॥१०॥

सुष्वाणासो व्यद्रिभिश्चिताना गोरधि त्वचि ।
इषमस्मभ्यमभितः समस्वरन्वसुविदः ॥११॥

पृथ्वी के ऊपर निवास करने वाला, पत्थरों से पीसे जाने वाला, धन प्रदायक यह सोम ऐश्वर्य प्रदान करता है॥११॥

एते पूता विपश्चितः सोमासो दध्याशिरः ।
सूर्यासो न दर्शतासो जिगत्नवो ध्रुवा घृते ॥१२॥

देखने में सूर्य के सदृश तेजस्वी, शुद्ध, विलक्षण सोम दधि से युक्त कलश में स्थिर है तथा जल की स्निग्ध धार से मिलकर पवित्र होने वाला है॥१२॥

प्र सुन्वानस्यान्धसो मर्तो न वृत तद्वचः ।
अप श्वानमराधसं हता मखं न भृगवः ॥१३॥

शोधित होते समय सोम का नाद विघ्न सन्तोषी मनुष्य न सुनें। भृगुओं ने जिस प्रकार मख नाम के दानव को हटा दिया था, उसी प्रकार श्वानों को यज्ञस्थल से हटायें॥१३॥

आ जामिरत्के अव्यत भुजे न पुत्र ओण्योः ।
सरज्जारो न योषणां वरो न योनिमासदम् ॥१४॥

भाता सदृश अत्यन्त प्रिय सोम, माता-पिता की भुजाओं में रक्षित पुत्र के तुल्य छन्ने में प्रवाहित होकर कलश में उतरता है, जैसे जार स्त्री की ओर, वरकन्या की ओर उन्मुख होता है, वैसे ही सोम कलश में प्रविष्ट होता है॥१४॥

स वीरो दक्षसाधनो वि यस्तस्तम्भ रोदसी ।
हरिः पवित्रे अव्यत वेधा न योनिमासदम् ॥१५॥

पौष्टिक तत्त्वों और रसायनों से युक्त वह वीर सोम, द्यावा-पृथिवी को अपने तेज से व्याप्त कर देता है। यजमान के घर में प्रविष्ट होने के तुल्य शोधित हुआ हरिताभ सोम छनकर कलश को प्राप्त करता है॥१५॥

अव्यो वारेभिः पवते सोमो गव्ये अधि त्वचि ।
कनिक्रदद्वृषा हरिरिन्द्रस्याभ्येति निष्कृतम् ॥१६॥

यह सोम ऊन की बनी छलनी से शोधित किया जाता है। भूमि के पृष्ठ भाग पर स्थापित यह बलवान् सोम ध्वनि करते हुए इन्द्रदेव के समीप जाता हैं॥१६॥

सूक्त १०२

ऋषि: त्रित आप्त्य।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – उष्णिक्

क्राणा शिशुर्महीनां हिन्वन्नृतस्य दीधितिम् ।
विश्वा परि प्रिया भुवदध द्विता ॥१॥

यह सोम, यज्ञ कर्ता तथा महान् जल का पुत्र है । यह यज्ञ को प्रकाशित करने वाले अपने रस को प्रेरित करता है । यह सभी हविष्यान्नों (आहुतियों) में व्याप्त होता हुआ द्युलोक तथा पृथ्वी लोक में व्याप्त रहता है॥१॥

उप त्रितस्य पाष्योरभक्त यद्गुहा पदम् ।
यज्ञस्य सप्त धामभिरध प्रियम् ॥२॥

त्रित (महान्) अषि की गुफा में चट्टान के समान कठोर दो फलकों के मध्य से प्राप्त होने वाले सोम रस की, ऋत्विजों ने गायत्री आदि सात छन्दों से स्तुति की॥२॥

त्रीणि त्रितस्य धारया पृष्ठेष्वेरया रयिम् ।
मिमीते अस्य योजना वि सुक्रतुः ॥३॥

त्रित (तीन भुवनों) के तीनों सवनों (कालों) में व्याप्त हे दिव्य सोमदेव ! आप अपनी रस की धारा से इन्द्रदेव को प्रेरित करें । श्रेष्ठ याजक उन (इन्द्र) का उत्तम स्तोत्रों से गुणगान करते हैं॥३॥

जज्ञानं सप्त मातरो वेधामशासत श्रिये ।
अयं ध्रुवो रयीणां चिकेत यत् ॥४॥

सात माताओं (धाराओं) से समुत्पन्न (वृद्धि को प्राप्त याजकों की) मेधा शक्तिवर्द्धन हेतु प्रयत्नशील यह सोम धन-सम्पदाओं को भली प्रकार जानने वाला हैं॥४॥

अस्य व्रते सजोषसो विश्वे देवासो अद्रुहः ।
स्पार्हा भवन्ति रन्तयो जुषन्त यत् ॥५॥

जब प्रेम करने वाले, प्रसन्न रहने वाले देवगण इस सोमरस को पाने करते हैं, तब इस व्रत में लगे हुए परस्पर द्रोह से रहित सभी देवगण संगठित होते हैं॥५॥

यमी गर्भमृतावृधो दृशे चारुमजीजनन् ।
कविं मंहिष्ठमध्वरे पुरुस्पृहम् ॥६॥

इस व्यापक, ज्ञानी, पूज्य, अभीष्ट सोम को यज्ञ का विस्तार करने वाले याजकों ने स्थापित किया है॥६॥

समीचीने अभि त्मना यह्वी ऋतस्य मातरा ।
तन्वाना यज्ञमानुषग्यदञ्जते ॥७॥

जब यज्ञ विस्तारक याजक सोमरस को जल से मिश्रित करते हैं, तब वह सोमरस स्वयं ही परस्पर एकत्रित होकर महान् यज्ञ का निर्माण करने वाले द्युलोक और पृथिवी लोक की ओर गमन करता है॥७॥

क्रत्वा शुक्रेभिरक्षभिर्ऋणोरप व्रजं दिवः ।
हिन्वन्नृतस्य दीधितिं प्राध्वरे ॥८॥

हे सोमदेव ! आप इस अहिंसित यज्ञ में ऋत को तेजस्वी बनाते हुए ज्ञान और कर्म के तेजस्वी सामर्थ्य से द्युलोक के अन्धकार को नष्ट करें॥८॥

ऋग्वेद – नवम मंडल

सूक्त १०३

ऋषि: द्वित आप्त्य:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – उष्णिक्

प्र पुनानाय वेधसे सोमाय वच उद्यतम् ।
भृतिं न भरा मतिभिर्जुजोषते ॥१॥

हे स्तोतागण ! जिस प्रकार पोषण करने वाले (स्वामी या पिता) पोषितों के लिए प्रयत्न करते हैं, उसी प्रकार आप इस पवित्र होते, स्तुतियों से हर्षित होने वाले, ज्ञानी सोम के लिए प्रेरक मंत्रों का गान करें॥१॥

परि वाराण्यव्यया गोभिरञ्जानो अर्षति ।
त्री षधस्था पुनानः कृणुते हरिः ॥२॥

गौ दुग्ध से मिश्रित सोमरस अनश्वर छलनी की ओर गमन करता है। परिष्कृत होता हुआ हरिताभ सोमरस तीन स्थानों (द्युलोक, पृथ्वीलोक तथा अन्तरिक्ष में स्थापित होता है॥२॥

परि कोशं मधुश्चुतमव्यये वारे अर्षति ।
अभि वाणीर्ऋषीणां सप्त नूषत ॥३॥

पवित्र होता हुआ सोम, अपने मधुर रस को पात्र में पहुँचाता है । ऋषियों की सात पदों वाली वाणियाँ (गायत्री आदि सातों छन्द) इन सोमदेव की प्रार्थना करती हैं॥३॥

परि णेता मतीनां विश्वदेवो अदाभ्यः ।
सोमः पुनानश्चम्वोर्विशद्धरिः ॥४॥

बुद्धियों को श्रेष्ठ मार्ग पर प्रेरित करने वाला, अहिंसित, सभी देवगणों को प्रिंय, शोधित हरिताभ सोमरस कूटकर रस निकालने वाले पत्थरों पर पहुँचता है॥४॥

परि दैवीरनु स्वधा इन्द्रेण याहि सरथम् ।
पुनानो वाघद्वाघद्भिरमर्त्यः ॥५॥

हे सोमदेव ! स्तोताओं के द्वारा स्तुत्य, अविनाशी, शोधित होते हुए आप दैवी बलों के अनुकूल बनकर एक ही रथ पर इन्द्रदेव के साथ बैठकर चलें॥५॥

परि सप्तिर्न वाजयुर्देवो देवेभ्यः सुतः ।
व्यानशिः पवमानो वि धावति ॥६॥

देवों के निमित्त निकाला गया, सर्वव्यापी, बल की कामना वाला, तेजस्वी, पवित्र सोमरस अश्व के दौड़ने के समान चारों ओर प्रवाहित होता है॥७॥

सूक्त १०४

ऋषि: पर्वतनारदौ काण्वौ, काश्यप्वौ शखण्डिन्यावप्सरसौ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – उष्णिक्

सखाय आ नि षीदत पुनानाय प्र गायत ।
शिशुं न यज्ञैः परि भूषत श्रिये ॥१॥

हे मित्रो ! (त्वजो) आप आकर बैठो। सोम को शोधित करते समय स्तुति करो। जिसे प्रकार शिशु को आभूषणों से सजाते हैं, उसी प्रकार (यज्ञ से) यज्ञीय साधनों से इस सोमरस को विभूषित करो॥१॥

समी वत्सं न मातृभिः सृजता गयसाधनम् ।
देवाव्यं मदमभि द्विशवसम् ॥२॥

हे ऋत्विग्गण ! घर के साधनभूत, दिव्य गुणों के रक्षक, आनन्दवर्द्धक, दोनों (दिव्य और पार्थिव) प्रकार से बलवर्द्धक इस साम को उसी प्रकार जल से मिश्रित करो, जैसे माताओं के साथ बच्चे मिलकर रहते हैं॥२॥

पुनाता दक्षसाधनं यथा शर्धाय वीतये ।
यथा मित्राय वरुणाय शंतमः ॥३॥

जिस प्रकार शक्ति प्राप्त हो, मित्र एवं वरुण आदि सुख पायें, (वैसे) छन्ने से सोम को शोधित करो॥३॥

अस्मभ्यं त्वा वसुविदमभि वाणीरनूषत ।
गोभिष्टे वर्णमभि वासयामसि ॥४॥

हे सोमदेव ! आप धन देने वाले हैं, आपका धन हमें प्राप्त हो, इसलिए हमारी वाणी आपकी प्रार्थना करती है। हम आपके रस को गौ दुग्ध से युक्त करते हैं॥४॥

स नो मदानां पत इन्दो देवप्सरा असि ।
सखेव सख्ये गातुवित्तमो भव ॥५॥

हे आनन्द के स्वामी सोमदेव ! आप तेजस्वी स्वरूप वाले हैं। जिस तरह मित्र अपने मित्र का पथ-प्रदर्शन करता है, उसी तरह आप हमारे श्रेष्ठ मार्गदर्शक हों॥५॥

सनेमि कृध्यस्मदा रक्षसं कं चिदत्रिणम् ।

अपादेवं द्वयुमंहो युयोधि नः ॥६॥

हे सोमदेव ! आप हमें अपना अभिन्न मित्र बनाएँ । हमारा नाश करने वाले मायावी तथा दो भाव रखने वाले कपटी, वह चाहे जो भी हो; उन्हें मारते हुए हमारे पापों को दूर करें॥६॥

सूक्त १०५

ऋषि: पर्वतनारदौ काण्वौ
देवता – पवमान: सोम: । छंद – उष्णिक्

तं वः सखायो मदाय पुनानमभि गायत ।
शिशुं न यज्ञैः स्वदयन्त गूर्तिभिः ॥१॥

आनन्ददायी, सोमरस को अभिषवण करते समय हे मित्रों ! इसकी प्रार्थना करो। शिशु को जिस प्रकार अलंकृत करते हैं, उसी प्रकार यज्ञों और स्तुतियों से आप इसे ग्राह्य बनाओ॥१॥

सं वत्स इव मातृभिरिन्दुर्हिन्वानो अज्यते ।
देवावीर्मदो मतिभिः परिष्कृतः ॥२॥

देव संरक्षक, प्रसन्नतादायक, स्तुतियों से शोधित और याजकों के प्रेरक सोमरस को जल से मिश्रित करते हैं। माता के द्वारा शिशु को नहलाने धुलाने की तरह सोम को जल के द्वारा शुद्ध किया जाता है॥२॥

अयं दक्षाय साधनोऽयं शर्धाय वीतये ।
अयं देवेभ्यो मधुमत्तमः सुतः ॥३॥

बलवृद्धि के साधन रूप इस मधुरतम सोमरस को देवताओं के पीने हेतु विधिवत् निकालते हैं। वे (देवता) शक्ति-सामर्थ्यवान् बनने के लिए इसका पान करते हैं॥३॥

गोमन्न इन्दो अश्ववत्सुतः सुदक्ष धन्व ।
शुचिं ते वर्णमधि गोषु दीधरम् ॥४॥

रस निकालने के पश्चात् हे बलशाली सोमदेव ! आप हमें गौओं, घोड़ों से युक्त धन प्रदान करें । तत्पश्चात् आप गौ दुग्ध में मिलकर पवित्र वर्ण (श्वेत वर्ण वाले बन जाएँ॥४॥

स नो हरीणां पत इन्दो देवप्सरस्तमः ।
सखेव सख्ये नर्यो रुचे भव ॥५॥

हे हरितवर्ण सोमदेव ! तेजस्विता के पुञ्ज, मानव मङ्गलकारी आप हमारी भी तेजस्विता में प्रखरता लाएँ । जिस प्रकार एक मित्र दूसरे मित्र के सहयोग के लिए तत्पर रहता है, ऐसा ही व्यवहार आप हमारे साथ करें॥५॥

सनेमि त्वमस्मदाँ अदेवं कं चिदत्रिणम् ।
साह्वाँ इन्दो परि बाधो अप द्वयुम् ॥६॥

हे सोमदेव ! आप पुरातन सुखों को हमारे लिए प्रकट करें तथा आप सुखबाधक रिपुओं का संहार करें । दुहरे व्यवहार वाले दुष्टों को समाप्त करें एवं दिव्य गुणों से रहित स्वार्थी शत्रुओं का भी आप संहार करें॥६॥

सूक्त १०६

ऋषि: १-३, १०-१४ अग्निश्चाक्षुष:, ४-६ चक्षुर्मानव:, ७-९ अनुराप्सव:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – उष्णिक्

इन्द्रमच्छ सुता इमे वृषणं यन्तु हरयः ।
श्रुष्टी जातास इन्दवः स्वर्विदः ॥१॥

तुरन्त तैयार हुआ, आत्मिक ज्ञान की वृद्धि करने वाला, यह हरित सोम पराक्रमी इन्द्रदेव को शीघ्र प्राप्त हो ॥१॥

अयं भराय सानसिरिन्द्राय पवते सुतः ।
सोमो जैत्रस्य चेतति यथा विदे ॥२॥

युद्ध के समय सेवन योग्य यह सोमरस इन्द्रदेव के लिए तैयार किया जाता है । जैसा कि सभी जानते हैं, विजय के लिए इच्छुक इन्द्रदेव को यह सोमरस विशेष स्फूर्ति देता है॥२॥

अस्येदिन्द्रो मदेष्वा ग्राभं गृभ्णीत सानसिम् ।
वज्रं च वृषणं भरत्समप्सुजित् ॥३॥

सेवनीय सोमपान से आनन्दित, जल को जीतने वाले इन्द्रदेव अपने धनुष और वज्र को धारण कर लेते हैं॥३॥

प्र धन्वा सोम जागृविरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ।
द्युमन्तं शुष्ममा भरा स्वर्विदम् ॥४॥

हे सोमदेव ! स्फूर्ति से सम्पन्न होकर, आप इन्द्रदेव के निमित्त कलश में प्रवाहित हों । हमें तेजोवर्द्धक एवं ज्ञानवर्द्धक शक्ति से परिपूरित करें॥४॥

इन्द्राय वृषणं मदं पवस्व विश्वदर्शतः ।
सहस्रयामा पथिकृद्विचक्षणः ॥५॥

हे सोमदेव ! आप सर्वद्रष्टा , ज्ञानवान्, हजारों मार्गों के निर्माता तथा ज्ञाता हैं, अत: इन्द्रदेव के निमित्त बलशाली तथा आनन्ददायक रस प्रदान करें॥५॥

अस्मभ्यं गातुवित्तमो देवेभ्यो मधुमत्तमः ।

सहस्रं याहि पथिभिः कनिक्रदत् ॥६॥

हे सोम ! आप श्रेष्ठ पथ-प्रदर्शक तथा देवों को प्रिय हैं, अत: ध्वनि करते हुए हजारों मार्गों से प्रवाहित हों॥६॥

पवस्व देववीतय इन्दो धाराभिरोजसा ।
आ कलशं मधुमान्त्सोम नः सदः ॥७॥

हे सोमदेव ! आप देवगणों के सेवनार्थ वेगपूर्वक धाराओं सहित कलश में प्रवाहित हों । आनन्ददायक हे सोमदेव ! आप हमारे इस कलश में आकर स्थित हों॥७॥

तव द्रप्सा उदप्रुत इन्द्रं मदाय वावृधुः ।
त्वां देवासो अमृताय कं पपुः ॥८॥

जल में मिश्रित किया जाने वाला आपका रस इन्द्रदेव के आनन्द एवं यश को बढ़ाने के लिए है । देवगण अमरत्व प्राप्त करने हेतु सोमरस का पान करते हैं॥८॥

आ नः सुतास इन्दवः पुनाना धावता रयिम् ।
वृष्टिद्यावो रीत्यापः स्वर्विदः ॥९॥

आकाश से प्राण-पर्जन्य की वृष्टि कराने वाले, शोधित रसरूप हे दिव्य सोम ! आप हमें ऐश्वर्य प्रदान करें॥९॥

सोमः पुनान ऊर्मिणाव्यो वारं वि धावति ।
अग्रे वाचः पवमानः कनिक्रदत् ॥१०॥

पवित्र होने वाला, स्तुति के पश्चात् ध्वनि करता हुआ, शोधित होने वाला यह सोमरस, प्रवाह के साथ अविनाशी छलनी से छुनता चला जाता है॥१०॥

धीभिर्हिन्वन्ति वाजिनं वने क्रीळन्तमत्यविम् ।
अभि त्रिपृष्ठं मतयः समस्वरन् ॥११॥

जल मिश्रित, शक्तिशाली सोम स्तुतिगान करते हुए अंत्वजों द्वारा छन्ने से संशोधित किया जाता है । अन्तरिक्ष, वनस्पति एवं जीव जगत् रूपी तीन पात्रों में विद्यमान उस दिव्य सोम की ज्ञानी जन वन्दना करते हैं॥११॥

असर्जि कलशाँ अभि मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ।
पुनानो वाचं जनयन्नसिष्यदत् ॥१२॥

पोषक तत्वों से युक्त, जल में मिलने वाला सोम पात्रों में स्थिर होता है। संस्कारित होता हुआ, वह युद्ध स्थल पर जाते हुए अश्व की भाँति (ध्वनि करता हुआ) तीव्र वेग से पात्रों में पहुँचता है॥१२॥

पवते हर्यतो हरिरति ह्वरांसि रंह्या ।
अभ्यर्षन्त्स्तोतृभ्यो वीरवद्यशः ॥१३॥

अभिनन्दनीय हरित वर्ण का सोम अपने वेगयुक्त प्रवाह से अपने अशुद्ध भाग को शुद्ध करता हुआ, नीचे कलश में टपकता है। हे सोमदेव ! आप ऋत्विजों को पुत्र सम्बन्धी या अन्न सम्बन्धी कीर्ति प्रदान करें॥१३॥

अया पवस्व देवयुर्मधोर्धारा असृक्षत ।
रेभन्पवित्रं पर्येषि विश्वतः ॥१४॥

हे सोमदेव ! आप देवगणों से मिलने की इच्छा से शोधित होते समय, अविरल धार के साथ शब्दनाद करते हुए मधुर होकर, प्रचुर मात्रा में स्रवित हों॥१४॥

सूक्त १०७

ऋषि: सप्तर्षय: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – प्रगाथ:, ३, १६ द्विपदा विराट्, १९-२३ प्रगाथ

परीतो षिञ्चता सुतं सोमो य उत्तमं हविः ।
दधन्वाँ यो नर्यो अप्स्वन्तरा सुषाव सोममद्रिभिः ॥१॥

हे ऋत्विजो ! मनुष्यों के हितैषी पत्थरों द्वारा शोधित जल मिश्रित यह सोम, देवों के लिए उत्तम हवि है॥१॥

नूनं पुनानोऽविभिः परि स्रवादब्धः सुरभिंतरः ।
सुते चित्त्वाप्सु मदामो अन्धसा श्रीणन्तो गोभिरुत्तरम् ॥२॥

अनश्वर, अति सुगन्धित, शोधित होने वाले हे सोमदेव ! छुनने के बाद आपको अन्नादि एवं गौ दुग्ध के साथ मिश्रित किया जाता है, तब आपको जल में संयुक्त कर प्रसन्न (सेवन योग्य) किया जाता है॥२॥

परि सुवानश्चक्षसे देवमादनः क्रतुरिन्दुर्विचक्षणः ॥३॥

देवों का आनन्दवर्द्धक, यज्ञों का साधन रूप, ज्ञानसम्पन्न, तेजस्वी सोम सबके दर्शनार्थ कलश में स्थिर हो॥३॥

पुनानः सोम धारयापो वसानो अर्षसि ।
आ रत्नधा योनिमृतस्य सीदस्युत्सो देव हिरण्ययः ॥४॥

ऐश्वर्यदाता, स्वर्ण के समान दमकने वाले, स्वच्छ हे सोमदेव ! शोधन क्रम में जल से संयुक्त होकर अविरल धारा के रूप में प्रवाहित होते हुए आप यज्ञ पात्र में प्रतिष्ठित होते हैं ॥४॥

दुहान ऊधर्दिव्यं मधु प्रियं प्रत्नं सधस्थमासदत् ।
आपृच्छ्यं धरुणं वाज्यर्षति नृभिर्धूतो विचक्षणः ॥५॥

यज्ञ कर्ताओं द्वारा परिष्कृत किया गया मधुर आह्लादक, दिव्यरस सोम यज्ञ वेदी पर स्थापित हैं । निरीक्षणकर्ता यह सोम, श्रेष्ठ यज्ञीय भाव सम्पन्न याजकों को प्राप्त होता है॥५॥

पुनानः सोम जागृविरव्यो वारे परि प्रियः ।
त्वं विप्रो अभवोऽङ्गिरस्तमो मध्वा यज्ञं मिमिक्ष नः ॥६॥

चैतन्य, प्रिय और पवित्र सोम, शोधन यन्त्र से शुद्ध होकर नीचे गिरता है। अंगिरस् (ऋषि) की परम्परा में श्रेष्ठ हे देव सोम ! आप बुद्धिवर्द्धक होकर हमारे यज्ञ को मधुर रस से पवित्र करें॥६॥

सोमो मीढ्वान्पवते गातुवित्तम ऋषिर्विप्रो विचक्षणः ।
त्वं कविरभवो देववीतम आ सूर्यं रोहयो दिवि ॥७॥

सर्वश्रेष्ठ मार्गदर्शक, ज्ञानी, मेधावी, सर्वद्रष्टा, अत्यन्त आनन्ददायक यह सोमरस परिष्कृत हो रहा है। हे दूरदर्शी सोमदेव ! आप देवों के लिए अत्यन्त प्रिय हैं तथा आपने आकाश में सूर्यदेव को स्थापित किया है ॥७॥

सोम उ षुवाणः सोतृभिरधि ष्णुभिरवीनाम् ।
अश्वयेव हरिता याति धारया मन्द्रया याति धारया ॥८॥

याजकों द्वारा अभिषुत होता हुआ सोम पवित्र होकर नीचे बर्तन में प्रवाहित होता हैं । यह सोम वेगपूर्वक हरे रंग की आनन्ददायक धारा से पात्र में जाता है॥८॥

अनूपे गोमान्गोभिरक्षाः सोमो दुग्धाभिरक्षाः ।
समुद्रं न संवरणान्यग्मन्मन्दी मदाय तोशते ॥९॥

आनन्द प्राप्ति के लिए तैयार किया जाने वाला, प्रकाशित, गौ दुग्ध मिश्रित यह सोमरस, पात्र में उसी प्रकार स्थिर हो रहा है, जिस प्रकार

सभी नदियाँ अपने आश्रयदाता समुद्र के पास पहुँचतीं और स्थिर होती हैं॥९॥

आ सोम सुवानो अद्रिभिस्तिरो वाराण्यव्यया ।
जनो न पुरि चम्वोर्विशद्धरिः सदो वनेषु दधिषे ॥१०॥

पाषाणों द्वारा अभिषुत यह सोमरस शोधन यन्त्र से नीचे के बर्तन में छाना जाता है । हरिताभ सोम इस लकड़ी के बर्तन में उसी प्रकार प्रवेश करके स्थिर रहता है, जैसे नगर में मनुष्य॥१०॥

स मामृजे तिरो अण्वानि मेष्यो मीळ्हे सप्तिर्न वाजयुः ।
अनुमाद्यः पवमानो मनीषिभिः सोमो विप्रेभिर्ऋक्वभिः ॥११॥

बलवर्द्धक, परिपुष्ट, अश्व के सदृश प्रिय, ऋत्विजों द्वारा ऊन के छत्रे से छाना जाता हुआ, विद्वानों की स्तुतियों से प्रशंसित होता हुआ सोमरस पवित्रता को प्राप्त हो रहा है॥११॥

प्र सोम देववीतये सिन्धुर्न पिप्ये अर्णसा ।
अंशोः पयसा मदिरो न जागृविरच्छा कोशं मधुश्चुतम् ॥१२॥

यह सोम देवताओं को पान करने के लिए पानी में मिश्रित किया जाता है। हर्षप्रदायक होने के साथ-साथ यह सोम स्फूर्तिदायक भी है। यह सोमरस जल से मिलकर मधुररस टपकाने वाले बर्तन में स्थित हो॥१२॥

आ हर्यतो अर्जुने अत्के अव्यत प्रियः सूनुर्न मर्ज्यः ।
तमीं हिन्वन्त्यपसो यथा रथं नदीष्वा गभस्त्योः ॥१३॥

प्रिय शिशु के समान संस्कारित इस स्वच्छ सोमरस को वेगपूर्वक हाथों से जल-पात्र में उसी प्रकार मिलाते हैं, जैसे द्रुतगामी रथ युद्ध में जाता है॥१३॥

अभि सोमास आयवः पवन्ते मद्यं मदम् ।
समुद्रस्याधि विष्टपि मनीषिणो मत्सरासः स्वर्विदः ॥१४॥

मनुष्यों के हितैषी, ज्ञानदाता, आनन्दप्रदायक, शोधन यंत्र से नीचे प्रवाहित होने वाला , आनन्ददायी सोम, जल से भरे हुए पात्र में स्वत: शुद्ध होकर एकत्रित होता है॥१४॥

तरत्समुद्रं पवमान ऊर्मिणा राजा देव ऋतं बृहत् ।
अर्षन्मित्रस्य वरुणस्य धर्मणा प्र हिन्वान ऋतं बृहत् ॥१५॥

प्रेरणादायी दिव्य सोम शुद्ध होकर , प्रकृति में स्थित विशाल सोम (ऋत) के समुद्र में मित्र और वरुण देवों द्वारा प्रयुक्त किये जाने के लिए स्थापित किया जाता है॥१५॥

नृभिर्येमानो हर्यतो विचक्षणो राजा देवः समुद्रियः ॥१६॥

अर्शत्वजों द्वारा शोधित, सबका प्रेम पात्र, विशेष ज्ञानवर्द्धक, राजा दिव्य सोम, इन्द्रदेव के निमित्त शोधित होकर जल में मिलता हैं॥१६॥

इन्द्राय पवते मदः सोमो मरुत्वते सुतः ।
सहस्रधारो अत्यव्यमर्षति तमी मृजन्त्यायवः ॥१७॥

हर्षप्रदायक, अभिषुत किया हुआ सोम, मरुत्वान् इन्द्रदेव के लिए पवित्र होता है। यह सोम पहले सहस्रों धाराओं के रूप में शोधन यंत्र से शुद्ध होता है, इसके बाद पुन: स्तोतागण मंत्रों से इसका शोधन करते हैं॥१७॥

पुनानश्चमू जनयन्मतिं कविः सोमो देवेषु रण्यति ।
अपो वसानः परि गोभिरुत्तरः सीदन्वनेष्वव्यत ॥१८॥

ज्ञान को प्रकटीकरण करने वाला, स्तुति प्रेरक, क्रान्तदर्शी सोमरस छलनी में से जल पात्र के ऊपर शोधित होता हुआ इन्द्र आदि देवगणों के पास जाता है । जल मिश्रित वह सोम उत्तरोत्तर परिष्कृत होता हुआदुग्धादि में मिलकर काष्ठ पात्र में प्रतिष्ठित होता है॥१८॥

तवाहं सोम रारण सख्य इन्दो दिवेदिवे ।
पुरूणि बभ्रो नि चरन्ति मामव परिधीँरति ताँ इहि ॥१९॥

हे सोमदेव ! हमें आपकी मित्रता का लाभ प्राप्त हो । जो अनेक प्रकार के दुष्ट व्यक्ति हमें पीड़ा पहुँचाते हैं, उन सबको आप नष्ट करें॥१९॥

उताहं नक्तमुत सोम ते दिवा सख्याय बभ्र ऊधनि ।
घृणा तपन्तमति सूर्यं परः शकुना इव पप्तिम ॥२०॥

हे समुज्ज्वल सोमदेव ! हमें दिन-रात आपका सामीप्य प्राप्त हो । हम, सुदूर चमकने वाले सूर्यदेव तथा आपको पक्षी की भाँति (प्रत्यक्ष गतिशील) देखते हैं॥२०॥

मृज्यमानः सुहस्त्य समुद्रे वाचमिन्वसि ।
रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरुस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि ॥२१॥

श्रेष्ठ हाथों द्वारा निकाले गये पवित्र हुए हे सोमदेव ! आप शुद्ध किये जाने वाले कलश में शब्द करते हुए प्रवाहित होते हैं और स्तोताओं को प्रिय स्वर्णादि धन प्रदान करते हैं॥२१॥

मृजानो वारे पवमानो अव्यये वृषाव चक्रदो वने ।
देवानां सोम पवमान निष्कृतं गोभिरञ्जानो अर्षसि ॥२२॥

बलवर्द्धक, पवित्र छत्रे द्वारा शोधित हुआ सोमरस जल में अति वेग से प्रवाहित होता है । हे शुद्धता से युक्त सोमदेव ! आप देवों के लिए

गोदुग्ध के साथ मिश्रित किये जाते हैं और पवित्र पात्र में स्थापित किये जाते हैं॥२२॥

पवस्व वाजसातयेऽभि विश्वानि काव्या ।
त्वं समुद्रं प्रथमो वि धारयो देवेभ्यः सोम मत्सरः ॥२३॥

स्तोत्रों से पवित्र हुए, विशिष्ट अन्न (पोषकता) से युक्त, देवों को आनन्द देने वाले हे सोमदेव ! उदारता आदि विशिष्ट गुणों से युक्त होकर आप इस श्रेष्ठ यज्ञ में पवित्र हों॥२३॥

स तू पवस्व परि पार्थिवं रजो दिव्या च सोम धर्मभिः ।
त्वां विप्रासो मतिभिर्विचक्षण शुभ्रं हिन्वन्ति धीतिभिः ॥२४॥

हे सोमदेव ! द्युलोक और पृथिवी लोक को अपनी धारक सामर्थ्य के साथ पवित्र बनाएँ । हे विशेष द्रष्टा सोमदेव ! शुभवर्ण वाले आपको बुद्धिमान् स्तोतागण अँगुलियों के द्वारा निचोड़ते हैं॥२४॥

पवमाना असृक्षत पवित्रमति धारया ।
मरुत्वन्तो मत्सरा इन्द्रिया हया मेधामभि प्रयांसि च ॥२५॥

मरुद्गणों का मित्र, हर्ष प्रदाता, इन्द्र प्रिय, बुद्धि और अन्न (पोषकता) से युक्त यज्ञ में प्रयुक्त होने वाला तथा शुद्ध होने वाला सोमरस शोधन यंत्र से नीचे गिरता है॥२५॥

अपो वसानः परि कोशमर्षतीन्दुर्हियानः सोतृभिः ।
जनयञ्ज्योतिर्मन्दना अवीवशद्गाः कृण्वानो न निर्णिजम् ॥२६॥

ऋत्विजों द्वारा अभिषुत किया गया जल मिश्रित यह सोमरस कलश में एकत्र होता हैं । ज्योतिष्मान्, प्रकाश का निर्माण करते हुए हे सोमदेव ! आप आनन्ददायी दूध से आच्छादित अपने विशुद्ध रूप को प्रकट करें॥२६॥

सूक्त १०८

ऋषि: १-२ गौरिवीति: शाक्त्य; ३, १४-१६ शक्तिवासिष्ठ: ४-५ ऊरुरांगिरस:, ६-७ ऋजिश्वा भारद्वाज:, ८-९ ऊर्ध्वसद्मा अंगिरस:, १०-११ कृतयशा अंगिरस: १२-१३ ऋणंचयो राजर्षि:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – काकुभ: प्रगाथ: १३ यवमध्या गायत्री

पवस्व मधुमत्तम इन्द्राय सोम क्रतुवित्तमो मदः ।
महि द्युक्षतमो मदः ॥१॥

हे सोमदेव ! अत्यंत मधुर हवि (यज्ञ) के विषय में सर्वविद्, श्रेष्ठ, तेजस्वी, आनन्द बढ़ाने वाले आप इन्द्रदेव को आनन्दित करने के लिए पवित्र हों॥१॥

यस्य ते पीत्वा वृषभो वृषायतेऽस्य पीता स्वर्विदः ।
स सुप्रकेतो अभ्यक्रमीदिषोऽच्छा वाजं नैतशः ॥२॥

हे सोमदेव ! बलशाली इन्द्रदेव आपका पान करके अधिक बलशाली हो जाते हैं । आत्मज्ञानी भी आपका पान करके अत्यधिक आनन्दित

होते हैं। उत्तम ज्ञानी इन्द्रदेव आपके बल से संग्राम में विजयी अश्व की भाँति शीघ्रता से शत्रुओं के धन को अपने अधिकार में ले लेते हैं॥२॥

त्वं ह्यङ्ग दैव्या पवमान जनिमानि द्युमत्तमः ।
अमृतत्वाय घोषयः ॥३॥

हे पवित्र सोम ! आप तेजस्वी, दिव्य जन्मों को जानने वाले तथा अमृत तत्त्व को प्रकट करने वाले हैं॥३॥

येना नवग्वो दध्यङ्ङपोर्णुते येन विप्रास आपिरे ।
देवानां सुम्ने अमृतस्य चारुणो येन श्रवांस्यानशुः ॥४॥

जिस सोम की सहायता से दध्यङ् ऋषि ने नवीन गौओं (दिव्य किरणों) का द्वार खोला, जिसकी सहायता से विप्रों (याज्ञिकों-साधकों) ने उन्हें प्राप्त किया, जिसकी सहायता से (यज्ञ द्वारा) देवों के प्रसन्न होने पर याजकगण श्रेष्ठ अमृत, अन्नादि प्राप्त करते हैं, वह सोम देवों के लिए अमरत्व की घोषणा करता है॥४॥

एष स्य धारया सुतोऽव्यो वारेभिः पवते मदिन्तमः ।
क्रीळन्नूर्मिरपामिव ॥५॥

अतिहर्षप्रदायक, पानी की तरंगों के सदृश क्रीड़ा करता हुआ यह सोम, बालों की छलनी से छाना जाता है॥५॥

य उस्रिया अप्या अन्तरश्मनो निर्गा अकृन्तदोजसा ।
अभि व्रजं तत्निषे गव्यमश्व्यं वर्मीव धृष्णवा रुज ॥६॥

यह सोम, विवर्द्धमान् आकाश में बादलों के भीतर जल को अपनी शक्ति से छिन्न-भिन्न करता है तथा गौओं और अश्वों को सब ओर से घेरता है । हे सोम ! कवच से युक्त वीरों की तरह आप रिपुओं का विनाश करें॥६॥

आ सोता परि षिञ्चताश्वं न स्तोममप्तुरं रजस्तुरम् ।
वनक्रक्षमुदप्रुतम् ॥७॥

हे स्तोताओ ! अश्व के सदृश तीव्र गतिशील, प्रार्थना के योग्य, पानी की तरह प्रवहमान, प्रकाश की किरणों की तरह शीघ्र गमन करने वाले, जलयुक्त सोम का रस अभिषुत करो और उसमें दुग्ध का मिश्रण करो॥७॥

सहस्रधारं वृषभं पयोवृधं प्रियं देवाय जन्मने ।
ऋतेन य ऋतजातो विवावृधे राजा देव ऋतं बृहत् ॥८॥

असंख्य धाराओं से शोधित, सुखवर्द्धक, दुग्ध मिश्रित प्रिय सोम को देवताओं के निमित्त संस्कारित करो। वह दिव्य गुणों से संयुक्त सोम जल से प्रकट हुआ वृद्धि पाता है॥८॥

अभि दयुम्नं बृहद्यश इषस्पते दिदीहि देव देवयुः ।
वि कोशं मध्यमं युव ॥९॥

हे अन्नाधिपति एवं देदीप्यमान सोमदेव ! आप देवगणों को प्राप्त होने वाले हैं। आप हमें तेजोमय एवं महान् कीर्ति प्रदान करें तथा कलश-पात्र में जाकर उसे पूर्ण कर दें॥९॥

आ वच्यस्व सुदक्ष चम्वोः सुतो विशां वह्निर्न विश्पतिः ।
वृष्टिं दिवः पवस्व रीतिमपां जिन्वा गविष्टये धियः ॥१०॥

राजा की भाँति सबका पालन करने वाले, बुद्धिशाली हे सोमदेव ! याजकों की बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हुए, अन्तरिक्ष से बरसने वाले पर्जन्य की तरह नीचे के पात्र में स्थिर होने की कृपा करें॥१०॥

एतमु त्यं मदच्युतं सहस्रधारं वृषभं दिवो दुहुः ।
विश्वा वसूनि बिभ्रतम् ॥११॥

आनन्ददायी, सहस्रों धाराओं के साथ कलश में टपकने वाले शक्तिवर्द्धक, सब धनों के स्वामी, तेजस्वी इस सोम का रस ऋत्विग्गण निचोड़ते हैं॥११॥

वृषा वि जज्ञे जनयन्नमर्त्यः प्रतपञ्ज्योतिषा तमः ।
स सुष्टुतः कविभिर्निर्णिजं दधे त्रिधात्वस्य दंससा ॥१२॥

अपनी ज्योति से अन्धकार को हटाने वाला, बलोत्पादक सोम को अविनाशी रूप में जाना जाता है । ज्ञानवान् याजकों द्वारा स्तुत्य सोम अपना विशुद्ध रूप धारण करता है। तीनों लोकों में व्याप्त वह सोम यज्ञीय कर्म के लिए प्रवाहित होता है॥१२॥

स सुन्वे यो वसूनां यो रायामानेता य इळानाम् ।
सोमो यः सुक्षितीनाम् ॥१३॥

ऋत्विज्ञों ने सम्पत्ति, दुग्ध आदि पदार्थ, भूमि तथा श्रेष्ठ सन्तान प्रदायक उस सोम का रस निकाल लिया हैं॥१३॥

यस्य न इन्द्रः पिबाद्यस्य मरुतो यस्य वार्यमणा भगः ।
आ येन मित्रावरुणा करामह एन्द्रमवसे महे ॥१४॥

हमारे जिस सोमरस का पान इन्द्रदेव करते हैं, जिसका पान मरुत् करते हैं और जिसे अर्यमा तथा भगदेव पीते हैं; मित्र, वरुण एवं इन्द्र को जिस सोम के संरक्षण के लिए बुलाते हैं, उसी सोम का अभिषवण करते हैं॥१४॥

इन्द्राय सोम पातवे नृभिर्यतः स्वायुधो मदिन्तमः ।
पवस्व मधुमत्तमः ॥१५॥

हे सोमदेव ! याजकों द्वारा एकत्रित, अत्यन्त मधुर, आनन्ददायक, श्रेष्ठ आयुधों से युक्त इन्द्रदेव द्वारा पान किये जाने के निमित्त आप प्रवाहित हों॥१५॥

इन्द्रस्य हार्दि सोमधानमा विश समुद्रमिव सिन्धवः ।
जुष्टो मित्राय वरुणाय वायवे दिवो विष्टम्भ उत्तमः ॥१६॥

हे सोमदेव ! जिस प्रकार समुद्र में नदियाँ प्रवेश करती हैं, उसी प्रकार आप इन्द्रदेव के हृदय रूपी कलश में प्रवेश करें । आप मित्र, वरुण, वायुदेव तथा इन्द्रदेव के निमित्त स्नेहयुक्त रस प्रवाहित करें॥१६॥

सूक्त १०९

ऋषि: अग्न्यो धिष्ण्या ऐश्वरव:।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – द्विपदा विराट्

परि प्र धन्वेन्द्राय सोम स्वादुर्मित्राय पूष्णे भगाय ॥१॥

हे स्वादिष्ट सोमदेव ! आप ईन्द्र, मित्र, पूषा और भगदेव के लिए प्रवाहित हों॥१॥

इन्द्रस्ते सोम सुतस्य पेयाः क्रत्वे दक्षाय विश्वे च देवाः ॥२॥

हे सोम ! श्रेष्ठ ज्ञान एवं बल प्राप्त करने के लिए इन्द्रदेव सहित सभी देव निष्पन्न (सोम) रस का पान करें॥२॥

एवामृताय महे क्षयाय स शुक्रो अर्ष दिव्यः पीयूषः ॥३॥

हे सोमदेव ! प्रकाशमान, दिव्य लोक में देवों के सेवनार्थ प्रकट हुए, आप अमरत्व तक पहुँचने के लिए गतिशील हों॥३॥

पवस्व सोम महान्त्समुद्रः पिता देवानां विश्वाभि धाम ॥४॥

हे सोमदेव ! विस्तृत समुद्र के समान पोषण करने वाले आप देवों के सभी आवास स्थल रूपी पात्रों में विद्यमान रहते हैं॥४॥

शुक्रः पवस्व देवेभ्यः सोम दिवे पृथिव्यै शं च प्रजायै ॥५॥

हे कान्तिमान् सोमदेव ! आप दिव्य गुणों के लिए प्रवाहित हों, जिससे आकाश, पृथ्वी तथा प्रजाओं (समस्त जीव-जगत्) को सुख प्राप्त हो ॥५॥

दिवो धर्तासि शुक्रः पीयूषः सत्ये विधर्मन्वाजी पवस्व ॥६॥

हे सोमदेव ! आप तेजस्वी पेय तथा दिव्य गुणों के धारक हैं । हे बलवान् सोम ! आप सत्य रूप यज्ञकर्मा के बीच परिष्कृत होते चलें॥६॥

पवस्व सोम द्युम्नी सुधारो महामवीनामनु पूर्व्यः ॥७॥

हे सोमदेव ! प्रकाशयुक्त, भली-भाँति सरल धारा से पात्र में गिरते हुए, आप पूर्ववत् श्रेष्ठ ही हैं । आप पात्र में स्वत: ही प्रवाहित हों॥७॥

नृभिर्येमानो जज्ञानः पूतः क्षरद्विश्वानि मन्द्रः स्वर्वित् ॥८॥

वह सोम याजकों के द्वारा निचोड़ कर पवित्र, आनन्दमय तथा सर्वज्ञ रूप में प्रकट किया गया है । वह हमें नाना प्रकार के ऐश्वर्य प्रदान करे॥८॥

इन्दुः पुनानः प्रजामुराणः करद्विश्वानि द्रविणानि नः ॥९॥

वह ऊन की छलनी से छाना गया पवित्र तथा तेजस्वी सोमरस हमें प्रज्ञायुक्त सम्पूर्ण ऐश्वर्य प्राप्त कराये॥९॥

पवस्व सोम क्रत्वे दक्षायाश्वो न निक्तो वाजी धनाय ॥१०॥

हे सोमदेव ! अश्व के समान (प्रयासपूर्वक) स्वच्छ किये गए , शक्तिवर्द्धक आप बल एवं ऐश्वर्य को प्रदान करने के लिए पात्रों में स्थिर रहें॥१०॥

तं ते सोतारो रसं मदाय पुनन्ति सोमं महे दयुम्नाय ॥११॥

हे सोमदेव ! साधकगण आपके रस को हर्षवर्द्धन के लिए शोधित करते हैं। हम आपको दिव्य तेज रूपी ज्ञान के लिए परिशोधित करते हैं॥११॥

शिशुं जज्ञानं हरिं मृजन्ति पवित्रे सोमं देवेभ्य इन्दुम् ॥१२॥

नवजात शिशु को शुद्ध करने के सदृश ऋत्विग्गण, हरिताभ दीप्तिमान् सोम को देवों के निमित्त छन्ने से शोधित करते हैं॥१२॥

इन्दुः पविष्ट चारुर्मदायापामुपस्थे कविर्भगाय ॥१३॥

श्रेष्ठ ज्ञान-सम्पन्न यह सौम सम्पत्ति युक्त हर्ष की प्राप्ति के लिए जल से संयुक्त किया जाता है॥१३॥

बिभर्ति चार्विन्द्रस्य नाम येन विश्वानि वृत्रा जघान ॥१४॥

जिस शरीर से इन्द्रदेव ने सभी पापी राक्षसों का संहार किया, यह सोम उनके उस कल्याणकारी शरीर को धारण करता है॥१४॥

पिबन्त्यस्य विश्वे देवासो गोभिः श्रीतस्य नृभिः सुतस्य ॥१५॥

याजकों द्वारा निचोड़कर निकाले गये, गाय के दूध में मिश्रित सोमरस का सभी देवगण पान करते हैं॥१५॥

प्र सुवानो अक्षाः सहस्रधारस्तिरः पवित्रं वि वारमव्यम् ॥१६॥

बलयुक्त और अनेक धाराओं से छाना जाने वाला सोम ऊन के शोधक(छत्रे) से छनकर टपकता हैं॥१६॥

स वाज्यक्षाः सहस्ररेता अद्भिर्मृजानो गोभिः श्रीणानः ॥१७॥

बलशाली, जल से शोधित, गोदुग्ध आदि से मिश्रित वह सोम छनता हुआ (पात्र में) जाता है॥१७॥

प्र सोम याहीन्द्रस्य कुक्षा नृभिर्येमानो अद्रिभिः सुतः ॥१८॥

पाषाणों से कूटकर निष्पादित ऋत्विजों द्वारा विधिपूर्वक पवित्र किये गये हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के उदर (रूपकलश) में प्रविष्ट हों॥१८॥

असर्जि वाजी तिरः पवित्रमिन्द्राय सोमः सहस्रधारः ॥१९॥

हजारों धाराओं से प्रवाहित होने वाला, छलनी से शोधित हुआ, बलशाली, ज्ञानवान् सोमरस इन्द्रदेव के निमित्त तैयार किया जाता है॥१९॥

अञ्जन्त्येनं मध्वो रसेनेन्द्राय वृष्ण इन्दुं मदाय ॥२०॥

इन्द्रदेव की प्रसन्नता के लिए, सुख की वृष्टि करने वाले सोमरस को याजकगण गाय के मधुर दूध से मिश्रित करते हैं॥२०॥

देवेभ्यस्त्वा वृथा पाजसेऽपो वसानं हरिं मृजन्ति ॥२१॥

हे सोमदेव ! आपके जल मिश्रित, हरिताभ रस को याजकगण देवों के निमित्त शोधित करते हैं॥२१॥

इन्दुरिन्द्राय तोशते नि तोशते श्रीणन्नुग्रो रिणन्नपः ॥२२॥

इस बलशाली सोम को तप से तपाकर इन्द्रदेव के लिए भली-भाँति शोधित किया जाता है । इस सोमरस को शोधित करते समय जल में मिश्रित किया जाता है॥२२॥

सूक्त ११०

ऋषि: त्र्य रुणस्त्रैवृष्ण; त्रसदस्यु: पौरकुत्स्य: ।
देवता – पवमान: सोम: । छंद – १-३ पिपीलिक मध्या अनुष्टुप, ४-९ ऊर्ध्ववृहती, १०-१२ विराट्

पर्यू षु प्र धन्व वाजसातये परि वृत्राणि सक्षणिः ।
द्विषस्तरध्या ऋणया न ईयसे ॥१॥

हे सोमदेव ! आप अन्न प्राप्ति के लिए श्रेष्ठ विधि से कलश में अवस्थित रहें । हमें ऋणों से विमुक्त करने वाले आप शत्रुओं को परास्त करने के लिए उन पर भाक्रमण करने जाएँ॥१॥

अनु हि त्वा सुतं सोम मदामसि महे समर्यराज्ये ।
वाजाँ अभि पवमान प्र गाहसे ॥२॥

हे सोमदेव ! रस निचोड़ने के बाद हम आपकी विधिपूर्वक अर्चना करते हैं । हे शोधित सोम ! श्रेष्ठ राजा के रक्षण के निमित्त, शक्तिशाली

होकर आप विरोधी सेना पर आक्रमण करने के लिए गमन करते हैं॥२॥

अजीजनो हि पवमान सूर्यं विधारे शक्मना पयः ।
गोजीरया रंहमाणः पुरंध्या ॥३॥

हे दिव्य सोमदेव ! आप किरणों के माध्यम से अंतरिक्ष और पृथ्वी लोक में जीवन को गतिशील बनाने वाले हैं। आपने अपनी क्षमता से जल को धारण करने वाले आकाश से ऊपर सूर्यदेव को उत्पन्न किया॥३॥

अजीजनो अमृत मर्त्येष्वाँ ऋतस्य धर्मन्नमृतस्य चारुणः ।
सदासरो वाजमच्छा सनिष्यदत् ॥४॥

हे अमृत रूपी सोमदेव ! आपने सत्य एवं कल्याणकारी अमृत तत्त्व को धारण करके अन्तरिक्ष लोक में सूर्यदेव को मानवों के निमित्त प्रादुर्भूत किया तथा देवगणों की सेवा की । आप अन्न आदि वैभव के लिए नित्य सक्रिय रहते हैं॥४॥

अभ्यभि हि श्रवसा ततर्दिथोत्सं न कं चिज्जनपानमक्षितम् ।
शर्याभिर्न भरमाणो गभस्त्योः ॥५॥

हे सोमदेव ! जिस प्रकार (कोई समर्थ व्यक्ति) हाथों – अँगुलियों से प्रजाजनों के पीने के लिए अक्षय जल स्रोत उपलब्ध कराता है, (उसी प्रकार) आप अन्नदायक रूप में छत्रे से नीचे आते हैं॥५॥

आदीं के चित्पश्यमानास आप्यं वसुरुचो दिव्या अभ्यनूषत ।
वारं न देवः सविता व्यूर्णुते ॥६॥

कालान्तर में, जब तक सर्वग्राही अंधकार का निवारण नहीं कर देते, (तब तक) इस (सोम) के द्रष्टा वसुरूप भाई की तरह हम इस सौम की स्तुति करते हैं॥६॥

त्वे सोम प्रथमा वृक्तबर्हिषो महे वाजाय श्रवसे धियं दधुः ।
स त्वं नो वीर वीर्याय चोदय ॥७॥

हे सोमदेव ! प्रधान ऋत्विज् श्रेष्ठ बल एवं (पोषण) अन्न के निमित्ते आपके विषय में श्रेष्ठ विचार से पूर्ण (आश्वस्त) हैं । हे वीर सोमदेव ! आप हमें वीरता की प्राप्ति के लिए प्रेरित करें॥७॥

दिवः पीयूषं पूर्व्यं यदुक्थ्यं महो गाहाद्दिव आ निरधुक्षत ।
इन्द्रमभि जायमानं समस्वरन् ॥८॥

सबसे पहले यह स्तुत्य (सोमरस) अमृत, सर्वोच्च एवं सुविस्तृत द्युलोक से प्रकट होता है, तदनन्तर इन्द्रदेव के समक्ष याजकगण सोम की सस्वर स्तुति करते हैं॥८॥

अध यदिमे पवमान रोदसी इमा च विश्वा भुवनाभि मज्मना ।
यूथे न निष्ठा वृषभो वि तिष्ठसे ॥९॥

हे शोधित सोमदेव ! गौओं के समूह में अवस्थित वृषभ के समान (आप) द्युलोक, पृथ्वीलोक एवं सम्पूर्ण प्राणियों के मध्य विद्यमान रहते हैं॥९॥

सोमः पुनानो अव्यये वारे शिशुर्न क्रीळन्पवमानो अक्षाः ।
सहस्रधारः शतवाज इन्दुः ॥१०॥

यह सोम हजारों धाराओं से छलनी से प्रवाहित होते हुए बच्चों के समान क्रीड़ा करता हुआ असीम सामर्थ्यो से युक्त तथा तेजस्वी रूप में कलश में पहुँचता हैं॥१०॥

एष पुनानो मधुमाँ ऋतावेन्द्रायेन्दुः पवते स्वादुरूर्मिः ।
वाजसनिर्वरिवोविद्वयोधाः ॥११॥

यह शोधित सोमरस मधुर, सुखद तथा सत्य से युक्त धाराओं के रूप में इन्द्रदेव के निमित्त अन्न, धन तथा आयु प्रदान करते हुए प्रवाहित होता है॥११॥

स पवस्व सहमानः पृतन्यून्त्सेधन्रक्षांस्यप दुर्गहाणि ।
स्वायुधः सासह्वान्त्सोम शत्रून् ॥१२॥

हे सोमदेव ! आप युद्ध के इच्छुक शत्रुओं को पराजित करते हुए दुष्ट भावों वाले, कठिनता से वश में आने वाले राक्षसों का संहार करें । आप उत्तम अस्त्र-शस्त्रों से युक्त होकर शत्रुओं को विनष्ट करते हुए प्रवाहित हों॥१२॥

सूक्त १११

ऋषि: अनानत: पारुच्छेपि:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – अत्यष्टि

अया रुचा हरिण्या पुनानो विश्वा द्वेषांसि तरति स्वयुग्वभिः सूरो न स्वयुग्वभिः ।
धारा सुतस्य रोचते पुनानो अरुषो हरिः ।
विश्वा यद्रूपा परियात्यृक्वभिः सप्तास्येभिर्ऋक्वभिः ॥१॥

हरिताभ शोधित सोमरस अपने तेज से शत्रुओं का नाश करता है । अन्धकार को दूर करने वाली सूर्य रश्मियों जैसी इस सोमरस की उत्तम दिखाई पड़ने वाली धार चमकती है । शोधित हरिताभ सोमरस भी चमकता है, जो प्रकाश के सात मुखों (सतरंगी किरणों) के तेज तथा स्तोत्रों से अनेक रूप धारण करता है॥१॥

त्वं त्यत्पणीनां विदो वसु सं मातृभिर्मर्जयसि स्व आ दम ऋतस्य धीतिभिर्दमे ।
परावतो न साम तद्यत्रा रणन्ति धीतयः ।

त्रिधातुभिररुषीभिर्वयो दधे रोचमानो वयो दधे ॥२॥

हे सोमदेव ! आपने व्यापारियों से धन-सम्पदा उपलब्ध की । यज्ञ के आधारभूत जल से यज्ञस्थल में भली प्रकार आप पवित्र होते हैं । आनन्दित हुए याजकगणों के स्थान (यज्ञ स्थल) से गूंजने वाले सामगान दूर से ही सुनाई पड़ते हैं। तीनों स्थानों (पृथ्वी, अन्तरिक्ष एवं द्युलोक) पर देदीप्यमान हे सोमदेव ! आप याजकों को सुनिश्चित रूप से (पोषक) अन्न प्रदान करते हैं॥२॥

पूर्वामनु प्रदिशं याति चेकितत्सं रश्मिभिर्यतते दर्शतो रथो दैव्यो दर्शतो रथः ।
अग्मन्नुक्थानि पौंस्येन्द्रं जैत्राय हर्षयन् ।
वज्रश्च यद्भवथो अनपच्युता समत्स्वनपच्युता ॥३॥

हे सर्वज्ञ सोमदेव ! जब आप पूर्व दिशा में प्रस्थान करते हैं, तब दिव्य और दर्शनीय आपका रथ रश्मियों के प्रभाव से और अधिक तेजस्वी दिखाई देता है । पुरुषार्थवर्द्धक स्तोत्र इन्द्रदेव तक पहुँचते हैं, जिनसे स्तोतागण विजय के लिए उन्हें प्रसन्न करते हैं और वे (उसके प्रभाव से) वज्र प्राप्त करते हैं । हे सोम और इन्द्रदेव ! तब आप आपसी सहयोग की स्थिति में युद्ध में पराजित नहीं होते॥३॥

ऋग्वेद – नवम मंडल

सूक्त ११२

ऋषिः शिशुरांगिरसः
देवता – पवमानः सोमः । छंद – पंक्ति

नानानं वा उ नो धियो वि व्रतानि जनानाम् ।
तक्षा रिष्टं रुतं भिषग्ब्रह्मा सुन्वन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥१॥

जिस प्रकार शिल्पी लकड़ी के काम की इच्छा करता है, जिस प्रकार वैद्य रोगी की कामना करती हैं, जिस प्रकार ज्ञानवान् याज्ञिक यजमान की कामना करता है, इसी प्रकार हमारी बुद्धियाँ नाना प्रकार की कामना वाली हैं, मनुष्य के कर्म भी विविध प्रकार के हैं । हे तेजस्वी सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥१॥

जरतीभिरोषधीभिः पर्णेभिः शकुनानाम् ।
कार्मारो अश्मभिर्द्युभिर्हिरण्यवन्तमिच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥२॥

पुरानी परिपक्व लकड़ी, पक्षियों के पंख तथा तीक्ष्ण शिला खण्डों से बाण बनाने वाला शिल्पी जिस प्रकार धनी (साधन-सम्पन्न) व्यक्ति की

कामना करता है, उसी प्रकार हम सोम के प्रवाहित होने की कामना करते हैं । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित हों॥२॥

कारुरहं ततो भिषगुपलप्रक्षिणी नना ।
नानाधियो वसूयवोऽनु गा इव तस्थिमेन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥३॥

हम उत्तम शिल्पों का सम्पादन करने वाले हैं। हमारे पिता तथा पुत्र चिकित्सक हैं। माता तथा कन्या जौ पीसने का कार्य करती हैं। हम सभी भिन्न-भिन्न कार्य करने वाले हैं, फिर भी गौओं की जिस तरह गोपालक सेवा करते हैं, उसी प्रकार हे सोमदेव ! हम आपकी सेवा करते हैं। आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥३॥

अश्वो वोळ्हा सुखं रथं हसनामुपमन्त्रिणः ।
शेपो रोमण्वन्तौ भेदौ वारिन्मण्डूक इच्छतीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥४॥

जिस प्रकार भारवाहक अश्व अच्छे रथ की कामना करता हैं, मित्र हास-परिहास की कामना करते हैं, कामी व्यक्ति नारी की कामना करता है, मेढक जलमय तालाब की कामना करता है, उसी प्रकार हम सोम की कामना करते हैं । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥४॥

सूक्त ११३

ऋषि: काश्यपो मारीच:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – पंक्ति

शर्यणावति सोममिन्द्रः पिबतु वृत्रहा ।
बलं दधान आत्मनि करिष्यन्वीर्यं महदिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥१॥

महान् पराक्रमी, वृत्रहन्ता इन्द्रदेव अपने में श्रेष्ठ बल धारण करते हुए शर्यणावत् सरोवर में स्थित सोम का पान करें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त धारा रूप में प्रवाहित हों॥१॥

आ पवस्व दिशां पत आर्जीकात्सोम मीढ्वः ।
ऋतवाकेन सत्येन श्रद्धया तपसा सुत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥२॥

समस्तं दिशाओं के स्वामी, कामनाओं की पूर्ति करने वाले हे सोमदेव ! सत्य का पालन करने वाले याजकों ने पवित्र स्तोत्रों से श्रद्धा तथा तप से युक्त होकर आपका पूजन किया है, अत: आप आजक देश

से प्रवाहित हों। हे तेजस्वी सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥२॥

पर्जन्यवृद्धं महिषं तं सूर्यस्य दुहिताभरत् ।
तं गन्धर्वाः प्रत्यगृभ्णन्तं सोमे रसमादधुरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥३॥

सूर्य की पुत्री (उषा) द्वारा वर्षा के जल से विस्तृत हुआ वह महान् सोम अन्तरिक्ष से लाया गया है। उसे वसुओं ने ग्रहण करके सोमवल्ली में स्थापित किया है । हे तेजस्वी सोमदेव ! आप इन्द्रदेव की प्रसन्नता के निमित्त प्रवाहित हों॥३॥

ऋतं वदन्नृतद्युम्न सत्यं वदन्त्सत्यकर्मन् ।
श्रद्धां वदन्त्सोम राजन्धात्रा सोम परिष्कृत इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥४॥

वह सोम सत्य कान्ति से युक्त तथा सत्य कर्म कारक है । हे तेजस्वी सोमदेव ! सत्य कर्म करते हुए, श्रद्धा युक्त सत्य वचन बोलते हुए तथा याजक द्वारा शोधित होकर आप राजा इन्द्रदेव के लिए रस प्रवाहित करें॥४॥

सत्यमुग्रस्य बृहतः सं स्रवन्ति संस्रवाः ।
सं यन्ति रसिनो रसाः पुनानो ब्रह्मणा हर इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥५॥

सर्वोपरि सत्य के उद्‌घाटक महान् सोमरस की धाराएँ भली प्रकार एक साथ बह रही हैं। हे हरिताभ सोमदेव ! ब्रह्मपरायणों के द्वारा शोधित होकर आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥५॥

यत्र ब्रह्मा पवमान छन्दस्यां वाचं वदन् ।
ग्राव्णा सोमे महीयते सोमेनानन्दं जनयन्निन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥६॥

सोमरस से देवगणों को आनन्दित करने वाला ब्राह्मण, छन्दों से बनाये स्तोत्रों का उच्चारण करते हुए पत्थरों से कूटकर निकाले गये सोमरस की जहाँ पूजा करता है, हे सोम ! वहाँ इन्द्रदेव के निमित्त आप रस प्रवाहित करें॥६॥

यत्र ज्योतिरजस्रं यस्मिँल्लोके स्वर्हितम् ।
तस्मिन्मां धेहि पवमानामृते लोके अक्षित इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥७॥

हे पवित्र सोमदेव ! जिस लोक में सूर्यदेव के अखण्ड तेज का सुख प्राप्त होता है; उस मृत्युरहित, विनाश रहित लोक में आप हमें रखें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥७॥

यत्र राजा वैवस्वतो यत्रावरोधनं दिवः ।
यत्रामूर्यह्वतीरापस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥८॥

जहाँ विवस्वान् को पुत्र राजा हैं । जहाँ बड़ी-बड़ी नदियाँ प्रवाहित होती हैं, जहाँ स्वर्ग का द्वार हैं, उस लोक में आप हमें अमरत्व प्रदान करें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥८॥

यत्रानुकामं चरणं त्रिनाके त्रिदिवे दिवः ।
लोका यत्र ज्योतिष्मन्तस्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥९॥

जिस श्रेष्ठ तीसरे लोक (अन्तरिक्ष में सूर्यदेव अपनी इच्छा के अनुसार गतिशील हैं, जहाँ की प्रजा तेजस्वी है, वहाँ आप हमें अमरत्व प्रदान करें । हे सोमदेव ! इन्द्रदेव के निमित्त आप प्रवाहित हों॥९॥

यत्र कामा निकामाश्च यत्र ब्रध्नस्य विष्टपम् ।
स्वधा च यत्र तृप्तिश्च तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥१०॥

जहाँ सब प्रकार की अभिलाषाएँ पूर्ण हों , जहाँ सुख प्रदान करने वाला तथा तृप्तिकारक अन्न है, जहाँ प्रतापी सूर्यदेव का स्थान है, वहाँ आप हमें अमरत्व प्रदान करें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के निमित्त प्रवाहित हों॥१०॥

यत्रानन्दाश्च मोदाश्च मुदः प्रमुद आसते ।
कामस्य यत्राप्ताः कामास्तत्र माममृतं कृधीन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥११॥

जिस लोक में ऋद्धियों तथा आनन्द का वास है, जहाँ हर्षदायी सम्पदाएँ और ऐश्वर्य हैं, जहाँ सारी कामनाओं की पूर्ति होती है, वहाँ आप हमें अमरत्व प्रदान करें। हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित हों॥११॥

सूक्त ११४

ऋषि: काश्यपो मारीच:
देवता – पवमान: सोम: । छंद – पंक्ति

य इन्दोः पवमानस्यानु धामान्यक्रमीत् ।
तमाहुः सुप्रजा इति यस्ते सोमाविधन्मन इन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥१॥

जो पवित्र तेजस्वी सोम के कार्यों का अनुगमन करता है, जो पवित्र सोम के चित्त के अनुकूल आचरण करता है; उसे श्रेष्ठ सन्तति से युक्त गृह स्वामी कहते हैं । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित हों॥१॥

ऋषे मन्त्रकृतां स्तोमैः कश्यपोद्वर्धयन्गिरः ।
सोमं नमस्य राजानं यो जज्ञे वीरुधां पतिरिन्द्रायेन्दो परि स्रव ॥२॥

हे मन्त्रों के द्रष्टा कश्यप ऋषे ! आप उस सोम की पूजा करें, जो स्तुति युक्त वाणी से विस्तार पाता है, जो ओषधियों के समान प्रजापालक है। हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित हों॥२॥

सप्त दिशो नानासूर्याः सप्त होतार ऋत्विजः ।
देवा आदित्या ये सप्त तेभिः सोमाभि रक्ष न इन्द्रायेन्दो परि स्रव
॥३॥

सूर्यदेव को आश्रय प्रदान करने वाली सात दिशाओं, सात याज्ञिकों तथा सात आदित्यों के साथ हे सोमदेव ! आप हमें संरक्षण प्रदान करें । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित हों॥३॥

यत्ते राजञ्छृतं हविस्तेन सोमाभि रक्ष नः ।
अरातीवा मा नस्तारीन्मो च नः किं चनाममदिन्द्रायेन्दो परि स्रव
॥४॥

हे राजा सोमदेव ! आपके लिए जिस हविष्यान्न को तैयार किया गया है, उसके द्वारा हमारा पोषण करें । कोई भी शत्रु हमें हिसित न करे तथा हमारे किसी भी पदार्थ का कोई शत्रु अपहरण न करे । हे सोमदेव ! आप इन्द्रदेव के लिए प्रवाहित हों॥४॥

॥इति नवम मण्डलं॥